

विदेह १५ सितम्बर २००८ वर्ष १ मास ९ अंक १८

'विदेह' १५ सितम्बर २००८ (वर्ष १ मास ९ अंक १८) एहि अंकमे अछि:-

विदेह (दिनांक १५ सितम्बर सन् २००८)

१.संपादकीय (वर्ष: १ मास:९ अंक:१८)

मान्यवर,

विदेहक नव अंक (अंक १८, दिनांक १५ सितम्बर सन् २००८) ई पब्लिश भऽ गेल अछि। एहि हेतु लॉग ऑन करू http://www.videha.co.in |

कोशी:

कोशीक पानि माउन्ट एवेरेस्ट, कंचनजंघा आऽ गौरी-शंकर शिखर आऽ मकालू पर्वतश्रृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशी, जाहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आऽ तामर कोसी सम्मिलित अछि।

एहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी आऽ दूध कोसी मिलि कए सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आऽ ई मोटा-मोटी पच्छिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आऽ मकालू पर्वतश्रृंखलाक पानि अनैत अछि।

अरुणकोसी माउन्ट एवेरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि।

तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पच्छिम दिशामे बहैत अछि आऽ अपन पानि कंचनजंघा पर्वतश्रृंखलासँ पबैत अछि।

आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आऽ तामरकोसी धनकुट्टा जिल्लाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतएसँ १० किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैत अछि जतए महाकोसी, सप्तकोसी वा कोसी मैदानी धरातलपर अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिणमे चलैत प्रायः ५० किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर- भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आऽ कनेक दक्षिण-पच्छिम रुखि केलाक बाद दक्षिण-पूर्व आऽ पच्छिम-पूर्व दिशा लैत अछि आऽ भारतमे लगभग १३० किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइत छथि। कोसीमे बागमती आऽ कमलाक धार सेहो सहरसा- दरभंगा- पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि।

कोसीपर पहिल बान्ह १२म शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे एखनो अछि।

भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संगे पूर्वी कोसी तटबन्ध सेहो बनि गेल आऽ पूर्वी कोसी नहरि सेहो।

कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ २३ किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आऽ राजनीतिमे ओझरा गेल। एहि बैराजसँ दू फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैरेजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैरेज काज अबितए, दोसर एहिसँ उत्तर-प्रदेशसँ असम धरि जल परिवहन विकसित भऽ जाइत जाहिसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फायदा होइतए। मुदा एहि बैरेज निर्माण लेल पाइ आवंटन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ के.एल.राव नहि देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जेना तेना मन्थर गति सँ शुरू भेल मुदा एखनो धरि ओहिमे काज भइये रहल अछि।

मुदा कोसी लेल ई नहि भऽ सकल। विचार आएल तँ योजना अस्वीकृत भए गेल। जतेक दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल ततेक दिन विवाद होइत रहल, डगमारा बैराजक योजनाक बदलामे सस्ता योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सेहो पूर्ण हेबाक बाटे ताकि रहल अछि!

<u>विश्वेश्वरैय्या पड़ैत छथि मोन</u> :हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आऽ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आऽ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्हक हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेशरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ अतिरिक्त मजदूर लगा कए आऽ मलेरियाग्रस्त आऽ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आऽ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि केलन्हि वरन् वालु, कैल्सियम पाथर आऽ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।

<u>दिल्ली अछि दूर एखनो!</u> प्रधानमंत्री आपदा कोष आऽ मुख्यमंत्री आपदा कोषक अतिरिक्त स्वयंसेवी संगठन सभक कोषमे सेहो दिल्लीवासी अपन अनुदान दए सकैत छथि। मुदा दीर्घ सूत्री काज होएत निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब।

१.स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी.बी एस.ई आऽ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल। दिल्लीवासी सी.बी एस.ई आऽ आइ.सी.एस.ई.सँ एहि तरहक कार्यान्वियन कराबी तँ लाजे बिहार बोर्ड ओकरा लागू कए देत।

२.भारतमे डगमारा बैराजक योजनाक प्रारम्भ कएल जाए कारण भीमनगर बैरेज अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कए लेने अछि। एहिमे फन्ड रेलवे आऽ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाए कारण एहिपर रेल आऽ सड़क सेहो बनि सकैछ/ आऽ बनबाक चाही।

३.बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए।

४.कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आऽ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए।

५.बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होए जेना देखि परि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए युद्ध-स्तरपर काज एहि सभपर कार्य शुरू कएल जाए।

उपरोक्त बिन्दु सभपर दिल्लीमे लॉबी बना कए केन्द्र सरकारपर/ मंत्रालयपर दवाब बनाएब तखने बिहार अपन नव छवि बना सकत। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह तखने पूर्ण होएत आऽ धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

एहि अंकमे:

श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमरजीक कोसी बाढ़िपर निबन्ध आऽ कोसीक बाढ़िपर स्व. राजकमल द्वारा लिखित कथा अपराजिता देल गेल अच्छि।

श्री गगेश गुंजन जीक गद्य-पद्य मिश्रित "राधा" जे कि मैथिली साहित्यक एकटा नव कीर्तिमान सिद्ध होएत, केर दोसर खेप पढ़ू संगमे हुनकर विचार-टिप्पणी सेहो। कवि रामजी चौधरीक अप्रकाशित पद्य सेहो ई-प्रकाशित भए रहल अछि। श्री कैलाश कुमार मिश्र जीक "यायावरी", अंकुर झा जीक पद्य, श्याम सुन्दर शशिक रिपोर्ताज आऽ कुमार मनोज कश्यपक लघु-कथा आऽ श्री शम्भू कुमार सिहक कथा-निबन्ध सेहो अछि। बी.के कर्णक मिथिलाक विकासपर लेख, श्री पंकज पराशर, जितमोहन, विनीत उत्पल, नवेन्दु कुमार झा आऽ परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर सिंहजीक रचना सेहो ई-प्रकाशित कएल गेल अछि। गुँजन जीक गजल आ' विचार टिप्पणी सेहो अछि।

श्री राजकमल चौधरीक रचनाक विवेचन कए रहल छथि श्री देवशंकर नवीन जी। उदाहरण आऽ नो एण्ट्री: मा प्रविश पर समीक्षा देल गेल अछि।

ज्योतिजी पद्य, बालानांकृते केर देवीजी शृंखला, बालानांकृते लेल चित्रकला आऽ सहस्रबाढ़निक अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि।

गोपेशजी स्वर्गीय भए गेलाह हुनकर संस्मरण हम लिखने छी पद्य स्तंभमे, संगमे देने छी हुनकर एकटा पद्य सेहो।

शेष स्थायी स्तंभ यथावत अछि।

अपनेक रचना आऽ प्रतिक्रियाक प्रतीक्षामे।

गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.co.in ggajendra@yahoo.co.in

महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (1878-1952)पर शोध-लेख विदेहक पहिल अँकमे ई-प्रकाशित भेल छल।तकर बाद हुनकर पुत्र श्री दुर्गानन्द चौधरी, ग्राम-रुद्रपुर,थाना-अंधरा-ठाढ़ी, जिला-मधुबनी कविजीक अप्रकाशित पाण्डुलिपि विदेह कार्यालयकेँ डाकसँ विदेहमे प्रकाशनार्थ पठओलन्हि अछि। ई गोट-पचासेक पद्य विदेहमे नवम अंकसँ धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भ' रहल अछि।

महत्त्वपूर्ण सूचना:(२) 'विदेह' द्वारा कएल गेल शोधक आधार पर १.मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश २.अंग्रेजी-मैथिली शब्द कोश आऽ ३.मिथिलाक्षरसँ देवनागरी पाण्डुलिपि लिप्यान्तरण-पञ्जी-प्रबन्ध डाटाबेश श्रुति पब्लिकेशन द्वारा प्रिन्ट फॉर्ममे प्रकाशित करबाक आग्रह स्वीकार कए लेल गेल अछि। पुस्तक-प्राप्तिक विधिक आऽ पोथीक मूल्यक सूचना एहि पृष्ठ पर शीघ्र देल जायत।

महत्त्वपूर्ण सूचना:(३) 'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल जा' रहल गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्रबाढ़नि'(उपन्यास), 'गल्प-गुच्छ'(कथा संग्रह) , 'भालसरि' (पद्य संग्रह), 'बालानां कृते', 'एकाङ्की संग्रह', 'महाभारत' 'बुद्ध चरित' (महाकाव्य)आऽ 'यात्रा वृत्तांत' विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे प्रकाशित होएत। प्रकाशकक, प्रकाशन तिथिक, पुस्तक-प्राप्तिक विधिक आऽ पोथीक मूल्यक सूचना एहि पृष्ठ पर शीघ्र देल जायत।

महत्त्वपूर्ण सूचना (४):महत्त्वपूर्ण सूचना: श्रीमान् नचिकेताजीक नाटक "नो एंट्री: मा प्रविश" केर 'विदेह' मे ई-प्रकाशित रूप देखि कए एकर प्रिंट रूपमे प्रकाशनक लेल 'विदेह' केर समक्ष "श्रुति प्रकाशन" केर प्रस्ताव आयल छल, एकर सूचना 'विदेह' द्वारा श्री नचिकेताजीकेँ देल गेलन्हि। अहाँकेँ ई सूचित करैत हर्ष भए रहल अछि, जे श्री नचिकेता जी एकर प्रिंट रूप करबाक स्वीकृति दए देलन्हि।

<u>महत्त्वपूर्ण सूचना (५):</u> "विदेह" केर २५म अंक १ जनवरी २००९, ई-प्रकाशित तँ होएबे करत, संगमे एकर प्रिंट संस्करण सेहो निकलत जाहिमे पुरान २४ अंकक चुनल रचना सम्मिलित कएल जाएत।

<u>महत्वपूर्ण सूचना (६):</u> १५-१६ सितम्बर २००८ कँ इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, मान सिंह रोड नई दिल्लीमे होअयबला बिहार महोत्सवक आयोजन बाढ़िक कारण अनिश्चितकाल लेल स्थगित कए देल गेल अछि।

मैलोरंग अपन सांस्कृतिक कार्यक्रमकँ बाढ़िकँ देखैत अगिला सूचना धरि स्थगित कए देलक अछि।

<u>२.संदेश</u>

१.**श्री प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"**- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकँ पढ़ि रहल छथि।

२.**श्री डॉ. गंगेश गुंजन**- "विदेह" ई जर्नल देखल। सूचना प्रौद्योगिकी केर उपयोग मैथिलीक हेतु कएल ई स्तुत्य प्रयास अछि। देवनागरीमे टाइप करबामे एहि ६५ वर्षक उमरिमे कष्ट होइत अछि, देवनागरी टाइप करबामे मदति देनाइ सम्पादक, "विदेह" केर सेहो दायित्व।

३.**श्री रामाश्रय झा "रामरंग"**- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

४.**श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, साहित्य अकादमी**- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बाधाई आऽ शुभकामना स्वीकार करू।

५.**श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"**- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

६.**श्री डॉ. शिवप्रसाद यादव**- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

७.**श्री आद्याचरण झा**- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

८.**श्री विजय ठाकुर**, मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

९. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका 'विदेह' क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह' निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आऽ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारय से कामना अछि।

१०.श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका 'विदेह' केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

११.डॉ. श्री भीमनाथ झा- 'विदेह' इन्टरनेट पर अछि तँ 'विदेह' नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब।

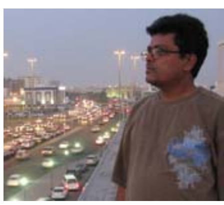
१२.श्री रामभरोस कापड़ि भ्रमर, जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत से विश्वास करी।

१३. श्री राजनन्दन लालदास- 'विदेह' ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक एहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अ ंक जखन प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दैतहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।

१४. डॉ. श्री प्रेमशंकर सिंह- "विदेह"क निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी।

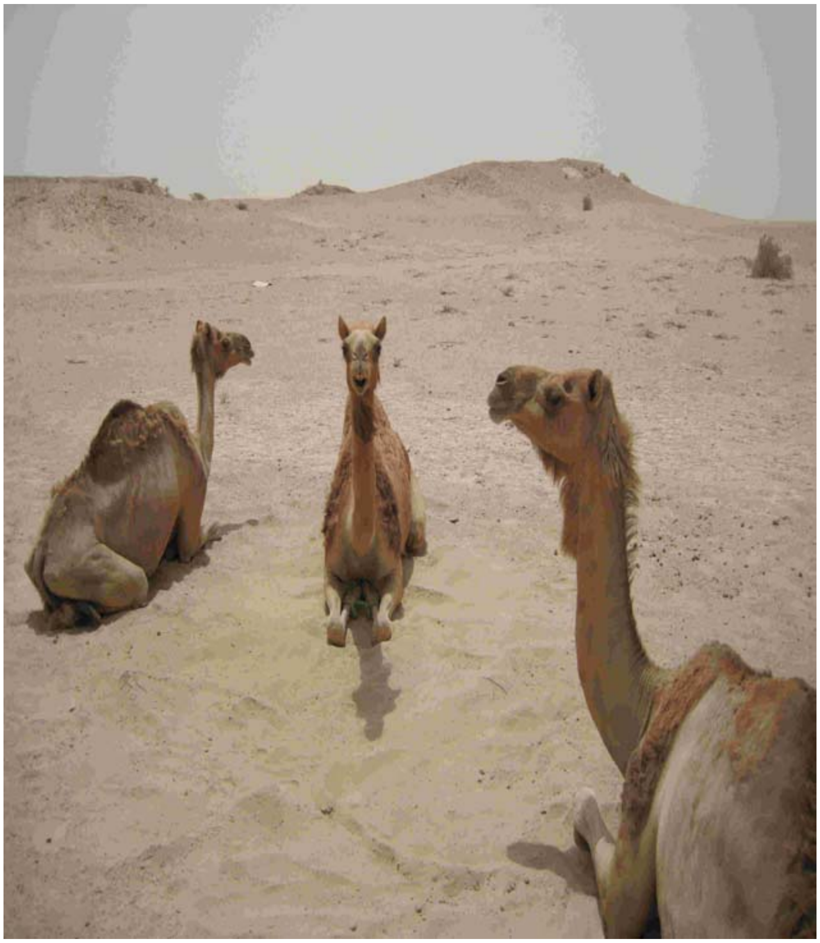
विदेह (पाक्षिक) संपादक- गजेन्द्र ठाकुर। एतय प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ आर्काइवक/ अंग्रेजी-संस्कृत अनुवादक ई-प्रकाशन/ आर्काइवक अधिकार एहि ई पत्रिकाकेँ छैक। रचनाकार अपन मौलिक आऽ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@yahoo.co.in आकि ggajendra@videha.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ' अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आऽ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक 1 आ' 15 तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

रिपोर्ताज- १. कतारसँ श्याम सुन्दर शशि २. जितेन्द्र झा ३. पटनासँ नवेन्दु कुमार झा ४.गुंजनजीक विचार-टिप्पणी आऽ ५. बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन

**श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा-पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ,एम.ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रवासक अरब ब्यूरोमे कार्यरत।**

<u>कतारक मैथिल भेड़ा चरवाह-</u>

कतारक सदरमुकाम दोहासँ लगभग एक सय किलोमीटर दूर जमालिया स्थित मरुभूमिक छातीपर बनाओल गेल भेड़ाक गोहियाक आगू ठाढ़ भऽ एक गोट युवक सिटी बजा रहल छल। महाभारतकालीन कृष्ण जकाँ। जनु अपन गोप आऽ गोपीकेँ लग बजेबाक उपक्रम कऽ रहल हो। मुदा एहि मरुभूमिमे ने गाई अएबाक कोनो सम्भावना छलै आऽ ने गोपी। मुदा बकड़ी आऽ भेड़ा धरि अवश्य आबि गेल ओकर सिसकारी सुनिकए। दिनभरि ५० डिग्रीक ताप छोड़ि स्वयं थकित सुरुज भगवान संध्या रानीसँ रसकेलि करबाक धुनमे पश्चिमाचलगामी वाट पकड़ि लेने छलाह। पश्चिमसँ आवएवला सेनुताएल प्रकाश मरुभूमिक वालुपर पड़ि मलिछाह आकृति बना रहल छल। मरुभूमि पिलिया ग्रस्त रोगी जकाँ बेजान देखना जाऽ रहल छल। पछिया हावा सांय सांय कऽ रहल छल। हावाक गतिसंग वालुक छोट-छोट कण उड़ि-उड़ि राहगीरकेँ घायल बना रहल छल। बूझि पड़ैत छल जे प्रलयके पूर्व संकेत हो। चारुकात वियावान मरुभूमि आऽ एहिमे उगल एक आध बबूरक पौध। हम बेर-बेर सोचैत रहैत छी जे धन्य बबूर, ऊँट आऽ सार्कदेशक दुखिया मजुरसभ जे एहि भूमिकेँ धरती होएबाक ओहदा प्रदान करैत छैक। अन्यथा...??



मुदा ओऽ युवक शान्त छल। एक क्षणक बाद सुरुज अस्त भऽ जएतै, सगर सन्सार अन्हार भऽ जएतै आऽ सयौ विगहामे पसरल मरुभूमिपर कारी रंगक चादर ओछा जाएत। ओऽ अन्हार होएबासँ पहिनहि अपना अधिनक भेड़ा आऽ बकड़ीकैँ गोहियामे घुसियावए चाहैत छल। कर्तव्य परायण मनुपुत्रक रूपमे अपन दायित्व निर्वाह करए चाहैत छल।

एहि तरहेँ अपन ईसारापर कृष्ण जकाँ भेड़ा-बकड़ीकैँ नचावएवला युवक के नाम छल महेन्द्र कापर। नेपालक सिरहा जिल्लाक कमलाकात भेड़िया गामक ई मैथिल युवक, विजुली, पिवाक पानि, सड़क आऽ स्वास्थ्यादि सुविधासँ विहीन एहि मरुभूमिमे गत एक वर्षसँ एहिना भेड़ा वकरी चड़वैत अछि। महेन्द्र कापर मात्र नहि, एहि मरुभूमिक विभिन्न भागमे बनाओल गेल विभिन्न भेड़ा, बकड़ी आऽ ऊट बथान तथा लगाओल गेल वगैचामे हजारौं नेपाली, भारतीय, वंगलादेशी, श्रीलंकन आऽ सुडियन मजुरसभ काज करैत अछि। अपना सभ दिस एक गोट कहबी नहि छैक जे, "जएवह नेपाल, संगहि जएतह कपार"। तहिना ई युवक सभ अपन करम भोगि रहल अछि। ओऽ सभ अबैत काल जे दोहा देखने छल, चकमक विजुलीवत्ती देखने छल आऽ चिक्कन चुनमुन फोरलेन सड़क देखने छल से घुरैत काल फेर देखत। ओकरा सभक वास्ते दोहा सहर दिल्ली दूर छैक।



महेन्द्र जमालियाक एहि अन्कन्टार मरुभूमिमे गत एक वर्षसँ काज करैत अछि। ओकरा जिम्मामे दू सय भेड़ा आऽ बकड़ी छैक। हमरा सभकेँ देखिते ओकर आँखिमे विशेष प्रकारक चमक व्याप्त भऽ गेलै, मुखमण्डलपर खुशीक रेखा नाचए लगलैक। साँझ पड़ि रहल छैक ओकरा लालटेम नेसवाक छैक, रातुक खाना बनेवाक छैक आऽ खुला आकाशक नीचाँ तरेगन गनैत राति बितेवाक छैक। गत एक वर्षसँ महेन्द्रक ई दैनिकी बनि गेल छैक। ईजोरिया रातिक चानकेँ देखि ओऽ अतिशय प्रसन्न होइत अछि, "ई चान हमरो बाऊ आऽ माय आउर सेहो देखैत होतै नञि"? ओकर निश्चल प्रश्न हमरा भावुक बना देने छल।

ओऽ भेड़ा आऽ बकरीकेँ गोहियामे गोतैत अछि। पठरूसभकेँ दुध पियबैत अछि। चारा रखैत अछि आऽ चैन भऽ हमरा सभसँ गप्प करवा वास्ते बैसि जाइत अछि। ओऽ एक वर्ष पूर्व कतार आएल छल। मानव तस्करसभ ओकरा कहने रहैक जे वगैचाक काज छैक। ओऽ सोचने रहय जे फलफूलमे पानि पटाएव, रोपव उखारव आ रियाल कमाएव मुदा से भेलै नहि। ओऽ भेड़ा चरवाह बनि कऽ रहि गेल। असलमे महेन्द्र अपने निरक्षर अछि। ओकर कतार आगमनके उद्देश्य छलै गाममे घर बनाएव आऽ बेटा-बेटीकेँ बोर्डिंग स्कूलमे पढ़ाएव। मुदा ओकर एक वर्षक श्रमसँ ई संभव नहि भऽ पाओल छैक। एक वर्षमे तँ महाजनकेँ ऋणो नहि फरिछाओल छैक। एहि वास्ते ओकरा आओर दू वर्ष एहि मरुभूमिक वालुकेँ फाकय परतैक। अवैत काल दलाल ओकरासँ ७५ हजार रुपैया लेने रहैक। जे ओऽ महाजनसँ ऋण लऽ कऽ चुकता कएने छल।

जहन महेन्द्रक गप्पक बखारी खुजलै तँ फेर बन्द होएवाक नामे नहि लैक। ओकरा तँ ओहि गोहियामे राति बतैवाक छलै मुदा हमरा सभकेँ सय किलोमीटर दूर दोहा अएवाक छल। हमरा सभक धरफड़ीकेँ ओऽ अकानि गेल छल। कहलक सर, कहियोकाल अवैत जाइत रहब। भेड़ा बकड़ी संगे रहैत-रहैत ओहने भऽ गेल छी, देखियौ चाहो पानिक लेल नहि पुछलहुँ। आऽ कपड़ा लपेटल एकगोट पानिक बोतल आगाँ बढ़ा देलक। "हमरा सभक फ्रिज बुझू कि एयर कन्डीशन ईहे अछि"।



गर्मीसँ सुखाएल कण्डकेँ पानिसँ भिजाओल आऽ अपन गन्तव्य दिस आगाँ बढ़ि चललहुँ। लगभग दश किलोमीटर वाट तय कएलाक बाद हमरा लोकनि जमालिया नगरमे पहुँचलहुँ। मुसलमान धर्मावलम्बी सभक रोजा खोलवाक समय भऽ गेल रहै। सड़क कातमे बनाओल गेल चबुतरापर नाना प्रकारक व्यंजन साँठल जाऽ रहल छल। लोक विस्मील्लाह करवालेल तैयार छलाह। हमरा मोन पड़ल महेन्द्रके गोहियामे राखल खवुज (कतार सरकारक सस्ता दरक रोटी) आऽ प्याउजक धेसर। एसगर महेन्द्र एखन नून, मिरचाई आऽ तेल प्याउजक संग खवुज दकरि रहल हएत। एतए ओकरेद्वारा पोसल गेल खस्सीक विरयानीक स्वाद लऽ रहल अछि मालिक आउर।

दोहा,कतार, जमलिया।

२. जितेन्द्र झा

कोशी सन बेदर्दी कोइ ने

मिथिलाक लाखो जनताके विपत्तिक बाढि देब बला कोशी नियन्त्रणलेल एखन धरि कएल प्रयास अपर्याप्त रहल बताओल गेल अछि । ५० बर्ष पहिनेसं कोशीक नामपर खर्च कएल करोडो रुपैयाक बास्तविकताक पोल खुलि गेल अछि । कोशी बाढिपर दिल्लीमे आयोजित कार्यक्रममे वक्ता सभ कोशी बांन्ह टुटलाक बाद आब दोषारोपण क क बचबाक प्रयास कएल जा रहल कहलनि । मैथिली लोकरंग मन्च सेप्टेम्बर १२ तारिखक' कोशी सन बेदर्दी कोइ नई नामक कार्यक्रम आयोजन कएलक अछि । कार्यक्रममे कोशीक बाढिपर बजनिहार वक्तासभ कोशी नदी नियन्त्रण लेल सरकारक प्रयासके आलोचना कएल गेल । नाटककार मदहेन्द्र मलंगिया कोशीक रस्तासं खेलबाड कएल गेलाक कारण एहन भयावह स्थिति उत्पन्न भेल कहलनि । 'मात्र कोशीके बदनाम कएल जारहल अछि' मलंगिया आगु कहलनि 'कोशीके बुझब आबश्यक अछि । तहिना मैथिली इ पत्रिका विदेहके सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर कोशी बाढिके सरकारी लाचारीके संज्ञा देलन्हि ।कोशीक तटबन्ध टूटत से बुझितो सरकार मुकदर्शक बनल रहल हुनक आरोप रहनि ।मधेपुराक शान्ति यादव अपन आंखिक आगु कोशीक विकराल रुप देखने बतबैत पर्यावरण विद सेहो एकरा कत्तेक बुझि सकल अछि से प्रतिप्रश्न कएलनि ।

कोशीप्रति ओतुक्का जनताके सुसुचित करबाक आवश्यकता पर भारती जोड दैत कहलनि 'बाढिप्रति संवेदनशील बनाएब आबश्यक अछि ।

बिछियाक आर्तनाद

पेटमे अन्न नईं, राहतलेल आकाशमे टकटकी लगौने आंखि, आङमे लत्ताकपडाक अभाव आ भोक्कासी ...। सभ अपन अपन पीडा सुना रहल अछि । पेटके राक्षस शान्त नई भेलाक बाद ओ त सौंसे आदमीएके खा लेलक । नवजात शिशु कत्तेक काल भुक्खे रहैत, ओकरा कोशीक कोरमे छोडिदेल गेल ।

कोशी सन बेदर्दी जगमे कोइ नइ लघुनाटकमे किछु एहने देखल गेल । मैलोरंगक आयोजनमे दिल्लीमे सेप्टेम्बर १२ क' मन्चित लघुनाटकमे कोशीक बिभीषिका देखएबाक प्रयास कएल गेल । नाटकमे राहतलेल मारामारी कएनिहार जनता भुखसं मृत्युवरण करबाक बाध्यताके जीवन्त रुपमे प्रस्तुत कएल गेल। पीडितके रोदनसं दर्शक भावविह्वल बनल छल । मैलोरंग सेप्टेम्बर १२ सं १४ तारिखधरि मैथिली लोकरंग महोत्सव स्थगित कएलक अछि । कोशी क्षेत्रमे घुरैत मुस्कानकसंग महोत्सव आयोजन हएत मैलोरंग जनौलक अछि ।

संघर्षक कठिन बाट

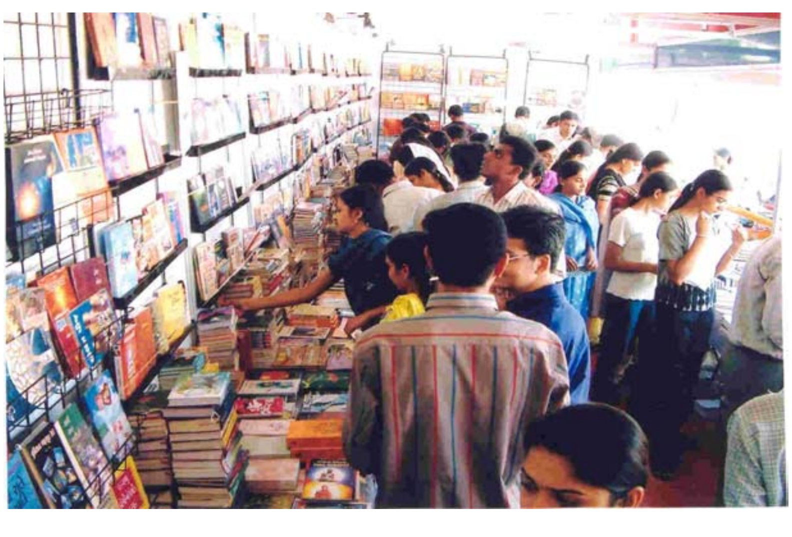
मैथिली साहित्यकार व्रजकिशोर बर्मा मणिपद्मक स्मृतिमे नयां दिल्लीमे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन कएल गेल । एहि कार्यक्रममे मैथिली नाटक मन्चन हएबाक संगहि मिथिलांगन संस्थाक स्मारिका सेहो विमोचन कएल गेल । मिथिलांगन साहित्यकार मणिपद्मक स्मृतिमे 'उगना हल्ट' नामक मैथिली नाट्क मन्चन कएने छल ।



ब्रज किशोर बर्मा मणिपद्म मैथिली साहित्यक चर्चित नाम अछि। लोक साहित्यक संरक्षणमे हुनक योगदान उल्लेखनीय मानल जाईत अछि। इएह योगदानक सम्मान करैत हुनका मैथिलीको वाल्टर स्काट सेहो कहल जाईत छन्हि। लोरिक, राजा सल्हेश, नैका बन्जारा जेहन लोकगाथाक संरक्षण करबामे हुनक योगदान सराहनीय रहल कार्यक्रममे कहल गेल। मिथिलांगन एहिसं पहिने सेहो मणिपद्मक स्मृतिमे विभिन्न कार्यक्रम आयोजन करैत आएल अछि। तहिना त्रैमासिक मिथिलांगन पत्रिका सेहो प्रकाशनके निरन्तरता देल गेल संस्था जनौलक अछि। उगना हल्टक लेखक कुमार शैलेन्द्र आ निर्देशक संजय चौधरी छैथ। नाटकमे दिल्लीमे संघर्षरत मैथिली रंगकर्मीक जीवनक कटु सत्य देखएबाक प्रयास कएल गेल अछि। उगना हल्ट बिहारक मधुवनी जिलाक एक रेल्वे स्टेशनको नाम अछि , यद्यपि नाटकके परिवेश नयां दिल्लीक रंगकर्मीक अडडा मण्डी हाउसपर केन्द्रित अछि। स्थानीय पण्डौल आ सकरी बीचक स्टशन अछि उगना हल्ट। नाटकमे मैथिली भाषा संस्कृतिक संरक्षणलेल अपस्यांत नवतुरियाक कथा ब्यथा समेटल गेल अछि। वएह युवाक संघर्षक इतिबृत मे नाटक घुमैया। कियो संगीतकार बन' चाहैत अछि त कियो गीतकार, ककरो फ़िल्ममे हिरो बनबाक धुन सबार छइ त ककरो हिरोइन। अन्ततः कडा संघर्षक बाद सभ अपन लक्ष्य प्राप्त करबामे सफ़ल होइत अछि। नाटकमे संगठने शक्ति अछि आ एहिसं सफ़लता पाबि सकैत छी से पाठ सिखएबाक प्रयास कएने छैथ नाटककार। छिरिआएल आ दिग्भ्रमित जंका बुझाईत पात्रक अभियान अन्तमे सफ़ल होइत अछि। अन्ततः नाटक सुखान्त अछि।

साहित्य केन्द्रित पुस्तक मेला

नया दिल्ली। विद्यापतिक गीत, हरिमोहन झाक कथा, लोकोक्ति संग्रह, पत्रपत्रिकाक इतिहास, गोरा(अनुवाद), इत्यादि। ई कोनो मैथिली पुस्तकालयके सूची नईं, १४ म् दिल्ली पुस्तक मेलामे लागल किताबक नाम अछि।



महिला लेखनके केन्द्र बनाक' मेला आयोजन कएल गेल छल । जाहिमे लगभग तीन सय प्रकाशक स्टल लगौने रहए । मुदा मेलामे मैथिली भाषामे मात्र दु तीनटा किताब मैथिली साहित्यमे महिला लेखनके सबुत बनल छल । मेलामा पाकिस्तान, अमेरिका, चिन, स्पेन , दुबई आ इरानक प्रकाशक सहभागी छल। मेलामे मैथिली भाषाक पुस्तक सेहो राखल रहए । साहित्य विद्यापति आ हरिमोहन झाक किताव बेश बिकाएल छल । ओना साहित्य एकेडमीक स्टलपर मैथिलीक दर्जनसं बेशी किताब नई छल । तें पाठकलग किताब चुनके अबस्था नई रहए । महिला लेखनके केन्द्र बनाओल गेल मेलामे साहित्य एकेडमीसं प्रकाशित महिला लेख संग्रहित एकटा किताब मेलाक उद्देश्य पुरा करैत छल । मेला मैथिलीक संकीर्ण प्रकाशन अबस्थाके प्रतिबिम्बित क रहल छल । प्रवासमे रहनिहार मैथिली भाषीके साहित्य एकेडमीक स्टल मैथिली किताबके दर्शन धरि करादेने रहए । मैथिली साहित्यिक खोराक चाहनिहारके पुस्तक मेला थोर बहुत सहायक छल । संख्यात्मक हिसाबसं मैथिली भाषाक पोथी थोरबे छल । मेलामा साहित्यसंगहि कला-संस्कृतिक अदभुत संगम सेहो प्रस्तुत कएल गेल छल । प्रख्यात महिला साहित्यकारक गैर साहित्यिक किताब सेहो राखल गेल छल । महिला स्रष्टाक रचनासंगहि हुनकर सभहक आत्म बृतान्त सेहि उपलब्ध कराओल गेल छल । एहि मेलामे लगभग १५ करोड भारतीय रूपैयाको कारोबार हुएबाक अनुमान कएल गेल अछि । मेला सेप्टेम्बर 1 तारिखसं ७ तारिखधरि चलल छल।

<u>३. पटनासँ *नवेन्दु कुमार झा*</u>

बिहारक शोक देखौलक अपन रूप

बिहारक शोक कहल जाएबला कोसी नदी भारत-नेपाल मध्य विभाजन आऽ गंगाक मुख्य सहायक नदी अछि। अपन धारा परिवर्तनक लेल विख्यात एहि वर्ष जाहि तरहेँ अपन तांडव देखौलक अछि अवश्ये चिन्ताक विषय थिक। पछिला कतेको दिनमे बाढ़िक जे तबाही प्रदेशक सीमांचल विशेष रूपसँ सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, अररिया आऽ पूर्णिया जिलामे मचल अछि एकर डरसँ एहि जिलाक संगहि लग पासक गोटेक तीस लाखक आबादी अपन घर, द्वार आऽ सम्पत्तिक चिन्ता छोड़ि सुरक्षित ठेकानक तलाशमे भटकि रहल अछि। ८ अगस्तकेँ कोसी नदीक तटबंध कुशहा लग नेपालक वीरपुर बराजक उत्तर गोटेक १२.९० किलोमीटरक दूरीपर जखने टूटल कि भारत आऽ नेपालक पैघ आबादी बर्बाद भऽ गेल। कतेक लोक एहि मानव निर्मित अप्राकृतिक बाढ़िक कालमे घुसि गेलाह एक अनुमान लगबऽ मे कतेक मास बितत से कहब मुश्किल अछि।

हिमालय पर्वतमालासँ गोटेक ७००० मीटर ऊँचाईसँ निकलि कोसी नदी भारतमे उत्तर बिहारक ९२०० किलोमीटर रास्ता तय कऽ अंतमे गंगा नदीमे मिलि कऽ बंगालक खाड़ीमे खसि पड़ैत अछि। बिहारक सभसँ जीवन्त ई नदीकेँ सात नदी इन्द्रावती, तांवा कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी, लिछु कोसी, तामर कोसी आऽ सुन कोसी वा भोट कोसीक प्रवाहक मिलनक हेबाक कारण सप्त कोसी सेहो कहल जाइत अछि। नेपाल आऽ तिब्बतक जल ग्रहण क्षेत्र वाला एहि नदीक ७४०३० वर्ग किलोमीटर जल ग्रहण क्षेत्रमे सँ मात्र ११४१० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र भारतमे आऽ शेष ६२६२० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र नेपाल अथवा तिब्बतमे पड़ैत अछि। १५० वर्ष पूर्व पूर्णियाक पूरबसँ बहए वाला एहि नदीक निचला हिस्सा एखन दरभंगा जिला दऽ बहैत अछि। अपन धारा बदलबाक लेल बदनाम ई नदी जखन अपन रस्ता बदलैत अछि तँ नचैत अछि तबाही आऽ सभक सोझाँ होइत अछि बर्बादी आऽ एक शिकार निरीह जनता, भऽ जाइत अछि असहाय।

मैदानी क्षेत्रमे उतरलाक बाद कोसी नदीक पाट छओसँ दस किलोमीटर चौड़ा भऽ जाइत अछि आऽ प्रायः नेपालक सीमाक भीतर पचास किलोमीटर दूरी तय कए भीमनगर-चतरा लग भारतीय सीमामे प्रवेश करैत अछि आऽ मानसी-सहरसा रेल लाइनक कुर्सेला स्टेशन लग गंगा नदीमे मिलि जाइत अछि। उत्तर बिहार आऽ पूर्वी मिथिलामे ई विश्वक सभसँ उपजाऊ समतल त्रिकोणक निर्माण करैत अछि तँ एकरा एहिठामक जीवन रेखा सेहो कहल जाइत अछि। एहि नदीसँ होमएवाला तबाही आऽ बर्बादी बचैबाक लेल प्रयास तँ भेल मुदा ओहि दिस कएल गेल प्रयास कतेक सफल भेल ई तँ कोसीक वर्तमान कहरसँ सहजे बुझल जाऽ सकैत अछि। आजादीक बाद १९५५मे कोसीक पूर्वी किनार वीरपुरसँ कोपड़िया धरि १२५ किलोमीटर लम्बा आऽ पश्चिम किनारपर नेपालमे भारदहसँ भारतमे सहरसासँ घोघेपुर धरि १२६ किलोमीटर लम्बा तटबन्ध बनेबाक जे काज शुरू भेल ओऽ १९६३-६४ मे पूरा भऽ गेल। १९६३ मे कोसीक धार बराजक निर्माण कऽ एहिपर नियन्त्रण स्थापित कऽ लेल गेल।

कुशहामे एहि वर्ष तटबंध टुटबाक घटना कोनो पहिल घटना नहि थिक। कोसी नदीपर बनल ई नहर एहिसँ पूर्व १९६३मे डलबा (नेपाल), १९६८ जमालपुर (दरभंगा), १९७१ भटनिया (सुपौल), १९८० बहुअरबा (सहरसा), १९८४ हेमपुर (सहरसा) आऽ १९९१ जोगिमियामे टुटल छल आऽ तखनो तबाहीक मंजर ओहिना छल जे एखन अछि। कुशहामे तटबंध टुटब एहि बातक संकेत अछि जे एखन धरि सभ सरकार उत्तर बिहार बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र आऽ जनताक प्रति उदासीन अछि आऽ सभ दिन एकर अनदेखी कएल गेल अछि। आजादीक ६१ साल धरि मात्र राहत आऽ बचाव काज चला कऽ सभ सरकार अपन दायित्व समाप्त बुझैत अछि आऽ पीड़ित जनता एकरा अपन नियति मानि अपन जिन्दगीक डेग आगाँ बढ़बैत रहल अछि। सम्पूर्ण परिस्थिति सरकारक संब्दनहीनताक परिचायक अछि।

कोसी नदीक चलि रहल तांडव सँ एखन धरि १६ टा जिला एकर चपेटमे आबि गेल अछि। तटबंध बचेबाक आऽ नदीक धार मोरबाक कोनो प्रयास एखन धरि युद्ध स्तरपर शुरू नहि भऽ सकल अछि। दिन प्रति दिन नव-नव क्षेत्र कोसीक चपेटमे आबि रहल अछि। १९६३ सँ २००८ धरि कतेको बेर कोसीक तटबन्ध टूटल अछि मुदा एहि बेर पछिला सभ रेकॉर्ड टुटि गेल अछि। पछिला १५ दिनसँ कोसी जेना अपन रौद्र रूप धेने अछि आऽ कटाव कऽ रहल अछि ओहि सँ कोसी बराजपर सेहो खतरा बढ़ि गेल अछि। ज्यों ई हाल रहल तँ एखन २५ लाख लोक प्रभावित छथि आऽ अगिला दू चारि दिन ५० लाख आबादी कोसीमे समाधि लऽ लेत तँ सरकारकेँ कोसीपर नियन्त्रणक प्रयासमे गति आनब आवश्यक अछि।

<u>बाढ़ि आऽ सरकारी प्रयास</u>

बिहारमे बाढ़ि आएब कोनो नव बात नहि अछि। सभ साल बाढ़ि अबैत अछि आऽ चलि जाइत अछि। वर्ष भरि चलएवाला पावनि-तिहार जकाँ ओकर बादक राहत बाटबाक पावनि चलैत अछि आऽ फेर जिनगी ओहिना पटरीपर चलए लगैत अछि। हवामे उड़ैत हेलिकाप्टर हाहाकारक संग सफेद पोश नेता सभ आकाशसँ पीड़ित

मानवकेँ हाथ हिला-हिला कऽ फोटो छपा, मूह दुसि दैत छथि आऽ फेर डपोरशंखी घोषणा कऽ अपन कर्तव्य समाप्त बुझैत छथि। वास्तवमे सरकारी महकमाक लेल ई बाढ़ि एकटा वार्षिक पावनि अछि जकर इंतजार ओऽ करैत रहैत अछि। बाढ़िक टकटकी लगौने सरकारी अफसर आऽ कर्मचारीक लेल ई बाढ़ि सोनाक अंडा देबए वाला मुर्गी अछि। सरकार पहिने बाढ़िसँ बचाव लेल पूर्व तैयारीक नामपर टाका लुटबैत अछि तकर बाद बाढ़िक क्रममे बाढ़ि पीड़ितकेँ राहत आऽ बचाव काजक नामपर आऽ तत्पश्चात् बाढ़िक समाप्त भेलापर बाढ़ि पीड़ितक पुनर्वासक लेल टाका बाढ़िक पानि जकाँ बहैत अछि मुदा एहिमे केओ डुबैत नहि अछि, परञ्च सरकारी अफसर आऽ अभियन्ता सभक धोधि फुलैत अछि।

बाढ़िपर नियन्त्रणक प्रति सरकारक प्रयास तँ पैघ स्तरपर चलि रहल अछि। उत्तर बिहारक बाढ़िक नियन्त्रणक लेल केन्द्रीय जल संसाधन मंत्रालय द्वारा १९९२ मे एकटा समिति (एन.बी.एफ.पी.सी.)क गठन कएल गेल छल। मंत्रालयक सचिव एकर पदेन अध्यक्ष छलाह आऽ रेल मंत्रालय, कृषि मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, गृह मंत्रालय आऽ बिहार सरकारक अधिकारी केर एहिमे सम्मिलित कएल गेल। मुदा १६ वर्षमे समितिक गोटेक एगारह टा बैसक भेल आऽ छोट पैघ एक सय (१००) योजना बनाओल गेल, जाहिमे सँ मात्र अनठाबन टा योजनापर काज शुरू भऽ सकल। केन्द्र सरकार २००५ मे राज्य सरकार द्वारा लापरवाहीक आरोप लगबैत फंडिंग रोकि देलक आऽ पछिला तीन वर्षसँ ई योजना ठप्प अछि। वर्ष २००५ मे केन्द्र सरकार जल आऽ बिजली सलाहकार सेवा (वैपकास) लिमिटेडकेँ बाढ़िक मूल्यांकनक जिम्मेवारी देल गेल। पछिला तीन वर्षसँ सेहो परियोजनाक मूल्यांकन भऽ रहल अछि आऽ टाकाक अभावमे आगाँक काज रुकल अछि।

बिहार आऽ उत्तर प्रदेशक गंडक नदीपर बाढ़िक बचावक काज आऽ निर्माण काजक समीक्षाक लेल १९८१मे कोसीक तर्जपर गंडक उच्च स्तरीय समिति सेहो गठित कएल गेल। समय-समयपर एहि समितिक कार्यकाल बढ़ैत रहल आऽ आब एकर नाम गंडक उच्च स्तरीय स्थायी समिति कऽ देल गेल। जल संसाधन मंत्रालय लालबकिया, बागमती, कमला आऽ खाको नदीक तटबन्धकेँ मजगूत आऽ लम्बा करबाक वास्ते टाका उपलब्ध करौलक अछि। एकर बाद दसम पंचवर्षीय योजनामे साठि करोड़ टाका जल संसाधन मंत्रालय मंजूर कएने छल मुदा योजनाक सुस्त प्रगतिकेँ देखैत योजना आयोग एहि योजनाक टाका छियालिस करोड़ कऽ देलक। १९७८ मे जी एफ सी सीक अध्यक्षक अगुवाईमे कोसी उच्च स्तरीय समितिक गठन कएल गेल जे सभ साल बाढ़िसँ भेल नोकसानक आकलन करैत अछि आऽ बाढ़िसँ पूर्व होमए वाला उपायक सुझाव दैत अछि। मुदा ई बनैत समिति दर समितिक बाढ़ि असली बाढ़िक विभीषिकासँ लोक सभकेँ बचबऽ मे एखन धरि असफल रहल अछि। सभ साल बाढ़ि अपन भांज पुरैत अछि, समिति सेहो अपन बैसक कऽ सुझाव दैत अछि मुदा ओकर योजना आऽ सुझाव सँ नहि बाढ़ि रुकैत अछि आऽ नहि तबाहीक मंजर बदलि रहल अचि।

<u>बाढ़िक वर्तमान स्थिति</u>

<u>जिला</u>	<u>गाम</u>	<u>प्रभावित लोक(लाखमे)</u>	<u>मृतकक संख्या</u>	<u>प्रभावित जानवर(लाखमे)</u>
मधेपुरा	३७८	११.५५	१५	३.००
अररिया	९३	१.६०	००	०.८०
सुपौल	२४३	८.९४	०३	४.५०
सहरसा	१४५	४.३१	०९	१.५८
पूर्णिया	११८	०.६५	००	०.३५
	९७७	२७.०५	२७	१०.२३

<u>बाँटल गेल सामग्री</u>

मटिया तेल	१२८६६ लिटर
नकद मदति	८५.०५ लाख
अन्न	१४५३७ क्विंटल
नमक	१८.२५ क्विंटल
सातु	४३५.५० क्विंटल
सलाई	१४६१२५
मोमबत्ती	२०९०१८

(स्रोत: आपदा प्रबंधन विभाग)

<u>४. गुंजन जीक विचार टिप्पणी</u>

प्रियवर,

मैथिल, मिथिला आऽ मैथिली मानसकेँ जतेक बूझि सकल छी, ६६ वर्षक सक्रिय, सचेष्ट आऽ सम्वेदनाशील मैथिल जीवनमे ताहिमे संसद आऽ विधानसभाक समक्ष निरन्तर धरना आऽ कोनो तरहक चुनाव प्रक्रियाक विरोधसँ हमर चेतना सहमति अनुभव करैत अछि। मुदा सर्वप्रथम "शुद्ध हृदयसँ संकल्प चाही"। राजनीतिबला संकल्प नहि। शुद्ध हृदयसँ संकल्प- समय सुतारू राजनीति आब मात्र राजनीतिज्ञे तकक अवसरवादी "विशेषता" नहि, सम्भ्रान्त अधिकांश मैथिल बुद्धिजीवियो लोकनिक भऽ गेल अछि! से पूरा सक्रिय छथि- सामाजिक, साहित्यिक आऽ सांस्कृतिक, सभ क्षेत्रमे। विपत्तियोकेँ हाट-बजार बना कऽ स्व-केन्द्रित उपयोगक वस्तु बना लैत छथि। तहिना मैथिलीसँ तँ उपलब्ध अवसरक अघोषित मालिक बनि जाइत छथि।

से अपन-अपन छातीपर हाथ राखि हमरा लोकनि अपनाकेँ ताकी आऽ पूछी। बेशी काल तँ एहि प्रकारक सबदिन सामूहिक विपत्तिक कारण मनुक्खक, ओहि समाजमे अपनेमे विद्यमान रहैत छैक बन्धु! तँ आत्म-विश्लेषण सेहो। सभजन मंगलकारक अभियान लेल एक मात्र मैथिल मन अभियान!

<u>५. बी.के. कर्णजीक मिथिला-मंथन</u>

मैथिल जे कहियो मैथिली छोड़ि लन्हि ओ मानसिक रूपसं गरीब भए गेलाह। आर्थिक विकास भेलाक तदुपरान्तों अपन मनसँ बहुत गरीब। अमेरिकामे जे भारतीय मुलक स्थिति पर जे एकटा अमेरिकन पत्रकार अध्ययन केलाह जरूर देखल जाए।

Family Ties and the Entanglements of Caste http://www.nytimes.com/2004/10/24/nyregion/24caste.html

अमेरिकन की मिथिलामे रहि सकैत अछि

नहि कथमपि नहि।

की अमेरिकन आ कोनो विकसित देश व राज्य के एकोटा लोग अपन मैथिली भाषा अपनायत

नहि कथमपि नहि।

बेसी मैथिले भेटताह जे मिथिला आ मैथिली छोड़ि ताहिमे सबसँ आगू ।

मैथिल मिथिलाक सीमाक बाहर बड मेहनती परञ्च मिथिलाक सीमाक अन्दर बड आलसी। मेहनती मैथिल कतौऽ रहथि धाक जमौने छथि परञ्च मैथिली पर जेना मतसुन। एको रति रू चि नहि रखैत छथि, हुनकर धिया पुताक बाते छोड़ु।

गिर्यसन जकाँ खोजी एहि पर अलग विचार रखैत छथि।

मैथिलीके बोझ बुझय वाला मैथिल सोचि विचारमे बड़ गरीब।

गरीबी झेलबाक मानसिकता मैथिल मे कियाक बेसी।

मिथिलामे मौलिक सुख सुविधाक कमी कोन कारणे। बहूतो कारण भए सकैछ। गरीबीमे ककरा नेऽ इ कष्ट झेल्ऽ पऽड़ैत।

मैथिल मेहनती तँ मिथिलामे गरीबी कियाक

गरीबी झेलबाक मानसिकता कियाक !!!ग्रेट रिस्क !!!

कतेक मैथिल कहताह जे भाग्यक लिखल कष्ट अछि। एहि प्रश्नक जबाब खोजि रहल छी जे पाँच करोड़क मैथिलक एके रंग भाग्य कियाक। गरीबीक झेलबाक मानसिकता कतेक दिन तक।

हम मैथिल सब वाक विवादमे बड प्रखंड छी। हरएक बातपर अपनाक अनुभवी प्रमाण दैत छी।

मनसँ वाक पटूतामे धनी। जीवनक मौलिक आवश्यकताक पूर्तिकक लेल हम सब मैथिल बड़ गरीब।

गरीब मानसिकता गरीबी झेलबाक लेल सदिखन तैयार।

स्वस्थ नेताविहीन मैथिल समाज अपन मौलिक हक सँ दूर कोसो दूर अछि।

जड़ जड़ हालतमे मैथिल समाज अपन देशक आजादीक बाद मिथिलामे आधारभूत ढाँचाक शूरूआतोऽ तँ नहि भेल।

खकरा कहबैऽ केऽ सूनत के सुधि लेत।

अगला_अंकमे

गद्य -

१. शम्भु कुमार सिंह २. कुमार मनोज कश्यप

पोथी समीक्षा:- १.नो एण्ट्री: मा प्रविश(प्रेमशंकर सिंह/ गजेन्द्र ठाकुर) २. उदाहरण(कमलानन्द झा, देवशंकर नवीन)

जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन-डॉ प्रेमशंकर सिंह

शोध लेख-१.स्व. राजकमल चौधरी (देवशंकर नवीन)

यायावरी- कैलाश कुमार मिश्र उपन्यास सहस्रबाढ़नि (आगाँ)ज्योतिक दैनिकी

कोसी गद्य १. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर २. स्व. श्री राजकमल चौधरी

कथा-निबन्ध

१. शम्भू कुमार सिंह २. कुमार मनोज कश्यप



शंभु कुमार सिंह, जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, मैट्रिक धरि गामहि सँ, आइ.ए., बी.ए.मैथिली सम्मान, एम.ए.मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु] उत्तीर्ण 1995, "मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन" विषय पर वर्ष 2008, ति.माँ.भा.वि.वि.भा.बिहार में शोध-प्रबंध जमा (परीक्षाफल प्रतीक्षारत)। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्रिका सभमे कविता आ निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे, शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर मे कार्यरत।

(समसामयिक निबंध)

जाग' जाग' महादेव !

मिथिला, अनादिकालसँ धर्म, शिक्षा, साहित्य संस्कृति आदिक विशिष्टताक लेल अद्वितीय रहल अछि। एतय एक-सँ बढ़ि कए एक मुनि, मनीषी, तपस्वी भेल छथि, जिनका सभक उपदेश आ आचरण आइयहुँ ओतबे प्रासंगिक अछि। मुदा अनेकानेक कारणसँ आइ बड़ तीव्र गतिएँ सामाजिक विवर्तन भ' रहल छैक। एहि बदलैत सामाजिक परिस्थितिमे कोन वस्तु आ संस्कार ग्राह्य छैक आ कोन अग्राह्य ताहि विषयकँ ल' क' लोकमे भयंकर द्वन्द्व आ संघर्षक स्थिति उत्पन्न भ' गेल छैक। मूल रूपसँ पाश्चात्यवादी सभ्यताक अन्धानुकरण ओ आन-आन कारणेँ, लोक अपन सभ्यता, संस्कृति, सँ विमुख भेल जा रहल अछि, परिणामस्वरूप, समाजमे भूख, भय, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध, बेरोजगारी आदिक समस्या दिनानुदिन गंभीर भेल जा रहल छैक। लोक एहि सभ समस्यासँ मुक्तिक लेल अपस्यांत अछि, बैचैन अछि। ओकरा कोनो रस्ता नहि भेटि रहल छैक। मानसिक अशांतिक शांतिक लेल लोक भगवानक शरण मे आबि रहल अछि (ओकरा लागै छैक आब यैह टा रस्ता बचि गेल अछि)। यैह कारण अछि आइ जतय देखू ततहि थोकमे धर्मक दोकान खुजि गेल छैक। हमरो संग सैह भेल, विभिन्न प्रकारक विसंगति आ झंझावात तेना ने हमरा नचार क' देलक जे हमहुँ अंततः धर्महिक शरण मे गेलहुँ।

ई संयोगे छल जे ताहिदिन हमरा सभक दिस धर्मक एकटा टटका दोकान खुजल छलैक- जाग' जाग' महादेव! मिथिलाक लेल ई कोनो नव धर्म आ नव संप्रदाय नहि छलैक, हँ, एकटा बात नव अवश्य कहि सकैत छी जे एहिमे बस अहाँ देवाधिदेव महादेवकँ 'गुरू' बना लिअ, आ कि सभ समस्या छू मंतर। हम अपन अनुभव कहि रहल छी, जहिया सँ हम महादेवकँ गुरू बनैलियन्हि हमर सभटा समस्या सरिपहुँ छू-मंतर भेल जा रहल अछि। महादेवमे दम छनि, से हमर धारणा दिनानुदिन दृढ़ भेल जा रहल अछि। यैह कारण थिक जे कतहुँ अबैत-जाइत, माने जतय कतहुँ महादेवक मंदिर, फोटो देखैत छी, मोने-मोन जाग' जाग' महादेव! कह' लागैत छी।

यैह परसूका बात थिक हमरा एक आवश्यक काजे गामसँ सहरसा जयबाक रहय, ने जानि कोन कारणेँ ओहिदिन गाड़ी-घोड़ा बन्न छलैक, हम पयरे चलि देलहुँ। हमरा गामसँ लगभग 10 कि.मी. क दूरी पर महादेवक एकटा मंदिर छैक, बड़ भव्य, प्राचीन आ सिद्ध। गरमीक दिन रहैक, रौद कपारे पर लागैक। सोचलहुँ मंदिरमे जाग' जाग' महादेव ! क' लैत छी, आ कने काल प्रांगणक एहि विशाल बरक गाछतर चबूतरा पर सुस्ता लेब। मंदिरमे माथ टेकि चबूतरा लग आबि बैसि गेलहुँ। हमर मोन कने अशांत रहय तैँ ओतय ध्यानक मुद्रामे बैसि महादेवक स्मरण कर' लागलहुँ, आकि एहन आभास भेल जे सरिपहुँ साक्षात् महादेव हमरा समक्ष आबि गेलाह।

आबितहि पुछलैथ– की यौ शिष्य! की हाल-चाल ?

हम कहलियनि-- हे गुरू! से तँ अहाँ जनिते छी ?

ओ कहलनि-- चिन्ता जुनि करू शिष्य! सभ समाधान भ' जेतैक।

हम कहलियनि-- हे महादेव! जखन अहाँ लग सभ समस्याक एतेक त्वरित उपचार अछि तखन अपनेक एहि संसारमे एतेक प्रकारक रोग-शोक, व्यभिचार, अनाचार, अत्याचार आदि किएक ?

ओ कहलनि-- शिष्य, "मोन चंगा तँ कठौत मे गंगा" अहाँ पहिने हमर अस्तित्वकँ स्वीकार करैत छलहुँ ? नहि ने? मुदा आइ जखन अहाँक मोनक श्रद्धा जागृत भेल तँ देखिये रहल छी जे हम साक्षात् अहाँक समक्ष उपस्थित छी।

हम कहलियनि-- एकर माने भेल जे अहाँ अपन शिष्ये टा पर कृपा करैत छी, वैह टा अहाँक संतान थिक, आ आर सभ ? की ई प्रश्न अहाँक 'जगतपिता' उपाधि पर प्रश्न चिह्न नहि अछि?

ओ कहलिन-- कथमपि नहि शिष्य हमरा लेल सभक मान बरोबरि अछि। जाधरि धर्म आ कर्मक गणितकँ लोक नहि बूझत ताधरि ई समस्या, ई भेद रहबे करतैक। एहिमे

हमर कोन दोख। अहीं जे अपन सभ काज-धन्धा छोड़ि कय एतय दिन-राति जाग' जाग' महादेव! करैत रहब तँ अहाँकेँ की बुझाइत अछि जे महादेव....।

हे महादेव! हमरा सन मन्द-बुद्धि, धर्म आ कर्मक तत्त्वकेँ कोना बुझत? हम तँ बस एक्कहिटा चीज बुझैत छी, महादेव! आर किछु नहि।

बस! बस! बस! अहाँक श्रद्धा, विश्वास आ सत्कर्म सैह थिकाह महादेव, सत्यं शिवं सुन्दरम्।

हे महादेव! ई बूझब तँ हमरालेल आर जटिल भ' गेल, सत्य, सुंदर आ शिव केँ बुझ'क सामार्थ्य हमरा कतय?

अपन संस्कार, संस्कृति, लोकाचार, भाषा-साहित्य, धार्मिक आचरण, आदिकेँ बुझू, यैह सत्य थिक, यैह सुंदर थिक, यैह शिव थिक।

बेस, आब कने-कने बुझलहुँ। हे महादेव! आर सभ छोड़ू एकटा बात बताऊ,

एहि गामक अधिकांश लोकनि पढ़ल-लिखल छथि, ज्ञानी छथि, अपन परंपरा, अपन संस्कारादिक प्रति जागरूक छथि तकर पश्चातो हमरा बुझने कतहुँ ने कतहुँ........।

औ शिष्य! आइ-काल्हि जे जतेक बेसी पढ़ल-लिखल लोक छथि से ततबे बेसी मूर्ख।

ई अहाँ की कहि रहल छी, एहन भ' सकैत अछि जे कखनहुँ-कखनहुँ पढ़लो-लिखलो लोकसँ गलती भ' जाइत छैक, मुदा तकर जतेक परिमाण अहाँ बता रहल छी से बात हमरा नहि पचि रहल अछि।

औ शिष्य! कहब तँ छक द' लागत। ई कोनो गुटका (पान-मसाला) छियैक जे पचि जायत। अहीं कहू, अहाँ जे भरि दिनमे 10 पुड़िया गुटखा खा जाइत छी से कोना? ओहि पुड़िया पर नहि लिखल छैक जे "तम्बाकू चबाना स्वास्थ के लिए हानिकारक है"। हे ओहि महाशयकेँ देखियौक, ओ राजधानीक जानल-मानल डॉक्टर छथि, घंटे-घंटे पर सिगरेट (ओहो किंग साइज) पीबैत छैक, जखन की सभटा सिगरेटक पैकेट पर लिखल रहैत छैक, "धुम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है" एतबे किएक, हे ओमहर ओहि होर्डिंग पर पढ़ियौक- "सिगरेट पीने से कैंसर होता है, जनहित मे जारी, कैप्सटन फिल्टर, आखिरी कश तक मजेदार।"

(हमर माथ शरम सँ झुकि गेल) से जे हो मुदा एहिठामक लोक धर्माचारी आ........।

महादेव- हँ, हँ, से त' अवश्ये, तहिया सँ ठीके आइ काल्हि हमर पूजा पाठ करयबलाक संख्या बढ़ि गेल अछि। मुदा ....।

मुदा की ?

आब लोकमे ओ भाव नहि रहलैक।

आब लोक हमर पूजा कर' नहि अबैयै, हमरासँ 'डील' कर' अबैये।

बुझलहुँ नहि, कने स्पष्ट करू।

की-की सभ स्पष्ट करी शिष्य! सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्थामे घून लागि गेल छैक। एकहकटा जँ फरिछा-फरिछा अहाँकेँ कह' लागी तँ कैक दिन धरि एहिना अहाँ कँ ध्यानमग्न रह' पड़त। जिज्ञासा कएलहुँ अछि तँ लिअ हम किछु 'डील' केर बानगी अहाँकेँ सुना दैत छी.....

एकटा (बालक)--- हे महादेव! बाप कहैत छलाह पढ़'क लेल तँ हम गुल्ली-डंडा खैलयबामे भरि साल मस्त रहलहुँ, एहिबेर कहुना पास करा दिय' तँ ......

एकटा नवयुवक –- हे महादेव! एहिबेर देवघर जयबाकाल हमरा जाहि 'मालबम' सँ परिचय भेल छल तकरहिसँ हमर बियाह करा दिअ तँ.....

एकटा नवयुवती— हे महादेव! अहाँ हमरा कोनो नीक निर्देशकक सिनेमामे माधुरी दीक्षितक 'धक-धक' वला रोल दिआ देब तँ......

दोसर नवयुवती--- हे महादेव! अहाँक देल गेल रूप–गुण सँ संपन्न रहितहुँ हमर बियाह नहि भ' रहल अछि, हमर माय-बाप विक्षिप्त भ' गेल छथि। एहि दुनियाँ सँ सबटा दहेजक दानव कँ एक्कहि दिन उठा लिअ तँ....

एकटा प्रौढ़— हे महादेव! जानैत-बुझैत 'मनीगाछी'क कोठा पर बेर-बेर जाइत रहलहुँ तैँ आइ 'एडस' सन लाईलाज बीमारीसँ ग्रस्त छी—जँ अहाँ हमरा एहि सँ मुक्ति दिया दी तँ....

एकटा बेरोजगार— हे महादेव! पढ़ि-लिखि कए झाम गुड़ैत छी, जँ अहाँ हमरा एकबेर लादेनसँ भेंट करा दी तँ........

एकटा वृद्ध दम्पति- हे महादेव! अपनेक दयासँ हमरा बेटा-पुतोहुकँ कोनो कमी नहि, मुदा हमरा दुनू परानीक पेट ओकरा सभक लेल पहाड़ सदृश छैक। जँ अहाँ हमरा एहि जन्मसँ मुक्ति दिया दी तँ अगिला जनममे ....

एकटा राजनेता— हे महादेव! हमरा पार्टीक सरकार बन'मे एक्केटा सीट घटैत छैक। हम निर्दलीय महाप्रलय सिंह कँ तीन करोड़ टका देब' लेल तैयार छी अहाँ ओकर मति फेरि दिऔक, जँ हमर सरकार बनि गेल तँ.............

एकटा व्याख्याता— हे महादेव! भरि जिनगी चोरि आ जोगाड़क बलेँ नीक अंक सँ पास होइत रहलहुँ आब व्याख्याता छी। छौंडा सभकँ ततेक ने नेतागिरीक चस्का लगा दिऔक जे साल भरि महाविद्यालय आ विश्वविद्यालयमे ताला लटकले रहय। जँ एहन संभव भ' जाय तँ.....

एकटा अछूत-– हे महादेव! एक्के हार-मांस, एक्के खून, तकरा पश्चातो लोक हमरा अछूत बुझैये। हमरा संग जे भेल से भेल हमरा बेटाकँ एहन दंश नहि झेलय पड़य। जँ एहन भ' गेल तँ....

एकटा शराबी --- हे महादेव! पीबैत-पीबैत, सभटा धन-सम्पति स्वाहा भ' गेल। तीन दिनसँ एक्को ठोप नहि भेटल अछि, हम अपन बेटी सुगियाकँ ओहि दारूवाला लग.....जँ एक्को बोतल दिआ दी तँ....

मैथिली (भाषा) – हे महादेव! अहाँ तँ जानिते छी जे हमर गौरव, मान, मर्यादा, कहियो मिथालाकँ के कहए जगत्ख्याति प्राप्त कएने छल, मुदा आइ अपनहि घरमे हम उपेक्षित छी। ओना आइ काल्हि मैथिलीक लेल तथाकथित संघर्षकर्ता लोकानि एतयसँ दिल्ली धरि धरना-प्रदर्शन कर' चलि जाइत छथि, मुदा सबटा फुसि थिक, सबटा मिथ्याडंबर, तँ जाधरि हमरा अप्पन घरमे सम्मान नहि भेटत ताधरि हम अपन गौरवकँ पुनः प्राप्त नहि क' सकैत छी। जँ एहने स्थिति रहलैक तँ भ' सकैछ जे हम कहियो निर्वस्त्र भ' जाएब। हे जगतपति! अहाँ मैथिल लोकनिमे मैथिलीक प्रति नवजागृति आनि दिऔक। एहिसँ अहाँकँ सेहो लाभ हैत-- फेर कवि विद्यापतिक श्रुतिमाधुर्य नचारीसँ अहाँक मंदिरक वातावरण आप्लावित भ' जाएत। हम कंगालिन छी, हमरा अहाँकँ देबाक लेल किछु अछिए नहि, तँ हम की 'डील' करी ! हे महादेव सुतल किएक छी, जागू ! एहि अबलाक व्यथा सूनू-जाग' जाग' महादेव.....

मैथिली ततेक जोरसँ चीकरलीह जे हमर ध्यान दुटि गेल। ने जानि आब कहिया महादेव दर्शन देताह।

२. कुमार मनोज कश्यप



कुमार मनोज कश्यप
जन्म: १९६९ ई मे मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाम मे। स्कूली शिक्षा गाममे आऽ उच्च शिक्षा मधुबनी मे। बाल्य काले सँ लेखनमे आभरुचि। कैक गोट रचना आकाशवानी सँ प्रसारित आऽ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रिय सचिवालयमे अनुभाग आधकारी पद पर पदस्थापित।

हारल मनुक्ख

बरी काल सँ प्रतिक्षा कऽ रहल छलहु बस के। गामक कोनो बस आबिये नहिं रहल छलै। एक तऽ प्रतिक्षा ओहिना कष्टप्रद, तहु मे जेठक दुपहरिया मे। रौद आ पब्लिक ट्रांसपोर्टक स्थिति ---- खिन्न भऽ गेल मोन। समय बितेबाक आर कोनो साधन नहिं देखि, मोन नहिंयो रहैत ठंढा पिबाक लेल बढि गेलहु सामने के रेस्टोरेंट दिस -- छाँह तऽ भेटबे करत, सँगहि प्र्ातिक्षा के घड़ी सेहो बितत। बस एबा मे एखन आधा घंटा सँ कम समय नहिंये लगतैक।

रेस्टोरेंट के तजबीज करैत आगू बढल जाईत छलहु कि केयो रस्ता रोकलक - जिर्ण, मलिन, बृद्ध नहिंयो रहैत बृद्ध सन - लाठी लेने " भैया! दू रुपैया हुअय तऽ दऽ दियऽ, ट्रेकर पकड़ि गाम चल जायब। पायरे नहिं गेल भऽ रहल आछ ।" आबाज मे एकटा संकोचक सँग दयनियता साफ झलकैत छलैक । तखने हमरा आगु मे नाचि गेल भीख माँगबाक नव-नव ढ़ब्र मोन परऽ लागल पढ़ल आ सुनल खिस्सा सभ जे कोना लोक ठका गेल ई सभ ढ़ब परा ओकर याचना के अनसुना करैत हम बढ़ि गेलंहु रेस्टोरेंट दिस ।

बस अयला पर ख़िडकी कात सीट पर बैसि सुभ्यस्त भेलंहु। कने काल मे बस चलि पड़ल। रस्ता कात मे सहसा ककरो पर नजरि पड़ि गेल़ चौंकलंहु - 'ई वैह आदमी तऽ नहिं जे हमरा सँ दू रुपैया मँगैत छल?' दिमाग पर जोर देलहुँ हँ ई तऽ वैह आदमी आछ़क़हुना- कहुना कऽ डेग बढबैत लगभग घिसियैत जँका --चलल जा रहल आछ गंतव्य दिस। ई दृश्य हमरा विचलित करऽ लागल़ हमर अंतरात्मा कचोटि उठल - 'दू रुपैया! मात्र दू रुपैयाक लेल बीमार - असक्क के पायरे जाय पड़ि रहल छैक आ तों मोन नहियो रहैत दस रुपैया ठंढा पी कऽ बर्बाद कऽ देलह! धिक्कार एहन मनुष्यता के!' अपराध बोध सँ हम आकाश दिस देखैत ओकर शून्यता मे विलिन भेल जा रहल छी।

<u>पुस्तक-समीक्षा</u>

<u>१.नो एण्ट्री: मा प्रविश (प्रेमशंकर सिंह, गजेन्द्र ठाकुर) २. उदाहरण (कमलानन्द झा, देवशंकर नवीन)</u>

<u>नो एण्ट्री: मा प्रविश-</u> डॉ उदयनारायण सिंह "नचिकेता"

<u>समीक्षा १.: -प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह</u>

स्वाधीनोत्तर कालावधिमे सांस्कृतिक आऽ साहित्यिक गतिविधिकेँ नव आयाम प्रदान करबामे मिथिलाञ्चलक प्रवासी मातृभाषानुरागी लोकनिक सत्प्रयासक परिणाम आऽ प्रतिफल थिक महानगर कोलकाताक अवदान मैथिली नाटक ओ रंगमंचकेँ नव-दिशा प्रदान करबाक दिशामे जतेक प्रयास कयलक अछि आ वर्तमानमे कऽ रहल अछि ओ निश्चित रूपेँ एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक निर्माण करबामे सराहणीय भूमिकाक निर्वाह कयलक, जाहिसँ मैथिली आऽ मिथिलाञ्चलक विकास-यात्राकेँ अग्रगति करबामे सहायक सिद्ध भेल। एहि महानगरसँ मैथिली काव्य-यात्रामे अपन शैशवावस्थामे प्रवेश कऽ कए, नवचेतनावादक प्रवर्तक बनि कऽ मैथिली नाटक ओ रंगमंचक क्षेत्रमे अपन प्रयोगधर्मिताक कारणेँ एक नव कीर्तिमान स्थापित कयनिहार नाटककारक रूपमे अवतीर्ण भेलाह। बीसम शताब्दीक अष्टम दशकमे प्रयोगधर्मी नाटककार जे स्वयं कुशल अभिनेता सेहो छथि, ओ छथि उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (१९५१) जे एकपर-एक मौलिक प्रयोगधर्मी नाटकक रचना कऽ कए नाटक ओ रंगमंचकेँ एक नव-दिशा देबामे अहं भूमिकाक निर्वाह कयलनि। विगत वर्षान्तिमे हुनक सम्मानमे चेतना समिति पटना द्वारा आयोजित एक समारोहमे हम अपन भाषणमे कहने छलियनि जे काव्यक क्षेत्रमे तँ अहाँ ख्यात प्राप्त कएनहि छी, किन्तु नाटकसँ विमुख नहि होउ आ नाटक लिखू। हमर ओ वाक्य हुनका स्पर्श कयलकनि तकरे प्रतिफल थिक जे एक पैघ अन्तरालक पश्चात् ओ "नो एण्ट्री: मा प्रविश" नाटक लऽ कए मैथिली नाट्य-प्रेमी जनमानसक सम्मुख प्रस्तुत भेलाह अछि जे निश्चित रूपेँ नाटक ओ रंगमंचक निमित्त एक अभिनव घटना कहि सकैत छी।

टी.एस. एलियटक कथन छनि जे वाङमयी कलाक चरम उत्कर्ष तखन देखबामे अबैछ जखन रचनामे नाटकीयता कवित्व दिस झुकल दृष्टिगत हो आ कवित्व नाटकीयता दिस। उपर्युक्त कथनक परिप्रेक्ष्यमे प्रस्तुत नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"क इएह स्वरूप हमरा समक्ष अबैत अछि, जे नाटककार समाजक यथार्थ स्वरूपकेँ प्रस्तुत करबाक उपक्रम कयलनि अछि जाहिमे नाटकीयता आ कवित्व-शक्तिक अद्भुत समन्वयात्मक स्वरूप पाठककेँ उपलब्ध होइत छनि। मनुष्य जन्मजात क्यो नीक वा अधलाह नहि होइछ, प्रत्युत ओकरा समक्ष एहन परिस्थिति आबि कऽ उपस्थित होइछ जाहिसँ वाह्य भऽ कए ओ कर्ममे संलिप्त भऽ कए तदवत् कार्य करैछ, जकर फल ओकरा एही जीवनमे भोगए पड़ैछ। कारण मानवक सर्वोपरि इच्छा रहैछ जे सांसारिक जतेक सुखोपलब्धि थिक तकर उपलब्धि ओकरे हो, किन्तु ओ बिसरि जाइछ जे ओ जेहन कर्म करत तदनुरूपेँ ओकरा फलोपलब्धि सेहो होयतैक।

वैश्वीकरणक फलस्वरूप मानवक इच्छा-शक्तिक एतेक बेसी बलवती भऽ गेल अछि ओ चिर-नूतनताक आग्रही भऽ ओकर अन्वेषणमे लागि, ओकर अनुयायी भऽ कए अपन पुरातन दुःख-दर्द, मान-अपमान, ग्लानि-मर्यादा आदिक इतिहासक पन्नामे ओझरायल रहब श्रेयस्कर नहि बुझैत अछि, अत्याधुनिक परिवेश वा परिस्थितिक कारणेँ उत्पन्न आधुनिकता आ पुरातन पोंगा-पन्थी विचारधारामे वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे समन्वय नहि स्थापित कयल जाऽ सकैछ, कारण मनुष्यक इच्छा शक्ति अनादि आऽ अनन्त थिक तकरा नियन्त्रित करब दुःसाध्य थिक। मनुष्य परिस्थितिसँ प्रेरित भऽ कए अपन मानसिक सुखोपलब्धि निमित्त विश्वक रंगमंचपर उपस्थित भऽ विविध रूपा अभिनय करैछ तकर प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ विविध कलाक प्रदर्शन करैछ तकर परिणाम ओकरा एत्तहि भोगय पड़ैछ, तथापि मानव स्वर्ग-नरकक द्वन्दमे सतत जीवित रहबाक आकांक्षी रहैछ।

प्रयोगधर्मी नाटककार जनमानसमे जे ज्वार आयल अछि, जे लहरि परिव्याप्त भऽ गेल अछि जे ओ अपन अधिकार आऽ कर्तव्यक हेतु एतेक बेसी साकांक्ष भऽ गेल अछि जे ओ सिद्धांतकेँ स्वीकार कऽ कए, ओकर अनुयायी भऽ कए ओ आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे दृष्टिबोध कऽ रहल अछि। मानव-समाजक पुरातन इतिहासपर दृष्टिपात कयलासँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे चाहे सतयुग हो, द्वापरयुग हो, त्रेता युग हो वा कलियुग हो सब समयक प्रामाणिक इतिहास साक्षी थिक जे अत्याचार-अनाचार, दुःख-दर्द, सुख-समृद्धि, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म आदि-आदिक प्रबल आकांक्षी रहल अछि मानव समुदाय। किन्तु आधुनिक युगक सर्वोपरि उपलब्धि थिक देश-प्रेमक अपेक्षा विश्व-प्रेम। एकर परिणाम प्रत्यक्ष अछि जे जनमानससँ लऽ कए राजनीति दल सेहो समन्वयवादी भऽ कए ओकर अनुगामी जकर प्रमाण थिक सम्मिलित सरकार।

प्रस्तुत नाटक एक प्रतीक नाटक थिक, कारण एहिमे सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे एकर कथामुखकेँ उत्थापित कऽ कए प्रतीक योजना नियोजित कयलनि अछि, नाटककार जाहिमे समाजक सब वर्ग यथा चाहे ओऽ चोर हो, उचक्का हो, पाकेटमार हो, नेता हो, अभिनेता हो, कलाकार हो, साहित्यकार हो, बीमा कम्पनीक एजेण्ट हो, प्रेमी-प्रेमिका हो, उच्चवंशीय महिला, अप्सरा हो, नृत्यांगना हो, रद्दी कागज बेचनिहार वा किननिहार हो, नेताक चमचा हो सभक मानसिक पृष्ठभूमिमे प्रवेश कऽ कए नाटककार एक मनोवैज्ञानिक सदृश ओकर साइको-एनालिसिस करबाक उपक्रम कयलनि अछि जे सभक आन्तरिक अभिलाषा रहैछ जे वैह समाजक सर्वश्रेष्ठ प्राणी थिक आऽ स्वर्ग जएबाक अभिलाषाक पूत्यर्थ तद्गत कार्यमे संलिप्त भऽ जाइछ। अन्ततः सब एकत्रित भऽ कए स्वर्गक फाटक लग क्यू लगबैछ, किन्तु चित्रगुप्त द्वारा ओकर कयल गेल कार्य-विवरणी प्रस्तुत कऽ कए पुनः पृथ्वीपर प्रत्यागत हैबाक आदेश दैत छथि आऽ ओतए नो एण्ट्रीक साइन बोर्ड लागि जाइछ आऽ यमराज सेहो प्रत्यागत भऽ जाइछ। इएह द्वन्द्व नाटकमे सर्वत्र दृष्टिगत जे एकर एक नवोपलब्धि थिक।

एहि नाटकक वैशिष्ट्य अछि जे मैथिलीमे प्रथमे-प्रथम ने तँ अंक विभाजन अछि ने दृश्य-विभाजन कयलनि, प्रत्युत सम्पूर्ण नाटककेँ प्रयोगधर्मी नाटककार चारि कल्लोलमे विभाजित कऽ कए वर्तमान समाजक सामाजिक पृष्ठभूमिकेँ समाहित कयलनि अछि जे एहने लहर समाजान्तरगत परिव्याप्त अछि। पत्रोचित भाषाक प्रयोग आऽ छोट-छोट वाक्य-विन्यास, नाटकीयता कवित्व-शक्तिसँ ओत-प्रोत रहलाक कारणेँ ई नाटक दर्शकपर अमिट प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करत से हमर विश्वास अछि। सम्पूर्ण नाटकान्तर्गत अनेक स्थलपर छोट-छोट गेय पदक प्रयोग कऽ कए एकरसताक परिहार करबामे सहायक भेल अछि। नचिकेता स्वयं अभिनेता छथि, तँ मैथिली रंगमंचक यथार्थ स्थितिसँ चिर-परिचित छथि जे मैथिलानी रंगकर्मीक अभाव अछि तँ एहिमे अत्यल्प महिला पात्रकेँ समायोजित कयलनि अछि जे एकर मंचनमे व्यवधान नहि हो। भविष्यमे आर अभिनव प्रयोगधर्मी नाटककारक कृतिक अपेक्षा मैथिली रंगकर्मीकेँ बनल रहत जकर ओऽ पूर्ति करताह।

<u>२. नो एण्ट्री: मा प्रविश- प्रोफेसर उदय नारायण सिंह "नचिकेता"</u>

<u>विवेचना: गजेन्द्र ठाकुर</u>

नचिकेता जीक नाटक *नो एण्ट्री: मा प्रविश* विदेह- ई-पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ लगातार ८ अंकमे पत्रिकाक आठम अंक (तिथि १५ अप्रैल २००८) सँ पन्द्रहम अंक (तिथि १ अगस्त २००८) धरि ई-प्रकाशित भए सम्प्रति प्रेसमे प्रिंटक लेल गेल अछि। आब ई सभटा अंक पी.डी.एफ. रूपमे विदेह आर्काइवमे डाउनलोडक लेल उपलब्ध अछि। लगातार १२० दिन ई नाटक वेबपर रहल आऽ ५० देशक २५० स्थानसँ १५९६० पाठक एकरा पढ़ि चुकल छथि (गूगल एनेलेटिक्स डाटा), आऽ एहिमे आर्काइवसँ विदेहक पुरान अंक डाउनलोड कएल गेल संख्या नहि जोड़ल गेल अछि।

नाटकक कथानक: प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे मुदा धूर्त-समागम अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (वा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतए बहुत रास मुइल लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि। क्यो पथ दुर्घटनामे शिकार भेल बाजारी छथि तँ संगमे युद्दमे मृत भेल सैनिक आऽ चोरि करए काल मारल गेल चोर, उच्चक्का आऽ पॉकिटमार सेहो छथि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागममे जे अति आधुनिक अब्सर्डिटी अछि से *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे सेहो देखऽमे अबैत अछि। प्रथम कल्लोलमे जे बाजारी छथि से पंक्ति तोड़ि आगाँ बढ़ला उत्तर चोर आऽ उचक्का दुनू गोटेकेँ कॉलर पकड़ि पुनः हुनकर सभक मूल स्थानपर दए अबैत छथि। उचक्का जे बादमे पता चलैत अछि जे गुण्डा-दादा थिक मुदा बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैत अछि, अंगा छोड़बाक लेल कहैत अछि। मुदा जखन पॉकेटमार बाजारी दिससँ चोरक विपक्षमे बजैत अछि तखन उच्क्का चक्कू निकालि अपन असल रूपमे

आबि जाइत अछि आऽ पॉकेटमारपर मारि-मारि कए उठैत अछि। मुदा जखन चोर कहैत छनि जे ई सेहो अपने बिरादरीक अछि जे छोट-छीन पॉकेटमार मात्र बनि सकल ओकर जकाँ माँजल चोर नहि, आऽ उच्क्का जेकाँ गुण्डा-बदमाश बनबाक तँ सोचिओ नञि सकल, तखन उच्क्का महराज चोरक पाछँ पड़ि जाइत छथि, जे बदमाश ककरा कहलँह। आब पॉकेटमार मौका देखि पक्ष बदलैत अछि आऽ उच्क्काकेँ कहैत छन्हि जे अहाँकेँ नहि हमरा कहलक। संगे ईहो कहैत अछि जे चोरि तँ ई तेहन करए जनैत अछि जे गिरहथक बेटा आऽ कुकुर सभ चोरि करैत काल पीटैत-पीटैत एतऽ पठा देलक आऽ हमर खिधांश करैत अछि। बड़का चोर भेलाऽ हँ। भद्र व्यक्ति चोरक बगेबानी देखि ई विश्वास नहि कए पबैत छथि जे ओऽ चोर थिकाह। ताहिपर पॉकेटमार, चोर महाराजकेँ आर किचकिचबैत छन्हि। तखन ओऽ चोर महराज एहि गपपर दुख प्रकट करैत छथि जे नहि तँ ओहि राति एहि पॉकेटमारकेँ चोरिपर लए जएतथि आऽ ने ओऽ हुनका पिटैत देखि सकैत। एम्हर बजारी जे पहिने चोर आऽ उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ि घिसिया चुकल छलाह, गुम्म भेल सभटा सुनैत छथि आऽ दुख प्रकट करैत छथि जे एकरा सभक संग स्वर्गमे रहब तँ स्वर्ग केहन होएत से नहि जानि। आब बजारी महराज गीतक एकटा टुकड़ी एहि विषयपर पढ़ैत छथि। जेना धूर्तसमागममे गीत अछि तहिना *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे सेहो एकर एहि स्थलपर प्रारम्भ होइत अछि जे एहि नाटककेँ संगीतक बना दैत अछि। ओम्हर पॉकेटमारजी सभक पॉकेट काटि लैत छथि आऽ बटुआ साफ अए दैत छथि। आब फेर गीतमय फकड़ा शुरू भए जाइत अछि मुदा तखने एकटा मृत रद्दीबला सभक तंद्राकेँ तोड़ि दैत छथि ई कहि जे यमालयक बन्द दरबज्जाक ओहि पार ई बटुआ आऽ पाइ-कौड़ी कोनो काजक नहि अछि। आब दुनू मृत भद्र व्यक्ति सेहो बजैत छथि जे हँ दोसर देसमे दोसर देसक सिक्का कहाँ चलैत अछि। आब एकटा रमणीमोहन नाम्ना मृत रसिक भद्र व्यक्तिक दोसर देसक सिक्का नहि चलबाक विषयमे टीप दैत छथि जे हँ ई तँ ओहिना अछि जेना प्रेयसीक दोसरक पत्नी बनब। आब एहि गपपर घमर्थन शुरू भए जाइत अछि। तखन रमणी मोहन गपक रुखि घुमा दैत छथि जे दरबज्जाक भीतर रम्भा-मेनका सभ हेतीह। भिखमंगनी जे तावत अपन कोरामे लेल एकटा पुतराकेँ दोसराक हाथमे दए बहसमे शामिल भऽ गेल छथि ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की सभ कहैत छथि। मुदा पॉकेटमार कहैत अछि जे भीतरमे सुख नहि दुखो भए सकैत अछि। एहिपर बीमा बाबू अपन कार्यक स्कोप देखि प्रसन्न भए जाइत छथि। आब पॉकेटमार इन्द्रक वज्रपर रुपैय्याक बोली शुरू करैत अछि। एहि बेर बजारी तन्द्रा भंग करैत अछि आऽ दुनू भद्र व्यक्ति हुनकर समर्थन करैत कहैत अछि जे ई अद्भुत नीलामी, जे करबाऽ रहल अछि पॉकेटमार आऽ शामिल अछि चोर आऽ भिखमंगनी, पहिले-पहिल सुनल अछि आऽ फेर संगीतमय फकड़ा सभ शुरू भए जाइत अछि। मुदा तखने नंदी-भृंगी शास्त्रीय संगीतपर नचैत प्रवेश करैत छथि। आब नंदी-भृंगीक ई पुछलापर जे दरबज्जाक भीतर की अछि सभ गोटे अपना-अपना हिसाबसँ स्वर्ग-नरक आऽ अकास-पताल कहैत छथि। मुदा नंदी-भृंगी कहैत छथि जे सभ गोटे सत्य छी आऽ क्यो गोटे पूर्ण सत्य नहि बजलहुँ। फेर बजैत-बजैत ओऽ कहए लगैत छथि क्यो चोरि काल मारल गेलाह (चोर ई सुनि भागए लगैत छथि तँ दु-तीन गोटे पकड़ि सोझाँ लए अनैत छन्हि!) तँ क्यो एक्सीडेन्टसँ आऽ एहि तरहँ सभटा गनबए लगैत छथि, मुदा बीमा-बाबू कोना बिन मृत्यक एतए आयल छथि से हुनकहु लोकनिकेँ नहि बुझल छन्हि! बीमा बाबू कहैत छथि जे ओऽ नव मार्केटक अन्वेषणमे आएल छथि! से बिन मरल सेहो एक गोटे ओतए छथि! भृंगी नंदीकेँ ढ़ेर रास बीमा कम्पनीक आगमनसँ आएल कम्पीटिशनक विषयमे बुझबैत छथि! एम्हर प्रेमी-प्रेमिकामे घोंघाउज शुरू होइत छथि कारण प्रेमी आब घुरि जाए चाहैत छथि। रमणी मोहन प्रेमीक गमनसँ प्रसन्न होइत छथि जे प्रेमिका आब असगरे रहतीह आऽ हुनका लेल मौका छन्हि। मुदा भृंगी ई कहि जे एतएसँ गेनाइ तँ संभव नहि मुदा ई भऽ सकैत अछि जे दुनू जोड़ी माय-बाप(!)केँ एक्सीडेन्ट करबाए एतहि बजबाऽ लेल जाए। मुदा अपना लेल माय-बापक बलि लेल प्रेमी-प्रेमिका तैयार नहि छथि। तखन नंदी भृंगी दुनू गोटेक विवाह गाजा-बाजाक संग कराऽ दैत छथि आऽ कन्यादान करैत छथि बजारी।

दोसर कल्लोल: दोसर कल्लोलक आरम्भ होइत अछि एहि भाषसँ, जे क्यो नेता मरलाक बाद आबएबला छथि, हुनकर दुनू अनुचर मृत भए आबि चुकल छथि आऽ नेताजीक अएबाक सभ क्यो प्रतीक्षा कए रहल छथि, दुनू अनुचर छोट-मोट भाषण दए नेताजीक विलम्बसँ अएबाक (मृत्युक बादो!) क्षतिपूर्ति कए रहल छथि, गीतक योग दए। एकटा गीत चोर नहि बुझैत छथि मुदा भिखमंगनी आऽ रद्दीबला बुझि जाइत छथि, ताहि पर बहस शुरू होइत अछि। चोरकेँ चोर कहलापर आपत्ति अछि आऽ भिखमंगनीकेँ ओऽ भिख-मंग कहैत अछि तँ भिखमंगनी ओकरा रोकि कहैत छथि जे ओऽ सरिसवपाहीक अनसूया छथि, मिथिला-चित्रकार, मुदा दिल्लीक अशोकबस्ती आबि बुझलन्हि जे एहि नगरमे कला-वस्तु क्यो नहि किनैत अछि आऽ चौबटियाक भिखमंगनी बनि रहि गेलीह। चोर कहैत अछि जे मात्र ओऽ बदनाम छथि, चोरि तँ सभ करैत अछि। नव बात कोनो नहि अछि, सभ अछि पुरनकाक चोरि। तकर बाद नेताजी पहुँचि जाइत छथि आऽ लोकक चोर, उच्क्का आऽ पॉकेटमार होएबाक कारण, समाजक स्थितिकेँ कहैत छथि। तखने एकटा वामपंथी अबैत छथि आऽ ओऽ ई देखि क्षुब्ध छथि जे नेताजी चोर, उचक्का आऽ पॉकेटमारसँ घिरल छथि। मुदा चोर अपन तर्क लए पुनः प्रस्तुत होइत अछि आऽ नेताजीक राखल "चोर-पुराण" नामक आधारपर बजारी जी गीत शुरू कए दैत छथि।

तेसर कल्लोल: आब नेताजी आऽ वामपंथीमे गठबंधन आऽ वामपंथी द्वारा सरकारक बाहरसँ देल समर्थनपर चरचा शुरू भए जाइत अछि। नेताजी फेर गीतमय होइत छथि आकि तखने स्टंट-सीन करैत एकटा मुइल अभिनेता विवेक कुमारक अएलासँ आकर्षण ओम्हर चलि जाइत अछि। टटका-ब्रेकिंग न्यूज देबाकक मजबूरीपर नेताजी व्यंग्य करैत छथि। वामपंथी दू बेर दू गोट गप नव गप कहि जाइत छथि, एक जे बिन अभिनेता बनने क्यो नेता नहि बनि सकैत अछि आऽ दोसर जे चोर नेता नहि बनि सकैछ (ई चोर कहैत अछि) मुदा नेता सभ तँ चोरि करबामे ककरोसँ पाछाँ नहि छथि। तखने एकटा उच्च वंशीय महिला अबैत छथि आऽ हुनकर प्रश्नोत्तरक बाद एकटा सामान्य क्यूक संग एकटा वी.आइ.पी.क्यू बनि जाइत अछि। अभिनेता, नेता आऽ वामपंथी सभ वी.आइ.पी.क्यूमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि! ई पुछलापर की कतार किएक बनल अछि ताहिपर चोर-पॉकेटमार कहैत छथि जे हुनका लोकनिकेँ पंक्ति बनएबाक (आऽ तोड़बाक सेहो) अभ्यास छन्हि।

चतुर्थ कल्लोल: यमराज सभक खाता-खेसरा देखि लैत छथि आऽ चित्रगुप्त ई रहस्योद्घाटन करैत छथि जे एक युग छल जखन सोझाँक दरबज्जा खुजितो छल आऽ बन्न सेहो होइत छल। नंदी भृंगी पहिनहि सूचित कए देलन्हि जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नहि मात्र बुझबाक दोष छल। दरबज्जाक ओहिपार की अछि ताहि विषयमे सभ क्यो अपना-अपना हिसाबसँ अनुभवक उत्तर दैत छथि। चित्रगुप्त कहैत छथि जे ई सभटा छैक ओहिपार। नंदी-भृंगी सूचित करैत छथि जे एहि गेटमे प्रवेश निषेध छैक, नो एण्ट्री केर बोर्ड लागल छैक। आहि रे ब्बा! आब की होए! नेताजीकेँ पठाओल जाइत छन्हि यमराजक सोझाँ, मुदा हुनकर सरस्वती ओतए मन्द भए जाइत छन्हि। बदरी विशाल मिश्र प्रसिद्ध नेताजी केर खिंचाई शुरू होइत छन्हि असली केर बदला सर्टिफिकेट बला कम कए लिखाओल उमरिपर। पचपन बरिख आयु आऽ शश योग कहैत अछि जे सत्तरि से ऊपर जीताह से ओऽ आऽ संगमे मृत चारू सैनिककेँ आपिस पठा देल जाइत अछि। दूटा सैनिक नेताजीक संग चलि जाइत छथि आऽ दू टा अनुचर सेहो जाए चाहैत अछि। मुदा नेताजीक अनुचर सभक अपराध बड़ भारी से चित्रगुप्तक आदेशपर नंदी-भृंगी हुनका लए कराड़ीमे भुनबाक लेल बाहर लए जाइत छथि तँ बाँचल दुनू सैनिक हुनका पकड़ि कैँ लए जाइत छथि आऽ नंदी-भृंगी फेर मंचपर घुरि अबैत छथि। तहिना तर्कक बाद प्रेमी-प्रेमिका, दुनू भद्र पुरुष आऽ बजारीकेँ सेहो त्राण भेटैत छन्हि ढोल-पिपहीक संग हुनका बाहर लए गेल जाइत अछि। आब नन्दी जखन अभिनेताक नाम विवेक कुमार उर्फ...बजैत छथि तँ अभिनेता जी रोकि दैत छथि जे कतेक

मेहनतिसँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़ि सकल अछि, से उर्फ तँ छोड़िए देल जाए। वामपंथी गोष्ठीक अभिनेता द्वारा मदति केर विवरणपर वामपंथी प्रतिवाद करैत छथि। हुनको पठा देल जाइत छनि। वामपंथीक की हेतन्हि, हुनकर कथामे तँ ने स्वर्ग-नर्क अछि आऽ ने यमराज-चित्रगुप्त। हुनका अपन भविष्यक निर्णय स्वयं करबाक अवसर देल जाइत छन्हि। मुदा वामपंथी कहैत छथि जे हुनकर शिक्षा आन प्रकारक छलन्हि मुदा एखन जे सोझाँ घटित भए रहल छन्हि ताहिपर कोना अविश्वास करथु? मुदा यमराज कहैत छथि जे भऽ सकैत अछि , जे अहाँ देखि रहल छी से दुःस्वप्न होए, जतए घुसए जाएब ओतए लिखल अछि *नो एण्ट्री*। आब यमराज प्रश्न पुछैत छथि जे विषम के, मनुक्ख आकि प्रकृति? वामपंथी कहैत छथि जे दुनू, मुदा प्रकृतिमे तँ नेचुरल जस्टिस कदाचित् होइतो छैक मुदा मनुक्खक स्वभावमे से गुन्जाइश कहाँ? मुदा वामपंथी राजनीति एकर प्रयास करैत अछि। ताहिपर हुनका संग चोर-उचक्का आऽ पॉकेटमारकेँ पठाओल जाइत अछि ई अवसर दैत जे हिनका सभकेँ बदलू। चोर कनेक जाएमे इतस्तः करैत अछि आऽ ई जिज्ञासा करैत अछि जे हम सभ तँ जाइए रहल छी मुदा एहिसँ आगाँ? नंदी-चित्रगुप्त-यमराज समवेत स्वरमे कहैत छथि- नो एण्ट्री। भृंगी तखने अबैत छथि, अभिनेताकेँ छोड़ने। यमराज कहैत छथि मा प्रविश। भृंगी नीचाँमे होइत चरचाक गप कहैत अछि जे एतुक्का निअम बदलल जएबाक आऽ कतेक गोटेकेँ पृथ्वपर घुरए देल जएबाक चरचा सर्वत्र भए रहल छथि। यमदूत सभ अनेरे कड़ाह लग ठाढ़ छथि क्यो भुनए लेल कहाँ भेटल छन्हि (मात्र दू टा अनुचर)। आब क्यो नहि आबए बला बचल अछि, से सभ कहैत छथि। चित्रगुप्त अपन नमहर दाढ़ी आऽ यमराज अपन मुकुट उतारि लैत छथि आऽ स्वाभाविक मनुक्ख रूपमे आबि जाइत छथि! मुदा चित्रगुप्तक मेकप बला नमहर दाढ़ी देखि भिखमंगनी जे ओतए छलीह, हँसि दैत छथि। भृंगी उद्घाटन करैत छथि जे भिखमंगनी हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि! कोन अभिनय, तकर विवरण मुहब्बत आऽ गुदगुदीपर खतम होइत अछि तँ भिखमंगनी कहैत छथि जे नहि एहि तरहक अभिनय तँ ओतए भऽ रहल अछि। ओत्तऽ रमणी मोहन आऽ उच्चवंशीय महिला निभाक रोमांस चलि रहल अछि। मुदा निभाजी तँ बजिते नहि छथि। भिखमंगनी यमराजसँ कहैत छथि जे ओऽ तखने बजतीह जखन एहि दरबज्जाक तालाक चाभी हुनका भेटतन्हि, बुझतीह जे अपसरा बनबामे यमराज मदति दए सकैत छथि, ई रमणीक हृदय थिक एतहु नो एण्ट्री! यमराज खखसैत छथि, तँ चित्रगुप्त बुझि जाइत छथि जे यमराज "पंचशर"सँ ग्रसित भए गेल छथि! चित्रगुप्तक कहला उत्तर सभ क्यो एक कात लए जायल जाइत छथि मात्र यमराज आऽ निभा मंचपर रहि जाइत छथि। यमराज निभाक सोझाँ सुनू ने निभा... कहि रुकि जाइत छथि। सभक उत्साहित कएलापर यमराज बड़का चाभी हुनका दैत छथि, मुदा निभा चाभी भेटलापर रमणी मोहनक संग तेना आगाँ बढ़ैत छथि जेना ककरो अनका चिन्हिते नहि होथि! ओऽ चाभी रमणी मोहनकेँ दए दैत छथि मुदा ओऽ ताला नहि खोलि पबैत छथि। फेर निभा अपने प्रयास करए लेल आगाँ बढ़ैत छथि मुदा चित्रगुप्त कहैत छथि जे ई मोनक दरबज्जा थिक, ओना नहि खुजत। महिला ठकए लेल चाभी देबाक बात कहैत छथि। सभ क्यो हँसी करैत छनि जे मोन कतए छोड़ि अएलहुँ? ताहिपर एकबेर पुनः रमणी मोहन आऽ निभा मोन संजोगि कए ताला खोलबाक असफल प्रयास करैत छथि। नंदी-भृंगी-भिखमंगनी गीत गाबए लगैत छथि जकर तात्पर्य ईएह जे मोनक ताला अछि लागल, मुदा ओतए अछि नो एण्ट्री। मुदा ऋतु वसन्तमे प्रेम होइछ अनन्त आऽ करेज कहैत अछि मैना-मैना, तँ एतहि नो एण्ट्री दरबज्जापर धरना देल जाए।

विवेचन: भारत आऽ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक "नाट्यशास्त्र" आऽ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक "काव्यशास्त्र"।

भरत नाट्यकेँ "कृतानुसार" "भावानुकार" कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि।

अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आऽ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आऽ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जाएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होए से आवश्यक नहि, नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि तँ कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आऽ नहिए कोनो प्रासांगिक, कारण एहिमे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नहि अछि। जे बजारी उच्चक्काकेँ कॉलर पकड़ैत छथि से कनेक कालक बाद गौण परि जाइत छथि। जाहि उच्चक्काक सोझाँ चोर सकदम रहैत अछि से किछु कालक बाद, किछु नव नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थर्रेने छथि से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आऽ निभा सेहो हुनका आऽ चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। वामपंथीक आऽ अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आऽ रिबाउन्ड करैत छथि।

कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आऽ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आऽ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आऽ यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आऽ भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि! मात्र यमराज आऽ चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बद्ध नहि अछि आऽ इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आऽ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबसँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना आदि जाहि सरलताक संग फ्लोमे अबैत अछि जे ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जाएत। फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आऽ इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मनैत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश कैँ काल्पनिकमूलक श्रेणीमे एहि हिसाबसँ राखल जाएत। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र, ग्रशस्वी आऽ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे जे चरित्र सभ छथि ताहिमे सभ चरित्रमे सत् असत् केर मिश्रण अछि। निभा उच्चवंशीय छथि मुदा रमणी मोहन जे बलात्कारक बादक पिटाई केर बाद मृत भेल छथि हुनकासँ हिलि-मिलि जाइत छथि। भिखमंगनी मिथिला चित्रकार अनसूया छथि। दुनू भद्रपुरुष बजारी आऽ चारू सैनिक एहि प्रकारेँ बिन कलुषताक सोझाँ अबैत छथि। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आऽ ईर्ष्यालूकेँ

धीरोद्धत्त कहैत छथि। बजारी आऽ दुनू भद्रपुरुष संगीतक बेश प्रेमी छथि तँ रमणी मोहन प्रेमी-प्रेमिकाकेँ देखि कए ईर्ष्यालू, सैनिक सभ शान्त छथि क्षत्रियोचत गुण सेहो छन्हि से धीरोदत्त आऽ धीरप्रशान्त दुनू छथि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि प्रकारक विभाजन सम्भव नहि अछि।

भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आऽ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत छथि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांत आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आऽ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे उलझन अबैत अछि, अन्तिम दू मे सुलझन।

कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आऽ कार्य अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे बीया अछि एकटा द्वन्द मृत्युक बादक लोकक, बीमा एजेन्ट एतए बिनु मृत्युक पहुँचि जाइत छथि। यमराज आऽ चित्रगुप्त मेकप आर्टिस्ट निकलैत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आऽ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे ओऽ धरणापर खतम भए जाइत अछि! अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आऽ अवसान कहैत छथि। आब आऊ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आऽ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आऽ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आऽ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आऽ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आऽ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आऽ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मुख/ प्रतिमुख आऽ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आऽ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आऽ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दुइये घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होए आऽ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होय। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कल्लोलक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आऽ नव कार्यारम्भमे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आऽ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओऽ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि अबैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आपसी गपशपमे- जकरा फ्लैशबैक सेहो कहि सकैत छी- ककर मृत्यु कोना भेल से नीक जेकाँ दर्शित कएल गेल अछि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आऽ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आऽ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे पहिल कल्लोलक प्रारम्भमे ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एतए दृश्यत्वकेँ प्रधानता देल गेल अछि। पश्चिमी रंगमंच नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भारतीय विधानकेँ अंगीकृत कएल गेल- जेना मृत्यु प्राप्त सभ गोटे द्वारा स्वर्ग प्रवेश द्वारक अदृश्य देबाड़क गपशप आऽ अभिनय कौशल द्वारा स्पष्टता। अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आऽ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल। नो एण्ट्री: मा प्रविश मैथिलीक परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ने अछि मुदा संगहि इतिहास, पुराण आऽ समकालीन जीवनचक्रकेँ देखबाक एकटा नव दृष्टिकोण लए आएल अछि, सोचबाऽ लए एकटा नव अंतर्दृष्टि दैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक "नायकक नाम जीवन, एक छल राजा", श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एण्ट्री: मा प्रविश तार्किकता आऽ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। वामपंथीकेँ यमराज ईहो कहैत छथिन्ह, जे वामपंथी देखि रहल छथि से सत्य नहि सपनो भए सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आऽ वामपंथी सेहो कहैत छथि कि चोर नेता नहि बनि सकैत छथि मुदा नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृति मारल जाए बला छन्हि। नाटकमे आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आऽ नीक-खराबक भावना रहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। यमराज आऽ चित्रगुप्त तक मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आऽ चरित्र सभक नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि अछि। यदि अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचए बला विद्यमान छथि। कारण, नियन्त्रण आऽ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आऽ नारीवादी दृष्टिकोण आऽ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि।

एहि तरहेँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण दर्शित होइत अछि, एतए पाठक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द नाटकक अंतमे दर्शित भेल से उत्तर-आधुनिक युगक पाठककेँ आश्चर्यित नहि करैत छन्हि, किएक तँ ओऽ दैनिक जीवनमे एहि तरहक द्वन्दक नित्य सामना करैत छथि।

ई नाटक मैथिली नाटक लेखनकेँ एकटा नव दिशामे लए जाएत आऽ आन विधामे सेहो नूतनता आनत से आशा कए सकैत छी।

२. उदाहरण

पुस्तकक नाम - उदाहरण

सम्पादक - देवशंकर नवीन

प्रकाशक - प्रकाशन विभाग

सूचना और प्रसारण मन्त्रालय

भारत सरकार

पृष्ठ - २७४

मूल्य - २०० टाका मात्रा

१.कमलानन्द झा,हिन्दी विभाग,सी.एम. कॉलेज,दरभंगा

मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन : उदाहरण

पछिला चारि बर्खमे कोनो पैघ आ महत्वपूर्ण प्रकाशनसँ मैथिलीक तीन गोट कथा-संकलनक प्रकाशन मैथिली भाषा लेल एकटा शुभ-संकेत मानल जा सकै'छ। नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा सम्पादित मैथिली कथा संचयन(सन् २००५) आ सन् २००७मे तारानन्द वियोगी द्वारा सम्पादित देसिल बयना(सन् २००७) पाठकक बीच लोकप्रिय भ'ए रहल छल कि प्रकाशन विभागसँ देवशंकर नवीन द्वारा सम्पादित टटका मैथिली कथा-संग्रह उदाहरण छपि क' आबि गेल। प्रसन्नताक बात थिक जे उदाहरणक प्रकाशनसँ प्रकाशन विभागमे साहित्यिक रचनाक प्रकाशनक बाट फूजल, जे स्वागत योग्य अछि।

उदाहरणमे ललितसँ सियाराम सरस धरिकक कुल छत्तीस गोट कथा संकलित अछि। एहि संकलनसँ मैथिली कथा-संसारक परिदृश्य स्पष्ट होइत अछि। संकलनक कतोक कथा समस्त भारतीय भाषासँ कान्ही मिलान लेल तत्पर अछि, जे संकलनकर्त्ताक चयनकौशलक सूचक थिक। श्रेष्ठ कथाकार राजकमल चौधरीक कथा ÷एकटा चम्पाकली एकटा विषधर' घाघ मैथिल समाजक टोप-टहंकारकें अद्भुत रूपें अनावृत्त करैत अछि। सवर्ण मैथिलक गरीबी, ओहि गरीबीसँ उत्पन्न दयनीयता, आ तकर खोलमे दुबकल बेटीक शातिर माइ-बापक घिनौन आचरण घनघोर तनावक संग पाठककें झकझोरैत अछि। दशरथ झा आ हुनकर घरबाली अपन तेरह बर्खक बेटी चम्पाक विवाह बासैठ बर्खक वृद्ध शशि बाबू संग करेबाक षड्यंत्रापूर्ण योजना बनबैत अछि। दुनू प्राणीक गिद्ध दृष्टि शशि बाबूक सम्पति पर टिकल छनि, जकर मलिकाइन विवाहोपरान्त हुनक तेरह वर्षीया चम्पा बनैबाली छनि। अतिशयोक्ति सन लगैबला एहि घटनाक मर्मकें ओएह बूझि सकत जे मिथिलांचलक बहुविवाह प्रथासँ नीक जकाँ परिचित छथि। बीसम-एकैसम विवाहक बाद पति अपन पूर्व पत्नी सभक मुँहो बिसरि जाइ छलाह।

पत्राकारिता दुनियाक महत्वपूर्ण आ सम्वेदनशील पक्षसँ मायानन्द मिश्रक कथा ÷भए प्रकट कृपाला' साक्षात्कार करबैत अछि। मीडिया-तन्त्रा पर बनल सार्थक हिन्दी सिनेमा ÷पेज श्री' जे किओ देखने छथि, से एहि कथाक मर्मकें बेसी नीक जकाँ बुझि सकै छथि। शीघ्रतासँ नामी पत्राकार बनि जाएबाक हड़बड़ीकें कथामे कलात्मक ढंगसँ एकेरल गेल अछि। कॉरपोरेट दुनियाँक बादशाह श्याम बोगलाक मृत्युक खबरि सबसँ पहिने देबाक होड़ लागल अछि। पत्राकार लोकनिक नजरिमे ओएह सभसँ पैघ खबर अछि, दुनियामे किछु भ' जाउ।

लिलीरे मैथिलीक सशक्त कथालेखिक छथि। हुनकर कथा ÷विधिक विधान'मे कामकाजी स्त्रीक संघर्षकें यथार्थतः देखबाक, आ यथार्थक मर्मकें कलात्मक कौंध संग उभारबाक सफल चेष्टा अछि। उषाकिरण खान अपन कथा ÷त्यागपत्रा'मे ग्रामीण युवतीक अदम्य जिजीविषाकें व्यक्त करबामे पूर्ण सफल नहि भ' सकलीह। घोर आदर्शवादी आ कठोर अनुशासित परिवारमे पालित-पोषित चम्पा कॉलेजमे पढ़' चाहैत अछि, अपन मर्जीसँ विवाह कर' चाहैत अछि। मुदा आजीवन विवाह नहि करबाक घोषणा करैत चम्पा स्वयंकें ओही परंपराक केंचुलमे समेटि लैत अछि। चम्पा विवाहक लक्ष्मण रेखा पार करैत ÷और भी ग़म हैं' कें आधार मानि अपन व्यक्तित्वकें विस्तृत आयाम नहि द' पबैत अछि। मनमोहन झाक कथा ÷फयदा'मे स्त्री जातिक मोलभाव बला प्रवृत्तिक रेखांकन खूब जमल अछि, मुदा वो एहि प्रवृत्तिक वर्णन क' स्त्री जाति कोन पक्षक उद्घाटन करै छथि, से बूझब कठिन। कोनो व्यक्तिक स्वभावमे नीक आ खराब दूनू भाव रहैत अछि। कथाक हेतु कोन तरहक भावक चुनाव कयल जाए, ई महत्वपूर्ण अछि। इएह चुनाव मैथिली कथामे स्त्री चेतनाक दर्शन करा सकैत अछि।

स्त्रा◌ी चेतनाक दृष्टिएं प्रदीप बिहारीक कथा ÷मकड़ी' अपेक्षाकृत मेच्योर्ड आ बोल्ड कथा कहल जा सकैछ। बेराबेरी कथानायिका सुनीता दू बेर विवाह करैत अछि, दुनू बेर ओकर पति मरि जाइछ, मुदा ओ जिनगीसँ हारि नहि मानैत अछि। सिलाई मशीन चला क' ओ गुजर-बसर करैत अछि। एतबे नहि, ओ एकटा अनाथ आ बौक बच्चाक लालन-पालनक दायित्व ल' क' अपन व्यक्तित्वकें विस्तार दैत अछि। कथामे मोड़ तखन अबैत अछि जखन ओ बौका समर्थ भेला पर सुनीताक स्वीकृतियेसँ सही, ओकरा गर्भाधान क' क' भागि जाइत अछि। सुनीताकें एहि बातक अपराधबोध नहि छै, जे ओ बौका संग किऐ ई कृत्य

केलक, ओ देहक विवशतासँ परिचित अछि, मुदा बौकाक भागि जेबाक दंश ओकरा व्यथित करै छै। देवशंकर नवीनक कथा ÷पेंपी' पति-पत्नीक सम्बन्ध विच्छेदक परिणामस्वरूप बेटीक मनोमस्तिष्क आ व्यक्तित्व पर पड़ैबला कुप्रभाव आ बेहिसाब उपेक्षाभावकें करुणापूर्ण ढंगसँ व्यक्त करैत अछि। मुदा एहिमे सभटा दोष स्त्रा◌ी पर फेकि देब पूर्वाग्रह मानल जा सकैछ। ई सामाजिक सत्य नहि भ' सकैत अछि। वरिष्ठ कथाकार राजमोहन झा अत्यंत कुशलतापूर्वक ÷भोजन' कथाक बहन्ने स्त्रा◌ीक बाहर काज करबाक विरोध क' जाइत छथि। राजमोहनजीक दक्षता इएह छन्हि जे ई सभ बात कहिओ क' ओ प्रगतिशील बनल रहै छथि।

राजकमल चौधरीक ÷एकटा चम्पाकली एकटा विषधर', धूमकेतुक ÷भरदुतिया', गंगेश गुंजनक ÷अपन समांग'(ई कथा देसिल बयनामे सेहो संकलित अछि), तारानन्द वियोगीक ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' आ अशोकक ÷तानपूरा' एहि संग्रहक श्रेष्ठ कथा मानल जा सकैछ। धूमकेतुक कथा ÷भरदुतिया' व्यक्ति स्वार्थ हेतु भाई-बहिनक पावन पाबनिक दुरुपयोग करबैत देखबैत अछि। आजुक मनुख अहू पाबनिकें नहि छोड़लक। ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' वियोगीक सफल राजनीतिक कथा कहल जा सकैछ। कथाक ई निष्पति एकदम ठीक लगैत अछि जे सवर्णक पार्टी एहि दुआरे जीतैत रहल जे निम्नजातिक आर्थिक स्थित बहुत खराब छल। स्वामीक पार्टी दासोक पार्टी होइछ। दोसर पार्टीक मादे सोचब मृत्युकें आमन्त्राण देब छल। आओर नइं किछु त' आवास आ रोजगार छीनि बेलल्ला बना देब उच्चवर्गक हेतु बाम हाथक काज छल। दिल्ली-पंजाब प्रवासँ निम्नवर्गक आर्थिक, सामाजिक स्थितिमे सुधार भेल। परिणामस्वरूप ओहि वर्गमे आत्मसम्मान आ राजनीतिक चेतनाक अंकुरण भेल। भक्तिकाव्यक उन्मेष आ ओहिमे निम्नजातिक कविक बाहुल्यक पृष्ठभूमिमे सुप्रसिद्ध इतिहाकार इरफमान हबीब मुगलकालीन विकास कार्यकें लक्षित केलनि अछि। ÷पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' कथाक विलक्षणता बिहारमे बनल निम्नजातिक पार्टीक आत्मालोचन थिक। कहबा लेल त' ई पार्टी निम्नजातिक-निम्नवर्गक छल, मुदा अइ पार्टीमे छल, प्रपंच, भ्रष्टाचार, अपराध आओर पाखण्ड पहिनहुँसँ तेजगर और धारदार भ' गेल छल। कथाकारक इएह द्वन्द्व कथाकें गरिमा प्रदान करैछ। चाहक दोकान चलबैबला मुदा बहुत प्रारम्भहिसँ सक्रिय मूल्यपरक राजनीति करैबला हीरा महतोक धैर्य जखन संग छोड़ि दै छनि त' ओ पार्टी प्रमुख बासुदेव महतो पर बिफरैत कहै छथि-- रे निर्लज्जा, एतबो सरम कर! जे कुकर्म करै छैं से अपन करैत रह, लेकिन एना समाजमे नइं कहिए जे कुकर्मे करब ठीक छिऐ। एतबो रहम कर बहिं...।"

अशोकक कथा ÷तानपूरा' मध्यवर्गीय हिप्पोक्रेसीक घटाटोपकें तार-तार क' देबामे पूर्ण सफल भेल अछि। बिना कोनो उपदेश आ नैतिक आग्रहक कथा मध्यवर्गीय कुत्सित मानसिकताक दुर्ग भेदन करैत अछि। कथानायक विनोद बाबूक संगीत-प्रेमकें हुनक पिता घोर अभाव आ द्ररिद्◌्रयक बीच जेना-तेना पूरा करैत छथि, मुदा जखन विनोद बाबूक पुत्रा संगीत सिखबाक इच्छा प्रकट करै छनि त' दुनू प्राणीकें साँप सूँघि जाइत छनि। एहि दुआरे नहि, जे हुनका कोनो तरहक अभाव छनि। बल्कि एहि दुआरे जे संगीतक स'ख हुनक बेटाकें रुपैया कमबैबला मशीन नहि बना सकत। जे दम्पति कोनो विषय पर कहियो एकमत नहि भेल, एहि विषय पर एकमत भ' पुत्राक एहि अव्यावहारिक स'ख'क केठ मोंकबाक साजिशपूर्ण योजना बनबए लगै छथि।

संग्रहक किछु कथा जेना अवकाश, अयना, खान साहेब, जंगलक हरीन आदि यथार्थक मोहमे शुष्क गद्य बनि क' रहि गेल अछि। एहिमे किछु कथा ततेक सरलीकृत भ' गेल अछि जे ओ नवसाक्षर हेतु लिखल कथा बुझि पडै+छ। एहन कथा सभक मूल संरचना इतिवृत्तात्मक अछि। यद्यपि इतिवृत्त कोनो कथाक सीमा नहि होइछ, मुदा जखन कोनो कथा घटनाक स्थूल आ तथ्यात्मक विवरण टा दैछ, कथामे समय वा क्षणक मर्म नहि आबि पबैछ, त' एहन इतिवृत्त निपट गद्य बनि क' रहि जाइछ। यथार्थ कोनो कथाकें विश्वसनीयता देबाक बदलामे ओकरा भीतरसँ संवेदना निचोड़ि अनैत अछि, कथाकें प्रमाणिक बनेबाक फेरमे पड़ल नहि रहैत अछि। कथाकार रमेश अपन कथा ÷नागदेसमे अयनाक व्यवसाय'मे अतियथार्थ आ इतिवृत्तक फ्रेमकें तोड़ि प्रतीक वा फैंटेसीक प्रयोगसँ कथा बुनबाक प्रयास त' केलनि, मुदा कथाक विन्यासमे एकरसता आबि गेल। एहि फ्रेम हेतु हमरा लोकनिकें राजस्थानी कथाकार विजयदान देथा(दुविधा) आ हिन्दी कथाकार उदय प्रकाश (वारेन हेस्टिंग्स का सांढ़) आदिकें पढ़बाक चाही। हिनका लोकनिक कथा यथार्थक फ्रेमकें तोड़ियो क' यथार्थ बनल रहल अछि।

मैथिलीमे प्रकाशित उक्त तीनूँ कथा संकलनसँ मैथिली कथाक प्रसार राष्ट्रीय स्तर पर भ' रहल अछि, एहिमे दू मत नहि। मुदा उक्त संकलनकें पढ़ि

आम पाठकक राय इएह बनत जे मैथिलीमे कुल इएह तीस-चालीस गोट कथाकार आइ तक भेलाहे। कारण तीनूँ संग्रहमे कथाकारक सूचीमे अद्भुत साम्य अछि। कथा पढ़ि बुझना जाइछ जे कथा चयनमे कथाक अपेक्षा कथाकारकें महत्व देल गेल अदि। ई कहब सर्वथा अनुचित जे संकलनक कथाकार महत्वपूर्ण नहि छथि, मुदा अन्य श्रेष्ठ कथाकें सेहो प्रकाशमे अएबाक प्रयास हेबाक चाही। हमरा लोकनि ई नीक जकाँ जनै छी जे मैथिलीमे श्रेष्ठ कथाक अभाव नहि अछि। किन्तु प्रकाशनक अभावमे पत्रा-पत्रिाकाकें छानि मारब कठिनाहे नहि समय-साध्य कार्य थिक। वैद्यनाथ मिश्र यात्रा◌ीक पहिचान भने श्रेष्ठ कविक रूपमे छनि, मुदा हुनकर मैथिली कथा ÷चितकबड़ी इजोरिया' आ ÷रूपांतर' कतोक दृष्टिएं महत्वपूर्ण अछि। रेणुजी सेहो मैथिली कथा लिखलनि अछि। ई दीगर बात थिक जे बादमे ओ हिन्दिए टामे लिखए लगलाह। ÷नेपथ्य अभिनेता' आ ÷जहां पमन को गमन नहीं' आदि लीकसँ हटि क' लिखल गेल कथा थिक। ÷उदाहरण'मे कथाक प्रकाशन वर्ष आ सन्दर्भक अनुपस्थिति खटकैत अछि। समय-सीमा जनने बिना कोनो कथाक सम्यक मूल्यांकन सम्भव नहि। नवीनजी सदृश दक्ष आ अनुभवी सम्पादकसँ ई आशा नहि कएल जा सकै छल। एहि कमीकें

पूरा करैत अछि हुनकर चौदह पृष्ठीय भूमिका। सम्पादक मैथिली कथाक सीमा आ सम्भावनाक विस्तृत पड़ताल अपन एहि भूमिकामे केलनि अछि। मैथिली कथाक इतिहासकें बुझबा लेल ई भूमिका निश्चित रूपें रेखांकन योग्य अछि।

२.देवशंकर नवीन-अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता

मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत तकैत दूर धरि नजरि जाइत अछि, सबसँ पहिने देखाइत अछि जे उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक, गम्भीर चिन्तन-मनन करबाक, छोट-सँ-छोट बात पर पर्याप्त विचार-विमर्श करैत निर्णय लेबाक प्रथा मिथिलामे पुरातन कालसँ अबैत रहैत रहल अछि। मुदा तकर अतिरिक्त ÷परसुख देबामे परमसुख'क आनन्द लेबाक आ जीवनक हरेक आचार एवं आचरणमे लयाश्रित रहबाक अभ्यास मैथिल जनकें निकेनाँ रहलनि अछि। स्वयं कष्ट सहिओ क', अपन सब किछु गमाइओ क', दोसरकें अधिकसँ अधिक प्रसन्नता देबाक आदति मिथिलामे बड़ पुरान अछि। प्रायः इएह कारण थिक जे अतिथि सत्कारमे मिथिलाक लोक अपना घरक थाड़ी-लोटा धरि बन्हकी राखि देलनि। दोसरकें सम्मान देबामे मैथिल नागरिक बढ़ि-चढ़ि कए आगू रहल अछि। भनसियाक काज कर'बला व्यक्तिकें महराज अथवा महराजिन, केस-नह-दाढ़ी-मोंछ साफ कर'बला व्यक्तिकें ठाकुर-ठकुराइन, घर-आँगनमे नौरी-बहिकिरनी आ सोइरी घ'रमे परसौतीक काज करबाब'वाली स्त्राीकें दाय कहि

क' सम्बोधित करबाक प्रथा मिथिलामे एहने धारणासँ रहल होएत। ध्यान देबाक थिक जे मिथिलामे दादीकें, जेठ बहिनकें आ घ'रक अत्यधिक दुलारि बेटीकें दाय कहबाक परम्परा अछि।

अध्ययन, चिन्तन, मननक प्रथा मिथिलामे बड़ पुरान अछि। मुदा ई सत्य थिक जे अशिक्षेक कारणें मिथिला एतेक पछुआएलो रहल। गनल गूथल जे व्यक्ति अध्ययनशील भेलाह, से अत्यधिक पढ़लनि, जे नहि पढ़ि सकल, से अपन रोजी-रोटीमे लागल रहल। रोजी-रोटीक एक मात्रा आधार कृषि छल। विद्वान लोकनिक गम्भीर बहसमे बैसबाक अथवा ओहिमे हिस्सा लेबाक तर्कशक्ति, बोध-सामर्थ्य, आ पलखति रहै नहि छलनि, तें जे उपदेश देल जाइन, तकरा आर्ष वाक्य मानि अपन जीवन-यापनमे मैथिल लोकनि तल्लीन रहै छलाह। ईश भक्तिक प्रथा अहू कारणें मिथिलामे दृढ़ भेल। मानव सभ्यताक इतिहास कहै'ए जे प्रकृति-पूजन, नदी-पहाड़-भूमि-वृक्ष-पशु आदिक पूजन एहि करणें शुरुह भेल जे प्रारम्भिक कालमे जीवन-रक्षाक आधार इएह होइत छल। लोक अनुमान लगौलक जे सृष्टिक कारण, स्त्राी-पुरुषक जननांग थिक, तें ओ लिंग पूजा आ योनि-पूजा शुरुह केलक, जे बादमे शिवलिंग आ कामयोनि पूजाक रूपमे प्रचलित भेल। बादमे औजार पूजन होअए लागल।... तें पूजा पाठमे लीन हेबाक प्रथा पुरान अछि। मिथिलामे ओहि समस्त पूजन-पद्धतिक अनुपालन तँ होइते रहल; पितर पूजा, ग्रामदेव पूजा, ऋतु पूजा, फसल पूजा, कुलदेव-देवी पूजा आदिक प्रथा बढ़ल। हमरा जनैत विद्वान लोकनि द्वारा ईश भक्तिक उपदेश एहि लेल देल जाइत रहल हएत जे ईश भक्तिमे लागल लोक धर्म-भयसँ सदाचार अनुपालनमे लागल रहत, सद्‌वृत्तिमे लीन रहत, सामाजिक मर्यादाक ध्यान राखत, भुजबल-धनबलक मदमे निर्बल-निर्धन पर अत्याचार नहि करत।...लक्ष्यपूर्ति त' नहिएँ भेल, उनटे लोक धर्मभीरु, पाखण्डी अन्धविश्वासी आ निरन्तर लोभी, स्वार्थी, अत्याचारी होइत गेल, परिणामस्वरूप आजुक मैथिल-प्रवृत्ति हमरा सभक सोझाँ अछि।

कृषि जीवनसँ समाजक कौटुम्बिक बन्हन एते मजगुत छल, जे भूमिहीनो व्यक्ति सम्पूर्ण किसानक दर्जा पबै छल। हरेक गाममे सब वृत्तिक लोक रहै छल। डोम, चमार, नौआ, कुमार, गुआर, धोबि, कुम्हार, कोइरी, बाह्मण, क्षत्राी... आदि समस्त जातिक उपस्थितिसँ गाम पूरा होइ छल। जमीन्दार लोकनि समस्त भूमिहीनकें जागीर दै छलाह, बाह्मण पुरहिताइ करै छलाह, नौआ केश कटै छलाह; कुमार ह'र-फार, चौकी केबाड़ बनबै छलाह; धोबि कपड़ा-बस्तर धोइ छलाह...। सम्पूर्ण समाज एक परिवार जकाँ चलै छल। सब एक दोसरा लेल जीबै छलाह, सब गोटए किसान छलाह, कृषि-सभ्यतामे मस्त छलाह।

सिरपंचमी दिनक ह'र-पूजा हो; दसमी, दीया-बाती, सामा-चकेबाक उत्सव हो; मूड़न-उपनयन-विवाह-श्राद्ध हो; छठि अथवा फगुआ हो... बिना सर्वजातीय, सर्ववृत्तीय लोकक सहभाग नेने कोनो काज पूर नहि होइ छल। एहिमेसँ बहुत बात तँ एखनहुँ बाँचल अछि, होइत अछि ओहिना, ओकर ध्येय कतहु लुप्त भ' गेल अछि।

मिथिलाक विवाहमे एखनहुँ जा धरि नौआ ब'रक कानमे हुनकर खानदान लेल गारि नहि देताह (परिहास लेल); धोबिन अपना केस संगें कनियाँक केस धो क' सोहाग नहि देतीह, विवाह पूर्ण नहि मानल जाइत अछि। ध्यान देबाक थिक जे एहि तरहें ओहि नौआकें कन्याक पिता आ धोबिनकें कन्याक माइक ओहदा देल जाइत अछि। मिथिलाक छठि पाबनि तँ अद्‌भुत रूपें सम्पूर्ण विरासतक रक्षा क' रहल अछि। नदीमे ठाढ़ भ' कए सूर्यकें अर्घ देबाक ई प्रथा जाति-धर्म समभावक सुरक्षा एना केने अछि जे समाजक कोनहुँ वर्गक सहभागक बिना ई पाबनि पूर्ण नहि होएत। नेत अइ स'ब टामे एकता आ समानताक सूत्रा स्थापित रखबाक रहैत छल। ई कलंक स्वातन्त्रयोत्तरकालीन मिथिलाक स्वाधीन मानवक नाम अथवा वैज्ञानिक विकास, बौद्धिक उन्नति, औद्योगिक प्रगतिक माथ जाइत अछि, जे समस्त विकासक अछैत मानव-मनमे लोभ-द्रोह, अहंकार एहि तरहें भरलक छूआछूत, जाति-द्वेष, शोषण-उत्पीड़न बढ़ैत गेल; आ आइ मिथिला-समाज, जे त्याग, बलिदान, प्रेम, सौहार्द लेल ख्यात छल, सामाकि रूपें खण्ड-खण्ड भेल अछि। पैघसँ पैघ आपदा, विभीषिका ओकरा एक ठाँ आनि कए, एकमत नहि क' पबै'ए। मिथलाक उदारता आ सामाजिकता ई छल जे ककरो बाड़ी-झारीमे अथवा लत्ती-फत्तीमे अथवा कलम-गाछीमे नव साग-पात, तर-तरकारी, फूल-फल होइ छल तँ सभसँ पहिने ग्रामदेवक थान पर आ पड़ोसियाक आँगनमे पहुँचाओल जाइ छल; कोनो फसिल तैयार भेलाक बाद आगों-राशि कोनो परगोत्राीकें देल जाइ छल; खेतमे फसिल कटबा काल खेतक हरेक टुकड़ीमे एक अंश रखबारकें देल जाइ छल...ई समस्त बात सामाजिक सम्बन्ध-बन्धक मजगूतीक उदाहरण छल।

कोनो स'र-कुटुमक ओतएसँ कोनो वस्तु सनेसमे आबए, तँ ओ सौंसे टोलमे लोक बिलहै छल।...कहबा लेल कहि सकै छी जे ई मैथिलजनक जीवनक नाटकीयता आ प्रशंसा हेतु लोलुपता रहल होएत... मुदा तकर अछैत एहि पद्धति आ परम्पराक श्रेष्ठता आ सामाजिक मूल्य हेतु एकर आवश्यकतासँ मुँह नहि मोड़ल

जा सकैत अछि। गाममे कोनो बेटीक दुरागसनक दिन तय होइ छल, तँ बेटीक सासुरसँ आएल मिठाइ भरि गाममे बिलहल जाइ छल। तात्पर्य ई होइ छल जे भरि गामक लोक बूझि जाए, जे ई बेटी आब अइ गामसँ चल जाएत। ओहि बेटीकें भरि गामक लोक धन-वित्त-जातिसँ परे, ओहि बेटीकें अपना घ'रमे एक साँझ भोजन करबै छल। सब किछुक लक्ष्यार्थ गुप्त रहै छल। एकर अर्थ ई छल, जे सम्पूर्ण गाम अपन-अपन थाड़ी-पीढ़ी देखा कए ओहि बेटीक विवेककें उद्बुद्ध करै छल जे बेटी! आब तों ई गाम, ई कुल-वंश छोड़ि आन ठाम जा रहल छह, हमरा लोकनि अपन शील-संस्कृतिक ज्ञान तोरा देलियहु, सासुर जा कए, ओतुक्का शील-संस्कार देखि कए अपन विवेकसँ चलिह', आ अपन गाम, अपन कुल-शीलक प्रतिष्ठा बढ़बिह'। इएह कारण थिक जे पहिने कोनो बेटीक दुरागमनक दिन पैघ अन्तराल द' कए तय होइ छल। मुदा आब ई रिवाज एकटा औपचारिकता बनि कए रहि गेल अछि; गामक बेटीकें अपन बेटी मानिते के अछि?

मिथिलामे कोनो स्त्री संगें भैंसुर आ ममिया ससुरक वार्तालाप, भेंट-घाँट वर्जित रहल अछि, एते धरि जे दुनूमे छूआछूतक प्रथा अछि। आधुनिक सभ्यताक लोक एकरा पाखण्ड घोषित केलनि। परिस्थिति बदलै छै, त' मान्यताक सन्दर्भ बदलि जाइ छै, से भिन्न बात; मुदा एहि प्रथाकें पाखण्ड कहनिहार लोककें ई बुझबाक थिक जे ई प्रथा एहि लेल छल, जे एहि दुनू सम्बन्धमे समवयस्की हेबाक सम्भावना बेसी काल रहै छल। संयुक्त परिवारक प्रथा छल, कखनहुँ कोनो अघट घटि सकै छल। ई वर्जना एकटा शिष्टाचार निर्वहरण हेतु पैघ आधार छल। प्रायः इएह कारण थिक जे विवाह कालमे घोघट देबा लेल प्राथमिक अधिकार अही दुनू सम्बन्धीय व्यक्तिकें देल जाइ छनि। जाहि स्त्रीकें केओ भैंसुर अथवा ममिया ससुर नहि छनि, हुनकहि टा ससुर स्थानीय कोनो आन व्यक्ति घोघट दै छनि। घोघट देबाक प्रक्रियामे कतेक नैतिक बन्हन रहैत अछि, से देखू, जे सकल समाजक समक्ष भैंसुर, नव विवाहित भावहुक उघार माथकें नव नूआसँ झाँपै छथि आ बगलमे ठाढ़ ब'र ओहि नूआकें घीचिकए माथ उघारि दैत अछि, ई प्रक्रिया तीन बेर होइत अछि, अन्तिम बेर माथ झाँपले राखल जाइत अछि। अर्थात्, सकल समाजक सम्मुख ओ व्यक्ति प्रतिज्ञा करैत अछि--हे शुभे! हम, तोहर भैंसुर (ससुर) प्रण लैत छी, जे जीवन पर्यन्त तोहर लाजक रक्षा करब! एते धरि जे अग्नि, आकाश, धरती, पवनकें साक्षी राखि जे व्यक्ति तोरा संग विवाह केलकहु अछि, सेहो जखन तोहर लाज पर आक्रमण करतहु, हम तोहर रक्षा लेल तैयार रहब!

अही तरहें उपनयनमे आचार्य, बह्मा, केस नेनिहारि, भीख देनिहारि, डोम, चमार, नौआ, धोबि, कमार, कुम्हार आदिक भागीदारी; आ एहने कोनो आन उत्सव, संस्कारमे सामूहिक भागीदारी सामाजिक अनुबन्धक तार्किक आधार देखबैत अछि।

कहबी अछि जे मैथिल भोजन भट्ट होइ छथि। अइ कहबीक त'हमे जाइ तँ ओतहु एकर सांस्कृतिक, पारम्परकि सूत्रा भेटल। मिथिलाक स्त्री, खाहे ओ कोनहु जाति-वर्गक होथि, तीक्ष्ण प्रतिभाक स्वामिनी होइत रहल छथि। मुदा परदा प्रथाक कारणें हुनकर पैर भनसा घरसँ ल' क' अँगनाक डेरही धरि बान्हल रहै छलनि। अधिकांश समय भनसे घरमे बितब' पड़नि। सृजनशील प्रतिभा निश्चिन्त बैस' नहि दैन। की करितथि! भोजनक विन्यासमे अपन समय आ प्रतिभा लगब' लगलथि। आइयो भोजनक जतेक विन्यास, तीमन-तरकारीक जतेक कोटि, चटनी आ अचारक जेतक विधान मिथिलामे अछि, हमरा जनैत देशक कोनहुँ आन भागमे नहि होएत। वनस्पतिजन्य औषधिकें सुस्वादु भोजन बनएबाक प्रथा सेहो मिथिलामे सर्वाधिक अछि।... आब जखन एते प्रकारक भोजन ओ बनौलनि, तँ उपयोग कतए हैत?... घरक पुरुष वर्गकें खोआओल जाएत। सर्वदा एहिना होइत रहल अछि, जे कोनो क्रियाक विकृति प्रचारित भ' जाइत अछि, मूल तत्व गौण रहि जाइत अछि। मैथिल पेटू होइत अछि, से सब जनै'ए, मुदा मिथिलाक स्त्रीमे विलक्षण सृजनशीलता रहलैक अछि, से बात कम प्रचारित अछि। जे स्त्री कामकाजी होइ छलीह, खेत-पथार जा कए शरीर श्रम करै छलीह, गामक बाबू बबुआनक घर-आँगन नीपै, लेबै छलीह, तिनकहु कलात्मक कौशल हुनका लोकनिक काजमे देखाइ छल।

स्त्री जातिक कला-कौशलक मनोविज्ञानक उत्कर्ष तँ एना देखाइ अछि जे हुनका लोकनिक उछाह-उल्लास धरिमे जीवन-यापनक आधार आ घर-परिवारक मंगलकामना गुम्फित रहै छल। जट-जटिन लोक नाटिका विशुद्ध रूपसँ कृषि कर्मक आयोजन थिक, जे अनावृष्टिक आशंकामे मेघक आवाहन लेल होइ छल, होइत अछि; सामा भसेबा काल गाओल जाइबला गीतमे सब स्त्री अपन पारिवारिक पुरुष पात्राक स्वास्थ्यक कामना करै छथि; विवाह उपनयनमे अपरिहार्य रूपें वृक्ष पूजा (आम, महु), नदी पूजा, प्रकृति पूजा आदि करै छथि। विभिन्न वृत्तिक लोकक अधिकार क्षेत्रा पर नजरि दी, तँ नौआ, कमार, कुम्हार, डोम, धोबि... सबहक स्वामित्व निर्धारित रहैत आएल अछि। जाहि गाम अथवा टोल पर जिनकर स्वामित्व छनि, हुनकर अनुमतिक बिना केओ दोसर प्रवेश नहि क' सकै छलाह। ई लोकनि आपसी समझौतासँ अथवा निलामीसँ गामक खरीद-बिक्री करै छलाह। एहि व्यवहारमे

जजमानक कोनो भूमिका अथवा दखल नहि होइ छल।

हस्तकलाक कुटीर उद्योग एतेक सम्पन्न छल, जे सामाजिक व्यवस्थामे सब एक दोसरा पर आश्रित छल। सूप, कोनियाँ, पथिया, बखाड़ी, घैल, छाँछी, सरबा, पुरहर, मौनी, पौती, जनौ, चरखा, लदहा, बरहा, गरदामी, मुखारी, उघैन, कराम, खाट, सीक, अरिपन... सब किछु लुप्तप्राय भ' गेल। एते धरि जे ई शब्द आ क्रिया अपरिचित भेल जा रहल अछि। ढोनि केनाइ, भौरी केनाइ, केन केनाइ, पस'र चरेनाइ, झिल्हैर खेलेनाइ सन क्रिया, आ सुठौरा, हरीस, लागन, बरेन, जोती, कनेल, पालो, चास, समार, फेरा, पचोटा, ढोसि, करीन सन शब्द आब आधुनिक साहित्योमे कमे काल अबै'ए।

मिथिलाक एहेन विलक्षण विरासत--कला, संस्कृति आ जीवन-यापन पद्धतिक उत्कृष्ट उदाहरण सम्भावनाविहीन भविष्यक कारणें आ सामाजिक कटुताक कारणें हेराएल जा रहल अछि। नवीन शिक्षा पद्धतिसँ सामाजिक जागृति बढ़ल, मुदा ओहि जागृतिक समक्ष ठढ़ भेल वैज्ञानिक विकास आ आर्थिक उदारीकरणक प्रभावमे अहंकारग्रस्त समृद्ध लोकक लोलुपता आ क्षुद्र वृत्ति। संघर्ष जायज छल। अपन पारम्परिक वृत्ति आ हस्तकलामे, पुश्तैनी पेशामे लोककें अपन भविष्य सुरक्षित नहि देखेलै। ÷रंग उड़ल मुरूत' कथामे मायानन्द मिश्र आ ÷रमजानी' कथामे ललित मिथिलाक परम्परा पर आघात देखा चुकल छथि।...

ख'ढ़क घर आब होइत नहि अछि, घरामीक वृत्ति एहिना चल गेल। सीक'क प्रयोजन, खाटक प्रयोजन समाप्त भ' गेल, बचल-खुचल माल-जाल लेल नाथ-गरदामी आब प्लास्टिकक बनल-बनाएल डोरिसँ होअए लागल, बच्चाक खेलौना प्लास्टिकक होअए लागल। नौआ, कमार, धोबि, डोमक जागीर आपस लेल जा लागल। ओ लोकनि अपन पुश्तैनी पेशा छोड़ि आन-आन नोकरी चाकरीमे जाए लगलाह। स्त्र्ी जाति आब भानस करबा लेल किताब पढ़ए लगलीह, फास्ट फूड खएबाक प्रथा विकसित भेल। मिथिला पेंटिंगकें आफसेट मशीन पर छपबा कए पूँजीपति लोकनि री-प्रोडक्शन बेच' लगलाह। जट-जटिन आ सामा-चकेबाक खेलक विडियोग्राफी देखाओल जाए लागल। गोनू झा, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, कारू खिरहरि, लोरिकाइनि आदिक कथा छपा कए बिक्री होअए लागल, टेप पर रेकॉर्ड क' कए, अथवा सी.डी.मे तैयार क' कए, री-मिक्ससँ ओकर मौलिकतामे फेंट-फाँट क' कए लाक सुन' लागल, आ एकरा अपन बड़का उपलब्धि घोषित कर' लागल। ... अर्थात् जे लोककला लोकजीवनक संग विकसित आ परिवर्द्धित होइ छल, तकर अभिलेखनसँ (डकुमेण्टेशन) ओकरा स्थिर कएल जा लागल। लोकजीवनक संग अविरल प्रवाहित रहैबाली सांस्कृतिक-धारा आब अभिलेखागारमे बन्द रहत, ओकर विकासक सम्भावना स्थगित रहत।

अइ समस्त वृत्तिमे जुड़ल लोककें सम्मानित जीवन जीबै जोगर वृत्ति द' कए एकर विकासमान प्रक्रियाकें आओर तीव्र करबाक आवश्यकता छलै, मुदा जखन मिथिलाक लोके ओ ÷लोक' नहि रहि गेल अछि, तखन लोक-संस्कृति आ लोक-परम्पराक रक्षा के करत?

प्रोफेसर प्रेम शंकर सिंह



डॉ. प्रेमशंकर सिंह (१९४२-) ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा। 24 ऋचायन, राधारानी सिन्हा रोड, भागलपुर-812001(बिहार)। मैथिलीक वरिष्ठ सृजनशील, मननशील आऽ अध्ययनशील प्रतिभाक धनी साहित्य-चिन्तक, दिशा-बोधक, समालोचक, नाटक ओ रंगमंचक निष्णात गवेषक, मैथिली गद्यकैं नव-स्वरूप देनिहार, कुशल अनुवादक, प्रवीण सम्पादक, मैथिली, हिन्दी, संस्कृत साहित्यक प्रखर विद्वान् तथा बाङला एवं अंग्रेजी साहित्यक अध्ययन-अन्वेषणमे निरत प्रोफेसर डॉ. प्रेमशंकर सिंह (२० जनवरी १९४२)क विलक्षण लेखनीसँ एकपर एक अक्षय कृति भेल अछि निःसृत। हिनक बहुमूल्य गवेषणात्मक, मौलिक, अनूदित आऽ सम्पादित कृति रहल अछि अविरल चर्चित-अर्चित। ओऽ अदम्य उत्साह, धैर्य, लगन आऽ संघर्ष कऽ तन्मयताक संग मैथिलीक बहुमूल्य धरोरादिक अन्वेषण कऽ देलनि पुस्तकाकार रूप। हिनक अन्वेषण पूर्ण ग्रन्थ आऽ प्रबन्धकार आलेखादि व्यापक, चिन्तन, मनन, मैथिल संस्कृतिक आऽ परम्पराक थिक धरोहर। हिनक सृजनशीलतासँ अनुप्राणित भऽ चेतना समिति, पटना मिथिला विभूति सम्मान (ताम्र-पत्र) एवं मिथिला-दर्पण, मुम्बई वरिष्ठ लेखक सम्मानसँ कयलक अछि अलंकृत। सम्प्रति चारि दशक धरि भागलपुर विश्वविद्यालयक प्रोफेसर एवं मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैथिली विभागाध्यक्षक गरिमापूर्ण पदसँ अवकाशोपरान्त अनवरत मैथिली साहित्यक भण्डारकैं अभिवर्द्धित करबाक दिशामे संलग्न छथि, स्वतन्त्र सारस्वत-साधनामे।

कृति-

मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७५.नाट्यान्वाचय, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००५, ८.ईक्षण, ऋचा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८

मौलिक हिन्दी: १.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, प्रथमखण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७१ २.विद्यापति अनुशीलन और मूल्यांकन, द्वितीय खण्ड, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना १९७२, ३.हिन्दी नाटक कोश, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली १९७६.

अनुवाद: हिन्दी एवं मैथिली- १.श्रीपादकृष्ण कोल्हटकर, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली १९८८, २.अरण्य फसिल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१ ३.पागल दुनिया, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००१, ४.गोविन्ददास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली २००७ ५.रक्तानल, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८.

लिप्यान्तरण-१. अङ्कीयानाट, मनोज प्रकाशन, भागलपुर, १९६७।

सम्पादन- १. गद्यवल्लरी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६६, २. नव एकांकी, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९६७, ३.पत्र-पुष्प, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९७०, ४.पदलतिका, महेश प्रकाशन, भागलपुर, १९८७, ५. अनमिल आखर, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००० ६.मणिकण, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ७.हुनकासँ भेट भेल छल, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००४, ८. मैथिली लोकगाथाक इतिहास, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ९. भारतीक बिलाड़ि, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, १०.चित्रा-विचित्रा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००३, ११. साहित्यकारक दिन, मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता, २००७. १२. वुआड़िभक्तितरङ्गिणी, ऋचा प्रकाशन, भागलपुर २००८, १३.मैथिली लोकोक्ति कोश, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, २००८, १४.रूपा सोना हीरा, कर्णगोष्ठी, कोलकाता, २००८।

पत्रिका सम्पादन- भूमिजा २००२

२.जीवन झाक नाटकक सामाजिक विवर्तन

उनैसम शताब्दीक पंचम दशकमे आधुनिक मैथिली साहित्यक क्षितिजपर एक प्रतिभासम्पन्न साहित्य मनीषीक आविर्भाव भेल जे अपन नवोन्मेषशालिनी प्रतिभाक प्रसादात परिप्रदीप्ति प्रकाश पुञ्जसँ बीसम शताब्दीक प्रथम दशक धरि अबैत-अबैत मैथिली नाट्य-साहित्यक पूर्ववर्ती परम्परामे क्रान्तिकारी परिवर्तन आनि, परवर्ती युगक नाट्यकार लोकनिक हेतु एक उन्मेष, नमोन्मेषक नेतृत्व नवीन नाट्य गद्यक जनक, प्रगतिशील विचारक, संवेदनशील मनोवृत्ति, कल्पनाशील मस्तिष्क, सरस रोमांचक अनुभूति एवं मैथिल समाजमे परिव्याप्त समस्याक प्रति अतिसाकांक्ष भऽ समाजकेँ दिशा-निर्देश करबाक स्तुत्य प्रयास कयलनि, ओऽ रहथि शलाका पुरुष कविवर जीवन झा (१८४८-१९१२)। राजदरबारसँ सम्पोषित रहितहुँ ओऽ जन-जनमे चेतनाक दीप जरौलनि, कण-कणमे उत्साह पसारलनि आऽ क्षण-क्षणमे सर्जनाक दिशा निर्दिष्ट कयलनि। युगपुरुष जीवन झाक सम-सामयिक समाज आऽ साहित्य बौद्धिक उत्तेजनाक लहरिसँ गुजरि रहल छल। राजनीति, समाज नीति, अर्थनीति, धर्मनीति, संस्कृति, संगीत, नाटक एवं चित्रकारीपर वैज्ञानिक प्रभावक फलस्वरूप परिवर्तन, परिवर्धन, परिमार्जन प्रारम्भ भऽ गेल छलैक। शिक्षाक नवज्योतिक फलस्वरूप सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चेतनाक उदय भेल, जकर स्वाभाविक अभिव्यक्ति हिनक नाटकादिक प्रमुख केन्द्र बिन्दु थिक।

ओऽ एक दूरदर्शी साहित्य चिन्तक सदृश आशा-निराशाक मिलन-बिन्दुपर जनमानसकेँ देखलनि। ओऽ नैराश्यक अन्धकारमे आशाक दीप जरौलनि। युगीन परम्पराकेँ नीक जकाँ चिन्हलनि तथा युगानुभूति एवं कालक सत्यताक कोनो स्थितिकेँ अभिव्यक्त करबाक शक्तिकेँ दमित नहि कऽ पौलनि। सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे सामाजिक विषमताक हुँकार, तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितिक उपस्थापनमे अक्षर पुरुष प्रमाणित भेलाह। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टिसँ जखन हम हिनक नाटकादिक परीक्षण-निरीक्षण करैत छी, तखन हम ओकरा समसामयिक सामाजिक स्थितिक दर्पण, सांस्कृतिक वैभवक धरोहरि आऽ आर्थिक विपन्नतासँ संत्रस्त समाजक यथार्थ एलबम कहि सकैत छी। ई सर्वविदित सत्य थिक जे ओहि कृतिकारक कृतित्व अक्षय रहैछ, जे सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवनक वास्तविक प्रतिनिधित्व करैछ, जनिका हृदयमे उपर्युक्तक प्रति पूर्ण आस्था रहैछ तथा ओकर अधःपतनकेँ जनमानसक समक्ष रेखांकित कऽ सचेष्ट हेबाक प्रेरणा दैछ, कारण साहित्य तँ हमर जीवनानुभूतिकेँ प्रतिबिम्बित करैछ।

युगपुरुष जीवन झाक नाटकादिक प्रेरणास्रोत थिक नवीन जागरणक ज्योति। अपन सजग आँखिएँ ओऽ देश-देशान्तरक विकासोन्मुख गतिविधिपर दृष्टि निक्षेप कयलनि, एहि विषयक अनुभव कयलनि जे मैथिल समाजमे नवजागरणक अभाव अछि। ई अपन नाटकक कथानकक चयनक निमित्त मिथिलाक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति दिस दृक् पात कयलनि तथा अपन युगक वास्तविक समसामयिक स्थितिक रूपायन ओहिमे कयलनि।

संस्कृत पण्डित रहितहुँ जीवन झा आधुनिकताक पूर्णपक्षपाती अपन कृतित्वमे दृष्टिगत होइत छथि। मिथिलांचलमे परिव्याप्त वैवाहिक समस्या छल तकरा केन्द्र-बिन्दु बनाय सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे देशोन्नितिक निमित्त नाटकक माध्यमे जन-आन्दोलनक प्रेरणा देलनि, कारण मिथिला मोद ओ मैथिल महासभाक

आविर्भावसँ पूर्वहि ई अपन नाट्यकृतिमे ओकर समाधानार्थ विचार प्रस्तुत कयलनि। मैथिल समाजमे तिलक-दहेज, जाति-पाँजिक नामपर कन्यापर होइत अत्याचार एवं अन्याय एवं अन्य सामाजिक कुप्रथापर प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपैँ अपन आलोचनात्मक दृष्टिकोण जनसामान्यक समक्ष प्रस्तुत कयलनि।

सामाजिक पृष्ठभूमिकैँ आधार बनाय ई मैथिलीमे नाट्य-लेखनक शुभारम्भ कयलनि। हिनक तीन सम्पूर्ण नाटक-सुन्दर संयोग (१९०४), सामवती पुनर्जन्म, नर्मदा सागर सट्टक एवं खण्डित मैथिली सट्टक समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितिक उद्देश्य निर्धारणमे सहायक होइछ। वस्तुतः हिनक नाटकादिमे मैथिल समाजक विश्वास एवं संस्कारक प्रतिबिम्ब भेटैछ, जकरा माध्यमे ओ उच्च जीवनक प्रतिष्ठाक आकांक्षी भेलाह। हिनक सम्पूर्ण नाट्य-साहित्यमे व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्तरक सन्निवेशक कारणैँ मिथिलांचलक वातावरणमे परिव्याप्त अछि।

विवाहक चौमुखी समस्यापर आधारित वासना, प्रेम, मिलन आऽ विछोह यद्यपि हिनक नाटकक केन्द्र-बिन्दु थिक, जकर समाजशास्त्रीय एवं भाषाशास्त्रीय अध्ययन अपेक्षणीय अछि। सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे मैथिल सामाजिक जीवनक अधिकाधिक प्रामाणिक रूप "सुन्दर संयोग" एवं "नर्मदा सागर सट्टक"मे प्रस्तुत करबामे ओऽ सफलता प्राप्त कयलनि। हिनक नाटकादि मात्र मनोरंजनक हेतु नहि, प्रत्युत जीवनक गम्भीर समस्याक समाधान करबाक उद्देश्यसँ उत्प्रेरित भऽ रचना कयलनि। एकर नायक-नायिका मिथिलांचलक परम्परागत कुलीन प्रथाक रूप प्रदर्शित करैछ। यद्यपि "सामवती पुनर्जन्म"क कथानक पौराणिक पृष्ठभूमिपर आधारित अछि, तथापि ओकर प्रत्येक पात्र समसामयिक समाज, संस्कृति एवं आर्थिक पृष्ठभूमिमे उतारल गेल अछि।

"सुन्दर संयोग"मे नाट्यकार समाजक ओहि मानसिक स्थितिक विश्लेषण कयलनि अछि, जे जाति-पाँजि, कुलीनता, बिकौआ प्रथापर प्रचलित बहु-विवाह आऽ पत्नी-परित्यागक सन विकृतिसँ उत्पन्न होइत छल। तथाकथित कुलीन-जन अनेक बियाह करैत रहथि आऽ पत्नीकैँ नैहरमे छोड़ि दैत रहथि। भलमानुसक पत्नीक जीवनगति इएह छलैक। विवाह कऽ कए जाथि आऽ जीवन भरि वापस नहि आबथि। दाम्पत्य सुख एहन कन्याक निमित्त जीवन भरि अननभूत सत्य बनल रहि जाइत छलैक। ओऽ ने तँ कुमारिए रहैत छल आऽ वास्तवमे सधवे। सधवा रहितो वैधव्य-वेदना सहैत रहैत छल। एहन स्थितिक चित्रण निम्नस्थ पंक्तिमे व्यञ्जित भेल अछि:

सीमन्तक सिन्दूरक रेखासँ छी हम धनमन्ती।

हाथक दू लहठीसँ होइछ सधवामे नित गनती।

मिथिलांचलमे कुलीनताक बलपर प्रतिवर्ष विवाह करब सामान्य बात छल। समाजमे एहन परम्परा प्रचलित छलैक जे एक ठाम विवाह आऽ चतुर्थी सम्पन्न कऽ कए दोसर ठाम पुनः विवाह करैत छलाह। कुलीन व्यक्ति विवाहोपरान्त पलटिकऽ जयबाक प्रयोजन नहि बुझैत रहथि। समयक क्रममे अपन पत्नीक आकृति आऽ सासुरक लोककैँ बिसरि जाथि। अत्यल्प परिचयक कारणैँ सर-कुटुम्बकैँ नहि चिन्हब तँ सर्वथा स्वाभाविक।

एहन विषम स्थितिमे कन्याक माता-पिता, समाज आऽ कन्याकैँ केहन मानसिक यातना होइत छलैक, निराशा आऽ विषादसँ आछन्न मनःस्थितिमे कोना जीवन-यापन करैत छल से स्वतः कल्पनातीत छल। कोनो सौभाग्यशालिनी कन्याकैँ पुनः दाम्पत्य जीवन प्राप्त होएतैक, कतेक उल्लास होयतैक, केहन हर्ष होयतैक, ओहो काल्पनिक अछि।

मिथिलांचलमे प्रचलित कन्यादानी शब्द ओही परिणीता; किन्तु परित्यक्ता नारीक यातनामय इतिहासकैँ अपनामे समेटने अछि।

युगपुरुष जीवन झाक समसामयिक सामाजिक वातावरणमे परम्परा परिव्याप्त छल। सामाजिक जीवनमे ई प्रतिष्ठाक विषय छल। नाटककार एहि सामाजिक परिस्थितिसँ पूर्ण अवगत रहथि। एकर दुष्प्रभावकैँ ओऽ अनुभव कयने रहथि। समाजक ओहि परिवेशमे कन्यापक्षक मानसिक अन्तर्द्वन्दकैँ ओऽ सुन्दर संयोगमे अभिव्यक्त कयलनि। समाजक समक्ष ओऽ सुन्दर मिश्र कए सदृश आदर्श पुरुषक रूपमे प्रस्तुत कयलनि।

सुन्दर मिश्र अपन सासुरक प्रत्येक व्यक्ति, अपन पत्नीकैँ तखने चिन्हि जाइत छथि, जखन हरदत्त पण्डा हुनक ससुरक पूर्व पुरखाक नाम गाम बाँचैत छथि। ओऽ चतुर्थी दिन पत्नीक अस्वस्थताक कारणैँ सासुर छोड़ि देने रहथि। ओऽ अपन पत्नी पर्यन्तकैँ नहि चिन्हि पौने रहथि। इएह स्थिति तँ सरलाक ओकर माय, ओकर परिवार, ओकर सखी-बहिनपा ओऽ समाजक छलैक। किन्तु सभक मनमे आशाक किरण छलैक जे भलमानुस सुन्दर मिश्र विवाह कऽ कए चल गेलाह तँ आने बिकौआ वर जकाँ नहि जे आबथि।

एहि मानसिकताक अभिव्यक्ति सरस्वतीक कथनमे अभिव्यक्त भेल अछि। जखन ओऽ वैद्यनाथकेँ प्रार्थना करैत छथि; "हे वैद्यनाथ! जे जे कबुला कैल सभ मनोरथ पुरल, आब जमाइकेँ कुशल पूर्वक देखी से वरदान दिअ" (सुन्दर संयोग, पृष्ठ १२)।

सरस्वतीक मनोभाव अत्यधिक पल्लवित भेल अछि, जखन ओऽ अनचीन्हेमे (अपन जमाय) सुन्दर मिश्रकेँ कहैत छथिन, "हे बाबू! बड़ पुण्य रहैत तँ एकर ई वयस भेलैक जमाय चुर्थि अहिक दिन एकरा दुखित छोड़िकेँ जे गेलाह से आइ धरि उदेशो ने पबै छिऐन्ह! (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-१४)।

जखन पण्डाइन संकेत करैत छथिन जे पण्डित बाबू सरलाक वर थिकथिन तखन हुनक निराशा व्यक्त होइत छनि, "एहन हम गहमर कहाँ जे जमायकेँ देखब परन्तु वैद्यनाथ बड़ गोर थिकाह"। (सुन्दर-संयोग, पृष्ठ-१९)

सरलाक मनोव्यथा तावत धरि अव्यक्त रहैछ जावत धरि ओकरा संकेत नहि भेटैछ जे पण्डित बाबू सम्भवतः ओकरे वर थिकथिन। तत्पश्चात् ओकर विरह व्यथाक अभिव्यक्ति भेल अछि। मुदा ओऽ सामान्य विरह नहि थिक। सरलाक कथन गद्य आऽ गीतमे सामाजिक परिवेश-जन्य विषाद बजैत अछि, "हे वैद्यनाथ! ऐ तरहेँ दुखिनीकेँ किए सतबैत छहक~ (सुन्दर-संयोग, पृष्ठ-२०) मे "दुखिनी" शब्दक मार्मिकताक अनुभूति तखने भऽ सकैछ, जखन ओहि समयक सामाजिक परिवेशक अनुभव हो। ओहि सामाजिक कुप्रथाक पृष्ठभूमिमे सरलाक कथन विशेषार्थ बोध भऽ जाइछ;

एतदिन शिवपद सेवल, केवल एतबहि काज।

से प्रसन्न वर भाषल राखल मोर कुल लाज॥

(सुन्दर संयोग, पृष्ठ-१८)

बुझा देमक चाही कौखना अनजानकेँ कनिएँ।

जे ई अपराध छौ तोहर किए हमरासँ रुसल छी॥

सरलाक विरह समाजशास्त्रीय विषय थिक जे समाजक परिस्थितिसँ उत्पन्न भेल अछि। एहि तथ्यकेँ नआट्यकार अन्तमे स्पष्ट करैत छथि। सुन्दर सासुरसँ गाम जयबाक जखन प्रस्ताव करैत छथि, तखन उद्विग्न भऽ जाइछ, "हमरा बुझि पडैए जे एहि लोकक मन फेरि अन्तऽ गेलैका" (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-३३)। ओऽ सुन्दरकेँ कहैत छथिन, "और नहि किछु, जे फेरि ओएह बरहमासा सवने गाबक पड़ै" (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-३४)।

सुन्दर जखन ओहि बारहमासा गीतक जिज्ञासा करैत छथिन तँ सरलाक उत्तर थिक, "छओ मासक प्राप्त खन लोक वाजै जे आब नहि औथीन तखनसँ कादम्बरी बहिनक संग इएह गीत सब गबै छलहुँ। (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-३४)

सुन्दर संयोग नाटकक कथानक सामान्य प्रेम-कथाक परिधिमे नहि राखल जाऽ सकैछ। ओऽ थिक मैथिल समाजमे प्रचलित नारी-यातनाक मानस इतिकथा। प्रकारान्तरँ नाट्यकार ओहि प्रथाक प्रति अरुचि प्रदर्शित करैत समाधान रूपमे सुन्दर सदृश आदर्श पुरुषक प्रयोजनीयता देखौलनि। सुन्दरमे आदर्श पतिक प्राण प्रतिष्ठा कऽ कए नाट्यकार समाजकेँ कान्ता सम्मति उपदेश देलनि।

हिनक नाटकमे मिथिलाक सामाजिक जीवनमे व्याप्त विवाह सम्बन्धी कुप्रथादिक प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रतिफलित भेल अछि, तकर विश्लेषणसँ प्रतिभाषित होइछ जे नाटककार सामाजिक सुधारक प्रति पूर्णतः साकांक्ष रहथि। विवाह सदृश अतिमहत्वपूर्ण संयोजनमे निरीह पात्री होइछ, कन्या सामवती पुनर्जन्मक प्रस्तावनामे नटीक कथन थिक:

कन्या कुल मर्यादामे बान्हलि कूजय सुँह न बकार।

(सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ ३)

समाजमे कन्याकेँ पुत्रक अपेक्षा न्यून मानल जाइत अछि जे सर्वथा अनुचित। तँ तँ गौतमीक कथन थिक; "तखन पुत्र वा कन्या दु टा संसारमे ह्वै छैक। हम तँ बड़ि प्रसन्न छी"। (सामवती पुनर्जन्म पृष्ठ-२३)

जीवन झा कालीन मिथिलांचलक समाज दुइ वर्ग सम्पन्न वर्ग एवं विपन्न वर्गमे विभाजित छल। ताहि कारणेँ स्वजातिमे जाति-पाँजि, कुलीन-अकुलीन, सोति-जोग, भलमानुस, जयवार, पठियार इत्यादिक विचार समाजमे घून जकाँ लागल छलैक। एकरे फलस्वरूप कन्या-विक्रय, बिकौआ प्रथा, बहुविवाह प्रथा आऽ अनेक अमानुषिक समस्याकेँ जन्म दैत छल। ई श्रेय युगपुरुष जीवन झाकेँ छनि जे अपन नाटकक माध्यमे एकर साक्षात विरोध करबाक साहस कयलनि। "नर्मदा सागर सट्टक"क

(अगिला अंकमे)

१.स्व. राजकमल चौधरी

१.स्व. राजकमल चौधरी

डॉ. देवशंकर नवीन (१९६२-), ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।

सम्पादन: प्रतिनिधि कहानियाँ: राजकमल चौधरी, अग्निस्नान एवं अन्य उपन्यास (राजकमल चौधरी), पत्थर के नीचे दबे हुए हाथ (राजकमल की कहानियाँ), विचित्रा (राजकमल चौधरी की अप्रकाशित कविताएँ), साँझक गाछ (राजकमल चौधरी की मैथिली कहानियाँ), राजकमल चौधरी की चुनी हुई कहानियाँ, बन्द कमरे में कब्रगाह (राजकमल की कहानियाँ), शवयात्रा के बाद देहशुद्धि, ऑडिट रिपोर्ट (राजकमल चौधरी की कविताएँ), बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, उत्तर आधुनिकता कुछ विचार, सद्भाव मिशन (पत्रिका)क किछि अंकक सम्पादन, उदाहरण (मैथिली कथा संग्रह संपादन)।

सम्प्रति नेशनल बुक ट्रस्टमे सम्पादक।

बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो

(राजकमल चौधरीक उपन्यास)

ग'रसँ देखला पर बात तय होइत अछि जे उपन्यास भारतीय साहित्यक सबसँ गतिशील विधा थिक। भावककें एतए अपन तथा परिवेशक सम्यक् चित्रा सम्पूर्ण वैविध्यक संग भेटैत अछि। एहि तथ्यमे सेहो किनकहु कोनो संशय नहि छनि जे साहित्यमे उपन्यास विधाक आविर्भाव समाजमे आधुनिक सभ्यताक विकासक फलस्वरूप भेल। विज्ञान एवं तकनीकी विकासक फलस्वरूप यूरोपमे सतरहम शताब्दीमे पूंजीवादक पाँखि पसरल, सामाजिक परिवर्त्तनक झोंक आएल, आ साहित्यमे उपन्यास विधाक आविर्भाव भेल। मुदा से भारतीय साहित्यमे उपन्यासक उद्भवक स्रोत नहि थिक। विहंगम दृष्टिसँ देखी तँ भारतीय साहित्यमे उपन्यासक उद्भवक स्रोत सन् १८५७क प्रथम स्वाधीनता संग्राम, आ तकर निराशाक कारणें भारतीय बुद्धिजीवीक बीच जाग्रत चेतनाकें मानल जाएत। एकर सूत्रा उनैसम शताब्दीक प्रारम्भिक कालमे भारतीय बौद्धिक जन'क मोनमे उठल नव चेतनासँ सेहो जुड़ैत अछि, राजा राममोहन राय द्वारा समर्थित नवजागरणसँ सेहो जुड़ैत अछि, ÷बंगाल नवजागरण' आ ÷महाराष्ट्र प्रबोधन'सँ सेहो जुडै+त अछि। हिन्दी पट्टीमे अइ नवजागरणक हवा थोड़ेक देरीसँ आएल। मुदा भारतेन्दु मण्डलक बुद्धिजीवी वर्ग सम्पूर्ण तत्परता आ प्रतिबद्धताक संग एकर उद्घोष केलनि, परिणति धरि पहुँचौलनि।

हिन्दीमे उपन्यास लेखन नवजागरण कालहिमे प्रारम्भ भेल। ÷परीक्षा गुरु'(१८८२) ÷त्रिावेणी'(१८९०) आदि औपन्यासिक कृतिसँ लाला श्रीनिवास दास आ किशोरी लाल गोस्वामी एहि विधाक शुभारम्भ केलनि। डेढ़-दू दशक बाद हिन्दी उपन्यास अपन पूर्ण ज्योतिक संग दैदीप्यमान होअए लागल। जयशंकर प्रसादक ÷कंकाल'(१९२९), ÷तितली'(१९३४); जैनेन्द्र कुमारक ÷परख'(१९२९), ÷सुनीता'(१९३५), ÷त्यागपत्रा'(१९३७);

प्रेमचन्दक ÷सेवासदन'(१९१६), ÷प्रेमाश्रम'(१९१८), ÷रंगभूमि'(१९२६), ÷गोदान'(१९३७) आदि उपन्यासक प्रकाशन भ' चुकल छल। देवकी नन्दन खत्राीक ÷चन्द्रकान्ता'(१८८८) आ ÷चन्द्रकान्ता सन्तति'(१८९६) तँ एहि सबसँ पूर्वहि प्रकाशित भ' कए ख्याति अर्जित क' चुकल छल। जनतब अछि जे भारतीय भाषा सबमे सबसँ पहिने बंगलामे उपन्यास लेखन शुरुह भेल।...मैथिलीमे उपन्यास लेखनक प्रारम्भिक अवधि थिक सन् १९१४-१९३३, अर्थात् ÷निर्दयी सासु'सँ ÷कन्यादान'क रचनाकाल धरि। एहि मध्य कैक टा उपन्यास लिखल गेल, मुदा एहि समय धरि हिन्दी आ आन भारतीय भाषाक उपन्यासक प्रगति देखैत विषयक विस्तार आ शिल्प-शैलीक नूतनताक दृष्टिएँ उल्लेखनीय उपन्यास थिक--निर्दयी सासु(जनार्दन झा ÷जनसीदन')१९१४, रामेश्वर(जीवछ मिश्र)१९१६, सुमति(रासबिहारी लाल दास)१९१८, मनुष्यक मोल(कुमार गंगानन्द सिंह)१९२४, मिथिला दर्पण(पुण्यानन्द झा)१९२५, पुनर्विवाह(जनार्दन झा ÷जनसीदन')१९२६, चन्द्रग्रहण(कांचीनाथ झा ÷किरण')१९३२, कन्यादान(हरिमोहन झा)१९३३ आदि।

एहि आँकड़ाकें देखैत ई लगैत अछि जे मैथिली उपन्यासक मूल लेखन नहि किछु तँ दू-अढ़ाइ दशक पाछू आबि कए प्रारम्भ भेल, आ शीघ्रे माटि पकड़ि लेलक। ध्यान रखबाक थिक जे पहिने बिहार आ बंगाल एकहि प्रान्त छल, कलकत्ता तकर प्रशासन केन्द्र छल। सन् १९१२मे बिहार-बंगाल विभाजित भेल मुदा मिथिलाक लोकक सम्पर्क कलकत्तासँ बनले रहल। उल्लेखनीय अछि जे स्वातन्त्रयोत्तर काल, अथवा ताहूसँ आगू, आपातकालक बाद धरि रोजगारक टोहमे विभिन्न आयुवर्गक मैथिल दिल्ली, पंजाब, गुजरात महाराष्ट्र दिश अपन रुखि केलनि, मुदा एखनहुँ धरि कलकत्ता-प्रेमसँ मैथिल लोकनि पूर्णतया मुक्त नहि भेल छथि।... मैथिली उपन्यासक उद्भवक स्रोत बौद्धिक जन'क स्वानुभूति, अंतःप्रेरणा, मिथिलाक समकालीन परिवेश, मानव जीवनक विसंगति, फिरंगी शासकक अत्याचार...जे रहल हो; मुदा सम्भव ईहो अछि जे बौद्धिक जनकें एहि विभाजनसँ ÷निज भाषा' अर्थात् ÷मातृभाषा'क उन्नति लेल; सर्वथा नव विधा उपन्यासक लेखन लेल प्रेरणा जागल होइन।

मैथिलीमे उपन्यास लिखाएल तँ जाए लागल खूब, मुदा तदनुसार सर्वविधि विकास नहि भेल--एहि तथ्यकें स्वीकार'मे संकोच नहि कर'क चाही। मिथिलाक नव बौद्धिक वर्गक मध्य सब तरहक जागरूकता आ चेतनाक अछैत मैथिलीक उपन्यास लेखन मिथिलामे स्त्राीक दयनीयता पर कनैत रहल। एते धरि जे वैद्यनाथ मिश्र ÷यात्राी' धरिकें सन् १९४६ मे ÷पारो'क परिस्थिति पर कान' पड़लनि, जे सन् १९१६सँ १९३७ धरिक अन्तरालक दुनियाँ भरिक औपन्यासिक उत्थान देख चुकल छलाह। जँ पहिनेक उपन्यासकार कनेको साहस केने रहितथि, तँ सम्भव छल, जे ÷नवतुरिया'मे जे डेग यात्राी उठौलनि, से डेग ÷पारो'एमे उठि जइतए। चेतना आ बौद्धिकताक दृष्टिएँ मिथिला क्षेत्रा सदासँ आगू रहल अछि, तथापि उपन्यास लेखनक विकासोन्मुख धारामे मैथिली एहि तरहें पछुआएल रहल, तकर मूल कारण रचनाकारक जीवनानुभूति आ रचना-दृष्टिक कमजोरी नहि छल; मूल कारण छल मिथिलाक जनपदीय परिस्थिति आ आम नागरिकक मानस लोक।

भारतीय स्वाधीनताक दशक भरि बाद सन् १९५८मे राजकमल चौधरीक पहिल मैथिली उपन्यास ÷आदिकथा' प्रकाशित भेल। एहि समय धरि मैथिली उपन्यासक भण्डार कोनो तेहेन झुझुआनो नहि छल। ÷चन्द्रग्रहण', ÷पारो' आ ÷नवतुरिया' सनक विशिष्ट उपन्यास सब प्रकाशित भ' चुकल छल। ÷पारो' क कथावस्तु आ घटनाक्रम पर मिथिलाक कट्टरपन्थी लोकनि वितण्डा ठाढ़ क' चुकल छलाह। असलमे मिथिला क्षेत्राक सामान्य जनजीवनक समस्या ओहि समय धरि विकराल छल। पंजी-प्रथा आ जमीन्दारी संस्कारसँ मिथिलाक जे वर्ग आक्रान्त छल, ओएह वर्ग सामाजिक व्यवस्थाक नीति-निर्धारक होइ छल। पंजी-प्रथाक कारणें मिथिलामे स्त्राी जातिक स्थिति दयनीय छल। बाल विवाह, बेमेल विवाह, बहु-विवाह, वृद्ध विवाह सन कुरीति पंजीए प्रथाक परिणति छल। तथाकथित उच्च कुलशीलक पुरुष अनेक बेर विवाह क' लै छलाह। कतोक किशोरी अथवा युवतीक विवाह, पिता आ पिमामहक उम्रक लोकसँ भ' जाइ छल। अइ किशोरी आ युवतीक पितावर्ग ओइ जमीन्दार लोकनिकें अपन उद्धारक बूझै छलाह आ तृप्त भेल घोषित करै छलाह जे बेटी आब रानी बनि राज करतीह, बेटीक मोन आ मनोभावकें बूझब ओ अपन दायित्व नहि मानै छलाह। जाहि समाजमे वैज्ञानिक विकासक कोनो टोप-टहंकार पहुँचि नहि सकल छल, ओतएक लोक अपन जीवन व्यवस्थाकें एतेक यान्त्रिाक बना नेने छल, जे ओहि बेटीक बाप-माइकें ई नहि बुझाइन जे एकटा स्त्राी लेल अन्न-पानि, जमीन-जथा, गहना-जेबरे टा सब किछु नहि होइ छै; कोनो स्त्राीक मनोवेगक उत्ताप-अनुताप, युवावस्थाक दैहिक भार सेहो बड़ अर्थ रखै छै। स्त्राी मनोवेगक अइ दशाक बोध ओहि उच्च कुल-वंशीय जमीन्दारकें सेहो नहि होइ छलनि। अइ तरहक विवाहक परिणति दू दिशामे होइ छल -- की तँ जवानीक उमेर अबैब-अबैत किशोरी विधवा भ' जाइथ, आ कि वृद्ध पति संग जवान पत्नीक रति-विलास सुखकर नहि पाबि कुण्ठित होइत रहथि। दुनू परिस्थितिमे देहक भार कोनो जवान पुरुखकें सौंप देबा लेल ओ युवती विधवा, अथवा अतृप्त सधवा ललायित रहै छलीह। राजकमल चौधरीक ÷आदिकथा' उपन्यास एहने अतृप्त सधवा अथवा कामातुर

विधवाक कथा थिक जे अभिलाषा आ मर्यादाक दू छोरसँ तानल-छानल छथि।

÷आदिकथा'क नायिका सुशीलाक विवाह वृद्ध जमीन्दार अनिरुद्ध बाबूसँ भेलनि। दुनूक वयसमे एक पीढ़ीक अन्तर छलनि। सुशीलाक उमेर अपन सतौत बेटा कुलानन्दसँ मेल-जोल खाइ छलनि। पहाड़ी नदी, अथवा कोशीक बाढ़ि, अथवा समुद्रक ज्वारि सन सनकी सुशीलाक जवानी आ देह-तन्त्रा कोनो मर्यादाक बन्हन मान' लेल तैयार नहि छलनि, मुदा घून खाएल चौकठि-केबाड़ सन मिथिलाक कौलिक मर्यादामे तकरा छेक क' रखबाक प्रयास कएल जाइ छल। अइ जर्जर मर्यादाक पुल पर सम्हरि-सम्हरि क' पैर राखि जीवन पार कर' चाहै छलीह, मुदा बीचहिमे अनिरुद्ध बाबूक भागिन देवकान्तक कान्तिमय रूप, चट्टान सन काया-काठी देखि सुशीला, अर्थात सोना मामीक मोन सम्हरि नहि सकलनि, ओ बहकि जेबाक उद्यम नहि केलनि, मुदा बहकि जएबासँ अपनाकें रोकि राखब एते आसानो नहि छलनि। सुशीलाक अतृप्त वासना आ दमित अभिलाषाक संकेत देवकान्तकें लागि जाइ छनि। अइ दुनू चरित्राक मनोविश्लेषण अइ उपन्यासमे बेस सूक्ष्मतासँ भेल अछि। बीचमे आओरो कतोक घटना-उपघटनाक माध्यमे मूल कथाकें माँसल आ प्रभावकारी बनाओल गेल।

मामि-भागिनक कामातुर अनुराग सामाजिक रूपें स्वीकार्य नहि अछि, तें एहि उपन्यासक कथानक मिथिलाक पुरातन विचारक लोककें पसिन नहि पड़लनि। कहल गेल जे ई कथा सत्य नहि सत्यानुरूप अछि, एहिमे अमर्यादित सत्यक वर्णन अछि, नायक-नायिकाक मनोवृत्ति अथवा मानसिक उद्वेलनक चर्चा करै काल लेखककें उचितानुचितक ध्यान रखबाक चाही, सामाजिक बन्धक अवहेलना क' कए कथामे विश्वसनीयता अनबाक आग्रह नहि हएबाक चाही, मामि-भागिनक कामजनित आकर्षण मर्यादाक उल्लंघन थिक।... हमरा जनैत ई समस्त धारणा पाखण्ड थिक। वस्तुतः उपन्यासकार कोनो अखबारक सम्वाददाता नहि होइत छथि जे ओ सत्य घटनाक रिपोर्ट लिखता। कथा आ कि उपन्यास सम्भाव्यक संकेत, वर्त्तमानक विश्लेषण आ अतीतक अनुस्मरण करैत अछि; घटितक सूचना द' देब मात्रा ओ अपन दायित्व नहि बूझै छथि। आदर्श स्थितिसँ कथा, उपन्यासकें परहेज नहि होइत अछि, ओ तँ आदर्शक अनुसन्धानमे लिप्त रहैत अछि; मुदा अयथार्थ आदर्श ओकरा लेल उपेक्षणीय अवश्य होइत अछि। अही उपन्यासक प्रसंग राजकमल चौधरीक कहब छनि-- सोनामामीक प्रति देवकान्तक प्रेम बड्ड आदर्श थिक। आ, अही आदर्शक रक्षाक कारणें देवक जीवन स्वाहा भ' गेल छइन। आब अहीं कहू; जे भस्म करए, आगि लेसने रहए, से आदर्श कोना, अनुकरणीय कोन तरहें? हम सामाजिक मर्यादाक पूजा करइ छी, आ (अयथार्थ) आदर्शवादिताक घोर विरोध।

आदिकथा उपन्यास पर जे लोकनि मर्यादाक उल्लंघनक दोहाइ देलनि, ओ लोकनि अनिरुद्ध बाबूकें अमर्यादित पुरुष नहि कहलनि, जे अपन अशक्य अवस्थामे सन्तानहुँसँ छोट वयसक युवतीकें पत्नीक रूपमे वरन् केलनि। सुशीलाकें जखन अतृप्त मनोवेगक दौरा पड़लनि तखन श्वसुर स्थानीय जोतखी जी आडम्बर पसारलनि जे हुनका पर प्रेतनी सवार भ' गेलखिनहें। आ, भूत झारबाक बहन्नें वधू-स्थानीय सुशीलाक बाँहि, पाँजर पकड़बाक आचरण गामक लोककें अमर्यादित नहि लगलनि। किऐक तँ अइ समस्त आचरणक फैंटेसीमे मिथिलाक समाज प्रारम्भहिसँ जीबैत आएल छल।

मनुष्य जें कि एकटा जटिल प्राणी थिक, तें मनुष्यक समस्त मानसिक प्रक्रिया विचित्रा जटिलतासँ आबद्ध रहैत अछि। हजारह बर्खक विकास-यात्राामे मनुष्यक सभ्यता आइ जाहि स्थिति धरि पहुँचल अछि, ताहिमे विवेक धारणक विराट भूमिका अछि। मर्यादाक रक्षा विवेकहीन आचरणसँ नहि भ' सकैत अछि। मर्यादाक निर्वाहमे एक ठाम देखाओल गेल विवेकहीनता अनेक अमर्यादाक जननी होइत अछि, एहि सत्यक उपेक्षा केनिहार लोक पारो, आकि आदिकथा सन उपन्यासक कथा पर अँगुरी उठबैत छथि।

मैथिलीमे लिखल राजकमल चौधरीक तीन गोट उपन्यास उपलब्ध अछि --आदिकथा, आन्दोलन आ पाथर-फूल। एकर अलावा हंसराजक नामे १९.११.१९५९ सँ ०६.०१.१९६०क बीच एक पत्रामे राजकमल चौधरी लिखने छथि... जनवरीमे एकटा मैथिली उपन्यास लिखब हम -- बटगमनी। एकटा एहन युवती पर जे भरि निजगी विभिन्न लोकक संगें पड़ाएल घुरइ'ए। कथाक विस्तार जनकपुरसँ पूर्णियाँ धरि रहत।-- कहि नहि ई उपन्यास लिखल गेल अथवा नहि। आदिकथा आ आन्दोलन तँ पहिनहिसँ पाठक लोकनिकें उपलब्ध छलनि। पाथर-फूल उपन्यास हेबनि धरि अनुपलब्ध छल। आखर (राजकमल विशेषांक)मे जीवकान्त अपन निबन्धमे राजकमल चौधरीक पंक्ति उद्धृत कएने छथि -- एक गोट उत्साही युवक ओकरा (÷पाथर-फूल' उपन्यासकें) प्रकाशित करौलनि, मुदा ककरो कहला पर जे उपन्यासक अश्लीलताक कारणें प्रकाशक बन्हा जेताह, प्रकाशित मैटर ओ (प्रकाशक) डैमेज करबा देलनि। -- मुदा सुकर भेल जे दू बर्ख पूर्व तारानन्द वियोगी ओहि उपन्यासक एकमात्रा प्रति कतहुसँ नष्ट-भ्रष्ट स्थितिमे उपलब्ध केलनि। सम्पूर्ण पोथीमे दीवार

महाशय आर-पार एकटा भोकाँड़ क' देलखिन। ओही स्थितिमे ओकर छाया प्रति करवा कए बीचसँ पंक्तिकें जोड़ल गेल अछि। जोड़ल शब्दावलीमे राजकमलक शैली आ गरिमा अक्षुण्ण रहि सकल -- से कहब कठिन अछि, मुदा एते तय अछि जे उपन्यासक रसबोधमे कोनो बाधा उपस्थित नहि होइत अछि। एकर अलावा आओरो एकाध उपन्यासक चर्चा अछि, मुदा तकर कोनो सूत्रा एखन धरि उपलब्ध नहि भेल अछि।(अगिला अंकमे)



डॉ कैलाश कुमार मिश्र (८ फरबरी १९६७-) दिल्ली विश्वविद्यालयसँ एम.एस.सी., एम.फिल., "मैथिली फॉकलोर स्ट्रक्चर एण्ड कॉग्निशन ऑफ द फॉकसांग्स ऑफ मिथिला: एन एनेलिटिकल स्टडी ऑफ एन्थ्रोपोलोजी ऑफ म्युजिक" पर पी.एच.डी.। मानव अधिकार मे स्नातकोत्तर, ४०० सँ बेशी प्रबन्ध -अंग्रेजी-हिन्दी आऽ मैथिली भाषामे- फॉकलोर, एन्थ्रोपोलोजी, कला-इतिहास, यात्रावृत्तांत आऽ साहित्य विषयपर जर्नल, पत्रिका, समाचारपत्र आऽ सम्पादित-ग्रन्थ सभमे प्रकाशित। भारतक लगभग सभ सांस्कृतिक क्षेत्रमे भ्रमण, एखन उत्तर-पूर्वमे मौखिक आऽ लोक संस्कृतिक सर्वांगीन पक्षपर गहन रूपसँ कार्यरत। यूनिवर्सिटी ऑफ नेब्रास्का, यू.एस.ए. केर "फॉकलोर ऑफ इण्डिया" विषयक रेफ़ेरी। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालयक पुरस्कारक रेफरी सेहो। सय सँ ऊपर सेमीनार आऽ वर्कशॉपक संचालन, बहु-विषयक राष्ट्रीय आऽ

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता। एम.फिल. आऽ पी. एच.डी. छात्रकेँ दिशा-निर्देशक संग कैलाशजी विजिटिंग फैकल्टीक रूपमे विश्वविद्यालय आऽ उच्च-प्रशस्ति प्राप्त संस्थानमे अध्यापन सेहो करैत छथि। मैथिलीक लोक गीत, मैथिलीक डहकन, विद्यापति-गीत, मधुपजीक गीत सभक अंग्रेजीमे अनुवाद।

डॉ कैलाश कुमार मिश्र, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्रमे कार्यरत छथि। "रचना" मैथिली साहित्यिक पत्रिकामे "यायावरी" स्तंभक प्रशस्त स्तंभकार श्री कैलाश जीक "विदेह" लेल प्रारम्भ कएल गेल यायावरीक प्रस्तुत अछि ई दोसर खेप।

यायावरी



हमर एक बंगाली मानवशास्त्री मित्र छथि। हुनकर नाम छन्हि डॉ अभिक घोष। बहुत समर्पित लोक। अपन विषय मानव-विज्ञानक प्रति घोष साहेबकेँ अगाध प्रेम छन्हि। आइ-काल्हि पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़मे मानव-विज्ञान पढ़ा रहल छथि। झारखण्डक मुण्डा जनजातिपर पी.एच.डी. केने छथि। हालहिमे घोष साहेब हमरा लग हमर पुत्र शशांककेँ देखबाक हेतु दिल्ली आएल छलाह। हुनकासँ हम अपन नॉर्थ कछार हिल्स केर यात्राक सम्बन्धमे चर्चा केलहुँ। ओऽ बहुत प्रसन्न भेलाह। कहलन्हि "कैलाशजी, हमर पत्नी उत्तर-पूर्व भारतक छथि। ओऽ हमेशा हॉफलोंग केर प्रशंसा करैत रहैत छथि। हालहिमे हम एक संगोष्ठीमे भाग लेबाक हेतु कलकत्ता गेल रही। ओतए सेहो हॉफलोंग केर प्रसंग चललैक। कलकत्तामे बंगालक एक प्रसिद्ध पत्रकार अमिताभ चक्रवर्ती हमरा कहलन्हि जे नॉर्थ कछार हिल्स भारतक स्वीटजरलैण्ड थीक"।



डॉ अभिक घोषक एहि बातपर हम कहलियन्हि "अभिकजी, हमरा अइ बातक जानकारी दियऽ, की अमिताभ चक्रवर्ती अरुणाचल प्रदेशक तवांग गेल छलाह"?

"हँ हँ, अनेको बेर"। अभिक फटाकसँ बहुत आत्मविश्वासक संग हमर प्रश्नक उत्तर देलन्हि। फेर ओऽ एहि बातकेँ स्पष्ट करए लगलाह, "देखू। दुनू स्थानक अपन-अपन महत्व छैक। तहिँ तुलना करब उचित नहि। पुनःश्च हम तवांग गेल छी, परन्तु नॉर्थ कछार हिल्स जयबाक अवसरसँ एखन धरि वंचित छी। ताहिँ एहि सम्बन्धमे कुनो टिप्पणी करब यथोचित नहि"।

हमरा दिस मुँह कय आँखिक भंगिमाकेँ हमरापर सत-प्रतिशत केन्द्रित करैत डॉ अभिक घोष हमर ध्यानकेँ अपन कथ्यपर आकर्षित करैत कहलाह, "कैलाशजी, अहाँ एहि विषयपर सोचबाक लेल एवं निर्णय लेबाक लेल सही आदमी छी। कारण अहाँ दुनू स्थान-तवांग आऽ नॉर्थ कछार हिल्स- केर चप्पा-चप्पा घुमल छी"।

हम डॉ अभिक घोषक बातपर अपन मूरी हिला देल। कनिक कालक बाद हम नॉर्थ कछार हिल्सक परिवेशमे एक बेर पुनः मानसिक रूपसँ पहुँचि गेलहुँ। जुआएल, पाकल, सुखाएल, कुम्हलाएल, अधपाकल, खिच्चा, कोमल, हरियर, गाँठसँ भरल झुण्डक-झुण्ड बाँसक बीट हमरा मोनमे स्मरण आबए लागल। कल-कल करैत टेढ़-टाढ़ नदी, सुन्दर हरियर पहाड़ी, नव बालक-बालिका, युवक, युवती एवं वृद्ध अपन परम्परागत बहुरंगी वस्त्रमे नचैत-गबैत विभोर भेल हमर मानस पटलपर रंगमंचक अद्वितीय नायक एवं नायिका जकाँ स्मरण होमय लागल; लागल जेना सरिपहुँ हम सेकेण्डोमे दिल्लीक शोरगुलसँ हजारो किलोमीटर दूर असम राज्य केर नॉर्थ-कछार हिल्समे पहुँचि गेलहुँ। की धरती, की पहाड़, की संस्कृति आऽ केहेन आत्मीय आऽ रमनगर लोक! जतेक प्रशंसा करी कम। अनुभूतिकेँ याद करैत आत्मिक प्रसन्नता होइत अछि।



यायावरीकेँ आगाँ बढ़बैत पुनः नॉर्थ कछार हिल्स चली।

बात बांसक करैत रही। साधारणतया ५०-६० वर्षक अन्तरालमे बांसमे एकाएक फूल आबय लगैत छैक। फूल केहेन तँ धानक धानक सीस जकाँ। दाना सेहो धाने जकाँ। फूल पकलाक बाद नीचाँ खसय लगैत छैक। मूस सभ ओहि फूलकेँ धान बुझि झुण्डक-झुण्डमे आबि ओकरा कुतरनाई प्रारम्भ कऽ दैत छैक। मूसक संख्या आवश्यकतासँ अधिक भऽ जाइत छैक। फलस्वरूप जखन धानक खेतीक समय होइत छैक, तखन जतेक धान लोक सभ बीयाक रूपमे बाऊग करैत अछि, मूस सभ एक-एकटा धानक बीयाकेँ खाऽ जाइत छैक। लाख प्रयासक बादो लोक धान उगेबामे असमर्थ भऽ जाइत अछि। परिणाम ई होइत छैक जे घोर अन्नक आपदा समस्त क्षेत्रमे व्याप्त भऽ जाइत छैक। एहि आपदासँ अरुणाचल प्रदेश आऽ सिक्किमकेँ छोड़ि लगभग समस्त उत्तर-पूर्व भारतक भू-भाग कहियो ने कहियो तवाह होइते टा अछि। हालांकि आइ काल्हि सरकारी मदति भेटैत छैक। कृषक सभ सेहो जागरुक भेल जाऽ रहल छथि; समय रहिते मूस मारबाक एवं मूसकेँ भगेबाक पूर्ण इन्तजाम कएल जाइत छैक। आब कल्पना कऽ सकैत छी जे एहेन विभिषिकासँ हानि कम हेतैक।



बांसक फुलेनाइक चर्चा करैत छी तँ अरुणाचल प्रदेशक चर्चा केनाई अनिवार्य। जेना कि बता चुकल छी जे एहि प्रदेशक लोक एहि विभिषिकासँ नहि प्रभावित होइत छथि। एकर कारण ई जे अरुणाचल प्रदेशक तमाम भू-भागक आदिवासी लोकनि मूस पकरबामे निपुण होइत छथि। एतबहि नहि मूस हिनका लोकनिक बहुत रुचिगर

भोजन छन्हि। जखन हम लोअर दिवांग घाटी आऽ लोहित जिलामे भ्रमण करैत रही तँ लोक सभकँ (विशेषण रूपेण इदू मिसमी, दिगारु मिसमी, मिजो-मिसमी तथा खामती जनजाति) मूसक शिकार करैत आऽ ओकर मांस खाइत देखलहुँ। एहि परम्पराक नीक परिणाम ई होइत छैक जे बांस फुलेलाक उपरान्तो मूसक जनसंख्यापर नियन्त्रण बनल रहैत छैक, आऽ एतय केर लोक बांस फुलेला उपरान्त होमय बला विभीषिकासँ बचल रहैत छथि।



हमरा लोकनि नॉर्थ कछार हिल्स केर तमाम जनजातिक स्त्रीगण सभकँ जिलाक तमाम क्षेत्रसँ बजा समाजक विकास एवं सांस्कृतिक उन्नतिमे नारीक योगदानपर अलग-अलग जनजातिक महिलाकँ अलग-अलग समूहमे राखि हुनका लोकनिकँ अलग-अलग समूहमे राखि हुनका लोकनिकँ विचारसँ अपना-आपकँ अवगत कराबय चाहैत रही। स्पष्ट कऽ दी जे ई एकमात्र कार्यक्रम नहि छल। अनेक कार्यक्रममे ईहो एकटा महत्वपूर्ण कार्यक्रम छल। एकर परिणामसँ हम गदगद भेल रही। ई कार्यक्रम पाँच दिन चलल। पाँचो दिन महिला लोकनि हमरा लोकनि केर अनुमानसँ ज्यादेक संख्यामे उपस्थित छलीह। सभ दिन अपन परम्परागत वस्त्र, आभूषण एवं दैनिक जीवनक रूपरेखा प्रस्तुत करैत। भेल जे श्रृंगारक जंगलमे छी। एहेन जंगल जकर कल्पना मात्र कैल जाऽ सकैत अछि। वास्तवमे एहेन रंगमंच- उत्साहमय आऽ जीवन्त जीवनक आऽ संस्कृतिक निर्माण असंभव। परन्तु छल तँ सत्य आऽ संभव भेल अनुपम दृश्य!



हरेक महिला समूहमे हमरा लोकनिक तीन-चारि कार्यकर्ता साक्षात्कार करबाक हेतु तथा अधिकसँ अधिक जानकारी प्राप्त करबाक हेतु तत्पर छलाह। एहि कार्यकर्ता लोकनि केर चुनाव हमरा लोकनि अपन सहयोगी-संस्था- श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्रक सहयोगसँ केने रही। तमाम कार्यकर्ता स्थानीय छलाह एवं हॉफलोंग हिन्दी, अंग्रेजी आऽ असमिया भाषाकँ झूरझार बाजैत आऽ लिखैत छलाह। कार्यकर्तामे आधासँ अधिक लड़की सभ छलीह।

हम प्रतिदिन प्रातः सभ समूहकँ मुख्य हॉलमे बैसा अपन कार्यशालाक उद्देश्यक जानकारी सहभागी लोकनिकँ दैत छलियन्हि। अगर किनको कुनो तरहक संशय रहल तँ तकरो निराकरण करबाक प्रयास करैत छलहुँ। अपन संस्कृति, संस्कार एवं संस्कारक नीक चीज एवं परम्पराक रक्षा आधुनिकताकँ स्वीकारैत केना करी ताहिपर हम प्रभावपूर्ण ढंगसँ जोर दैत छलहुँ। हमरा एना बुझना जाइत छल जेना सहभागी महिला लोकनि एवं स्थानीय पत्रकार सभ हमरासँ प्रभावित छलाह। स्थानीय अखबारमे एवं टेलीविजनपर नित्य समाचार अबैत छल। प्रति दिन सांझमे सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छलैक, आऽ अन्ततः भोजन (रात्रिक भोजन)सँ पहिने कार्यकर्ता लोकनि हमरा दिन भरिक क्रिया-कलापक सम्बन्धमे संक्षिप्त जानकारी दैत छलाह। ओहि जानकारीक आधारपर हम अगिला दिन की करी तकर निर्देश दैत छलियन्हि।



कार्यक्रम अपन पूर्ण गतिसँ चलि रहल छल। एक दिन साँझमे हम चाह पिबैत रही। ओतए दिमासा जनजातिक किछु महिला हमरा लग आबि निवेदन केलन्हि, "श्रीमान्! कनी हमरा लोकनिक कार्यशालामे चलब?"

हम कहलियन्हि: "हँ, हँ। अवश्य जाएब"। आऽ चाहक प्याला हाथमे लेने विदा भऽ गेलहुँ। हमर एहि व्यवहारसँ ओऽ सभ गदगद भऽ गेलीह।

जखन हम पहुँचलहुँ तँ ओतए केर माहौल दोसरे जकाँ रहैक। तीन स्थानीय पत्रकार अपन कैमरा संग आऽ एक टी.वी.पत्रकार गुवाहाटीसँ आयल छलाह। ई महिला लोकनि हमरा पत्रकारक समक्ष अपन परम्परामे हाथक बनाओल कलात्मक चद्दरिसँ स्वागत करक हेतु बजेने छलीह। हम एहि बातकेँ सुनि कनी घबरेलहुँ। कारण एहि तरहक परम्परामे हमरा नेतागिरी केर दुर्गन्धि बुझना जाइत अछि। परन्तु दिमासा महिला लोकनिक स्नेहकेँ अपमानित हम नहि करय चाहैत रही। ताहिं चद्दरिकेँ स्वीकार कएल। एकर बाद देखैत छी जे तमाम जनजाति समूहसँ दू-तीन महिला चद्दरि, गमछा आदि लय हमर स्वागत हेतु आयल छथि। लोकक स्नेह देखि मोन भरि आएल। सभसँ भेँट स्वीकार कएल। फेर सोचए लगलहुँ: "जखन ई सभ एतेक नीक छथि तँ आतंकवादी गति-विधि, खून-खरापा किएक? की समस्याक समाधान लोक सभसँ मिलि कऽ नहि भऽ सकैत अछि"? ई बात सोचए लगलहुँ। लोकक प्रेममे आकंठ भऽ गेलहुँ। अतबेमे कार्बी जनजाति समूहक तीन महिला अयलीह। ओऽ सभ कहलन्हि: "श्रीमान्, कनी हमरा सबहक कार्यशालामे पाँच मिनट हेतु चलबैक"?



हम बिना किछु कहने अपन मूरीकेँ स्वीकारात्मक अवस्थामे हिलबैत कार्बी महिला सबहक कार्यशाला दिस प्रस्थान केलहुँ"।

ओतए गेलाऽ पर दलक महिला लोकनि कहय लगलीह: "श्रीमान्, अहाँ लोकनि प्रथम बेर हमरा सभकेँ ई अवसर देलहुँ अछि जे हम सभ अपन समाज, अपन संस्कृति, अपन परम्परा दिस ताकी। परम्पराक ताकतिकेँ आँकी। एतए तँ इसाईयत, आधुनिकता, शिक्षा एवं आतंकवादक कारणेँ लोक सभ परम्परा बिसरल जाऽ रहल अछि। अपन जनजातिक ढंगसँ रहनाई, व्यवहार केनाई, खेनाई-पिनाई, गीत-नृत्य आदि तँ आजुक युगमे पिछड़ापनक निशानी छैक। किछु जनजातिक लोक जे इसाईयतकेँ अपन धर्म स्वीकार कऽ लेलन्हि अछि, तनिका लोकनिकेँ विवाह आदिक तमाम रीति क्रिश्चियन रीतिक अनुरूप करए पड़ैत छन्हि। गिरजाघरमे विवाह केनाई, आधुनिक वस्त्र अर्थात् पेन्ट-शर्ट पहिर कऽ विवाह केनाई। ओऽ लोकनि चाहैतो अपन जनजातिक सनातनीक परम्परासँ विवाह, जन्म-संस्कार एवं मृत्यु संस्कार नहि कऽ सकैत छथि। लेकिन अहाँक कार्यशालाक बाद हमरा लोकनि एहि तथ्यपर गंभीरतासँ विचार कऽ रहल छी। धर्म कुनो भऽ सकैत अछि, परन्तु स्थानीय परम्पराक पालन अवश्य हेबाक

चाही। स्थानीय परम्परा धरती, एतए केर वातावरण, पानि, पहाड़, परिस्थिति जे अटूट रूपेँ जुड़ल छैक। ई सभ बात हमरा लोकनि अहीँ सबहक कारणेँ एहि कार्यशालाक माध्यमसँ बुझि सकलहुँ अछि"।



हम मोनहि मोन प्रसन्न भेलहुँ आऽ अपन संस्थाक सदस्य सचिव डॉ कल्याण कुमार चक्रवर्तीक दूरदर्शितापर आश्चर्य होमए लागल हमरा। जखन-कखनो ओऽ हमरा एहि तरहेँ अनेक चीज संगे करय कहैत छथि, तखन हमरा बुझाइत छल जे ई हमरा मनुक्ख नहि सर्वशक्तिमान भगवान बनबय चाहैत छथि, जे कहियो सम्भव नहि थीक। एतेक चीज कहीं एक संगे संभव छैक? परन्तु आइ पता चलि गेल जे अगर नीक भावनासँ सही ढंगसँ कार्य कएल जाय तँ सभ किछु संभव छैक। ओहो मनुक्ख द्वारा। एहि हेतु भगवान बनक कुनो प्रयोजन नहि।

हम ई बात सोचि रहल छलहुँ। एकाएक एक परम्परागत परिधानमे सजल कार्बी महिला हमरा लग अयलीह आऽ कहलन्हि: "मिश्रा साहेब, एक बात कही"?

हम कहलियन्हि: "हँ, हँ। अवश्य कहू"?



ओऽ महिला बजलीह: " अहाँ जखन संस्कृति इत्यादिक सम्बन्धमे हमरा लोकनिसँ बात करैत छी तँ बड्ड नीक लगैत अछि। आब हम सभ विचार केलहुँ अछि जे सप्ताहमे कमसँ कम एक दिन अपन परम्परागत वस्त्र एवं गहनामे अवश्य रहब। लेकिन एक चीज हमरा सभकेँ पहिले दिनसँ परेशान कऽ रहल अछि। अहाँ मिथिलासँ छी। पढ़ल-लिखल छी। समस्त भारतक परम्पराकेँ जनैत छी। परम्पराक नीक चीजकेँ पालन हो आऽ ओऽ चीज शाश्वत रहय ताहि लेल प्रयासरत छी। परन्तु अहाँ कहियो अपन परम्पराक वस्त्रमे हमरा सभ लग नहि अएलहुँ। हमरा सभकेँ एहि चीजसँ आश्चर्य भऽ रहल अछि। हमरा लोकनि एहि विषयपर काफी विचार-विमर्श कएल आऽ अन्ततः एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ जे अहाँसँ एहि सम्बन्धमे बात करी। आशा अछि अहाँ हमरा लोकनिक भावनाकेँ सही अर्थमे लेब। एकरा अन्यथा नहि मानब"।



हम बिना कोनो देर केने अपन गलतीकेँ स्वीकार कऽ लेलहुँ। हम ओहि कार्बी महिलाकेँ कहलियन्हि: "ई हमर घोर गलती थीक। शायद दिल्ली शहरक जीवन चक्रमे फँसि हम अपन परम्परासँ दूर भऽ गेल छी। हमरा अहाँक विचार उत्तम लागल। अहाँ हमरा अपन मोनमे अपन मैथिली परम्परा आऽ संस्कारक प्रति घोर आस्था जाग्रत केलहुँ, ताहि लेल हम अहाँक प्रति हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छी। अहाँ बातकेँ अन्यथा भला केना लऽ सकैत छी? हम अहाँकेँ वचन दैत छी, जे हम आब जतए कतहु जाएब एक जोड़ धोती-कुर्ता अवश्य लऽ जाएब आऽ कमसँ कम एक दिन अपन मिथिलाक परम्परागत परिधानमे अवश्य रहब"।

हमर एहि बातसँ ओऽ कार्बी महिला बड्ड प्रसन्न भेलीह। एकर बाद हम कार्बी कार्यशालासँ दिमासा जनजातिक कार्यशाला दिस गेलहुँ।

दिमासा जनजातिक महिला लोकनिक कार्यशालामे एहि बातपर चर्चा चलैत रहैक जे शहर (अर्थात् हॉफलोंग) केँ साफ एवं स्वच्छ रखबाक लेल महिला सभकेँ की करक चाही।



हम पुछलियन्हि: "अहाँ सभ एकटा बातक उत्तर दिअ। की एहि हॉफलोंग शहरमे गन्दगी नहि फैलैक, एतय मच्छड़ आदिक प्रकोप नहि हो, ट्रैफिक निअमक पालन होइक, ई कर्तव्य ककर छैक? सरकारक? प्रशासनक? पुरुषक? नेताक? आकि आनो ककरो? अहूँ लोकनिक अर्थात् एतय केर सजग महिला सभक सेहो"?

हमर एहि प्रश्नक उत्तर देमाक हेतु एक अधेर महिला अयलीह। ओऽ कहलन्हि: "श्रीमान् शहर तँ सबहक छैक। की महिला आऽ की पुरुष! एकटा उदाहरण हम एहि सम्बन्धमे देमय चाहैत छी। किछु दिन पूर्व हॉफलोंग शहरमे मलेरियाक भयंकर प्रकोप भेलैक। चारु कात गन्दगी पसरल रहैक। सड़कपर सफाई नहि। ककरो एहि बातक

चिन्ता नहि। नॉर्थ कछार ऑटोनोमस काउन्सिलक अधिकारीगण एवं नेता लोकनिसँ दिमासा महिला एसोसिएशन केर सदस्य सभ बात केलन्हि तँ ओऽ लोकनि आश्वसन देलाह परन्तु ओहि आश्वासनपर कोनो कार्यवाही नहि केलन्हि। मलेरियाक कारणेँ स्त्रीगणक जीवन नर्क बनल छलैक। बच्चा सभ ज्यादे परेशान। बच्चाक कारणेँ मायो परेशान। की करु की नहि। अन्ततः हमरा लोकनि शहरक सफाई करक बीड़ा स्वयं अपना हाथमे लेल। करीब पचास महिला एकत्रित भेलहुँ। पच्चास टा बाढ़नि, पच्चास पथिया, पाँच कोदारि कीनल आऽ सफाई केर अभियानमे लागि गेलहुँ। सर्वप्रथम जिलाधिकारीक ऑफिसक बाहरक गन्दगीकेँ साफ करए लगलहुँ, फेर ऑटोनोमस काउन्सिलक दफ्तर, फेर शहरक रोड। सामान्य जनता सँ गीत गाबि-गाबि एवं अपन सफाई अभियानसँ शहरकेँ साफ रखबामे मदति करबाक निवेदन करय लगलहुँ। एक दिन तँ लोक सभ हमरा सभपर ध्यान नहि देलाह। परन्तु दोसर दिन पत्रकार सभ एहि बातकेँ उजागर केलन्हि आऽ सरकार, प्रशासन एवं नेताक अकर्मण्यताक बारेमे लिखय लगलाह। आब लोक सभकेँ एहसास भेलन्हि जे गलती भेल। तेसर दिन एकाएक समस्त प्रशासन साकांक्ष भऽ गेल आऽ चप्पा-चप्पामे सफाई होमए लगलैक। हमहूँ सभ जनता लोकनिसँ साफ एवं स्वच्छ रहबाक निवेदन करैत रहलहुँ। शहर हमर अछि तँ एकर ध्यानो हमरे सभकेँ राखए पड़त"।



दिमासा महिलाक एहि जवाबसँ लागल जे नीक चीजक श्रीगणेश संसारक छोटसँ छोट कोनसँ भऽ सकैत अछि। समाजमे जागृति लेबाक लेल महिला वर्गक योगदान अतुलनीय भऽ सकैत अछि। दिमासा महिला हमरा कहलन्हि: "श्रीमान्, हमरा लोकनिक आनो अनेक तरहक समाजक समस्या छैक जाहिपर एकजुट भए कार्य करए चाहैत छी। पुरुषक शराब पीनाई, एकसँ अधिक पत्नी रखनाई आदि किछु एहन विषय छैक जाहिपर हमरा लोकनि गम्भीरतासँ सोचि रहल छी"।

हम जवाब देलियन्हि: "अहाँ लोकनिक प्रयास प्रशंसनीय अछि। अहाँक प्रयोग प्रभावकारी अछि। एहि तरहक प्रयोग सूतल प्रशासन एवं अधिकारी सबहक निन्द खोलबाक नीक औषधि थीक। हमरासँ जतेक मदति संभव भऽ सकत से हम करब"।



ओऽ महिला कहलीह: "दिमासा महिला उत्थान समिति नामक एक संस्थाक गठन हमरा लोकनि केलहुँ अछि। एकरा हमरा लोकनि दिल्लीसँ अखिल भारतीय संस्थाक रूपमे रजिस्ट्रेशन करबय चाहैत छी। एहि पंजीकरणमे अहाँक सहायता चाही। अगर पंजीकरण भऽ गेल तँ हमरा लोकनि अनेक तरहक कार्य करब"।

हम उत्तर देलियन्हि: "अहाँ लोकनि जखन चाही दिल्ली आबि जाऊ। हम दू-तीन दिनक भीतर अहाँ संस्थाक पंजीकरण अखिल भारतीय संस्थाक रूपमे पंजाब रेगुलेशन एक्ट केर अन्तर्गत सोसाइटीक रूपमे करबा देब। एहिमे कोनो तरहक पैसा इत्यादि नहि लागत"।



दिमासाक बाद हम जेमि नागा महिला समूह द्वारा आयोजित कार्यशाला दिस बढ़लहुँ। जेमि नागाक सम्बन्धमे ई जानकारी देनाई उचित जे ई नागा मात्र असम टा मे रहि गेल अछि। आन राज्यमे तीन नागा मिलि एक जिलियांगरोंग (zeliangrong) बनि जाइत अछि। तहिँ नागा बहुल प्रदेश नागालैण्ड आऽ मणीपुरमे एकर स्वतंत्र अस्तित्व नहि रहि जाइत छैक। सच पूछी तँ जेमि जनजातिक महिला सबहिक आभूषण एवं वस्त्र सभसँ आकर्षक आऽ मनोहारी लागल। जेमि महिला लोकनि कहलीह जे हुनकर सबहक अपन महिलाक संस्था छन्हि। संस्थाक उद्देश्य जेमि नागा समुदायमे अपन संस्कृति आऽ परम्पराक रक्षा केनाई छैक। एक उद्देश्य इहो जे एहि समुदायक लोक इसाईयतकेँ नहि स्वीकार कय अपन मूल जनजातीय धार्मिक मान्यता आऽ आस्थासँ जुड़ल रहथि। नागालैण्डमे लगभग ९५ प्रतिशत नागा समुदाय केर लोक इसाई भऽ चुकल छथि, स्थिति कमो-बेश मणीपुरक नागा समुदायक सेहो यैह छन्हि। परन्तु सौभाग्यसँ नॉर्थ कछार हिल्स केर जेमि नागाक अधिकांश परिवार एखनहुँ धरि अपन मूल मान्यता, धर्म, देवी-देवता, पूजा-पद्धति आदिसँ जुड़ल छथि।



जिमि नागा महिला समूहमे एकटा २७ वर्षीय अविवाहित युवती भेटलीह। हुनकासँ पताचलल जे जिमि नागाक महिला सभ अपन संस्कृतिक रक्षाक प्रति बड्ड सचेत छथि। ओऽ २७ वर्षीय नागा नायिका हमरा ईहो बतेलीह जे ओऽ तीन वर्ष धरि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ केर मुख्यालय नागपुरसँ प्रशिक्षण लय आयलि छथि।



हम कहलियन्हि: "अहाँकेँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ केर वातावरण केहन लागल? ओतए केर लोक सभ हिन्दू धर्मक प्रति अनेरे निष्ठा तँ नहि जगेबाक प्रयास कयलन्हि? एहि सभ कारणेँ अहाँकेँ अपन जनजातीय धार्मिक विश्वास आऽ रीति-रिवाजपर कोनो आघात तँ नहि पड़ल"?



हमर प्रश्नक उत्तर दैत नागा नायिका कहलन्हि: "की कहि रहल छी श्रीमान्! ओऽ लोकनि तँ हमरा सभकेँ हमेशा यैह कहलन्हि जे अपन मान्यता, धर्म, परम्परा आदिक त्याग नहि करू। अगर परम्परामे कोनो अन्ध-विश्वास अथवा विनाशकारी तत्व अछि तँ ओकर निदान अवश्य करू। जेना हमरा लोकनि परम्परासँ जानवर आदिक बलि चढ़बैत छी। ओऽ सभ कहैत छथिकि अगर संभव भऽ सकय तँ कमसँ कम मिथुन, साँढ़ या भैंसाक बलि दिअ। जिमि नागा समुदायमे बियाहल स्त्रीगण सिन्नूर नहि लगबैत छथि। फेर कोनो लड़कीकेँ देखि ई पता कोना लगाएल जाऽ सकैत अछि कि ई लड़की कुमारि अछि आकि व्याहता? परम्परागत संस्कृतिकेँ अगर पालन करी तँ ई बात सहजतासँ पता चलि जाइत अछि। परम्परा तँ ई छैक जे कुमारि कन्या विवाहसँ पहिने कपारक आगाँ किछु केशकेँ आधा कटा ओकरा कपारपर लटकबइत अछि। संगहि कनपटीपर केश विन्यास करैत अछि। एहिसँ सहजतासँ पता चलि जाइत छैक कि फलाँ-ने-फलाँ लड़की कुमारि थीकि"।



हम ओहि नागा नायिकासँ प्रश्न केलियन्हि: "अहाँ ई बताऊ जे ब्याहता महिला केर पहचान फेर कोना होइत छन्हि"?

हमर प्रश्नक जवाब दैत ओऽ नागा नायिका कहय लगलीह: "विवाह होइते नागा महिला कपार परक केसकँ कटेनाई बन्द कऽ दैत छथि आऽ केसकँ कपारपर नहि लटका माथक सीथ दिस ऊपर कय बान्हय छथि। संगहि विवाह होइते मातरि नागा महिला कनपट्टी बला किछु लट दुनू कात कटा लैत छथि। एहिसँ कियोक सहजतासँ पता लगा सकैत अछि कि फलाँ ने फलाँ स्त्रीगण ब्याहता थीकि"।



नागा नायिका फेर हमरा कहय लगलीह जे प्रतिवर्ष समस्त बराक घाटी आऽ नॉर्थ कछार पहाड़ी केर जेमि नागा लोकनिक महिला सभ जनवरी-फरवरी मासमे कोनो दिन कोनो-ने-कोनो जिमि नागा गाँवमे जुटान करैत छथि। मर्दक कोनो प्रयोजन नहि। प्रत्येक जिमि नागा गामक महिला सभमे एक प्रधान, एक सहायक तथा एक ट्रेजरार होइत छथि। मर्दक कार्य केवल एतेक जे शामियाना लाबथि, स्टेज बनाबय इत्यादिमे महिला लोकनिकँ मदत करथि। हजारक संख्यामे स्त्रीगण सभ अबैत छथि। हुनका लोकनिकँ रहबाक एवं खेबाक इन्तजाम गामक महिला सभ करैत छथि। प्रत्येक घरमे तीन-चारि या सामर्थ्यक हिसाबे कम-ज्यादे महिला सभ रहि जाइत छथि, जाय कालमे अतिथि गामक महिला सभकँ अपना संगे आनल चाऊर, किछु पाई, हरियर तरकारी आदिक संग किछु पाई दऽ दैत छथिन्ह। एहिसँ ककरोपर कोनो अनेर भार नहि पड़ैत छैक। प्रत्येक वर्ष नव पदाधिकारीक चुनाव होइत छैक, एवं अगिला वर्षक जुटान कोन गाममे हैत तकर निर्णय सेहो लेल जाइत छैक।



एहि महिला सभाक उद्देश्य मूल रूपेण परम्परागत जिमि नागा जनजातिक परम्पराकँ महिला लोकनिक माध्यमसँ बचेबाक थीक। ई सभा एक सांस्कृतिक जनचेतना थीक। एकर सूत्रधार छलीह महान स्वतंत्रता सेनानी आऽ परम गम्भीर, चतुर्मुख प्रतिभासँ सम्पन्न जेलियांगरोंग नागा समुदायक रानी गैदीन्लयू (Gaidinliu)। गैदीन्ल्यूक जन्म आजुक मणीपुर प्रान्तमे २६ जनवरी १९१५ ई. मे भेल छलन्हि। हुनकर गाम तामेंगलोंग जिला अन्तर्गत तौसेम सब-डिवीजनमे छन्हि। गामक नाम लोंगकाओ छैक।



कहल जाइत छैक कि प्रारम्भहिसँ गैदीन्ल्यू जिनका कि स्थानीय लोक सभ रानी माँ कहैत छन्हि, बहुत प्रतिभासम्पन्न आओर साहसी छलीह। ब्रिटिश सरकारक सामाजिक आर राजनैतिक क्रिया-कलाप देखि तेरह वर्षक छोट अवस्थामे रानी माँ विचलित भऽ गेलीह आऽ एकरा विरुद्ध संघर्षक बिगुल बजेबाक प्लान करए लगलीह। किंवदन्ती तँ ई छैक जे छोटे उमरिमे रानी माँ मे दैविक शक्ति प्रवेश कऽ गेलन्हि। हुनकर एहि आश्चर्यजनक शक्तिक भान सर्वप्रथम हुनक पिताकँ भेलन्हि। रानी माँ के तेरहम अवस्थामे पहुँचैत एहि बातक अनुभूति होमय लगलन्हि जे अंग्रेज सभ प्रशासनके मादे आऽ पुनः क्रिश्चियन मिशिनरी केर माध्यमसँ आजुक तीन उत्तरपूर्वी राज्य- असम, नागालैण्ड आऽ मणीपुर- केर नागा जनजातिक तमाम उपजाति सबहक संस्कृति, संस्कार आऽ परम्पराक नाश कऽ रहल अछि। ठीक ओही क्षण रानी माँ हैपु जदोनांग नामक नागा विद्रोहीसँ भैंट केलन्हि। जदोनांग रानी माँ कँ बतेलखिन्ह जे केना क्रिश्चियन मिशिनरीक लोक सभ स्थानीय संस्कृति आऽ संस्कारक सर्वनाश कऽ रहल अछि। जदोनांग महोदयक दर्शनसँ प्रभावती भय रानी माँ हुनकर परम अनुयायी भऽ गेलीह। फेर की छल १९२७ ई. मे एकाएक लोक सभ आन्दोलन प्रारम्भ कऽ देलक। रानी माँ ओहि आन्दोलन केर प्रमुख सूत्रधारमे एक छलीह। लोक सभ एकाएक अंग्रेजक शुल्क आऽ बलपूर्वक बेगारीक प्रथाक विरोध करय लागल। सबतरि हड़ताल पडि गेलैक। धीरे-धीरे चारि-पांच वर्षमे आन्दोलन अपन पराकाष्ठापर चढ़ि गेल। दुर्भाग्यसँ ओहि समय हैपू जदोनांगकँ अंग्रेज सभ छलसँ कैद कऽ लेलकन्हि आऽ कनिकबे दिनक बाद २९ अगस्त १९३१ ई. मे आजुक मणीपुर राज्यक राजधानी इम्फालमे फाँसीपर निर्दयतापूर्ण ढंगसँ चढ़ा देलकन्हि। एहि घटनासँ रानी माँ बड्ड दुखी भेलीह, परन्तु अपन निश्चय पर चट्टान जकाँ ठाढ़ि छलीह।



आब आन्दोलन केर समस्त कमान रानी माँ के हाथमे आबि गेलन्हि। कतेक ठाम हुनकर गुरिल्लानुमा अनुयायी सभ अंग्रेज सभकँ पश्त कएलक। अंग्रेज सिपाही सभ रानी माँ के युद्ध कौशलसँ त्राहि-त्राहि करय लागल। अही नॉर्थ कछार धरतीक हंगरुम नामक गाममेअंग्रेज सिपाही आऽ रानी माँक समर्थकक बीच भयानक संघर्ष भेलैक। बादमे घोर तामसमे आबि अंग्रेज सभ समस्त गामकँ आगिमे झौंकि देलकैक। जान-मालक बड्ड क्षति पहुँचलैक। एतबहि नहि अंग्रेज अधिकारी लोकनि एक गुप्त मीटिंग केलन्हि जाहिमे ई निर्णय लेल गेलैक जे कियोक रानी माँक हुलिया बताओत तकरा प्रशासन दिससँ पाँच सय टका इनाम देल जेतैक। परन्तु रानी माँक प्रति कछार हिल्स, मणीपुर तथा नागालैण्डक लोककँ बड्ड श्रद्धा छलैक। दुर्भाग्यसँ वर्तमान नागालैण्ड प्रान्तक पोइलवा गाम सँ १७ अक्टूबर १९३२ ई. मे अंग्रेज सैनिक रानी माँ कँ बन्दी बना लेलकन्हि। एहि सैन्य टुकड़ीक संचालन कैप्टन मैकडोनाल्ड करैत छलाह।



रानी माँक दुनू हाथ बान्हि देल गेलन्हि। रौदमे बान्हल हाथ उठेने ठाढ़ छलीह। एक रस्ता चलैत बूढ़कँ नीक नहि लगलन्हि। तमसा कऽ बाजि उठलाह: “सर्वनाश हो अहाँ लोकनिकें। लाजे मरि नहि होइत अछि। एक महिलाक दुनू हाथ बान्हि ऊपर उठेने छी। मर्द छी तँ हाथ खोलि दियौक”?



ताहिपर अंग्रेज सिपाही बूढ़ापर चिचिआए लगलन्हि। बूढ़ो आव देखलाह ने ताव। उठेलन्हि एकटा पाथर आऽ प्रहार कऽ देलन्हि। संयोगसँ अंग्रेज सिपाही बचि गेल। तुरतहि बूढ़ाकँ कैद कऽ लेलकन्हि। तीन मासक बाद बूढ़ाक उम्रकँ ध्यानमे रखैत हुनका जेहलसँ रिहा कऽ देल गेलन्हि। रानी माँ इम्फाल, तूरा, कोहिमा आऽ शिलांगक जेहलमे अपन समय बिताबय लगलीह।



१९३७ ई. मे पण्डित जवाहर लाल नेहरू रानी माँ सँ शिलांगक जेहेलमे भेंट केलथिन्ह आऽ हुनका प्रति अपन सम्वेदना व्यक्त केलाह। हुनका जेहलसँ बाहर निकालबाक प्रयास सेहो पण्डितजी करय लगलाह। नेहरू जी रानी माँकँ पहाड़ीक बेटीक संज्ञा देलथिन्ह आऽ हुनकर नामक संग सर्वप्रथम रानी जोड़ि देलथिन्ह। नेहरू जी रानी माँक तुलना जॉन ऑफ आर्क आऽ रानी लक्ष्मीबाई सँ केलथिन्ह। हालांकि रानी माँ कँ छोड़ेबामे नेहरूजी असमर्थ रहलाह।

अन्ततः भारतक आजादी भेटलाक उपरान्त १४ अक्टूबर १९४७ ई. मे लगभग १५ वर्ष विभिन्न जेलमे रहलाक बाद रानीमाँ आजाद भेलीह।



हालांकि किछु वर्षक बाद रानी माँ अपन जनजातीय धर्म एवं संस्कारपर क्रिश्चियन संस्था द्वारा आघात बर्दाश्त नहि केलन्हि आऽ पुनः अण्डरग्राउण्ड भय संघर्ष करय लगलीह। १९६० ई मे सेहो हुनकर लगभग ३०० समर्थकक जान चलि गेलन्हि। बादमे रानी माँकँ १९७२ ई. मे ताम्रपत्र स्वतन्त्रता सेनानी अवार्ड, १९८१ मे पद्म भूषण आर १९८३ मे विवेकानन्द सेवा अवार्ड देल गेलन्हि।

अन्ततः १७ फरबरी १९९३ कँ लगभग ७८ वर्षक अवस्थामे रानी माँ पंच तत्वमे विलीन भऽ गेलीह।

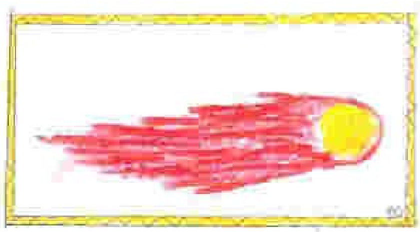


एखनहुँ धरि स्त्रीगण सभ (विशेष तौरपर नॉर्थ कछार हिल्स केर जिमि नागा जनजातिक स्त्रीगण) सभ रानी माँ कँ सामाजिक आऽ राजनैतिक चेतनाक मन्त्रकँ स्मरण करैत अपन संस्कृति आऽ सभ्यताक रक्षामे लागलि छथि।

नॉर्थ कछार हिल्समे अनेको तरहक प्रयोग हमरा लोकनि कएल। आन प्रयोग सभ पूर्णतः शैक्षणिक आऽ दार्शनिक छल। तँहि पाठकसँ ओहि विषय सभपर चर्चा कय हम अनेरे बोर नहि करय चाहैत छियन्हि। नॉर्थ कछार हिल्स केर यात्राक यायावरीकेँ एतय अन्त कऽ रहल छी।



सहस्रबाढ़नि-गजेन्द्र ठाकुर



पएरे ऑफिस गेनाइ-एनाइ, साँझमे सोचैत रहनाइ। किछु ग्रंथ सभक जे पठन होइत छलन्हि सेहो बन्न भए गेल छलन्हि। बच्चा सभक संग बैसि कए जे पढ़ैत छलाह, सेहो आब कहाँ भऽ पबैत छलन्हि। फगुआ आऽ दुर्गापूजामे गाम जेबाक जे क्रम छलन्हि, सेहो आब टूटि रहल छलन्हि। पूरा परिवार आब मात्र दुर्गापूजामे गाम जाइत रहथि। मुदा नन्द फगुआमे असगरे गाम जेनाइ नञि बिसरैत छलाह। एहिना गाम जाइ आबएमे नन्द गाममे एकटा दूरक पीसाक एहिठाम जाए आबए लगलाह। पीसा कालीक भक्त रहथि। हुनकर गाम नन्दक गामक बगलमे छलन्हि। बेचारे नीक लोक। नन्द हुनका लग जाथि आऽ प्रवचन सुनथि। फेर हुनकासँ दीक्षा सेहो लेलन्हि। काली-सहस्रणामक पाठक अतिरिक्त आर किछु नञि, नन्द भरि दिन ओही पाठमे लागल रहथि। नन्दक मोनमे डाइन-जोगिन सभक विचार अबैत रहैत छलन्हि। आस-पड़ोसक लोककेँ शंकाक दृष्टिएँ देखैत रहैत छलाह। बच्चा-सभक संग परीक्षा दिआबय जाइत छलाह, शंकित मोने जे हुनकर कोनो शत्रु हुनकर बच्चा सभकेँ हानि नञि पहुँचाबए। मुदा पीसाजीसँ दीक्षा लेलाक बाद हुनकामे विरक्तिजनित आत्मविश्वास आएल छलन्हि। फेर सभटा मन्थर गतिसँ होमए लागल। बच्चा सभक पढ़ाइ-लिखाइ, ओकर सभक नोकरी-चाकरी। वैह मध्यम वर्गक जोड़ल पाइ, वैह मध्यमवर्गीय आकांक्षा। बिआह-दानक झमेला। घरक आऽ बाहरक छोट-मोट वाद-विवाद। बच्चा सभक विश्वसँ प्रतियोगिता करबाक साहस देखि नन्द जेना आर आश्वस्त भऽ गेल छलाह। कारण घरसँ बाहर कहियो हुनकर बच्चा सभ निकलैत नहि रहए। घर अएलाक बाद दोस-महीम सभ सेहो नहि। बाहरक दुनियाँसँ तैयो प्रतियोगिता कए रहल छलाह। प्रतियोगिता परीक्षाक लिखित परीक्षामे उत्तीर्ण भऽ जाइत छलाह मुदा साक्षात्कारमे जाति, भाषा आऽ प्रान्तक गप आबि जाइत छलन्हि। नन्द बच्चा सभक कहियो ओहि तरहक वातावरणमे पालन नञि कएने छलाह से बच्चो सभ आश्चर्यचकित भऽ जाइत छलाह जे ई कोन नव परिवेश अछि। मुदा फेर नन्दक दुनू पुत्र नोकरीमे लागि गेलाह। आरुणिसँ नन्दकेँ जतेक पैघ पदक आशा छलन्हि से तँ ओऽ नञि पाबि सकल रहथि मुदा भारत सरकारक बी ग्रुपक नोकरी भेटि गेल छलन्हि हुनका। जमाय सेहो अभियन्ता छलखिन्ह ओऽ सेहो सरकारी सेवामे लागि गेलाह। दोसर बेटा सेहो बैंकमे अधिकारी बनि गेलन्हि। सिनेमा हॉलमे १० बरखसँ सिनेमा नहि देखने रहथि नन्दक बच्चा सभ। पटनाक पूजाक मेला, पटनदेवी, गोलघर किछु नहि देखने छलाह नन्दक बच्चा सभ। एहि विषयपर पहिने तँ लोक हँसी करन्हि मुदा बादमे सभकेँ लागए जे ईएह तँ नन्दक परिवारक विशिष्टता तँ नहि बनि गेल अछि। नन्दक घरमे टेलीविजन सेहो नहि छलन्हि ई सेहो लोक सभक लेल आश्चर्यक विषय छल। नन्द आऽ हुनकर सम्पूर्ण परिवार भारतीय टेलीविजनपर प्रसारित भेल रामायण धारावाहिकक एकोटा एपीसोड नहि देखने छलाह। कारण नन्दक घरमे टेलीविजन छलन्हि नहि आऽ क्यो गोटे दोसराक घर ओहुना नहि जाइत रहथि, टी.वी. देखए लेल जएबाक तँ प्रश्ने नहि छलए। नोकरी पकड़लाक बाद आरुणि घरमे एकटा टेलीविजन अनलन्हि। ओतए महाभारतक प्रचार देखि नन्द एक दिन पत्नीकेँ कहलखिन्ह-

"अपन टी.वी.मे महाभारत किएक नहि दैत अछि"।

"अपना टी.वी.मे खाली डी.डी.१ अछि। ऊपरमे एक गोटे रहैत छथि से कहैत रहथि जे हुनका घरमे बेटा एकटा ३०० टाकामे मशीन अनलन्हि-ए। ओकरा टी.वी.मे लगा देलासँ डी.डी.मेट्रो अबैत छैक। ओहीमे महाभारत अबैत छैक। बेटा तीन हजारमे टी.वी.कीनि देलन्हि। आब तीन सय टाका अहाँ लगाऽ कए ओऽ मशीन अगिला मासक दरमाहासँ आनि लेब"।

"जिनकर टी.वी.छन्हि सैह तकर मशीनो अनताह"।

आरुणिकेँ एहि गपक जखन पता चललन्हि तँ हुनका हँसी लागि गेलन्हि। अगिले दिन ओहि मशीनकेँ लगबेलन्हि। अगिला रवि पिताजी जखन महाभारत देखलन्हि तँ सभ गोटे बड्ड प्रसन्न भेलाह। ओही मासमे आरुणि आर्म्स-हथियारक ट्रेनिंग लेल पटनासँ बाहर गेलाह। एहि एक मासक ट्रेनिंगक बीचमे दुर्गा पूजा पड़ैत रहए। पिताजी पहिल बेर दुर्गापूजामे गाम नहि गेल रहथि। आरुणि सेहो बीचमे शुक्र-शनि-रविक दुर्गापूजाक छुट्टी देखि पटना आबि गेलाह। रवि दिन रहए। महाभारत चलि रहल रहए। आरुणिक एकेटा संगी रहन्हि। ओकरा संगे आरुणि बिन खेने-पीने कोनो काजसँ बाहर गेल छलाह। संगीक संगे घरपर अएलाह। माँ दुनू गोटे लेल खेनाइ अनलखिन्ह।

"बाबूजी खाऽ लेलथि"।

"हँ तऽ। तीन बजैत अछि। महाभारत देखलाक बाद खाऽ कए सूतल छथि। अहाँ सभ खाऊ, तावत हम हुनका चाह बना कऽ हुनका दैत छियन्हि, तखने निन्न टुटतन्हि"।

आरुणि दू-तीन कौर खाऽ कऽ उठि गेलाह। हुनकर संगी कारण पुछलखिन्ह-

"की भेल"?

"पता नञि। घबराहटि भऽ रहल अछि"।

"काल्हि ट्रेनिंगपर जएबाक अछि ने। ताहि द्वारे"।

"पता नञि"।

तावत भीतरसँ अबाज आएल। सभ क्यो दौगलाह।

"की भेल माँ"।

"देखू ने। चाह आनि कऽ देलियन्हि हँ, मुदा आँखि खोलि कऽ देखिये नञि रहल छथि। आन दिन तँ चाहक नाम सुनिते देरी उठि कए बैसि जाइत छलाह"।

नन्दक शरीर अकड़ि गेल छलन्हि। कन्ना-रोहट सुनि ऊपरमे रहनिहार एकटा डॉक्टर आला लऽ आयल छलाह आऽ नन्दक मृत्युक घोषणा कए देने रहथि। आरुणि अवाक गुम्म भेल ठाढ़ भऽ गेल रहथि। हुनकर संगी नञि जानि कोन बाटे अपन संगी सभकेँ बजा कऽ लऽ अनने छलाह। सभक ड्यूटी लगा देलन्हि। ककरो गेटपर तँ ककरो ड्रॉइंग रूममे। लोकक भीड़ लागए लागल छल। हुनकर संगी सभ समान बिछाओनमे समेटि बिछौना मोरि आरुणि लग अएलाह।

"क्रिया-कर्मक तैयारी करए पड़त आरुणि। बाँसघाट धरि लऽ जएबाक व्यवस्था करए पड़त। हम जाइ छी गाड़ीक व्यवस्था करए"।

"बाबूजीकेँ गामसँ बड्ड लगाव रहन्हि। कहैत रहथि जे अगिला सात जन्म धरि नगर घुमि कए नहि आएब। ओना बाऽ केर दाह संस्कार बाबूजी पटनेमे कएने रहथि। मुदा ओहि समयमे पटनाक ई गंगा-ब्रिज नहि रहए। आब तँ गाड़ीसँ हिनका लऽ गेल जाऽ सकैत अछि, तखन दाह-संस्कार भोरमे गाममे भऽ जाएत"।

"हम व्यवस्था करैत छी"।

आरुणिक ओऽ संगी हनुमाने छल। कनी कालमे गाड़ी आबि गेल। रस्तामे पुलिस लाश देखि रोकत से समस्या आएल।

"अहाँ लग वर्दी बला परिचय-पत्र तँ हएत ने"।

"हँ, अछि"।

"ओना दिक्कत अएबाक तँ नहि चाही, मुदा जौँ रस्तामे पुलिस टोकए तँ देखाऽ देबए"।

घर खाली भऽ गेल। ताला लागि गेल। दुनू भाय आऽ माय मृत पिताक संग शुक्लपक्षक ओहि रातिमे पटना नगरसँ निकलि गेलाह। गंगा-ब्रिजपर गाड़ी ठाढ़ भेल। मृत व्यक्तिक एकटा सूची टाँगल छल, जोन-मजदूरक। ई सभ पुल बनेबामे खसि कऽ मरि गेल छलाह। आरुणि गाड़ीसँ उतरि सूची देखैत छथि।

उराँव,झा बहुत रास मजदूर। एकटा "झा" उपाधिक मजदूर, बेशी आदिवासी उपाधिक! बहुत रास मूइल छलाह, कताक सैकड़ामे मुदा राता-राति पुलिसक मदतिसँ अभियन्ता-ठिकेदारसभ लहास भसिया दैत छलाह। ३० गोटेक नाम मुदा छल एतए।

"पायाक ऊपरसँ घुरिया-घुरिया कऽ खसैत मजदूर, कतेक ठाम हम सूचना देने रही, कोनो सुनबाहि नञि भेल। ओकरा सभकेँ न्याय नञि दिआ सकलहुँ तँ लगैत अछि जे दोषी हमहू छी"। नन्दक डायरीक ई अंश एक बेर आरुणि पढ़ने छलाह। चलू घुरि कऽ आएब तखन बाबूजीक डायरी ताकब, कतए छन्हि।

फेर गाड़ी आगाँ बढ़ल। गंगा ब्रिज पाछाँ छुटि गेल। आगाँ गंगा-ब्रिज कॉलोनी आएल। आरुणिक बालकथाक साक्षी। स्कूल, घर, खेलेबाक मैदान। सटले गंगा ब्रिजक गोडॉन। कताक बेर चोरिक समान ट्रकसँ एतएसँ निकलैत छल, एकाध बेर धरायल छल। बड़का धराएल ट्रक, त्तेक चक्का बला, लोक गुमटीलग मेला जेना देखऽ पहुँचैत छलए। बच्चा-सभ ट्रकक चक्का गनैत छलाह, १४ चक्का बला अछि वा १६ चक्का बला।

जीवनक प्रतियोगितामे सभटा जेना बिसरि गेल छलाह आरुणि। भ्रष्टाचार, जोन-बोनिहारक मृत्यु, पिताक संघर्ष सभटा सोझाँ आबि रहल अछि।

"फेरसँ सोझाँ आएलई सभटा, पिताक स्मृति बनि कऽ, मुदा पिताक हारि बनि कए तँ नञि। ई नाम आरुणि हमरा लेल चुनने छलाह बाबूजी किएक"।

"की बजलहुँ बेटा"। माँ पुछलखिन्ह।

"नहि। ई कॉलोनी देखि कऽ किछु मोन पड़ि गेल"।

"नहि देखू ई पपियाहा कॉलोनीकेँ"।

गंगा-ब्रिजक चरचा घरमे टैबू बनि गेल रहए। आरुणिकेँ बुझल छन्हि ई। मुदा एकटा आर प्रारम्भ तँ नञि भऽ जाएत। माँ भीतरसँ घबराऽ गेल छलीह।

आब जे चुप्पी पसरल से गामेमे जाऽ कए खतम भेल। अग्रज भाएक मुँह पकड़ि कनाए लगलाह। एहन भैयारी ककर हेतए। धुर बताह, पैघ भायकेँ क्यो छोड़ि कऽ पहिने चलि जाइत अछि। कहियो नहि कनेने छलह तँ आइ किए कनबाऽ रहल छह। साँसे टोल जुटि आएल छल। समाचार सुनलाक बाद ककरो घरमे खेनाइ नहि बनल छलैक। पता नञि के ककरा टेलीफोन कऽ देने रहैक जे समाचार एतए पहुँचि गेल रहए।

"कलममे बाबूक सारा लग दाह हेतन्हि", अग्रजक एहि इच्छाक बाद लहास ओतए गेल। कान्हपर उठा कए सभ पहुँचलाह कलम-गाछी।

"देखियौ, केना मूहपर हँसी छैक, एको रत्ती मूइल लगैत अछि"। नन्दक अग्रज बजलाह।

आरुणिक पैघ भाए जखने अपन आगि लेल हाथ पिताक दिस बढ़ेलन्हि आकि ओऽ विचलित सन भऽ गेलाह। काका भरोस देलखिन्ह। आगिमे मिलैत गेल ओऽ मृत शरीर, पुनः घुरि अएबाक कोनो सम्भावनाकेँ खतम करैत।

सभटा विध-व्यवहार, लगैत रहए जेना ककरो मृत्युक नहि वरन् कोनो पाबनिक इन्तजाम-बात भऽ रहल अछि, धूम-धामसँ। महापात्र आकि कंटाहा ब्राह्मणक निर्देशानुसार होइत श्राद्धकर्म आऽ साँझक पाठ गरुड़-पुराणक अविश्वसनीय विवरणक। सभ सम्पन्न भऽ गेल।

परम शांति आऽ कि घोर कोलाहल। आरुणि ठाकुर किछु अस्वस्थ रहथि आऽ कलकत्तामे वुडलैण्ड नर्सिंग होमक समीपस्थ स्थित विशालकाय अपार्टमेंटक अपन फ्लैटमे असगरहि अस्वस्थ स्थितिमे अध्यावसनमे लीन अपन अतीतक पुनर्विश्लेषणमे रत रहबाक घटनाक्रम मोन पड़ि जाइत छन्हि। अशांतिक क्षण हुनका रहि-रहि कय अनायासहि मोन पड़ि रहल छन्हि। जखन ओऽ अपन समस्या सभ अपन हित-संबंधी सभकेँ सुना कय अपन मोनक भार कम करैत रहथि। *शनैः-शनैः* समस्या सभ बढ़ैते चल गेल एतेक तक कि आब दोसरकेँ सुनेलापरांत मोन आर उचटि जाइत छलन्हि। ताहि द्वारे आब ओऽ अपने तक सीमित रहय लगलाह। हित संबंधी सभ बुझय लगलाह जे आरुणि समस्यासँ रहित भय गेल छथि। बच्चेसँ सपनामे भयावह चीज सभ देखाइ पड़ैत छलन्हि आरुणिकेँ। अखन धरि हुनका यादि छन्हि कोना आध-आध पहर रातिमे ओऽ घामे-पसीने भय जाइत रहथि आऽ हुनकर माता-पिता चिंतित भय बीयनि होकैत रहथि छलखिन्ह। पिताक-पिता आऽ तकर जन्मदाता के ? भगवान जौँ सभक पूर्वज तखन हुनकर पूर्वजके ? लोकसभ एहि प्रश्न सभकेँ हँसीमे उड़ा दैत छलाह, परंतु बादमे जखन आरुणि दर्शनशास्त्र पढ़लन्हि तखन हुनका पता चललन्हि जे एकर उत्तरक हेतु कतेक ऋषि-मुनि सेहो अप्पन जीवन समर्पित कय चुकल छथि मुदा ई प्रशन एखनो अनुत्तरिते अछि।
अस्वस्थताक स्थितिमे फेरसँ ई सभ अनुत्तरित प्रश्न हुनका समक्ष स्वप्न बनि आबि गेल छन्हि।

कख्ननोकेँ निन्दमे हुनका लागन्हि जे ओऽ घरक छत पर छथि आऽ नहि चाहितो *शनैः-शनैः* छतक बिना घेरल भाग दिशि गेल जा रहल छथि। गुरुत्वक कोनो शक्ति हुनका खीचि रहल छन्हि तावत धरि जावत ओऽ नीचाँ नहि खसि पड़ैत छथि। की ई छल कोनो प्रारब्धक दिशानिर्देश आऽकि कोनो भविष्यक दुर्घटनासँ बचबाक संदेश।

किछु दिन तकतँ आरुणि सुतबाक सही समयक पता लगबैत रहलाह परंतु *शनैः-शनैः* हुनका ई पता लागि गेलैन्ह जे स्वप्न आऽ निन्न एहि जीवनक दूटा एहन रहस्य अछि जे नियम विरुद्ध अछि आऽ अनुत्तरित अछि।

आऽ आरुणि पैघ भेलथि, फेर हुनकर पढ़ाइ शुरु कएल गेल- अगस्त्यक स्तोत्र- सरस्वति नमस्तुभ्यम वरदे कामरूपिणी, विद्यारम्भम् करिष्यामि सिद्धिर्भवतुमे सदा।

श्रीगणेषजीक अंकुशक संग गौरिशंकरक अभ्यर्थना सिद्धिस्तु।

साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वसिनी
उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिःपतिः
सिद्धिःसाध्ये सतामस्तु प्रसदांतस्य धूर्जटेः
जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला।

एहि श्लोककेँ बजैत काल प्रायः आरुणि पशुपतिःपतिःक सामवेदीय तारतम्यक बाद अनायासहि हाऽ हाऽ कऽकय जोरसँ हँसय लगैत छलाह आऽ बीचहि मे रुकि जाइत छलाह। पिता सोचलखिन्ह जे कम वयसमे पढ़ाई शुरु केलासँ आरुणिक कुर्सी पर बैसि कय माथपर हाथ राखि कय बैसबाक आदति तँ खतम होयतन्हि।सय तकक खाँत ओऽ एके बेर मे सीखि गेलाह जखन ओऽ देखलन्हि जे बीसक बाद गणनामे पशुपतिःपतिःक जेकाँ लयबद्धता छैक।

मायक एकटा गप्प हुनका पसिन्न नहीं छलन्हि। ओऽ बिचमे गप्प करैत-करैत आरुणिक बातकेँ अनठिया दैत छलथिन्ह। एकबेर मायक क्यो संगी आयल छलीह। आरुणिक कोनो बातपर माय ध्यान नहीं दय रहल छलीह। आरुणिक हाथमे भरिघरक चाभीक झाबा छलन्हि तँ ओऽ कहखिन्ह जे जँ हुनकर बात नहीं सुनल जयतन्हि तँ ओऽ झाबाकेँ सोझाँअक डबरामे फेंकि देताह। माय सोचलखिन्ह जे हाँ-हाँ केलापर झाबा फेकियेटा देताह तैँ आर अनठिया देलखिन्ह। परिणाम दुनु तरहेँ एके हेबाक छल। चाभी बहुत खोज केलो पर नहि भेटल। एखनो घरक सभ अलमीरा आदिक चाभी डुप्लीकेट अछि। एतेक दिनक बाद ई सभ सोचि आरुणिक मुँहपर अनायासहि मुस्की आबि गेलन्हि।

सिद्धांतवादी पिताकेँ नोकरीमे किछु ने किछु दिक्कत होइते रहैत छलन्हि ताहि द्वारे ओऽ आरुणि जल्दी सँ जल्दी पैघ देखय चाहैत छलाह। तेसर सँ सोझे पाँचम वर्गमे फनबा देल गेलन्हि।फेर भेल ई जे होलीक छुट्टीमे नियमानुसार सभ गोटे गाम गेल छलाह। नियम ई छल जे होली आऽ दुर्गापूजामे सभ बेर गाम जयबाक नियम जेकाँ छलैक। पिताजी सभकेँ छोड़ि कय वापिस भय गेलाह। फेर दरमाहा बन्द भय गेल छलन्हि प्रायःसे गाम चिट्ठी आयल जे आब सभकेँ गामहि मे रहय पड़तन्हि। मायतँ कानय लगलीह मुदा आरुणि खूब प्रसन्न भेलाह। मुदा सरकारी स्कूलमे ओहि समय वर्गक आगाँमे (नवीन) लगाकय एक वर्ग कममे लिखबाक गलत परम्परा नवीन शिक्षा नीतिक आलोकमे लेल गेल छलैक कारण नवीन नीतिमे आर किछुओ नवीन नहि छल। पिताजीकेँ जखन एहि बातक पता चललन्हि तँ ओऽ तमसायलो छलाह आऽ एकर प्रतिकार स्वरूप पाँचम क्लासक बाद जखन ओऽ सभ शहर वापस अयलाह तँ आरुणिकेँ फेर एक वर्ग तरपाकय सोझे छठम वर्गक बदलामे सातम वर्गमे नाम लिखवा देलन्हि। छठम वर्गक विज्ञान आऽ गणितक पढ़ाइ पाँचमे वर्गमे कय लेबाक पिताक निर्देशक उद्देश्यक जानकारी आरिणिकेँ तखन जाकय भेलन्हि जखन प्रवेश-परीक्षामे यैह दुनु विषय पूछल गेल आऽ आरुणि छठा आऽ सातम दुनु वर्गक प्रवेश परीक्षामे बैसलाह आऽ सफल भेलाह। बहुत दिन बाद तक जखन क्यो आनो संदर्भमे छठम वर्गक चर्चा करैत छल तँ आरुणिकेँ किछु अनभिज्ञताक बोध होइत छलन्हि।

गामक प्रवासमे एकबेर आरुणि पिताकेँ चिट्ठी लिखने छलाह कारण हुनकर जुत्ता शहरेमे छूटि गेल छलन्हि। जुत्तातँ आबिये गेलन्हि संगहि चिट्ठीक तीन टा शाब्दिक गल्तीक विवरण सेहो आयल आऽ ईहो मोन पाड़ल गेल जे एकबेर दौरिकय गणितक प्रश्न हल करबाक प्रतियोगितामे तीनक बदला हड़बड़ीमे दुइयेटा प्रश्नकेँ हल कऽकय ओऽ कोना कॉपी जमा कय देने छलाह।

हुनकर स्वभावमे क्रोधक प्रवेश कखन भेलन्हि से तँ हुनको नहि बुझबामे अयलन्हि मुदा पिताजी हुनका क्रोधक समान कोनो दोसर रिपु नहि एहि संस्कृत श्लोकक दस बेर पाठ करबाक निर्देश देने छलखिन्ह- से धरि मोन छन्हि। एकटा घटना सेहो भेल छल जाहिमे स्कूलमे एकटा बच्चा झगड़ाक मध्य सिलेटसँ हुनकर माथ फोड़ि देने छलन्हि। आरुणि सेहो सिलेट उठेलथि मुदा ई सोचि जे ओकर माथ फूटि जयतैक हाथ रोकि लेने छलाह। एकर परिणामस्वरूप हुनकर पिता दू गोट काज केलन्हि। एकतँ हुनकर सिलेटकँ बदलि कय लोहाक बदला लकड़ीक कोरबला सिलेट देलखिन्ह जकर कोनो ने कोनो भागक लकड़ी खुजि जाइत छलैक आऽ दोसर जे कॉलोनीमे समकक्ष अधिकारीक बैठक बजाकय कॉलोनीअहिमे स्कूल खोलि देल गेल जतय आरुणि पढ़य लगलाह। बादमे क्यो पंडित जखन वाल्मीकि रामायणक

सुन्दरकाण्डक पाठ तँ क्यो ज्योतिष कँगुरिया आँगुरमे मोती आऽ कि मूनस्टोन पहिरबाक सलाह अही उद्देश्यक हेतु देबय लगैत छलाहतँ ओऽ संस्कृत श्लोक हुनका मोन पड़ि जाइत छलन्हि।

बाल संस्कारक अंतर्गत सहायता माँगयमे आऽ समझौता करयमे अखनो हुनका असहजता अनुभव होइत छन्हि। मुदा हारि आऽ जीत दुनुकेँ बराबड़ बूझि युद्ध करबाक विश्वास हुनकामे नहीं रहलन्हि विशेषकरिके पिताक मृत्युक बाद। आऽ विजय हुनकर लक्ष्य बनैत गेलन्हि *शनैः-शनैः*। जकर ओऽ जी-जानसँ मदति कएलन्हि सेहो समयपर हुनकर संग देलकन्हि। समय-समय पर केल गेल समझौता सभ हुनकर संघर्षकेँ कम केलकन्हि। जतेकसँ दोस्तियारी छलैन्ह तकरे निभेनाइ मुश्किल भय रहल छलैन्ह। फेर तँ नव शहरमे नव संगीक हेतु स्थान नहि बचल।

महत्वाकांक्षाक अंत नहि आऽ जीवन जीबाक कला सभक अद्वितीय अछि। आरुणि ई नाम आब कखनो-कखनो घरमे सुनाइ पड़ैत छल। कलकत्ता शहर प्रतिभाक पूजा करैत अछि। मुदा व्यवसायी होयबामे एकटा बाधा छल-अंग्रेजीक संग बाङ्लाक ज्ञान जे ओऽ बाट चलैत सीखि गेलाह। व्यस्त जीवनमे बीमारीक स्थितिअहिमे हुनका आराम भेटैत छलैन्ह। बीमारियेमे सोचबाक आदति मोन पड़ैत छलैन्ह। आऽ ई फ्लैट किनलाक बाद मायकेँ सेहो बजा लेलखिन्ह। ओना हुनका बुझल छलन्हि जे माय एहि सभसँ प्रभावित नहि होयतीह। कारण ओऽ अधिकारी पत्नी छलीह आऽ पुत्रकेँ सेहो ओहि रूपमे देखबाक कामना छलन्हि। ई नव शहर हुनक पुत्रक व्यक्तित्वमे सैद्धांतिकताक स्थानपर प्रायोगिकताक प्रतिशतता बढ़ा देने छलन्हि। आब समयाभावक कारण स्वास्थ्य खराब भेलेपरांत सोचबोक समय पुत्रकेँ भेटैत छलन्हि।

व्यसायमे सफलता प्रासिक पूर्व आरुणि एकटा कागज प्रिंटिंग प्रेसमे काज केनाइ शुरु केलन्हि। अपन मित्रवत प्रिंटिंग प्रेस मालिकसँ दरमाहाक बदला पर्सेंटेज पर काज करबाक आग्रह केलन्हि। ऑर्डर आनि बाइंडिंग आऽ प्रिंटिंग करबाबथि आऽ आस्ते-आस्ते अपन एकटा प्रिंटिंग प्रेस लगओलथि। किछु गोटे हिनका अहिठामसँ छपाइ करबाकय ग्राहककेँ बेचथि। हुनका जखन एहि बातक पता चललन्हि तँ ओऽ एकटा चलाकी केलथि जे सभ बंडलमे अपन प्रेसक कैलेंडर धऽ देलखिन्ह। जखन अंतिम उपभोक्ताकेँ पता चललैक जे ओ' सभ अनावश्यके दलालक माध्यमसँ समान कीनि रहल छलाह तँ ओऽ सभ सोझे आरुणि प्रिंटिंग प्रेस कैँ ऑर्डर देबय लागल। आरुणिकेँ घरमे अपन नाम कखनहुँ काले सुनि पड़ैन्ह। किताबक ऊपर छपल हुनकर नाम तँ कोनो कंपनीक छलैक- आऽ ओऽ ओकरासँ निकटता अनुभव नहि कऽ पाबि सकैत छलाह। संसारक कुचालि हुनकर पिताक अंत केने छलन्हि मुदा आरुणि व्यावसायिक युद्ध मस्तिष्कसँ लड़ैत आऽ जितैत गेलाह।

मायक एलाक बाद आरुणि ई नाम बीसो बेर दिन भरिमे सुनाइ पड़य लागल। ओकर संगी लोकनि उपरोक्त व्यावसायिक सफलताक घटना सभकेँ जखन आरुणिक मायकेँ सुनबैत रहैत छलाह ई सोचि जे ओऽ अपन मित्रक बड़ाइ कय रहल छलाह तँ आरुणि असहजताक अनुभव करय लगैत छलाह आऽ गप्पकेँ दोसर दिशि मोड़ि दैत छलाह।

हुनकर मायतँ जेना हुनक विवाहक हेतु आयल छलीह। माय जखन जिद्द ठानलन्हि तँ हुनका आश्चर्य भेलन्हि कारण घरमे जिद्दक एकाधिकारतँ हुनकेटा छलन्हि। मुदा माय बूझि गेल छलीहजे हुनकर बेटा प्रक्टिकल भय गेल छन्हि आऽ जिद्द केनाइ बिसरि गेल छन्हि। आरुणि सोचलन्हि जे छोटमे बड्ड जिद्द पूरा करबओने छथि तँ आब पूरा कर्बाक समय आयल अछि। विवाह फेर बच्चा। माय अपन नैतमे पतिक रूप देखलैन्ह। पतिक मृत्युक पहिनहि बेटा प्रैक्टिकल बनि गेल छलन्हि। मुदा आब ई नहि होयत। जे काज बेटा नहि कय सकल से आब नैत करत। नैतक नाममे बेटा आऽ पति दुहुक नामक समावेश केलन्हि- आरुणि नन्द। फेर पढ़ाइ शुरु- सिद्धरस्तु- श्री गणेशजीक अंकुश आऽ वैह उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिःपतिः। हुनकर बेटाकेँ पति पढ़ेलखिन्ह ओऽ तँ घर सम्हारैत छलीह। आब पुतोहु घर सम्हारलैन्ह, बेटाकेँ तँ फुरसतिये नहि। आब बाऽ पढेतीह नैतकेँ।

उतपत्स्येत हिमम कोऽपि समानधर्मा कालोह्यम निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।

पृथ्वी विशाल अछि आऽ काल निस्सीम,अनंत, एहि हेतु विश्वास अछि जे आइ नहीं तँ काल्हि क्यो ने क्यो हमर प्रयासकेँ सार्थक बनायत।

आरुणि अपनाकेँ अपन मायसँ दूर अनुभव केलन्हि, किछु अस्वस्थ सेहो छथि आऽ वुडलैण्ड नर्सिंग होमक समीपस्थ स्थित विशालकाय अपार्टमेंटक अपन फ्लैटमे असगरहि अध्यावसनमे लीन अपन अतीतक पुनर्विश्लेषणमे रत छथि। प्रतियोगिता परीक्षा सभक उमरि बाकी छलन्हिये से दू चारिटा परीक्षामे बैसि गेलाह आऽ केन्द्र सरकारक ई ग्रुप बी वर्दीबला अधिकारी बनि गेलाह। माँकेँ कनेक संतोख भेलन्हि जे क्लास वन नहि मुदा सरकारी नोकरी तँ केलक, ई बिजनेस-तिजनेस तँ छोड़लक।

"चलह कनेक खाऽ लैह, एना केने काज नहि चलतह"। आरुणिक छोटका मामा प्रेमपूर्वक दबाड़ि कए कहलन्हि। क्रिया-कर्म खतम भऽ गेल छल आब घुरबाक बेर आबि गेल छल, नोकरीक संग पिताक मार्गपर सेहो।

१९९५ क नवम्बरक मास।

केश कटायल मुँहेँ गामसँ दरिभङ्गा आऽ ओतएसँ पटनाक बस पर चढ़लाह आरुणि। किछु किताब बेचिनहार अयलाह, तुक मिलेने सभ किताबक विशेषता कहि सुनओलन्हि।k खिस्सा-पिहानी,उपचार,फूलन-देवी सँ लय मनोहर पोथी तक सभ यात्रीगणकेँ एक-एक टा परसैत गेलाग।ओहिमे सँ किछु मोल-मोलाइ कएलाक उत्तर

बिकयबो कएलन्हि आ' सभटा वापस लय जाइत गेलाह,बससँ उतरैत कालकंडक्टरसँ वाद-विवाद सेहो भेलन्हि। फेर नेबोक रस निकालबाक यंत्रक आविष्कारक चढ़लाह,रस निकालि देखओलन्हि,खलासीसँ वाद-विवादक उपरांत ओहो उतरि गेलाह।फेर ककबा बला,पेन बला आऽ पेचकश बला सभ चढ़ि कय उतरैत गेलाह। पुछलाक उपरांत पता चलल जे गाड़ी साढ़े दस बजे खुजत ई गप्प बस बला झुट्ठे बाजल छल। पछुलका बसक सवारीकेँ सीट नहि भेटल छलन्हि, से बेशी अबेरो नहि होयत आऽ सीटो भेटि जायत,एहि तर्कक संग मार्केटिंगक उपकरणक रूपमे ई शस्त्र चलल छल। गाड़ी खुजबाक समय छल ११ बजे मुदा ११ बाजि कय पाँच मिनट धरि बहस होइत रहल जे घड़ीमे ११ बाजल अछि कि नहि। पाँछा एगारह बाजि कय दस मिनट पर जखन बादमे जायबला बसक कंडक्टर अशोक मिश्रा आऽ शाहीक बसक बीचक भिड़ंतक बात कय झगड़ा बजारि देलक-जे एको सेकेंड जौँ लेट होयत तँ जे बुझु से भय जायत- तखन ड्राइवर अकस्माते हॉर्न बजाबय लागल। आरुणिक बगलक सीट पर बैसलि एकटा बूढ़ि बेटाकेँ जोरसँ बजाबय लगलीह, पाँच मिनट गरदमगोल होइत रहल। सभ यात्री चढ़ि गेलाह, आऽ दू-चारिटा यात्री जे अखने रिक्शासँ उतड़ल छलाह, जोर-जोरसँ बाजय लगलाह। पछुलका बस बला हुनकर मोटा-चोटा उठा कय अपना बसमे लऽ जाय चाहैत छलन्हि, मुदा ओऽ लोकनि पढ़ल लिखल छलाह आऽ हमरे सभक बससँ जाय चाहैत छलाह। ओऽ लोकनि दू-चारिटा चौधरी-कुँअरक नाम-गाम गनओलन्हि, तखन ओहि बस बलाकेँ बुझओलैक जे ई सभ फसादी लोक सभ अछि- से कहलक जे टू बाइ टूक बदला ओहि टू बाइ श्री धक्कागाड़ीमे ठाढ़े जयबाके जौँ इच्छा अछि तँ हम की करू- किरायो ओऽ एको पाइ कम नहि लेत। से दू-चारि गोट बेशी यात्री लेबाक मनसूबा पूरा भेलाक बाद ड्राइवर गाड़ी हाँकि देलक। ओहि रिक्शा-सभ परसँ एक गोट अधवयसू व्यक्ति चढ़ल छलाह आऽ संयोग ई भेल, जे आरुणिक दोसर बगलमे बैसल व्यक्ति गुनधुन करैत छलाह जे फलनाँ बड़ा बूड़ि अछि,एखन धरि नहि आयल। गाड़ी खुजलाक बाद अगिला चौक पर असकसा कय ओऽ उतरि गेलाह आऽ तकर बाद ओहि टू बाइ श्री ग़ाड़ीक तीन सीट बला हीसमे आरुणिक बगलमे ओहि सज्जनकेँ जगह भेटि गेलन्हि।

आरुणिक मोन स्थिर छलन्हि आऽ बेशी बजबाक इच्छा नहि छलन्हि। मुदा बगलगीर पहिने अप्पन भाग्यकेँ धन्यवाद देलन्हि,जकर प्रतापे हुनका सीट भेटलन्हि। पटनामे आवश्यक कार्य छलन्हि, तँ लेट जायबला बससँ गेला उत्तर काजमे भाङठ पड़ितन्हि। फेर अप्पन परिचय असिस्टेंट डायरेक्टरक रूपमे देलाक उपरांत ई सूचना देलन्हि जे दरिभङ्गाक संग पटनोमे हुनकर मकान छन्हि। दुनू घर अप्पन पुरुषार्थसँ बनयबाक गप्पक संग,दुनू घरक दुमहला आऽ मारबल आऽ ग्रेनाइटसँ युक्त होयबाक बातो कहलन्हि। बजबैका लोक कैं सुनिनिहार लोक बड्ड पसिन्न पड़ैत छन्हि,से ओऽ आरुणिकेँ पसिन्न करय लगलाह।

तँ पुछलन्हि-

"पटनामे अपनेक मकान कोन महल्लामे अछि"।

आरुणि कहलखिन्ह- "अप्पन मकान नहि अछि,किराया पर छी"।

किछु कालक शांतिक पश्चात ओऽ सज्जन पनबट्टीसँ पान बहार कय आरुणिसँ पुछलन्हि जे-

"पान खाइत छी"।

"नहि"- एहि उत्तरक पश्चात अप्पन विशेषज्ञता देखबैत कहलन्हि, जे-

"हमतँ अहाँक दाँते देखि कय बुझि गेल छलहुँ"।

पान खेलाक बाद अप्पन बेटी सभक सासुरक चर्चा कएलन्हि। बेटाक आइ.ए.एस. केर तैयारी करबाक गप्प कएलन्हि आऽ कोनो ग्रुपक चर्चा सेहो कएलन्हि जे विद्यार्थी लोकनिक बीच एहि तैयारीक हेतु तैयार भेल छल आऽ ओहि ग्रुपमे प्रवेश मात्र प्रतिभावान लोकनिक हेतु सीमित छल। फेर आखिरीमे ईहो पता कहलन्हि जे ओहि प्रतिभावान ग्रुपक सदस्यता हुनकर पुत्रकेँ सेहो प्राप्त छन्हि।

आँगा बढ़ैत-बढ़ैत गाड़ी एकटा लाइन होटल पर ठाढ़ भेल। किछु यात्री एकर विरोध कएलन्हि। एक गोटे कहलन्हि जे ई ड्राइवर-कंडक्टर खेनाइ खएबाक द्वारे एहि घटिया लाइन होटलमे गाड़ी रोकैत अछि। एकर सभक खेनाइ एतय मुफ्तिया छैक आऽ संगहि सूचना भेटल जे मुफ्तिया की रहतैक ओकर सभक बिल यात्रीगणसँ परोक्ष रूपमे लेल जाइत छैक आऽ बुझु जे एकर सभक बिल यात्री सभ भरैत छथि। हुनकर ईहो अपील छलन्हि जे क्यो गोटे नहि उतरय आऽ हारि कय बसकेँ स्टार्ट करय पड़तैक। किछु कालक उपरांत एकाएकी सभ गोटे उतरैत गेलाह आऽ ओऽ सज्जन सेहो खिसियायल उतरि फराक भऽ ठाढ़ भय मिथिलांचलक दुर्दशाक कारणक व्याख्यामे हुनकर गप्प नहि मानबाक मनोवृत्तिकेँ सेहो दोषी करारि देलथिन्ह।

गाड़ी फेर खुजल आऽ किछु दूर आगू जाऽ कय धक्काक संग ठाढ़ भय गेल। कंडक्टर कहलक जे सभ उतरैत जाऊ। गाड़ी पंक्चर भय गेल। लाइन होटल पर गाड़ी नहि रोकबाक अपील केनहार सज्जनक मत छलन्हि, जे लाइन होटलपर जे गाड़ी ठाढ़ भेल, तखनेसँ जतरा खराब भए गेल अछि। आब आगू देखू की-की होइत अछि। नीचाँ उतरलाक बाद चारि-चारि, पाँच-पाँच गोटेक गोला बनि गेल। ई जगह प्रायः वैशालीक आसपास छल। एक गोटे खेतक विस्तारक दिशि ध्यान देलन्हि। घर सभक ऐल-फैल होयबाक सेहो चर्चा भेल। संगहि अपना सभक गाम दिशि घर पर घर आऽ चाड़ पर चाड़ चढ़ल रहैत अछि आऽ से झगड़ाक कारण अछि, अहू पर चर्चा भेल। आरुणिक बगलमे बैसल अधवयसू व्यक्ति किछु औँघायल सन छलाह, मुदा एहि व्यवधानसँ हुनकर भक्क टूटि गेलन्हि। हुनकर बकार लाइन होटल पर आकि नीचाँ ठाढ़ भेला पर मन्द भय जाइत छलन्हि से आरुणि अनुभव कएलन्हि। फेर बस चलि पड़ल आ ऽ ओऽ सज्जन पुनः शुरू भय गेलाह। हाजीपुर शहर अएला पर तँ हुनक स्मृति आर तीक्ष्ण भय गेलन्हि।

किछु काल बस चलल तँ एकटा कॉलोनीक दिशि इशारा कय ओऽ कहलन्हि-

"ई छी गंगा ब्रिज कॉलोनी, की छल आऽ आब की भय गेल अछि। एक भागमे रहबाक हेतु क्वॉर्टर आऽ दोसर भागमे गिट्टी-छड़-सीमेंट सभ भड़ल रहैत छल। आबतँ कॉलोनीक मेंटेनेंसो नहि भय रहल अछि"।

आरुणि चौंकि गेलाह। कहलन्हि,

"एतय एकटा स्कूलोतँ छल"।

ओ ऽ सोझाँ इशारा दैत देखेलन्हि-

"देखू, ओतय नामो लिखल अछि। बरखा बुन्नीमे नाम अदहा-छिदहा मेटा गेल अछि"। फेर ओ ऽ चौंकि कय पुछलन्हि-

"अहाँकेँ कोना बुझल अछि"।

-हम एहि स्कूलमे पढ़ने छी।

-मुदा एहि कॉलोनीमे तँ गंगा पुल निर्माणक अभियंता लोकनि मात्र रहैत छलाह आऽ स्कूलमे हुनके बच्चा सभकेँ पढ़बाक हेतु एहि स्कूलक निर्माण भेल छल।

-हम सभ अही कॉलोनीमे रहैत छलहुँ।

-अहाँक पिताक नाम की छी।

-श्री नन्द ठाकुर।

पिताक मृत्युक पंद्रह दिन पहिनहि भेल रहन्हि से स्वर्गीय कहबाक हिस्सक नहि पड़ल छलन्हि।

-अहाँ ठाकुरजीक पुत्र छी।

ई कहि आरुणि दिशि ओ ऽ अपनत्वसँ बेशी ममत्वक दृष्टि देलन्हि।

"अहाँक नाम की छी"। आरुणि पुछलखिन्ह।

"आइ.ए.आजम"।ओ ऽ कहलन्हि।

तखन आरुणि हुनका सभटा बच्चाक नाम गना देलखिन्ह। हुनकर एकटा बेटा नेहाल आजम आरुणिक क्लासमे पढ़ैत छल। आब हुनकर स्वर बदलि गेलन्हि।

-कॉलोनीमे दू गोटे खूब पूजा करैत छलाह। एकटा पाण्डे जी आऽ दोसर अहाँक पिताजी। पाण्डेजी तँ पूजाक संग पाइयो कमाइत छलाह। मुदा अहाँक पिताजी छलाह पूर्ण ईमानदार आ ऽ दयालु। चंदा कय होम्योपैथिक दवाई कानपुरसँ अनैत छलाह, आ ऽ मुफ्त इलाज कॉलोनी बलाकेँ दैत छलाह। हमर बेटीकेँ माथमे बड़का गूर भय गेल छलैक। कोनो एलोपैथिक बलासँ ठीक नहि भेल छलैक। अहींक पिताजी ओकरा ठीक केने छलखिन्ह। इंजीनियर रहितहुँ होम्योपैथीक डिग्री हुनका रहन्हि।

ड्राइंग रूममे होम्योपैथीक छोट-पैघ, सादा-रंगीन शीशी सभ आरुणिक आँखिक सोझाँ आबि गेल।

-आइ काल्हि कतय पोस्टेड छथि। बहुत दिनसँ सम्पर्के टूटि गेल। एतुक्का बाद कतहु संगे पोस्टिंग सेहो नहि रहल। बुझू भेँट भेना पन्द्रह सालसँ ऊपर भय गेल अछि।

-पन्द्रह दिन पहिने हुनकर मृत्यु भय गेलन्हि।

आरुणिक कटायल केश दिशि देखि ओ ऽ कहलन्हि-हमरे सँ गल्ती भेल। केश कटेने देखियो कय नहि पुछलहुँ। तँ अहाँ भरि रस्ता गुम्म छलहुँ।

फेर कहय लगलाह-

-मजदूरक प्रति बड्ड चिंता रहैत छलन्हि।

तावत बस गंगा पुल पर आबि गेल छल। आगाँ फाटक पर बसकेँ टिकट कटेबाक हेतु ठाढ़ कय देल गेलैक। क्यो गोटे संवादो देलक जे आगू वन-वे जेकाँ अछि। एक कातमे रिपेयरिंग चलि रहल अछि। आरुणिक आगाँ दृश्य घूमि गेलन्हि। एहि पुलक निर्माणकालक पाया सभक। कॉलोनीक टूटल देबालक पजेबा सभ। ओऽ देबाल सभ साल टूटैत छल। पिताजी कहैत छलखिन्ह जे इंजीनियर आऽ ठेकेदार सभ मिलल अछि। फेर मोन पड़लन्हि सूटकेस भरल रुपैय्या। आरुणिक पिताजी एक लात मारने छलाह आऽ सूटकेस दूर फेका गेल। एक गोट पितयौत भाय रहैत छलखिन्ह घरमे -से सभटा रुपैय्या ओहि सूटकेसमे राखि ओहि ठिकेदारकेँ देलन्हि। माँ सभकेँ भितरिया कोठली दिशि लय गेलीह। एक बेर नन्द पुलक पाया सभक लग स्टीमरसँ लय गेल छलखिन्ह आरुणिकेँ आ ऽ कहलन्हि-

-देखू। एहि पायाक निर्माणमे कतेक गोट मजदूर ऊपरसँ घिरनी जेकाँ नाचि कय गंगामे खसि पड़ल। सयसँ ऊपर। कतेक हमरा आँखिक सोझाँ। ओहिमेसँ मात्र किछुए परिवारकेँ कंपेनसेशन देल गेलैक। आन सभक ने लिस्टमे नाम छैक, ने क्यो पता लगेलकैक। तैयो सभ अभियंता लोकनि ठिकेदारसँ मिलल अछि।

भक्क टूटलन्हि आरुणिक। बससँ उतरि ओहि पुलक निर्माणमे शहीद मजदूरक लिस्ट फेर देखलन्हि। बहुत कम लोकक नाम छल-प्रायः बिन कंपेंनसेशन बलाक नाम नहि रहैक। बस शुरू होयबाक सूरसार कएलक तँ आरुणि आऽ आजम साहब बस पर धड़फड़ा कय चढ़लाह।

ओ ऽ पुनः बाजय लगलाह।

-पटनामे अहाँ कहलहुँ जे किरायाक मकानमे रहए जाइत छी।

-हँ। पिताक क्रियाकर्मक हेतु गाम गेल छलहुँ, पिताक मृत्युक उपरांत माँ केर मोन ओहि घरमे नहि लगतन्हि, ताहि हेतु ओऽ गाममे रहि गेल छथि। आब पटना पहुँचि कय दोसर डेरा ताकब। ओना हम तँ कलकत्तामे नोकरी करैत छी।

-बुझू। तीस बरख पी.डबल्यु.डी. मे ईमानदारीसँ कार्य कएलाक उत्तर एकटा घरो नहि बना सकलाह। लोक की-की नहि कए गेल। हमहुँ १९८१ क बाद अहींक पिताजीक लाइन पर चलय लगलहुँ। दू टा घरो जे बनयने छी से नामे-मात्रक दू-महला। अधखिज्जू-ऊपरमे एक-एकटा कोठली अछि। अहाँक पिताकेँ की देलकन्हि सरकार। आ ऽ की भेटलन्हि। रिटायरमेण्टक पहिनहि मृत्यु। ने कोनो सम्मान। पुलक उद्घाटन पर दू-दू हजार सभ अभियंताकेँ सरकार देलक। ओ ऽ तँ भगवानक रूप छलाह। सम्मानक लालसाक हेतु काज नहि कएलन्हि। सभ वर्क्स डिवीजनमे जयबाक हेतु पैरवी करय आ ऽ ई नन-वर्क्समे जयबाक हेतु पैरवी करथि।

फेर ओ ऽ आरुणिसँ पुछलन्हि जे-

-अहाँ की करैत छी।

-पिता,माय आ ऽ भाय पटनामे रहैत छलाह, हम कलकत्तामे इंटेलीजेन्स विभागमे छी, कहियो वरदी रहैत अछि कहियो मनाही रहैत अछि।

-दरभंगोमे आऽ पटनो मे आउ। मायोकेँ अनियन्हु। हमर पत्नीकेँ बड्ड नीक लगतन्हि। नेहालतँ पटनेमे अछि।

फेर अपन पटना आ ऽ दरभंगा दुनू ठामक पता अपन स्नेहिल हाथसँ पड़बैत पटनाक हार्डिंग पार्क बस स्टैण्ड पर उतरलाह।

बाहरसँ पटना अयला पर होर्डिंगकेँ देखि आरुणि प्रसन्न भय जाइत छलाह। मुदा पिताक छायाक दूर भेलाक बाद आब एहि नगरसँ लगाव नहि प्रतियोगिता करय पड़तन्हि हुनका। ई कोन संयोगपर संयोग भऽ रहल छल। आजम साहेब आइये कोना भेटि गेलाह। पन्द्रह सालसँ किएक क्यो नहि भेटल रहथि आऽ अकस्मात् नियति की चाहए छन्हि हुनकासँ।

रिक्शा पकड़ि घरक लेल निकललाह। फेर सोचनी लागि गेलन्हि। एक बेर बाबूजीकेँ कटहरक कोआ खेलाक बाद पेट फूलि गेलन्हि, दू बजे रातिमे। ईहो नहि फुराइत छलन्हि, जे बगलमे श्रवनजीक बाबूकेँ बजा लियन्हि, जे कोनो डॉक्टरकेँ बजा देताह। फुरायल तँ छलन्हि, मुदा कहियो गप नहि छलन्हि, तँ आइ काज पड़ला पर कहितथिन्हि, से हियाऊ नहि भेलन्हि। माय केबाड़ पीटि कय पड़ोसीकेँ उठेलन्हि, कनैत खिजैत रहलीह। पड़ोसी डॉक्टरकेँ बजओलक, तखन जाऽ कय बाबूजीक जान बाँचलन्हि। माय श्राप सेहो दैत रहलखिन्ह आऽ ईहो कहैत रहलखिन्ह जे पाँच वर्षक बेटा रहैत छैक तँ सभ भरोस दैत छैक, जे कनैत किएक छी, अहाँकेँ तँ पाँच वर्षक बेटा अछि।ऽ ई सभ .....जाह, अपने भोगबह हम तँ दुनियासँ चलि जायब।

बहिन कॉलेजमे पढ़ैत छलखिन्ह। कॉलेजक रस्ता पैरे जाय पड़ैत छलन्हि। आऽ कॉलेजसँ आँगा स्कूल छलन्हि आरुणि दुनू भाँयक। बहिन कहलखिन्ह, जे अहूँ सभ संगे हमरा सभक संगे चलू। एक दिन दुनू भाँय संग गेबो कएल रहथि। मुदा गप बिनु केने दुनू भाँय आगू-आगू झटकैत चल गेलाह। मोनमे ईहो भव छलन्हि, जे छौड़ा सभ चीन्हि नहि जाय जे हमरा सभक ई बहिन छथि। आब ई सोचैत छथि जे चिन्हिये जाइत तँ की होइत।

अपन व्यक्तित्वक विकासक कमी छलन्हि ई? बादमे पैघ भेलाह तँ माँ-बापकेँ उकटैत छथि, जे घरघुस्सू आऽ मुँहचुरूक संज्ञा जे देलहुँ अहाँ सभ, कहियो ई सोचलहुँ, जे कोनो पड़ोसीसँ गप्प नहि करबाक, संगी-साथी नहि बनयबाक, घूमब-फिरब नहि करबाक उपदेशक पाछू -जे अहाँ सभ उपदेश देलहुँ- ओकर पाँछा इच्छा समाजक बुराइसँ दूर करबाक छल, परंतु यैह तँ बनेलक मुँहचुरू आऽ घरघुस्सू सभकेँ।

रातिमे माय बापक झगड़ाक सीन सपनामे देखैत छलाह आऽ डरा कय उठि जाइत छलाह। पैघ भाय बहिनसँ अरुणिकेँ खूब झगड़ा होइत छलन्हि, मुदा एक बेर माय-बापक झगड़ाक बाद, खूब कानल छलाह, खूब बाजल छलाह। ओहि घटनाक पहिने किछु दिनसँ भाय-बहिनसँ झगड़ाक बाद टोका-टोकी बन्द छलन्हि। सभ बेर वैह लोकनि आगाँ भऽ टोकैत छलाह। मुदा एहि बेर आरुणि कानैत-कानैत बहिनकेँ टोकलन्हि आऽ फेर कहियो बहिनसँ झगड़ा नहि भेलन्हि। भाय पिठिया छलन्हि, संगे पढ़ैत छलखिन्ह, ताहि हेतु ओकरासँ तँ झगड़ा होइते रहलन्हि, मुदा कम-सम।

एहि सभ गपक हेतु माँ पिताजीकेँ दोषी कहथे। माँ सभसँ- पड़ोसी-संबंधी, जान-पहचानसँ- गप करबासँ कहियो नहि रोकलन्हि आऽ सभटा दोष पिताक छलन्हि।

एक बेर ग्लोब किनबाक जिद्द कएलन्हि आरुणि। कएक बेर समय देल गेलन्हि, जे आइ आयत- काल्हि आयत। आरुणि पढ़ब छोड़ि देलन्हि। आऽ तखन जाऽ कय ग्लोब अएलन्हि। बहिन अखनो कहैत छथिन्हि, जे ग्लोब अनबाक जिद्दक पूरा भेलाक बाद अरुणिक पढ़ाइक लय टूटि गेलन्हि। वर्गमे स्थान प्रथमसँ नीचाँ आबि गेलन्हि आऽ पिताजी एकर कारण तंत्र-मंत्रमे ताकय लगलाह। एकटा तांत्रिकसँ भेँट भऽ गेलन्हि।

कतेक दिन सभ गाममे रहैत जाइत गेलाह। गंगा ब्रिज कॉलोनीमे एकटा एकाउन्टेंट बाबू छलाह। ओऽ बाबूजीकेँ कहलखिन्ह, जे अहाँ तँ घूस नहि लैत छी, मुदा अहाँक पत्नी अहाँक नाम पर घूस लैत छथि। तकर बाद सभ गाम पहुँचा देल गेलाह।

सभ ट्रांसफरक बाद बिहार सरकारक नौकरीमे दरमाहा बंद भऽ जाइत छैक। आऽ ताहि द्वारे सभ ट्रांसफरक बाद नन्द सभकेँ गाम पठा दैत छलाह। एहि क्रमम सभ गाममे छलाह। नन्दक चिट्ठी माँक नामसँ गाम आयल छलन्हि। आरुणि पढ़ने रहथि। नन्द आरुणिक मायकेँ लिखने छलाह, जे -जौँ अहाँ घूसक पाइ लेने छी तँ लौटा दियौक। हम विजीलेंसकेँ लिखने छी, छापा पड़त, तखन पाइ निकलत तँ बड्ड बदनामी होयत।

एहि सभ परिस्थितिमे स्कूलमे आरुणि घरक परिस्थितिकेँ बिसरि जयबाक प्रयास करय लगलाह। झुट्ठेकेँ हँसय लगलाह। ई आदति पकड़ि लेलन्हि। घरक बड़ाई करय लगलाह। लोक सभ नन्दक ईमानदारीक तँ चर्चा करिते रहय। आरुणि घरक कलहक विषय घरक बाहर अनबासँ परहेज करय लगलाह, लोक बुझत तँ हँसत। आऽ बुझू जे ईमानदारीक ग्लैमरकेँ जिबैत जाइत गेलाह। सोचबाक आऽ गुनधुनीक आदति एहन पड़लन्हि, जे सुतैत सपनामे आऽ जगैत लिखबा-पढ़बा काल धरि ई पाछाँ नहि छोड़लकन्हि। दसमामे छमाही परीक्षा किछु दिन पहिने देने रहथि। कॉमर्सक परीक्षामे एकटा प्रश्न बनेलन्हि। मुदा ओऽ गलत बनि गेलन्हि, फेर दोसर आऽ तेसर बेर प्रयास केलन्हि। सभटा प्रश्नक उत्तर अबैत छलन्हि मुदा पहिलो प्रश्नक उत्तर पूरा नहि भऽ रहल छलन्हि। कॉपीकेँ अंगाक नीचाँमे नुका लेलन्हि। आऽ पानि पीबाक बहन्ने जे बहरेलाह, तँ घर पहुँचि गेलाह। पढ़ैत-पढ़ैत सोचय लगैत छलाह। एक्के पन्ना उनटेने घंटा बीति जाइत छलन्हि। चिड़ियाखाना गेल रहथि एक बेर। किछु गोटे हुनकर सभक सर-संबंधी लोकनि, ओतय हुनका सभकेँ भेटि गेलखिन्ह। बड्ड हाइ-फाइ सभ। ओना तँ कहलखिन्ह किछु नहि, मुदा हुनकर सभक बगेबानी देखि कय, आरुणिमे हीन भावना अएलन्हि। चुप्पे भीड़मे निकलि घरक लेल पहुँचि गेलाह। जेबीमे पाइ नहि रहन्हि से पएरे निकलि गेलाह। ओतय चिड़ियाखानामे सभ डराइत रहल जे कतय हरा गेल। सभ घर पहुँचल तँ सभकेँ फुसियेँ कहलन्हि जे सत्ते भोथला गेल रहथि। सत्त बात ककरो नहि बतेलन्हि।

सभ लोक जे भेटथिन्ह यैह कहथिन्ह जे अहाँ, फलनाक बेटा छी। बेचारे भगवाने छथि।

ऑफिसमे पिताक दरमाहाक लेल पे-स्लिप बनबाबए पड़ैत रहन्हि। एक बेर आरुणि पे-स्लिप बनबए गेल छलाह। किरानी बाबू बाजल- हिनकर पिताक पे-स्लिप बिना पाइ लेने बना दियन्हु।

पिताजीसँ नहि तँ सहकर्मी खुश छलन्हि नहिये ठीकेदार सभ। सहकर्मी एहि लऽ कय जे नहि स्वयं कमाइत अछि, नहिये दोसराकेँ कमाय दैत अछि। पैघभायक गिनती बच्चामे बदमाशमे होइत छलन्हि। एक बेर ट्रांसफरक बाद जखन सभ गाम गेलाह, तँ पैघ भाय जे सभक फुलवाड़ीसँ नीक-नीक गाछ उखाड़ि कय अपना घरक आगाँ लगाऽ लैत छलाह, से आब एकहि सालमे दब्बू, सभसँ पाछू बैसनिहार विद्यार्थीक गिनतीमे आबि गेलाह। ओहि बेर ट्रांसफरक बादक गाममे निवास किछु बेशी नमगर भऽ गेल छलन्हि। फेर मुख्यमंत्री पदक दावेदार एकटा नेताजी जखन गाममे वोट मँगबाक लेल अयलाह, तखन काका हुनकासँ भेँट कएलन्हि, आऽ कहलखिन्ह जे- हमर भायकेँ वर्क्ससँ नन-वर्क्स मे ट्रांसफर कए दियौक, बच्चा सभ पोसा जयतैक।

नेताजी कहलन्हि जे -जौँ हम जीति गेलहुँ तँ ई काज तँ हम जरूर करब। वर्क्समे जयबाक पैरवी तँ बहुत आयल मुदा नन-वर्क्समे जयबाक हेतु ई पहिले पैरवी छी।

संयोग एहन भेल जे ओऽ नेताजी जीति गेलाह आऽ मुख्यमंत्री सेहो बनि गेलाह। ओऽ शपथ ग्रहण केलाक बाद ई काज धरि केलन्हि, जे पिताजीक ट्रांसफर कय देलखिन्ह। आऽ नन्दक परिवार पुनः शहर आबि गेल रहन्हि । गाममे रहथि तँ एक गोटे जे आरुणिक भायक संगी छलाह, ककरो अनका प्रसंगमे कहने छलाह।

हुनकर अनुसार- हुनकर मायक स्वभाव तीव्र छलन्हि, आऽ ओऽ खेनाइ खाइते काल झगड़ा करय लगैत छलीह। मुदा ओहि दिन ककरो अनका ओऽ आर तीव्र स्वभावक देखने छलाह।

खराब आर्थिक स्थितिक उपरांत होयबला कलहक परिणाम आरुणि देखि रहल छलाह। दू टा घटना हुनका विचलित कए दैत छलन्हि। एकटातँ इनकम टैक्स कटौतीक मास- मार्च मास। ई घटना तँ सभ साले होइत छल, मुदा कटौती बढ़ैत-बढ़ैत एक साल आबि कय पूरा मार्च मासक दरमाहा काटि लेलक। माँ कहैत छलखिन्ह जे- आब भोजन कोना चलय जयतौह। आब भीख माँगय जइहँ गऽ सभ। मुदा नन्द एकटा गामक भातिजकेँ पोस्टकार्ड पठेलन्हि आऽ ओऽ आठ सय टाका आनि कय दय गेलखिन्ह, तखन जऽ कय असुरक्षाक भावना खत्म भेल छल। भीख मँगैत अखनो जौँ ककरो देखैत छथि आरुणि तँ मोन कलपय लगैत छन्हि। दोसर घटना छल जखन हुनकर घरक आँगा एकटा एक्सीडेंट भेल छल आऽ ओकरा बाद हुनकर भाइ खेनाइ छोड़ि देने छलाह आऽ कानि-कानि कय आँखि लाल कए लेने छलाह। नन्द जखन बुझबय लगलाह तँ ओऽ जवाब देलन्हि,

-अहाँकेँ जौँ किछु भय जायत, तखन हमरा सभक की होयत।

पिताजी इंश्योरेंस बेनीफिट, जी.पी.एफ., ग्रेच्युटी आदिक हिसाब लगाय पुत्रकेँ बुझेलन्हि जे ९९००० रुपय्या तँ तुरत भेटत आऽ फेर महिने-महिने पेंशनो भेटत। लगभग एक घंटा तक बाबूजी पैघ पुत्रकेँ बुझबैत रहलाह।

एक बेर आरुणिक ओहिठाम एक गोट पीसा आयल छलाह। आइयो घरमे क्यो अबैत छथि, तँ सभ सुरक्षित अनुभव करैत छथि। नन्द पीसाक हुनकर सार भेलखिन्ह से एहि ओहदासँ हँसी सेहो चलि रहल छल।

ओऽ कहलन्हि जे नन्दे जेकाँ ईमानदार एकटा बी.डी.ओ. साहेब झंझारपुरमे छलाह। पिताजी हुनकर मलाह छलखिन्ह, कष्ट काटि अफसर भेलाह। मुदा नन्दक जँका हुनको घरमे खाटे टा छलन्हि। पीसा हुनका कहलखिन्ह जे कथी ले अफसर भेलहुँ, गाममे रहितहुँ आऽ मचान पर बैसि माछ भात खएतहुँ। माछक कारबारमे फायदा होइत।

आरुणिक बहिनक विवाह बाद घरमे कखनो काल बहनोइ अबैत छलखिन्ह। जमायक अबिते देरी आरुणिक माँक झगड़ा पिताजी सँ शुरू भय जाइत छलन्हि, किएकतँ घरमे इंतजाम तँ किछुओ रहिते नहि छल।

ट्रांसफरक बाद पिताजीक अभियान घूसखोरकँ सजा देबय पर चलल। आऽ जखन सरकारी तंत्र परसँ विश्वास खतम भए गेलन्हि, तखन एकटा तांत्रिकक फेरमे पड़ि गेलाह। घरमे माता-पिताक बीच कलह बढ़ि गेल। एक दिन पिताजीसँ आरुणिक बहसा-बहसी भए गेलन्हि आऽ तीनू भाय बहिन गरा लागि कय कानय लगलाह। तकरा बादसँ अरुणिक भाय-बहिन सभसँ झगड़ा होयब समाप्त भय गेलन्हि।

आरुणि अनेर गुनधुन करैत घरपर पहुँचलथि।

दू-तीन धरि दोसर किरायाक मकान ताकए लेल निकलल करथि आऽ साँझमे वैह गुनधुनी।

एक बेर घर आबि रहल छलाह स्कूलसँ।

घर अबैत काल मोन कोना दनि कऽ रहल छलन्हि। स्कूलसँ घर आबि रहल छलाह। रस्तामे सभ क्यो एक दोसरा सँ किछु असंभव घटित होयबाक गप कऽ रहल छलाह। आरुणि दुनू भाय सातम कक्षामे पढ़ैत रहथि, संगहि-संग। मुदा आइ पैघ भायक पेटमे दर्द छलन्हि से ओऽ टिफीनक बाद छुट्टी लऽ घर चलि गेल छलाह। स्कूलमे सभकेँ हँसैत देखैत रहथि, तँ अपन घरक स्थिति यादि पड़ि जाइत छलन्हि। ईर्ष्या सेहो होइत छलन्हि आन बच्चाक भग्य परा। फेर मोनमे ईहो होइत छलन्हि, जे हुनके सभ जेकाँ परिस्थिति होयतैक एकरो सभक। मुदा झुट्ठे प्रसन्नताक नाटक करैत जाइत अछि। घरमे माय बापक कलहक बीच डरायल सन रहैत रहथि। लगैत रहैत छलन्हि जे ई सभ परिस्थिति कहियो खत्म नहि होयतैक। नहि तँ दोसरसँ गप्प कय सकैत छथि, नहियेे ककरो अपन मोनक गप्पे कहि सकैत छथि। बेर-बखत कहियो अपन सहायताक हेतु सेहो सोर नहि कऽ सकैत छथि। माय ठीके घरघुसका, मुँहदुब्बर आदि विशेषणसँ विभूषित करैत छलखिन्ह। साँझमे घुमनाइ आकि दुर्गापूजाक मेला गेनाइ, ई सभ बात हुनका सभक जीवनसँ दूर छलन्हि। एक बेर भूकम्प जेकाँ आयल छल, सभ क्यो ग्रील तोड़ि कय बहरायल, मुदा आरुणि खाट पर पड़ले रहि गेलाह। किछु तँ अकर्मण्यतावश आऽ किछु ई सोचि कय , जे की होयत घर टूटि देह पर खसत तँ, समस्यासँ मुक्तियोतँ भेटत।

घरक लगमे पहुँचलाह तँ भीड़ देखि मोन हदसि गेलन्हि, जे बाबूजीकेँ तँ किछु नहि भऽ गेलन्हि। घरमे पहुँचलाह तँ माँ-बहिनसँ पूछय लगलाह, जे की भेल? सभ बोल भरोस देबय लगलथिन्ह तँ आरो तामस उठय लागलन्हि।

जोरसँ कानि कय बाजय लगलाह जे-

-बाबूजी मरि गेलाह की? कतय छन्हि हुनकर मृत शरीर।

ताहि पर बहिन कहलखिन्ह जे-

-नहि, हुनका किछु नहि भेलन्हि। अहाँक संगी जे मकान मालिकक बेटा अछि, से ओऽ ओकर छोट भाय , ओकर पिता आऽ रिक्शाबला, चारू रिक्शा पर जाइत छलाह। बेचारा रिक्शा बला विवाह क'ऽ कय कनियाँकेँ अननहियेे छल। एकटा विशाल ट्रक रिक्शाकेँ धक्का मारि देलकैक। ठामहि मरि जाय गेलाह।

आरुणिक कानब खतम भय गेलन्हि। ई जे आफत आयल छलैक से आइ ककरो अनका घर, ओना ओऽ जे मृत भेल छल आरुणिक संग डेढ़ सालसँ स्कूल जाऽ रहल छल प्रतिदिन प्रातः। सभ दिन प्रातः सीढ़ी पर कॉलबेल बजबैत छलाह आऽ ओऽ सीढ़ीसँ उतरैत छल, आऽ संगे सभ स्कूल जाइत छलाह। मोन पड़लन्हि जे काल्हि सेहो सभ दिन जेकाँ ओऽ कॉलबेल बजेने छलाह, तँ ओकर बहिन जे चश्मा लगबैत छलि, आऽ झनकाहि छलीह, से ऊपरसँ तमसाकेँ कहलक जे कतेक जोरसँ आऽ देरी तक कॉलबेल बजबैत छी, आऽ सेहो जे बेर-बेर किएक बजबैत छी, आबि रहल अछि। काल्हि तँ ओऽ आयल मुदा आरुणि तखनहि कहि देलखिन्ह जे काल्हिसँ हम कॉलबेल नहि बजायब, अहाँकेँ हमरा संगे जयबाक होय तँ नीचाँ उतरि कय आऊ आऽ संग चलू। ओऽ नहि आयल तँ आरुणि किएक कॉलबेल बजबितथि। डेढ़ सालमे पहिल बेर भेल छल जे आरुणि कॉलबेल नहि बजेने छलाह आऽ ओऽ डेढ़ सालमे पहिल बेर स्कूल नागा कएने छल। आब आरुणिक मोनमे होमय लगलन्हि जे कतहु ओऽ बाजि तँ नहि देने होयत जे आरुणि काल्हिसँ कॉलबेल नहि बजओताह। मुदा किंसाइत ओकर कोनो आनो कार्यक्रम होयतैक। किएकतँ छोट भाय आऽ पिताक संग रिक्शासँ कतहु जाऽ रहल छल। अस्तु आरुणि चिंतित छलाह मुदा दुःखी नहि। मोनक गप कियो बुझय नहि तँ मुँह लटकेने ठाढ़ रहथि। ओऽ तँ मात्र सोचने रहथि जे काल्हिसँ एकरा संगे स्कूल नहि जएताह, जायत ई असगरे। मुदा ओऽ तँ असगरे नहि जायत से सत्य कय देखा देलक। अरुणिक मायक आँखिमे नोर छलन्हि, मुदा अरुणिक भीतर प्रसन्नता, किएकतँ हुनकर पिताजीक मृत्यु जे रुकि गेल छलन्हि।

दोसर किरायाक घर तकलाक बाद दुनू भाँय सभटा समान नवका घरमे राखि माँकैं गामसँ आनि लेलन्हि।

आरुणि अपन नोकरी पर चलि गेलाह।

"नहि एहन कोनो बात नहि अछि", ई तँ हमर सभक कार्यक अंतर्गत करइए पड़ैत अछि"।

" मुदा अहाँकैं ई नहि बुझि पड़ैत अछि जे एहि बेर किछु बेशी क्रूर भऽ गेलहुँ अहाँ सभ?"

"क्रूरताक तँ कोनो बात नहि अछि। हमरा सभ तँ कोनो विशेष सूचनाक आधार पर कार्य करैत छी"।
"मानि लियऽ जे हमरा ककरोसँ दुश्मनी अछि, आऽ ओहि आधार पर विभागकैं ओऽ अपन व्यक्तिगत स्वार्थ आऽ झगड़ाक हेतु प्रयोग कए सकैत अछि"।

" अहाँक शंका ककरो पर अछि?"

" नहि हम तँ उदाहरण दय रहल छलहुँ"।
" नहि हमरा सभ कोनो सूचनाक आधार पर सोझे बिदा नहि होइत छी। पहिने ओकर गंवेषणा करैत छी, आऽ तकरे बाद एतेक ठाम सर्च करबाक अनुमति भेटैत अछि"।

" मुदा आब अहाँ ई कहियो देब जे अहाँक कोनो गलती नहि अछि, तँ की हमर इज्जत लौटि कए आयत"।
" एना तँ हमरा सभकैं हाथ-पर हाथ दए बैसि जाय पड़त। मुदा अहूँक गप ठीक अछि। अहाँक प्रति जौं द्वेषवश क्यो कार्य कएने होयत तँ ओकरा पर कार्यवाही कएल जायत।"

" की कार्यवाही होयत। हमरा पर तँ कार्यवाही भऽ गेल। हमर सभटा बायर टूटि जायत। हम सभ एतेक पुरान छी, तीन पुस्तसँ एहि कार्यमे लागल छी। करबो करब तँ क्लेंडेस्टाइन रिमूवल करब? सभ बायरपर तँ रेड भऽ गेल, किछु कतहु नहि भेटल से के पतियायत"।

ओकर बातो ठीक छलैक। ई प्लाइवुडक व्यापारी एक नंबरक काजक हेतु जानल जाइत छल, मुदा आरुणिकैं जे सूचना प्राप्त भेल छलन्हि से ओकर विपरीत छल। मुदा ई रेड तँ खाली गेल। फैक्टरी, घर, डीलर सभ ठामसँ टीम खाली हाथ आयल। मुदा आब ऑफिसरकैं की जवाब देताह। नामी कंपनी छल, अधिकारीगण डरा कऽ रेडक अनुमति आरुणिक व्यक्तिगत प्रतिष्ठाकैं देखैत देने छलाह। हेडक्वार्टरसँ फोन पर फोन आरुणिकैं आबि रहल छलन्हि, भोर तँ रेडमे भइये गेल छल, दस बजे ऑफिसमे रिपोर्ट देबाक हेतु कहल गेल छलन्हि। फैक्टरीक मालिक सेहो एम्हर- ओम्हरक बात लऽ कऽ दस बात सुना देलकन्हि। स्वर्णप्लाइ नाम्ना ई कंपनीक दिल्ली धरि पहुँचि छलैक। अकच्छ भऽ कऽ आरुणि भोरमे घर पहुँचि मोबाइल ऑफ कऽ कय ९ बजेक अलार्म लगाऽ कऽ सुतबाक प्रयास करय लगलाह। काल्हि भोरेसँ रेड चलि रहल छल, ई कोना भेल, कोनो क्लेंडेस्टाइन रिमूवलक कच्चा पर्ची किएक नहि भेटल। केस लीकतँ नहि भऽ गेल। मुदा केसक विषयमे आरुणिकक अतिरिक्त डायरेक्टर विजीलेंसकैं मात्र बुझल छलन्हि। ई सभ बिछौन पर सोचिते रहथि, तावत निन्द तँ नहि लगलन्हि मुदा ९ बजेक अलार्म बाजि उठल।

ऑफिसमे सभ क्यो जेना हिनके बाट ताकि रहल छलाह। कतेक गोटे ईहो सुना देलकन्हि, जे एहि केसक इंटेलिजेंस हुनको सभक लग छलन्हि, मुदा एहि तरहक केसमे क्लेंडेसटाइन रिमूवलकैं सिद्ध केनाइ मुश्किल होइत छैक, ताहि हेतु ओऽ लोकनि एहिमे हाथ नहि देलन्हि। कानाफूसी होमय लागल जे बड्ड हीरो बनैत छलाह, आब ट्रांसफर ऑर्डर लऽ कय निकलताह डायरेक्टरक ऑफिससँ।

आरुणि डायरेक्टरक ऑफिसमे गेलाह आऽ सोझे किछु दिनक समय माँगि लेलन्हि। की प्लान छन्हि, एहि विषयमे गप-शप घुमा देलथि। एहि बेर कोनो प्रकारक कोनो भ्रम नहि राखऽ चाहैत छलाह।

आब आरुणि स्वर्ण प्लाइक फैक्टरीसँ हटि कऽ आऽ ओकर डीलरसँ हटि कऽ कार्य करए लगलाह। सभटा दस्तावेजकैं घोखि गेलाह। किछु कागज पर सेहो लिखय लगलाह। फेर अपन प्लानक हिसाबसँ कलकत्तासँ पटना आऽ ओतएसँ अररियाक हेतु बिदा भऽ गेलाह।

पान तँ खाइत नहि रहथि आऽ चाह सेहो घरे टा मे पिबैत रहथि। मुदा लोकसँ किछु जनबाक हो तँ बिना चाह आऽ पानक दोकान गेने कोना काज चलत। से ओऽ चाह पान शुरू कएलन्हि। बाबुल दादाक गुलकन्द बला पान नीको बड्ड लागन्हि। तकरा बाद बाबुल दादा अररियाक लग पासक सभटा प्लाइवुडक फैक्टरीक लिस्ट दऽ देलकन्हि। मुदा फैक्ट्री सभक पहुँचबाक रोड सभक भगवाने मालिक रहथि। धूल-धक्करमे कहुना जाऽ कय एकटा फैक्टरीक पता चलल जे स्वर्णप्लाइकेँ सप्लाइ दैत छल, ओतुक्का दरबान आरुणिकेँ कहलकन्हि जे मालिक दोसर फैक्टरीमे बैसैत छथि, से दू टा फैक्ट्रीक पता चलि गेलन्हि आरुणिकेँ।

आरुणि थाकल-हारल ओहि फैक्टरीमे पहुँचलाह। एक गोट मारवाड़ी सज्जन बैसल रहथि।

"कतयसँ आयल छी"।

"आयल तँ पटनासँ छी, मुदा घुरब कोना से नहि बुझि पड़ैत अछि"।

" हँ, एक गोट नेताक जेलसँ बाहर गोली मारि कय हत्या कऽ देल गेल। नेताजी रहथि तँ जेलमे मुदा घुमय फिरय पूर्णियाँ जेलसँ बाहर बिना नियमक निकलल रहथि। जेलर की करताह। पिछला मास एक गोट कैदीकेँ पुरनका जेलर घुमय हेतु नहि देने छलथिन्ह तँ भट्टा बजारमे गोली मारि देलकन्हि पुरनका जेलरकेँ। एहि बेर जे घुमय देलखिन्ह तँ सरकार सस्पेन्ड कऽ देलकन्हि नवका जेलरकेँ। ताहि हत्याक बाद बन्दक आह्वान अछि। हमरा संगे रहू। एतय हमहू अपन गेस्ट हाउसमे रहैत छी। परिवार सिलीगुड़ीमे रहैत अछि। विवाह नहि भेल अछि। भोरमे हमरा कलकत्ता जयबाक अछि। पहिने सिलिगुरी अपन गाड़ीसँ जायब तँ रूट बदलि कऽ पूर्णियाँ बस स्टैण्डमे अहाँकेँ छोड़ैत जायब"।

युवा बजक्कर रहथि से आरुणिकेँ नीक लगलन्हि। रातिमे गेस्ट हाउसमे बहुत गप्प भेलन्हि। नेताक रंगदारीक, चन्दा बला सभ जबर्दस्ती रसीद काटि जाइत छलन्हि।

"एनामे तँ बिना क्लेनडेस्टाइन कएने घाटा भऽ जायत, हँ मजबूरी छैक। आऽ तकर दोषी तँ ई नेता सभ छथि। व्यापारी की करओ"।

आब मारवाड़ी युवा जकर नाम नवल छल कनेक कनछिया कऽ आरुणि दिशि देखलक। आरुणिकेँ भेलन्हि जे ओकरा कोनो शंका तँ नहि भेलैक।

" नहि क्लेंडेस्टाइन नहि करबाक तँ सिद्धांत अछि हमरा सभक। हँ किछु एडजेस्टमेंट करय पड़ैत अछि"।

आरुणिकेँ मोन पडलन्हि जे कोना स्वर्ण प्लाइक मालिको बजैत-बजैत बाजि देने छल, जे करबो करब तँ क्लेनडेस्टाइन रिमूवल करब।

तखन करैत की जाइत अछि ई सभ। ओना अररियाक ई फैक्टरी स्वर्ण प्लाइक हेतु जॉब वर्क करैत छल, आऽ ताहि हेतु सरकारी ड्यूटीक सभ भार स्वर्ण प्लाइ पर रहैक। ई क्लेनडेस्टाइन करियो कऽ की करत। टैक्स तँ दोसराकेँ देबाक छैक।

तखने एकटा फोन अयलैक। रिंग नमगर रहैक से संकर्षणकेँ बुझबामे भांगठ नहि भेलन्हि जे ई बाहरक एस.टी.डी.कॉल अछि। ओहि कॉलक बाद एकाएक ओऽ युवा आरुणि दिशि ताकि कय चुप्पी लगाऽ गेल।

भनसिया जकरा नवलजी "झा" कहि संबोधित कऽ रहल छलाह, खेनाइ बनि जेबाक सूचना देलकन्हि। आरुणि आऽ नवलक बीच मात्र औपचारिक गप भेल। फेर दुनू गोटे सूति गेलाह। भोरमे अपन वचनक अनुसार ओऽ युवा आरुणिकेँ पूर्णियाँ बस स्टैण्ड छोड़ि देलकन्हि। उतरबासँ पहिने आरुणि नवलसँ पुछलन्हि।

"कलकत्तामे स्वर्ण प्लाइक ऑफिस छैक। ओतहि जाऽ रहल छी की"।

ओ' युवा हँसल।

" अहाँ विजिलेंस सँ छी। हमरा काल्हि जे एस.टी.डी. आयल छल, से स्वर्ण-प्लाइक कलकत्ता ऑफिससँ आयल छल। अहाँक विभागेक क्यो गोटे हुनका सभकेँ अहाँक अररिया यात्राक विषयमे सूचना देलखिन्हि। देखू हम कहने छी जे हम मात्र एडजेस्टमेंट करैत छी। आऽ ताहिसँ हमरा कोन फायदा होइत अछि? टैक्स तँ हमरा लगैत नहि अछि। हँ ताहिसँ हमरा काज भेटैत अछि। आऽ बाहरी छोट-मोट खर्चा, विभागक, पुलिसक, नेताक निकलि जाइत अछि। तखन बेश"।

ई कहि ओऽ सज्जन आरुणिकेँ हतप्रभ करैत चलि गेलाह।

आब पटना पहुँचि कय आरुणि जखन ऑफिस पहुँचलाह तँ सभकेँ बुझल रहैक जे आरुणि ताहि फैक्ट्रीक विजिट सरकारी खर्चा पर कएलन्हि अछि, जकरा पर सरकार टैक्सक माफी देने छैक।

डायरेक्टसँ भेँट कएलाक बाद आरुणि पहुँचि गेलाह फेरसँ कलकत्ता। पुलिस थानामे घुमैत रहलाह आऽ पता करैत रहलाह जे स्वर्ण-प्लाइ आकि ओकर कोनो कर्मचारीक विरुद्ध कोनो केस छैक तँ नहि। मुदा ओतय तँ स्वर्ण प्लाइ बड्ड नीक छवि शुरुएसँ बनेने छल। आब संकर्षण सोचमे पड़ि गेलाह। इनपुट-आउटपुट केर अनुपातसँ ई कंपनी करोड़ो रुपयाक टैक्सक चोरि कए रहल अछि। मुदा प्रमाण कोनो नहि।
आरुणि ओतुक्का थाना सभमे अपन पता आऽ फोन नंबर छोड़ि देलन्हि, जे जौँ कोनो केस एहि कंपनी किंवा एकर कर्मचारीक संबंधमे होय तँ तकर सूचना हुनका देल जाइन्ह।

अपन लोकल डायरेक्टरसँ कहलखिन्ह, जे क्लोजर रिपोर्ट अखन नहि देब। देखैत छी किछु जानकारी कतहु सँ भेटैत अछि कि नहि।

छह मासक बाद।

भोरमे एस.टी.डी. केर रिंग भेल।

" हम कलकत्ता, साल्ट लेक थाना सँ बाजि रहल छी। एक गोटे एकटा कमप्लेन लिखेने छथि, जे स्वर्ण-प्लाइ ऑफिससँ पेमेन्ट लऽ कऽ घुरैत काल हुनकर सूटकेस ऑटो बला छीनि लेलकन्हि, जाहिमे किछु कैश आऽ चेक छलन्हि"।
" कतेक कैस आऽ कतेक चेक"।
"१.७९ लाख कैस आऽ १.८३ लाखक चेक, प्रायः कैसक कोनो इनस्योरेंस रहन्हि, ताहि द्वारे एफ.आइ.आर. करओलन्हि अछि। चेकक तँ पेमेंट स्टॉप भऽ जायत"।

आरुणि टीमक संग ओहि गोटेक घर पर छापा माड़लन्हि जकर पाइ आऽ कैस ऑटो बला छीनि लेने छल।

छापाक बीचमे संकर्षणकेँ एकटा डायरी भेटलन्हि। तकरा बाद पटना फोन कऽ अररियाक फैक्टरीसँ नवीनतम रिमूवलक रिटर्न मँगा लेलथि। फेर ओऽ सज्जन जिनका घर पर छापा पड़ल छल कँ ऑफिस अनलन्हि। रस्तामे पता चलल जे ओऽ सज्जन नवलक बहनोइ छलाह, आऽ अररियाक फैक्टरीक एकाउन्टेन्ट होयबाक संगहि, स्वर्ण-प्लाइक संग ओकर लाइजन अधिकारी सेहो छलाह।

आब सभ तथ्य सोँझा छल। जे डायरी भेटल छल ताहिमे कैस आऽ चेकक कॉलम बनल छल। तिथि सहित विवरण छल। चेकक भुगतानक कॉलम अररिया फैक्टरीक क्लियरेंससँ मिलि गेल छल, आऽ ईहो सिद्ध भऽ गेल जे सभ ट्रांजेक्सनमे लगभग अदहाक पेमेंट स्वर्ण-प्लाइ द्वारा कैसमे देल जाइत छल। आऽ तकर विवरण नहि तँ स्वर्ण-प्लाइक खातामे रहैत छल आऽ नहिये अररियाक फैक्टरीमे। स्वर्णप्लाइ टैक्स सेहो मात्र चेकक (पकिया) द्वारा गेल अदहा रिमूवलक पेमेंट पर दैत छल। संकर्षण ई रिपोर्ट लोकल डायरेक्टर कँ दऽ देलन्हि।

एकाउन्टेन्टक अपराध बेलेबल छलैक। कोर्ट ओकरा बेल पर छोड़ि देलकैक।

"नवलक समाचार कहू। बड्ड नीक लोक अछि। मुदा किछु बतेलक नहि"।
" ओकर काल्हि अररियासँ सिल्लीगुडी जाइत काल सड़क दुर्घटनामे मृत्यु भऽ गेलैक किंवा करा देल गेलैक। जमाय बाबूक संग एतयसँ सोझे हमरा सभ ओतहि जायब"।

एक गोट उत्तेजित स्वर जे एकाउन्टेन्ट बाबू कँ लेबाक हेतु आयल छल बाजि उठल।

" मुदा ई बूझि लिअ जे अहाँक ई सफलता हमर बुरबकीसँ भेटल अछि। जौँ हम कैसक इनस्योरेंस क्लेमक लालचमे नहि पड़ितहुँ तँ ई सभ नहि होइत"। जमाय बाबू बाजि उठलाह।

डायरेक्टर स्वर्णप्लाइक विरुद्ध कार्यवाहीक लेल ऑर्डर देलन्हि। स्वर्ण प्लाइक विरुद्ध करोड़ोक रुपैयाक टैक्स घोटालाक शो-कॉज नोटिस सेहो पठा देल गेल। आरुणि चिंतामग्न छलाह।

" ठीके तँ कहलक नवल। एडजेस्टमेंटे तँ कऽ रहल छल। चोरि तँ क्यो आन कऽ रहल छल। ओऽ तँ मात्र माध्यम छल। हमहू तँ कतहु नहि बनि गेल छी माध्यम, नवलक मृत्युक"।

आरुणिक व्यवसायिक सफलताक बाद नोकरी मध्य सेहो सफलताक शुरुआत भऽ गेल। माध्यम बनथि वा नहि मुदा पिता जेकाँ हारताह नहि। मोन पड़ैत रहन्हि हुनका सभटा गप बीच-बीचमे-

"कहलहुँ सुनैत छियैक। बेटी पैघ भ' रहल अछि। बेटा सभक लेल किछु नहि कएलहुँ। अपन घरो नहि बनल। रिटायर भेलाक बाद कतय रहब।"

" बेटीक चिन्ता नहि करू। बेटा बलाऽ अपने चलि कए आयत। हमरा सभकेँ जतेक सुविधा भेटल छल, ताहिसँ बेशी सुविधा हिनका सभकेँ भेटि रहल छन्हि। तखन पढ़थु वा नहि से ई सभ जानथि। रिटायरमेन्टक बाद गाम जाऽ कय रहब। सात जन्म शहर दिशि घुमि कए नहि आयब"।

"क्यो सर-कुटुम अबैत छथि तँ हुनका सत्कार करबा लेल घरमे इंतजामो नहि रहैत अछि।"

" इंतजाम करबाक की जरूरति अछि। एक पैली बेशी लगाऽ दियौक अदहनमे।"

आरुणि मायबापक एहि तरहक वार्त्तालाप सुनि पैघ भेलथि। एक बेर हॉस्पीटलमे पिताजीकेँ देखय लेल एक गोट कुटुम्ब आयल रहथि। हुनकर गप सेहो किछु एहने बुझा पड़लन्हि।

" की कऽ लेलहुँ शरीरकेँ। ई बच्चा सभकेँ देखि कए मोहो नहि भेल। कतय पढ़ैत जाइत ई सभ। आऽ कोनो टा सुविधा, नहियें कोनो टा चिन्ते छल अहाँकेँ। अपनो आऽ एकरो सभक जिनगी बर्बाद कएलहुँ।"

तखने व्यवधान भेल। पत्नी कहलखिन्ह जे एकटा फोन होल्ड अछि-

"आरुणि। एकटा पैघ राजनीति चलि रहल अछि ऑफिसमे। अहाँक विरुद्ध षड्यंत्र चलि रहल अछि। अहाँकेँ चेतेनाइ हमर काज छल। मुदा अहाँ तँ कोनो तरहक प्रतिक्रिया दैते नहि छी।" फोन पर एक गोट हितैषीक आवाज सुनि रहल छलाह आरुणि।

"आरुणि। की भऽ गेल। बाबूजी जेकाँ डरायल रहब। किछु दिनुका बाद हारि मानि ऋषि भऽ जायब। आकि दुष्टक संहार करब। एहि दुनूमे की चुनब अहाँ।"

"चिन्ता नहि करू। " हँसैत बजलाह आरुणि फोन पर, आऽ फोन राखि देलन्हि।

ऑफिसक एकटा लॉबी आरुणिक पाँछा पड़ि गेल छल। ट्रांसफर-पोस्टिंग केर बाद आरुणिक ऊपर दवाब आबि गेल छल। किछु गोटे हुनकर विरुद्ध बिना-कोनो आधारक किछु कम्प्लेन कए देने छलन्हि। एकटा ऑफिसर शशांक केर हाथ छलैक एहिमे। ओकर खास-खास आदमीक पोस्टिंग मोन-मुताबिक नहि भेल रहय आऽ ओऽ प्रोमोशनमे आरुणिकेँ पाछाँ करए चाहैत छल। एहि बीचमे आरुणिक फोन किछु दिन डेड छलन्हि। तकरा बाद हुनकर फोनसँ अबुधाबी आऽ दुबइ फोन कएल गेल छल। मुदा ओहि समयमे सरकारी फोनमे आइ.एस.डी. केर सुविधाक हेतु टेलीफोन विभागकेँ सूचित करए पड़ैत छल। हुनकर ऑफिसक एकटा प्रशासनिक अधिकारी टेलीफोन विभागकेँ चिट्ठी लिखि कए ई सुविधा आरुणिक जानकारीक बिना करबाए देने छल। विजीलेंसक जाँचमे ओऽ बयान देने छल जे आरुणि एहि ऑफिसक मुख्य छथि, आऽ हुनकर मौखिक आदेशोक पालन करए पड़ैत छन्हि हुनका। से आइ.एस.डी. केर सुविधाक लेल टेलीफोन विभागकेँ ओऽ आरुणिक मौखिक आदेश पर चिट्ठी लिखने छलाह। माफिया ओकरा तोड़ि लेने छल आऽ ओहिमे ओऽ प्रशासनिक अधिकारी अपनाकेँ सेहो फँसा लेने छल।

सोम दिन फैक्स आयल आऽ आरुणिक ट्रांसफर भऽ गेल।

"रिप्रेजेंट करू एहि आदेशक विरुद्ध"। वैह चिरपरिचित स्वर, मणीन्द्रक।

"अहूँ कोन झमेलामे पड़ल छी। सभ ठीक भऽ जायत"। बजलाह आरुणि फोन पर।

शशांकक घर पर पार्टी भेल।

"मिस्टर आरुणि रिप्रेसेन्ट तक नहि कएलन्हि। रिलीव भऽ कए चलि गेलाह। बुझू सरेन्डर कए देलन्हि अपनाकेँ"।

"प्रोमोशन बुझू जे दस साल धरि रुकल रहतन्हि। सीनियरिटी मारल जएतन्हि। बदनामी भेलन्हि से अलग। सुनैत छी जे फोन पर दुबइक स्मगलर सभसँ गप करैत छलाह"।

ओम्हर आरुणिकेँ अपन बाबूजीक ट्रांसफर, ईमानदारीक लेल कएल संघर्ष, संघर्षक विफलता आऽ तकर बाद हुनकर तंत्र-विद्या आऽ पूजा-पाठक दिशि अपनाकेँ ओझरायब आऽ घर-द्वार,ऑफिस आऽ सांसारिकतासँ विरक्ति मोन पड़ि गेलन्हि। एहि सभ घटनाक्रमक बाद हुनकर मुँह पर जे चिन्ताक रेखा आयल छलन्हि। मुदा से बेशी दिन धरि नहि रहलन्हि आरुणिक मोन पर। हारिकेँ जीतमे कतोक बेर बदलने छलाह ओऽ। नोकरीयोमे आऽ ओहिसँ पहिने व्यवसायमे।

" की यौ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि। स्टेटसँ बाहर ट्रांसफर भऽ गेल तँ अहाँ सभ तँ बिसरिये गेलहुँ"।

" हम की, सभ क्यो बिसरि गेल अहाँकेँ एतय"।

"अहाँ की बुझलहुँ। जे हम सेहो बिसरि गेल छी। अहाँकेँ मोन अछि। हम जखन इंटरक बाद बाबूजीक इच्छाक विरुद्ध विज्ञान छोड़ि कए कला विषय लेने छलहुँ। विज्ञानक सभटा किताब ११ बजे रातिमे पोखड़िमे फेंकि देने छलियैक। कोनोटा अवशेषो नहि छोड़ने छलहुँ ओहि विषयक अपन घरमे। आऽ जखन कला विषयमे प्रथम श्रेणी आयल छल तखन गेल छलहुँ गाम। तकरा पहिने कतेक बरियाती छोड़ने छलहुँ, कतेक जन्म-मृत्यु। मुदा गाम नहि गेल छलहुँ"।

" एह भाई। अहाँकेँ तँ सभटा मोन अछि। हमरा तँ भेल जे अहूँ काका जेकाँ भऽ गेलहुँ। ई सभ क्षमाक योग्य नहि अछि। कनेक देखाऽ दियौक। आब हमरा विश्वास भऽ गेल जे किछु होयत"।

" फेर वैह गप। जखन अहाँ नहि बदललहुँ तखन हम कोना बदलब। छोड़ने छलहुँ किछु दिन अपनाकेँ। आब सुनू। जे कहैत छी से टा करू। बेशी बाजब जुनि। जाहि समयक कॉल हमर टेलीफोनसँ बाहरी देश कएल गेल छल, ओहि समयमे तँ हमर टेलीफोन खराब छल, ई तँ अहाँकेँ बुझले अछि। घरसँ टेलीफोन विभागकेँ कम्प्लेन सेहो लिखबाओल गेल छल। मुदा से टेलीफोने पर लिखबाओल गेल छल। कोनो लिखित पत्र आऽ ओकर प्राप्ति रशीद तँ अछि नहि। मुदा ई पता करू जे एहि तरहक कम्प्लेनक कोनो रेकार्ड टेलीफोन विभागक लग रहैत छैक की नहि।"

मणीन्द्रक फोन आयल किछु दिनुका बाद जे फोन विभाग एक महीनाक बाद कम्प्लेन नंबर फेरसँ एक सँ देब शुरू कए दैत छैक। से ई काज नहि भेल।

" बेश तखन ई पता करू, जे हमर नंबरसँ ककरा-ककरा कोन-कोन नंबर पर विदेश फोन कएल गेल छल। आऽ ओहि विदेशीक फोन कोन-कोन नंबर पर आयल अछि"।

"हँ। एहि गपक तँ हमरा सुरते नहि रहल"।

आब मणीन्द्र जे टेलीफोन नंबरक सूची अनलन्हि, से सभटा टेलीफोन बूथ सभक छल। मुदा कोनो टा कॉल आरुणिक नंबर पर नहि आयल छल।

विजीलेंसक सुनबाहीमे ई सभ वर्णन जखन आरुणि कएलन्हि, तखन शशांक हतप्रभ रहि गेलाह। ई तँ नीक भेल जे शशांकक आदमी सभ बूथ बलासँ संपर्क रखने छल, नहि तँ ओहो सभ फँसैत आऽ संगहि शशांकोक नाम अबैत एहि सभमे। अस्तु आरुणि जाँचसँ बाहर निकलि गेलाह।

" भाइ। हम मणीन्द्र। ओकरा सभकेँ तँ किछु नहि भेलैक।"

"हमर ट्रांसफर दिल्ली भेल अछि। देखैत छी। अहाँ निश्चिंत रहू।"

"हम तँ ओहि दिन निश्चिंत भऽ गेलहुँ जहिया अहाँ पुरनका गप सभ सुनेलहुँ। काकाक अपमानक बदला अहाँकेँ लेबाक अछि। मात्र व्यक्ति सभ बदलल अछि। चरित्र सभ वैह अछि"।

दिल्लीमे आरुणि विजीलेंस विभागक सूचना-प्रौद्योगिकी शाखामे पदस्थापित भेलाह। एहि विभागकेँ शंटिंग पोस्टिंग मानल जाइत छल। विजीलेंसक एनक्वायरीसँ बाहर निकललाक बादो आरुणि एहि पोस्टिंगके चुनलन्हि, से एहिसँ तँ ईएह सिद्ध होइत अछि, जे आरुणि थाकि गेलाह। पाँच साल कोनमे बैसल रहताह। शशांकक ग्रुप प्रफुल्ल छल।

एम्हर आरुणि अपन विज्ञानक छोड़ल पाठ फेरसँ शुरू कएलन्हि। भरि दिन कम्प्युटर आऽ ओकर तकनीकी विशेषज्ञ सभसँ भिड़ल रहथि। ओहो लोकनि बहुत दिनक बाद एहन अधिकारी देखने छलाह जे भिड़ल अछि, काजसँ। दोसर लोकनि तँ कोहुना टर्म पूर्ण कए भागैत छथि।

ओना देखल जाय तँ ई विभाग बड्ड संवेदनशील छल। आब आरुणिक अपन विभागक सभ कर्मचारीसँ बेश निकटता भऽ गेल छलन्हि। सभक आवेदन समयसँ आगू बढ़ैत छल। सभटा ऑफिसक इक्विपमेंट नव आबय लागल। पहिलुका ऑफिसर सभ तँ समय काटि भागय केर फेरमे रहैत छल आऽ ऑफिसक आवश्यक आवश्यकता सेहो पूर्ण नहि करैत छल।

ऑफिसमे एकटा इक्विपमेन्ट आयल छल, एन्टी करप्शन रोकय लेल। एहिमे स्मगलर सभक फोन टेप करबाक सुविधा छल।

किछु दिन समय व्यतीत होइत रहल।

"मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि"।

"हम आब निश्चिन्त छी"।

"हँ समय आबि गेल अछि। एकटा काज करू स्मग्लरक संग शशांकक संबंधक संबंधमे एकटा न्यूज निकलबा दिऔक अखबारमे। आगाँ सभ चीज तैयार अछि"।

ओम्हर अखबारमे खबरि निकलल, आऽ मंत्रीक जन संपर्क पदाधिकारी जकर काज विभागक खबरिकेँ अखबारसँ काटि कए मंत्री धरि पहुँचायब छल, ओऽ क्लिपिंग मंत्रीजी लग पहुँचाय देलन्हि। समय समीचीन छल कारण विभागीय मंत्रीजी पर ढेर आरोप ओहि समय आयल छलन्हि,संसदक सत्र चलि रहल छल, से ओऽ कोनो तरहक रिस्क नहि लेलन्हि। इंक्वायरीक ऑर्डर दय देलन्हि।

विजिलेंस विभागमे केश आयल। ओकर आंतरिक बैठकी होइत छल, जाहिमे प्रौद्योगिकी विभागकेँ सेहो बजाओल जाइत छल। सभ केशमे मोटा-मोटी प्रौद्योगिकी विभाग अनाधिकार प्रामाण पत्र दए दैत छल। आऽ केश इंक्वायरीक बाद समाप्त भऽ जाइत छल।

मीटिंगक तिथि तय भेल। मीटिंगमे आरुणि विजिलेंस कमेटीक सदस्यक रूपमे शामिल भेलाह।

"शशांक पर कोनो तरहक कोनो आरोप सिद्ध नहि होइत छन्हि। आरुणि अहाँक विभागकेँ टेलीफोन टैपिंगक उपकरण उपलब्ध करबाओल गेल छल। मुदा अपन ऑफिसमे तँ फैक्स मशीनो ६ मास किनाकय राखल रहलाक बाद लगाओल जाइत अछि, तखन ई मशीन एखनो राखले होयत आकि किछु कंवर्शेशन रेकार्डो भेल अछि"।

"श्रीमान। ई मशीन एहि मासक पहिल तिथिकेँ आएल आऽ ओहि तिथिसँ एकर उपयोग शुरू भऽ गेल। एहि केशमे जाहि स्मगलरक नाम आयल अछि, ओकर नाम ओहि सूचीमे अछि, जकर कॉल रेकॉर्ड करबाक आदेश हमरा भेटल छल। शशांकक कंवर्शेशन एहि व्यक्तिसँ नहि केर बराबड़ अछि। आध-आध मिनटक दू टा कंवर्शेशन। दोसर कंवर्शेशन नौ बजे रातिक छी आऽ एहि कंवर्शेशनक बाद ओहि स्मगलरक फोन अपन कर्मचारीकेँ जाइत छैक, आऽ ताहूमे मात्र आध मिनट ओऽ लगबैत अछि"।

" ई कोन तारीखक अछि"।

"पाँच तारीखक"।

" छह तारीखक भोरमे एहि स्मगलरक ओहिठाम रेड भेल छल, आऽ किछु नहि भेटल छल। ई सभ फोनक डिटेल दिअ आरुणि'।

"पहिल कॉलमे शशांक कहैत छथि, जे साढ़े आठ बजे घर पर आबि कए भेंट करू। बड्ड जरूरी गप अछि। दोसर कंवर्शेशनमे ओऽ नौ बजे तमसाइत कहैत छथि, जे नौ बाजि गेल आऽ अहाँ एखन धरि नहि अएलहुँ। एहिमे उत्तर सेहो भेटैत अछि, जे ओऽ स्मगलर शशांकक गेट पर ठाढ़ अछि"।

" तेसर फोनमे की वार्त्तालाप अछि"।

" तेसर फोन ओऽ स्मगलर अपन ऑफिस स्टाफकेँ साढ़े नौ बजे करैत अछि। ओऽ कर्मचारीकेँ आदेश दैत अछि, जे तुरत ऑफिस आऊ, हमहुँ पहुँचैत छी। बस एकर अतिरिक्त किछु नहि। कोनो एवीडेंस नहि भेटि सकल एहि केसमे। कहू तँ हम नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट दए दिअ"।

"आरुणि। की कहैत छी अहाँ। अहाँक विभाग तँ आइ तक कोनो काज नहि कएने छल, मुदा आइ तँ सभटा कड़ी जोड़ि देलहुँ अहाँ। शशांक फोन कएलक जे भेंट करू। दोसर फोन पर ओऽ व्यक्ति ओकर गेट पर ठाढ़ छल। तेसर फोनमे ओकर कर्मचारी ऑफिस ओतेक रातिमे की करए जाइत अछि। रेडक खबड़ि शशांक लीक कएलन्हि। ओऽ कर्मचारी सभटा कागज हटा देलक, आऽ हमर विभागक ऑफिसर भोरमे छुच्छ हाथ घुरि कए आबि गेलाह। आब एकटा फोन आर करू। शशांकक नंबर टेप तँ नहि भऽ सकल छल, मुदा प्रक्रियाक अनुसार ओकर आवाजक सैंपल मैच करबाक चाही। ओऽ फोन उठायत तँ गलत नंबर कहि काटि दियौक"।

"सैह होयत"।

तखने ई प्रक्रिया कएल गेल।

"ई तँ ओपन आऽ शट केस अछि"। विजीलेंस कमेटीक अध्यक्ष महानिदेशककेँ बतओलन्हि। महानिदेशक शशांककेँ बजबओलन्हि आऽ ओकरा दू टा विकल्प देलन्हि।

"शशांक एहि सभ घटनाक बाद अहाँ लग दू टा विकल्प अछि। विभागसँ कंपलसरी सेवा निवृत्ति लेबय पडत अहाँकेँ। नहि तँ इंक्वायरी आगाँ बढ़त"।

शशांक कंपलसरी सेवानिवृत्ति लए लेलन्हि। विभाग छोड़ि कए चलि गेलाह।

" भाइ मणीन्द्र। कोनो फोन-फान नहि"।

"भजार। हम तँ ओहि दिन निश्चिंत भऽ गेल छलहुँ जाहि दिन हमरा बुझबामे आओल, जे अहाँकेँ बच्चाक सभटा गप मोन अछि। काका आऽ अहाँमे कोनो अंतर नहि। मार्ग मात्र दू तरहक रहल। एहि विजयक मार्ग पर अहाँ चली ताहि हेतु, कतेक भरकाबैत छलहुँ अहाँकेँ से मोन अछि ने। मुदा ओहि दिन जखन हमरा अहाँ बच्चाक गप सभ कहए लगलहुँ तहिये निश्चिन्त भऽ गेल छलहुँ हम"।

पढ़ाइक ग्राफ पिताक मोनक संग बनैत-बिगड़ैत रहैत छलन्हि। मुदा घुरि कए पुनः लक्ष्य प्राप्त करैत छलाह। नोकरीमे रहितहु ई घटना एक बेर भेल छल। एकटा सरकारी यात्राक बाद भेल एक्सीडेन्ट, १५ दिन धरि वेंटीलेटर पर,फेर एक साल धरि बैशाखी पर रहलाक बाद, पुनः अपन पैर पर ठाढ़ भऽ गेलाह। मृत्यु पर विजय कएलन्हि।मुदा डेढ़ साल बाद जखन ऑफिस अएलाह तखन लोककेँ विश्वासे नहि भेलैक। मुख पर वैह चिरपरिचित हँसी। लोक सभ तँ ईहो कहैत छल जे ई एक्सीडेंट भेल नहि छल वरन् करबाओल गेल छल। कारण नवलक एक्सीडेंटक तुरत बाद भेल छल ई एक्सीडेंट।



२. ज्योतिकेँwww.poetry.comसँ संपादकक चॉयस अवार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) भेटल छन्हि। हुनकर अंग्रेजी पद्य किछु दिन धरि www.poetrysoup.com केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आऽ हिनकर चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि।

मिथिला पेंटिंगक शिक्षा सुश्री श्वेता झासँ बसेरा इंस्टीच्यूट, जमशेदपुर आऽ ललितकला तूलिका, साकची, जमशेदपुरसँ। नेशनल एशोसिएशन फॉर ब्लाइन्ड, जमशेदपुरमे अवैतनिक रूपेँ पूर्वमे अध्यापन।

ज्योति झा चौधरी, जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी ; शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूल टिस्को साकची गर्ल्स हाई स्कूल, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेज़, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी डबल्यू ए आइ (कॉस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान- लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर झा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा झा, शिवीपट्टी। "मैथिली लिखबाक अभ्यास हम अपन दादी नानी भाई बहिन सभकेँ पत्र लिखबामे कएने छी। बच्चेसँ मैथिलीसँ लगाव रहल अछि। -ज्योति

पांचम दिन :

२९ दिसम्बर १९९०, शनिवार :

आहि भोरे उठैमे ओते उत्साह नहि बुझाइत छल। कारण लागै छल जे टूर आहिये समाप्त भऽ रहल अछि। कलकत्ता लेल अतेक मोन लागल छल आ आहि कलकत्तामे अंतिम दिन छल। सब सामान पाती लऽ बसमे सवार भऽ गेलहुं। इंडियन गार्डेन आर विक्टोरिया मेमोरियल के लग सऽ होइत इंडियन म्यूज़ियम पहुंचि गेलहुं।

इंडियन म्यूज़ियम :

ई भारतक सबसऽ पैघ संग्रहालय अछि।अकर स्थापना २ फरवरी १८१४ ईसवीमे भेल छै। तहन ई एशियाटिक सोसाइटीमे रहै। सन् १८७८ ईसवीमे ई वर्त्तमान स्थान पर मात्र दू टा गैलेरी संगे स्थापित भेल।आब अहि दू मंजिला विशाल भवनमे साइठोटा गैलेरी छै। अकर प्रथम क्यूरेटर नथेनियल वैलिक (Nathaniel Wallich) छलैथ जे डेनमार्क सऽ आयल छलैथ।

अत सबसऽ पहिने रानी विक्टोरियाके बहुत पैघ मूर्त्ति छै।तकर बाद भगवान बुद्ध के विभिन्न रूप महावीर नागराज गणेश कामदेव महिषामर्दिनी दुर्गा पार्वती शिव नटराज इत्यादिक अतिप्राचीन प्रतिमा राखल छल।ई सब मध्ययुगके मूर्त्ति छै। एहेनो मूर्त्ति सब छै जकर विषयमे बेसी ज्ञात नहि भऽ सकल छै जे ई कोन युगक अछि वा ककर अछि। ओत फोटो खिंचनाई मना छल लेकिन कतेक चित्रकार सब ओत नीचा बैसकऽ मूर्त्तिक स्केच उतारि रहल छलैथ। पुछला पर पता चलल जे ओसब कथुपर रिसर्च क रहल छलैथ। अनेको शैलीमे बनल मूर्ति विराजित छल जेनाकि पाल शैली गुप्तोत्तर शैली कलिया शैली आदि। नक्काशी कैल स्तम्भ सेहो राखल छल।

बगलक हॉलमे मुद्राक संग्रह छल।आहत कैशवी पयाल मालवा मथुरा नागकूड़ इक्ष्वाकु कनिष्क कुषाण गुप्त आदिके विभिन्न मुद्रासब राखल छै। उपरक मंजिलमे मिश्र वला कक्षमे दु टा ममी राखल छल।हमसब दू तीन गोटय नियमके विरुद्ध ओकरा छूबो केलहु। अगिला कक्षमे कैओ हजार वर्ष पुरान पक्षीसबके कंकालके सुरक्षित राखल गेल छल।६० करोड़ सऽ लऽ कऽ २०० करोड़ वर्ष पुरान जीव सब जे आब पाथर भऽ गेल छल विशेष तरीका सऽ सुरक्षित राखल गेल छै।अत हाथी ऊंट आदिके कंकाल सुतुरमुर्ग गिलहरी आदिके शरीर के सुरक्षित राखल गेल अछि। अतऽ संरक्षित सामानक विशालता एवम् विविधताक वर्णन एक पन्ना की एक पुस्तक मे केनाइ सम्भव नहि लागैत अछि। ओतय सऽ निकलि हमसब भोजन केलहु आ फेर तारकेश्वर दिस प्रस्थान केलहु। भक्तिभाव के जागृत केलहुतारकेश्वर दिस विदा भऽ गेलहु।रस्ता मे भारतक विपन्नताक दर्शन केलहु बंगालक ग्रामीण इलाकाके रूपमे।

तारकेश्वर :

तारकेश्वर मे शिवलिंगक पूजा होइत अछि।कलकत्तासऽ लगले सेरामपुर लग ई पवित्र स्थान अछि। बहुत श्रद्धालु अत कॉवर लऽ कऽ सेहो आबैत छथि।कहल गेल अछि जे अहि शिवलिंगक खोज पशु सब द्वारा भेल अछि। लोक सबके पता चलल जे गामक सब गाय सब जंगलमे जा एक स्थानपर अपन दूध स्वेच्छा सऽ दऽ आबै छल। तहन ओहि जगहके साफ केलापर पता चलल जे ओतय शिवलिंग विराजमान छल। तहनस ओहि शिवलिंगके पूजा हुअ लागल। तारकेश्वर पहुचिकऽ पंडित सबहक दक्षिणाक प्रति जे लोभ देखलहुँ से मोनके बेसी व्यथित करै बला छल।ईश्वरक प्रतिमाके दर्शन करैलेल दानक शर्त राखऽबला पंडा सबसऽ बहुत दुखित भेलहु। जँ दान मन्दिरके देख-रेखके लेल आवश्यक अछि तऽ भक्तके स्वेच्छा आ श्रद्धा सऽ हुअके चाही। आई बाकी समय यैह सोचैत रहलहु जे धार्मिक रीति-रिवाज़के दाम लगाकऽ धार्मिक आस्थाके बेचपर रोक लगनाइ कतेक आवश्यक अछि। अन्यथा अहि देशके की हैत।

१. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर २. स्व. श्री राजकमल चौधरी

**श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर" (१९५१-)** जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। सम्प्रति-जनकपुरधाम, नेपाल। त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., पी.एच.डी. (मानद)।

<u>हाल:</u> प्रधान सम्पादक: गामघर साप्ताहिक, जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक, आंजुर मासिक, आंगन अर्द्धवार्षिक (प्रकाशक नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी)।

<u>मौलिक कृति:</u> बन्नकोठरी: औनाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर बसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सभक संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्गस), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)।

<u>नेपाली कृति</u>: आजको धनुषा, जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु (आलेख-संग्रह), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु (अनुवाद)।

<u>सम्पादन:</u> मैथिली पद्य संग्रह (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान), लाबाक धान (कविता संग्रह), माथुरजीक "त्रिशुली" खण्डकाव्य (कवि स्व. मथुरानन्द चौधरी "माथुर"), नेपालमे मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोक नृत्य: भाव, भंगिमा एवं स्वरूप (आलेख संग्रह)। गामघर साप्ताहिकक २६ वर्षसँ सम्पादन-प्रकाशन, "अर्चना" साहित्यिक संग्रहक १५ वर्ष धरि सम्पादन-प्रकाशन। "आँजुर" मैथिली मासिकक सम्पादन प्रकाशन, "अंजुली" नेपाली मासिक/ पाक्षिकक सम्पादन प्रकाशन।

<u>अनुवाद:</u> भयो, अब भयो ("नहि आब नहि"क मनु ब्राजाकीद्वारा कयल नेपाली अनुवाद)

<u>सम्मान:</u> नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा पहिल बेर १९९५ ई.मे घोषित ५० हजार टाकाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कारक पहिल प्राप्तकर्ता। प्रधानमंत्रीद्वारा प्रशस्तिपत्र एवं पुरस्कार प्रदान। विद्यापति सेवा संस्थान दरिभङ्गाद्वारा सम्मानित, मैथिली साहित्य परिषद, वीरगंजद्वारा सम्मानित, "आकृति" जनकपुर द्वारा सम्मानित, दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल नेपाल पत्रकार महासंघ धनुषाद्वारा सम्मानित, जिल्ला विकास समिति धनुषा द्वारा दीर्घ पत्रकारिता सेवाक लेल पुरस्कृत एवं सम्मानित, नेपाली मैथिली साहित्य परिषद द्वारा २०५९ सालक अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्वई द्वारा "मिथिला रत्न" द्वारा सम्मानित, शेखर प्रकाशन "पटना" द्वारा "शेखर सम्मान", मधुरिमा नेपाल (काठमाण्डौ) द्वारा २०६३ सालक मधुरिमा सम्मान प्राप्त। काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व।

<u>सामाजिक सेवा</u> : अध्यक्ष-तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुर, अध्यक्ष- जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपाध्यक्ष- मैथिली प्रज्ञा प्रतिष्ठान, जनकपुर, उपकुलपति- मैथिली अकादमी, नेपाल, उपाध्यक्ष- नेपाल मैथिली थाई सांस्कृतिक परिषद, सचिव- दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुर, सदस्य- जिल्ला वाल कल्याण समिति, धनुषा, सदस्य- मैथिली विकास कोष, धनुषा, राष्ट्रीय पार्षद- नेपाल पत्रकार महासंघ, धनुषा।

<u>नेपालमे कोशीक ताण्डव: जल प्रलयक विभत्स दृश्य</u>



जनकपुर। देखिते जेना करेज मुँहमे आबऽ चाहैत अछि। भोक्कासी पाड़ि कानबाक मोन होबऽ लगैत छैक जखन टुटल-फाटल प्लास्टिक, गोनैर, पटिआ किंवा घरायशी धोती-सारीकेँ लपेटिकऽ बनाओल अत्यन्त कमजोर ओत बला छावनीमे बैसल पचीसो हजार लोक अपन सभ किछु गमा टुकुर-टुकुर सरकार आऽ राहतक बाट तकैत अछि। कोशी पुलपर जाइते जेना एकटा झुरझुरी देहमे पैसि जाइत छैक- इएह कोशी नदी आ पुल अछि जे दर्जनौं गामकेँ बर्वाद कऽ वासी सभकेँ विस्थापित बनौलक अछि। मुदा ई की! कोशी तँ सुखल अछि। वालुक ढेरी ओहिना देखाइत। ५६मे सँ लगभग अधिकांश फाटक खुजल। मुदा पानिक ओऽ बेग नहि जे एहि मासमे कोशीमे देखि पड़ैत छल। तखन बुझबामे कोनो भांगठ नहि भेल रहय जे एकर ८०-८५ प्रतिशत पानि कुसहाक टुटलाहा तटबन्धक रस्ते कुसहा, श्रीपुर, हरिपुर, लोकही, वीरपुर, भण्टावारी, कटैया होइत सुपौल, सहर्षा, अररिया मुँहे तवाही मचबैत भागि गेल अछि।



कोशी पूर्वोमे एहिना बाट बदलैत रहल। पूर्णियाँमे बहैत कोशी सुपौलमे कोना आएल। तथ्यांकक अनुसार विगत २५० वर्षमे ई अपन १२ गोट धाराक माध्यमसँ १२० कि.मि.क क्षेत्रमे भ्रमण करैत रहल अछि। ई क्रम पूर्वसँ पछिमक दिश देखल गेल अछि। एहि बेर ई पश्चिमसँ पूर्व दिश बढ़ल अछि। तखन की आशंका करी कोशी फेर एक बेर तवाहीक नव बाटपर बढ़ि गेल अछि।

कहल जाइछ १६ अगस्त २००८ कँ भारतीय अधिकारीकेँ नेपाल दिशसँ पूर्वितटबन्धक खतरासँ अवगत करा देल गेल छल। २३ अप्रैल १९५४ ई.मे भेल नेपाल-भारत कोशी समझौतामे कोशी बराज आऽ दुनू तटबन्धक देखरेख भारत सरकारकेँ करबाक छैक। से कोशी बराजसँ पूर्व चकरघट्टी धरिक ३४ कि.मि.क तटबन्धमध्ये ३२ कि.मि. के सम्भार करबाक अभिभारा रहितो भारतीय पक्ष द्वारा उपेक्षा कएल गेल जकर ई भयंकर परिणाम आएल अछि। तटबन्धक आयु २५ वर्षक मानल गेल अछि। एहनमे लगभग ४८ वर्षक तटबन्ध मरम्मत सम्भारक अपेक्षा तऽ करिते छल। ताहुमे तटबन्ध कमजोर हयबाक प्रमाण एहुसँ लगाओल जाऽ सकैछ जे ९ लाख ५० हजार क्यूसेक पानि छोड़बाक क्षमता कोशी वैरेजक छैक मुदा ओतुक्का प्रविधिक सभक कथन छैक ४ लाखसँ निचे पानिक बहाब रहैक। तखन बान्हकेँ टुटब पूर्णरूपेँ कमजोर बान्ह दिश संकेत करैत अछि।

जेसे, जे हएबाक रहैक से भऽ गेलैक। आब तऽ बचल अछि तँ मात्र तबाही। विहारक वीरपुर, सुपौल, कटैया, भीमनगर आदिक निकटवर्त्ती ठामसँ विस्थापित सभ कोशी वैरेजक पूर्विभाग, तटबन्धक दुनू कात आऽ भारदह धरि पसरल अछि। ई संख्या वीसो हजार भऽ सकैछ। एकरा छानवीन कऽ किछु दिनक बाद भारतीय अधिकारीकँ जिम्मा लगएबाक विचार कएल जाऽ रहल अछि।



ओम्हर भण्टाबारी धरि जाएबला पुल क्षति ग्रस्त भऽ गेल अछि। मात्र पैदल आऽ साइकल यात्री ओत्तऽ जाऽ पाबि रहल अछि। बजारक पश्चिमी कातक सभ पक्की, कच्चीघर पानिमे आधासँ बेसी डुबल अछि। भण्टाबारीसँ आगाँ जाएबला राजमार्ग किछुए दुरक बाद पानिमे डुबि गेल अछि। लोक अनेकौं कष्ट सहि एक ठामसँ दोसर ठाम जाऽ रहल अछि। नाव एकटा मात्र सहारा भऽ सकल अछि।



कोशी वैरेजक बाद बारह कि.मि. पर जाऽ कुसहा लग तटबन्ध टुटल अछि। पहिने असी फीट कहल गेल रहैक, एखन तीन किलोमीटर कहल जाऽ रहल अछि। टुटलाहा तटबन्धक दक्षिणी छोर परसँ खड़ा भऽ देखलापर एकटा पैघ नदीक स्वरूपमे परिवर्तित भऽ चुकल कोशीक ई खतरनाक स्वरूपक वेग एखनो अत्यन्त प्रवल छैक। एहिमे नाविक सभ नावकँ धाराक बहाव दिश दूर धरि लऽ जाऽ गमसँ पूर्वि डुबान दिश मोड़ैत अछि आऽ लगभग डेढ़-दू कि.मि.क यात्रा करैत फँसल लोक सभक विच शुभचिन्तक सभकँ पहुँचबैत अछि। नावक कमि सेहो खूब देखि पड़ल। मोटर बोटक तँ कथे नहि।



राहतक घोषणा सरकार कएलक अछि। अमेरिका कएलक अछि। असगरि उपेन्द्र महतो ५१ लाख टका राहत कोषमे दऽ चुकलाह अछि। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आऽ कतेको मंत्री निरिक्षण कऽ चिकल छथि। सभ गोटे सुनसरीक दर्शनटा कऽ वाढ़िक विभीषिकाक अनुमान लगवैत छथि। एक मात्र उपराष्ट्रपति भारदह अएलाह, कंकालनी क्षेत्रमे राखल राहत केन्द्रक दौरा कएलनि।

काज सप्तरीक प्रशासनिक निकाय सेहो कम नहि कएलक अछि। सप्तरीक प्रमुख जिल्ला अधिकारी जीवछ मिश्र अहोरात्री खटि कऽ राहत आऽ सुरक्षाक प्रबन्ध मिलवितो नाम सुनसरीके मात्र कहलासँ काजमे रमल लोकक हेतु अनसोहांत सन लगैत अछि से कहलनि। सप्तरीक प्र.जि.अ. मिश्रक सक्रियताकेँ भारदहक प्रवीण ठाकुर सेहो उच्च मूल्यांकन करैत हमरा सन्तुष्ट कएलनि जे बाढ़ि प्रभावित सभकेँ हरतरहक मानवीय सेवा करबामे सप्तरीक सम्पूर्ण संघ संस्था प्रतिबद्ध अछि।

विस्थापित सभक विच हमरा पशुचिकित्सक डॉ. इन्द्रकान्त झा भेटलाह। हुनका विभाग एही काजक लेल काठमाण्डूसँ पठौलकनि अछि। पशुचिकित्साक उचित प्रबन्ध देखबाक हेतु डॉ. झाक सक्रियता बढ़ल छनि। इहो काज सप्तरीक पशुसेवा कार्यालय प्रमुख डॉ. काशिनाथ यादवक नेतृत्वमे शिविरसभ लागल अछि। हुनका संग डॉ. चन्द छनि।

पुछलापर एखन कुत्ताक काटल नियमित ५-६ गोट उपचारमे अवैत हयबाक बात डॉ. झा बतबैत छथि। बाढ़िक जे प्रकोप भेल अछि एहिमे निमोनिया, डायरिया, जौण्डीस, आँखि उठब सन रोग बढ़ि रहल अछि आऽ भ्यागुते रोग, चिरचिरे रोग अएबाक पूर्ण संभावना छैक। एकरा लेल पर्याप्त औषधि ओऽ सेवाक व्यवस्था छैक से बात सप्तरीक प्रमुख डॉ. यादव बतबैत छथि।

हम सभ महुशुस करैत छी जे राति एत्तऽ अन्हारे वितैत हयत। जकरा खाए के उपाय नहि ओऽ लालटेन, विजली वत्ती आऽ मोमवत्ती कत्तसँ किनत। सरकार दिशसँ अस्थायी विद्युत आपूर्तिक व्यवस्था नहि छैक, जकर शख्त जरूरी वूझना गेल। राति-विराति चोर उचक्काक खेल बढ़ि सकैछ। रक्षको भक्षक भऽ सकैछ। जवान बेटी, पुतहु ओत्तऽ छैक। ओकर इज्जतक सुरक्षाक प्रश्न छैक। नवजात शिशुक संग वर्षाक पानिमे भिजैत माय सभ छथि। गर्भवती महिला सभ छथि। हुनका सभमे सुरक्षाक उपयुक्त प्रबन्धक अभाव छैक।

माँग तँ बहुतो भऽ रहल छैक। राहत कत्तऽ जाऽ रहल छैक। बड़ मुश्किलसँ एक आधाकिलो चाउर, दालि, चूड़ा, मीठा किंवा चाउचाउ प्राप्त भेने सभ किछु भऽ गेल से संभव नहि। ककरो नीकसँ पन्नी धरि उपलब्ध नहि कराओल जाऽ सकल अछि।

तहिना पीबाक पानिक तेहने अभाव छैक। पूर्वि तटबन्धक १२ कि.मि.क दुनूकात आधा दर्जनसँ बेसी हाथेकल नहि देखि पड़ल। हाहाकार छैक पानिक। वाढ़िक गन्दगीसँ भरल पानि पीबापर मजबूर अछि विस्थापित। सरकारकँ चाहिऐक बोरिंग करा कऽ पाइप द्वारा शिविरधरि पानि पहुँचएबाक जोगार करए। एकरा सेहो प्राथमिकता सूचीमे अगाड़ीए रखबाक चाही।

आब तँ सरकारी आकड़ा आबि गेलैए- १ लाख ७ हजार लोक कोशीक चपेटमे अछि। काज जल्दीए हो तँ नीक।

राहतक जे गति एम्हर अछि बिहारोमे अवस्था नीक नहि। भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह वाढ़ि ग्रस्त क्षेत्रक निरिक्षण कएलाक बाद वाढ़िसँ निपटबाक हेतु एक हजार दश करोड़ नगद आऽ सवा लाख टन अनाज देवाक घोषणा कएलनि अछि। ई एकटा पैघ राहत भेलैक। ओत्तऽ आब काज जोड़सँ आगाँ बढ़त।

नेपालमे माँगलो गेल राहतक पाई पीड़ित लग नहि, कतेको बेर तँ निजी उदर पूर्तिमे लागल हयबाक बात प्रकाशमे आएल अछि। जाइ तरहक विपदा आएल अछि एहिमे सभपक्षकँ एकयबद्ध भऽ एहि राष्ट्रिय विपदासँ देशकँ मुक्त करैक तेहन सक्रियता देखएबाक चाहिऐक।



स्व. राजकमल (मणीन्द्र नारायण चौधरी) (१९२९-१९६७), महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरङ्गी (बङला उपन्यासक हिन्दी रूपान्तर) अत्यन्त प्रसिद्ध। मिथिलांचलक मध्य वर्गक आर्थिक एवं सामाजिक संघर्षमे बाधक सभ तरहक संस्कार पर प्रहार करब हिनक वैशिष्ट्य रहलन्हि अछि। कथा, कविता, उपन्यास सभ विधामे ई नवीन विचार धाराक छाप छोड़ि गेल छथि।

अपराजिता-राजकमल चौधरी (वैदेही, अक्टूबर १९५४ सँ साभार)

हमर अभिन्न मित्र नागदत्त अपन घरवाली कैँ अपराजिता कहैछ। किएक, से कि सोचलो उत्तर एखन धरि बूझऽ मे आयल अछि?

हम धरि हुनका अन्नपूर्णा भौजी कहैत छियनि। जर्दा लेल बड्ड छिछिआयल रही आ ओ खास अवसर पर संकट-मोचन रहथि। ओहुना हमरा मैथिल-बाला सभ मे अन्नपूर्णाक रूप अधिक भेटैत अछि।

मुदा अपराजिता?

धुः! पत्नीक प्रति ई भाव तँ एक विदेशी भाव थिक। भारतीय सँ एकरा कोनो साम्य छैक? मिसियो भरि ने। भारतीया तँ बेचारी लाज, बन्धन, आवरण, नियम ओ उपनियम सँ तेना कऽ जकड़लि रहैछ जे ओ सर्वदा पराजित बनलि रहैछ।

एही सभ मे दहाइत-भसिआइत रही। खिड़की सँ बाहर मिथिलाक श्यामल, सोहागिन, सुहासिन धरती। ट्रेनक खिड़की सँ बाहर देखैत रही।

दिवानाथ धरि मूड़ी निहुड़ौने "गारंटी ऑफ पीस" मे ओझरायल छल। मुक्ती बाबू ट्रेनक हड़ड़-हड़ड़ मे ताल दैत विद्यापतिक पाँती गबैत रहथि, "सखि हे, हमर दुखक नहि ओर"।

नागदत्त अपना लगक मोसाफिर संगेँ जोर-जोर सँ बजैत रहय, "नइँ महाराज...आन देश मे ई हाल नइँ छैक...अही ठाँ रूस मे देखिऔक गऽ। विज्ञानक जोर सँ मनुक्ख नदीक धार कैँ अपन इच्छानुसार मोड़ि देलक अछि"।

इन्टरक एहि डिब्बा मे आनो-आन यात्री सभ अपन-अपन गप्प सभ मे तल्लीन रहथि। एकटा बूढ़ दरोगा साहेब अपन सहगामी कैँ कोनो रोमांचकारी डकैतीक खिस्सा कहैत रहथिन। एकटा सेठ अपन अधवयसू मुनीम कैँ सोना-चानीक तेजी-मन्दीक कारण बुझा रहल छलाह, लगहि मे हुनक पत्नी घोघ तनने बैसलि! ट्रेन समस्तीपुर सँ फूजल। कैप्सटनक डिब्बासँ अन्तिम सिकरेट बहार कऽ दिवानाथ सुनगाबऽ चाहैत रहय...सलाइयो रहैक लगहि मे ...मुदा ओ तँ रहय अपन "गारंटी ऑफ पीस" मे ओझरायल। हमरा हँसी लागल। हम हँसऽ लगलहुँ। मुक्तीबाबू दोसर गीत गाबऽ लगलाह, "मानिनि आब उचित नहि मान"!

हठात् खिड़कीसँ हुलकि दिवानाथ चिचिआयल, "देख, मणि...देख...अपराजिताक ताण्डव"! सभ गोटा हुलकी मारऽ लागल। सभक आँखि विस्मय-विस्फारित!

"गारंटी ऑफ पीस" खतम छल...विद्यापतिक गीत खतम छल। रूसक कथा खतम छल। डकैतीक कथा थम्हि गेल...सोना-चानीक तेजी-मन्दी सेहो बन्द भऽ गेल रहय। सिकरेटक लगातार धुँआ रहि गेल आ रहि गेल अपराजिता!

सरिपहुँ... बागमती, कमला, बलान, गंडक आ खास कऽ कऽ कोसी तँ अपराजिता अछि ने! ककरो सामर्थ नहि जे एकरा पराजित कऽ सकय। सरकार आओत...चलि जायत..मिनिस्टरी बनत आ टूटत, मुदा ई कोसी...ई बागमती...ई कमला आ बलान...अपन एही प्रलयंकारी गति मे गाम कैँ भसिअबैत, हरिअर-हरिअर खेत कैँ उज्जर करैत, माल-जालकैँ नाश करैत, घर-द्वारक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत।

वेद मे नदी कँ मनुक्खक सेविका कहलकैक अछि...मनुक्खक पत्नी कहलकैक अछि...

मुदा,

बहुओ भऽ कऽ कोसी आ बागमती अपराजिता अछि...

अन्नपूर्णा कहाँ?

रेलवी-सड़कक दुहू कात कोसक कोस पसरल अबाध जल-प्रवाह! दुहू क्षितिज कँ छुबैत जलक धार!!

"लगैत अछि, हम सभ ट्रेनपर नहि, मने जहाजपर बैसल होइ। जेना चारू कात विशाल, विकराल, विराट समुद्र हो जे हमर अस्तित्व पर्यन्तकँ डुबा देलक अछि!", बाजल दिवानाथ। मुक्ती टिपलक, 'मणि भाइ, कते गामक तँ कोनो थाहो-पता ने लगैत छैक जे एतऽ कहिओ कोनो गामो रहैक। जतऽ ईंटाक पोखरापाटन हवेली रहैक ततऽ की छैक? महाविशाल मोइन आ कुण्ड! जतऽ खेत आ खरिहान रहैक ओहि ठाँ गण्डकी नंगटे नचैए...खरिहानक नाच नहि, श्मसानक नाच!"

हाथक "ब्लिज" कँ तह दैत एकटा सज्जन बजलाह, "आ बाबू...सरकार तँ पटना आ दिल्लीक सचिवालय मे बिजलीक पंखा आ स्प्रिंगदार सोफाक बीच सूतल अछि। मिथिला वा भोजपुर भसिआइए गेल तँ ओकरा की? कोसी सर्वनाशे करइए तँ ओकरा की? ओ तँ इण्डियाक "फारेन-पालिसी" सोचैत अछि। भीतर सँ भारत खुक्ख भऽ रहल अछि...कोकनि रहल अछि, मुदा ओ यू.एन.ओ.क कुर्सी बचाबक फिकिर मे अपस्याँत अछि"। दरोगाजी कनिएँ उकड़ू भऽ बैसि गेलाह आ कान पाथि हमरा लोकनिक गप्प सुनऽ लगलाह। सेठजी अपन धर्मपत्नी दिस व्यग्र भावेँ ताकि बजलाह, "रधिया की माँ...जरा इलायची तो देना...सर चकरा रहा है"।

दाँत कीचि दिवानाथ गुम्हड़ल- गारंटी ऑफ पीस!! हम सोचलहुँ, हमर देश मे जे "गारंटी ऑफ पीस" दऽ सकैछ से तँ लालकिलाक मुरेड़ा पर खजबा टोपी, करिया अचकन...चुननदार पैजामा पहिरने तिनरंगा छत्ता तनने आराम सँ पड़ल अछि! आ भगवान सँ स्वर्ग मे छथि तँ अबस्से दुनियाँ मे सभ वस्तु ठीक छैक।

यद्यपि देशक ई हालत किएक, से सभ जनैत अछि- हमहूँ..अहूँ...नेता आ जनतो! तइयो ई देश अपन दरिद्रा कँ सोनाक पानि चढ़ाओल डिब्बी मे बन्द कऽ कऽ विदेशक प्रदर्शनीक "शो-केस" मे सजबैत अछि। रीढ़क अपन हाड़ तोड़ि ताजक रूप मे उपस्थित करैत अछि। फाटल-चीटल केथड़ी जोड़ि आ सजा, भटरंग कऽ प्रति पन्द्रह अगस्त कऽ शाही महल सभ पर धर्मचक्र-सज्जित तिरंगा फहरबैत अछि।

गाड़ी ठाढ़ भऽ गेलैक।

पुल रहैक कोनो मने। फेर चुट्टीक चालि मे घुसकनियाँ काटऽ लागल। सभ मोसाफिर खिड़की आ फाटक पर मुड़िआरी देने बाहर हुलकी मारऽ लागल-

गण्डक, बागमती, कमला आ कोसीक भयानक रूप। समुद्रक ज्वारि जकाँ विकराल ढेहु उठैत। लगैक मने सौंसे ट्रेनकँ गीड़ि जायत! लहरिक संगहि-संग कौखन कोनो पुरना नूआक फाटल पाढ़ियुक्त भाग...कौखन काठक सनुकचाक कोनो थौआ भेल भाग...कौखन जानवरक हाड़! घरक ठाठ बहल जा रहल छल...खाट आ चौकी भसिआयल जा रहल छल...इज्जति आ प्रतिष्ठा मिथिलाक नोर मे दहायल जा रहल छल। जीवन भसिआयल जा रहल छल। सीसो-सखुआ-आमक कलमबाग आ बँसबिट्टी डूबि गेल छल।

ऊपर रहैक केवल पीतवसना नागकन्या गण्डकी अपन अति विषाक्त फुफकार छोड़ैत।

मुक्तापुर आबि गेल।

स्टेशनक चारू कात पानिएँ पानि। स्टेशन पर असंख्य गरीब किसान-बोनिहार लहालोट होइत। ककरो एक मुट्ठी अन्न नहि...पाँच हाथ वस्त्र नहि...टाँग पसारि कऽ सूतक स्थान नहि। प्लाटफारम पर आकाशक ठाठ तर असंख्य किसान-परिवार! धीया-पूता भूखेँ चिकरैत...माय ओकरा घोघ तर मुँह नुकओने कनैत। एकटा कोनो कांग्रेसी सज्जन स्टेशन-मास्टर कँ जोर-जोर सँ कहैत रहथिन, "अरे, महाराज...एहि मे सरकारक कोन कसूर? भगवानक लीला छनि। सरकार की जानऽ गेलैक जे एहन विशाल बाढ़ि आबि रहल छैक। ताहू पर रिलीफ कमेटी बनि रहल छैक। अगिला हप्ता मिनिस्टर लोकनिक "टूर प्रोग्राम" छनि। आ अलाबे एकर मुख्यमन्त्री दरभंगा, मुजफ्फरपुर आ सहरसाक कलक्टर कँ तार देबे कयलथिन अछि जे ओ जते चाहथि रिलीफक हेतु खर्च करथि। से नहि आब की करौक?"

आ सरिपहुँ सरकार खर्च करैत रहैक से हम देखलिऐक! एकटा गृहस्थ बाजल, चारिम दिन अन्न भेटल छल...मूड़ पीछू दू सेर...ओकर पहिने तँ मात्र जले टा आधार होइक। आ दू सेर चाउर कक्खन धरि? स्त्रीगणकँ पहिरक कोनो नूआ-फट्टा नइँ। मलेरियाग्रस्त लोक कँ लहालोट पुरिबा आ जाड़ सँ बचबऽक खातिर कम्बल नहि। रेलवे कर्मचारी हाता सँ एकटा ठहुरिओ नइँ काटऽ देनिहार। पूछक तँ बड़ इच्छा छल... मुदा गाड़ी फुजि गेलैक।

"ब्लिज" वला सज्जन बजलाह, "बाबू एखन की देखलिऐक अछि, आगाँ ने चलू...किसनपुर...हायाघाट....मोहम्मदपुर...जोगियार..कमतौल दिस आर प्रलय मचल छैक। एहन कोनो परिवार नहि छैक जकर कोनो समाङ कि कोनो बच्चा कि कोनो माल नहि दहा-भसिआ गेल होइक"।

हायाघाट स्टेशन! सूर्यास्तक समकाल।

डुबैत सूर्यक लालिमा प्रतीचीक जल कैं रक्त सन बनओने। लिधुराह पानि..खुनिआ धार!! मुक्ती बाबू सिकरेट ताकऽ चललाह। दिवानाथ प्लाटफारम पर अपने घर मे शरणार्थी बनल गृहविहीन सँ गप्प कऽ रहल छल। गाड़ीक इंजन मिझा गेल रहैक। लेहरियासराय सँ तार अओतैक तखन ने फुजतैक गाड़ी! हमहूँ उतरलहुँ। देखलिऐक, सौंसे प्लाटफारम पर चुट्टी ससरऽक दौर पर्यन्त नइँ। अँगनइ मे बाँसक पातर सट्टा गाड़ि-गाड़ि ओहि पर पातर पुरान नूआ कि धोती टाँगि कऽ तम्बू सन बनल। एहन-एहन सैकड़ो तम्बू एक पतिआनी सँ ठाढ़। स्त्रीगण सभ लोटे-लोटे स्टेशनक इनार सँ पानि अनैत रहथि आ धीया-पूता टुक-टुक ट्रेन दिस तकैत रहय। पानिक कछेड़ मे एकटा बुढ़िया बाढ़ि मे डूबल बेटाक शोक मे बताहि भेलि चिकरैत रहय। पानिक कछेड़ मे एकटा बुढ़िया बाढ़ि मे डूबल बेटाक शोक मे बताहि भेलि चिकरैत रहय। ओझरायल केश मुँह पर...नूआ-फट्टाक होस नहि...गाबि-गाबि कानय, हे गण्डक मैया...हे कमला मैया। कतऽ गेलइ हम्मर सुगवा, कतऽ गेलइ हमर लाल!

आ ओम्हर दिवानाथ बूढ़ा दरोगा साहेब कैं बुझा रहल छलनि...मनुक्ख जे चाहय से कऽ सकैत अछि। एही ठाँ चीन कैं देखिऔक...ओकर "ह्वांगहो" कोसिओ सँ भयानक रहैक। मुदा लाल क्रान्तिक दू बरखक बाद ओकरा सघन बान्ह सँ जकड़ि देलकैक, आइ ओ ह्वांगहो चीनक वरदान छैक, अभिशाप नहि। आ दिवानाथक आँखिमे लाल चिनगीक तीक्ष्ण प्रकाश आ ज्वाला। भेल जे अमृतपुत्रक एहि ज्वालामे कोसी भस्म भऽ जयतीह। मुदा एक जोड़ा आँखिक चिनगी सँ नहि। लक्ष-लक्ष जोड़ा आँखिक अंगोर सँ। हमरा एकर चतुर्दिक एहन रक्तिम दाहक चिनगीक जाल बूनऽ पड़त।

मुक्तीबाबू अधजरुआ सिकरेट हमरा दिस बढ़ा बजलाह, "मणिबाबू, प्लाटफारमक ओइ भाग तकिऔ तँ कने...कोना छागर-पाठी जकाँ लोक सभ अछि, मालगाड़ी मे कोंचल। हुँ! कोंढ़ उनटि जाइत अछि"।

ट्रेन पार कऽ ओइ पार गेलहुँ। एकटा पूर्ण मालगाड़ी रहैक ठाढ़। डिब्बा मे पुरुष, मौगी, धीआ-पूता, माल-जाल सभ भरल छल। डिब्बे मे चूल्हि सुनगि रहल छल। हाँड़ी सभ चढ़ाओल जा रहल छल। कोसी आ गण्डकी मैया कैं प्रार्थनाक "कोरस" सुनाओल जा रहल छलनि। हाहाकार आ रुदनक स्वर गूँजि रहल छल।

मालगाड़ीक डिब्बा सँ एकटा विद्यार्थी बहरायल...कोर मे चारि-पाँच बरखक कनटिरबी कैं रखने। ओ छौँड़ी बड़ी-बड़ी जोर सँ हिचकैत रहैक। नागदत्त पुछलकैक, "अहा-हा...किऐक औ...की भेलैक अछि...किऐक कनैत अछि"?

ओ नेनिया कैं ठोकैत बाजल, "एकर माय, बाबू साहेब, डूबि गेलैक एही बाढ़ि मे। कनतैक ने तँ..."? सभ गोटा निस्तब्ध भऽ गेल।

युवक बाजल, "विद्यार्थी छी अहाँ लोकनि...तँ मन होइछ अहाँ लोकनि सँ गप्प करी। हम सभ एही स्टेशन सँ तीन मील पर रामपुर गामक बासी छी। आब तँ ओ बस्तिए नइँ रहलैक...। सौंसे गाम भसिया कऽ लऽ गेलैक...ई राक्षसी गण्डकी"।

मारिते रास लोक जमा भऽ गेल, ओकर गप्प सुनऽ लेल। दरोगा साहेब बजलाह, "की सौंसे गाम"?

"हँ औ। हठात राति मे आबि गेलैक बाढ़ि। छन-छन पानि बढ़ैत...कोनो तरहेँ स्त्रीगण लोकनि कैं नाह पर लदलहुँ...माल-जाल हँकओलहुँ...वस्तु-जात, अत्यन्त आवश्यक वस्तु सभ कनहा पर लदलहुँ, पड़यलहुँ, स्टेशनक दिस। कतहु भरि डाँड़...कतहु कच्छाछोप, कतहु चपोदण्ड। हेलैत-डुबैत एतऽ पहुँचलहुँ। कतेक नेना-भुटका डूबल। माल-जालक तँ कथे कोन। भसिआयल ठाठ पर हमरा लोकनि स्त्रीगण सभ कैं बैसा कऽ अनलहुँ एतऽ धरि। अयला पर पता लागल जे एहि कनटिरबीक माय डूबि गेलैक। ई हमर भतीजी थिक। मुदा आब की"? कने काल चुप भऽ गेल ओ। युवकक आँखि पनिआ गेलैक। फेर बाजल,"स्टेशन आबि देखल, ई पहिनहि सँ भरल छल। लगीचक पन्द्रह बीस गामक लोक सभ सँ भरल छल। एहि इलाका मे एकटा ई स्टेशन मात्र छैक ऊँच स्थान। खाली इएह मालगाड़ी रहैक ठाढ़। सभ गोटा एही मे शरण लेल। सम्पूर्ण डिब्बा खाली छल, सभ मे हम सभ भरि गेलहुँ।

दोसर दिन प्लेटफॉर्म पर सेहो पानि आबि गेलैक, तखन लोक सभ बोरा जकाँ एक दोसर पर गेंटल रही। युवक सभ ऊपर छत पर चढ़ि गेलाह, स्त्रीगण आ बूढ़, नेना सभ डिब्बे मे रहलाह।

स्टेशन मास्टर हमरा सभ कैं डेरओलनि, मालगाड़ी खाली कर दो।

अहीं लोकनि कहू से कोना होइतैक? हम सभ कतऽ जाइतहुँ? हमरा सभक संग मे पाइ-कौड़ी नहि छल, घर नहि छल, पहिरऽ लेल वस्त्र नहि छल"। एतेक कहि युवक फेर रुकि गेल। नहुँए सँ बाजल, "हमरा जऽर अछि। जाड़ भऽ रहल अछि, यदि अपने सभक मे एकटा बीड़ी हो तँ दिअऽ"।

मुक्तीबाबू ओकरा सिकरेट देलथिन आ दिवानाथ सलाइ। युवक बाजल, "ओ, ई तँ कैप्सटन अछि"। फेर बड़े तन्मय भऽ सिकरेटक कश खींचऽ लागल। (एलेक्शनक अवसर पर कैथोलिक पादरी सभ सम्पूर्ण तिरू-कोचीन मे मङनी मे सिकरेट आ चाहक पैकेट बँटने छलाह। पैकेट सभ पर लिखल छल, काँग्रेस को वोट दो।) नागदत्त पुछलथिन, "फेर की भेल"?

"फेर की हेतैक"? युवक गाड़ीक कम्पाट सँ ओंगठि कऽ बाजल, "फेर पुलिस आबि-आबि कऽ हमरा सभकेँ तंग करऽ लागल। जकरा संग पाइ-कौड़ी छलैक से पाइ-कौड़ी दऽ कऽ पुलिसक ठोकर सँ बचल रहल। रातिखन कऽ युवती सभ गाड़ीक डिब्बा सँ बिलाय लागलि। मुदा हम सभ मालगाड़ीक डिब्बा कैँ छोड़लहुँ नहि। छोड़ि कऽ हम सभ कतऽ जैतहुँ? दोसरे दिन समस्तीपुर सँ एकटा बड़का इंजिन आयल।

स्टेशन मास्टर बाजल, "तुम लोग गाड़ी खाली कर दो, वरना इंजिन तुम लोगों को लेकर समस्तीपुर चला जाएगा। वहाँ तुम लोगों को जेल हो जायगा, सरकारी गाड़ी पर कब्जा जमाने के जुर्म मे"।

बूढ़ सभ कहलथिन जे नीके होयत, लऽ चलऽ। कम सँ कम भोजनो तँ भेटत जहल मे। मुदा स्त्रीगण कानऽ लगलीह। नेना सभ चीत्कार मारऽ लागल। मैथिल स्त्रीगण जे कहियो गामक बाहर पयर नहि रखलनि तनिका हम जेल कोना जाय दितहुँ। आ तखन हम सभ नारा लगओलहुँ, "मालगाड़ी नहीं जायगा, नहीं जायगा"।

पुलिसक लाठीक मदति सँ ड्राइवर मालगाड़ी मे इंजिन लगओलक। आ एम्हर हम सभ इंजिनक आगाँ आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ, "मालगाड़ी नहीं खुलेगा, नहीं खुलेगा"। पुरुष लोकनि छाती तानि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। स्त्रीगण पड़ि रहलीह। नेना सभ बाँसक फट्ठी मे लाल वस्त्र बान्हि कऽ आगाँ मे ठाढ़ भऽ गेल।

बाँसक फट्ठी मे लाल चेन्ह!

गाड़ी रोकऽक चेन्ह।

अपन अधिकार लेबऽक चेन्ह।

युवकक गर्दनि तनि गेलनि, उत्साह सँ बाँहि फड़कऽ लगलनि, आँखि लाल भऽ गेलनि।

सेठजी अपन स्त्रीक कान मे कहलथिन, रधिया की माँ, सूटकेस पास ले आओ, कुछ हो जा सकता है"।

दरोगा साहेब गुनगुनयलाह, "ठीक कहइ छी"।

युवक कहब जारी रखलनि, "पुलिस तँ पहिने घबड़ा गेल, ड्राइवर इंजिन बन्द कऽ देलक। कतेक हजार लोकक रेड़ा पड़ऽ लागल। पुलिस "लाठी चार्ज" करऽ चाहलक, मुदा हम फरिछा कऽ कहि देलियनि, यदि एकोटा लाठी उठल तँ हम सभ एक-एकटा पुलिस कैँ उठा-उठा कऽ गण्डक मे फैँकि देब। कहू तँ, पन्द्रह-बीस पुलिस के की चलितनि एहि क्रुद्ध जनसमुद्र मे?

आ, पुलिस सँ नाक रगड़ैत रहि गेल, मुदा मालगाड़ी नहि जा सकल। दोसर दिन भोरे नाव पर चाउरक बोरा गेंटने "स्टूडेंट्स-फेडरेशन" आ "नौजवान-संघ"क लोक सभ अयलाह आ ई हम सभ पहिल सहायता पओलहुँ।

आ आब तँ पानि कम भऽ रहल अछि। सरकारोक कुम्भकर्णी निन्न टूटि रहल छनि। ओहो दू-दू सेर चाउर बाँटि गेलाह अछि"। एतेक कहि युवक चुप्प भऽ गेलाह। वातावरण अशान्त छल, सभक मन युवकक दुःखपूर्ण कथा सुनि खिन्न छलैक। एतबे मे स्टेशनक एकटा कर्मचारी आबि कऽ बाजल-

"गाड़ी खुल रही है, डिब्बे मे बैठिए"।

अपन बिना मायक भतीजी कैँ कोरा मे लऽ कऽ युवक प्लेटफॉर्म पर ठाढ़ रहल।

गाड़ी नहुँ-नहुँ चलऽ लागल, तखन ओ दिवानाथक बामा हाथ दबा कऽ बाजल, "मोन राखब बन्धु"! हठात् बूढ़ दरोगा साहेब अपन "सीट" पर सँ उठि अपन ऊनी चद्दरि युवकक कान्ह पर धऽ देलथिन आ फेर अवरुद्ध कंठ सँ कहलथिन, "अहाँ कैँ तँ ज्वर अछि, ई चद्दरि लऽ लिअऽ। आ..."।

गाड़ी तेज भऽ गेल।

फेर तँ ओएह चारू कात अथाह अबाध समुद्र छल आ हिलकोरक घोर गर्जन।

पद्य

विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)2.गुंजनजीक गजल

१. श्री गंगेश गुंजन (राधा तेसर खेप) २. श्रीमति ज्योति झा चौधरी

महाकाव्य- बुद्ध चरित

१. स्व. गोपेशजी २. डॉ पंकज पराशर

१. विनीत उत्पल २. अंकुर झा

1.विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी 2. श्री डॉ. गंगेश गुंजन

१. विस्मृत कवि स्व. रामजी चौधरी (1878-1952)पर शोध-लेख विदेहक पहिल अँकमे ई-प्रकाशित भेल छल।तकर बाद हुनकर पुत्र श्री दुर्गानन्द चौधरी, ग्राम-रुद्रपुर,थाना-अंधरा-ठाढ़ी, जिला-मधुबनी कविजीक अप्रकाशित पाण्डुलिपि विदेह कार्यालयकेँ डाकसँ विदेहमे प्रकाशनार्थ पठओलन्हि अछि। ई गोट-पचासेक पद्य विदेहमे एहि अंकसँ धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भ' रहल अछि।

विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी(1878-1952) जन्म स्थान- ग्राम-रुद्रपुर,थाना-अंधरा-ठाढ़ी,जिला-मधुबनी. मूल-पगुल्बार राजे गोत्र-शाण्डिल्य ।

जेना शंकरदेव असामीक बदला मैथिलीमे रचना रचलन्हि, तहिना कवि रामजी चौधरी मैथिलीक अतिरिक्त ब्रजबुलीमे सेहो रचना रचलन्हि।कवि रामजीक सभ पद्यमे रागक वर्ण अछि, ओहिना जेना विद्यापतिक नेपालसँ प्राप्त पदावलीमे अछि, ई प्रभाव हुंकर बाबा जे गबैय्या छलाहसँ प्रेरित बुझना जाइत अछि।मिथिलाक लोक पंच्देवोपासक छथि मुदा शिवालय सभ गाममे भेटि जायत, से रामजी चौधरी महेश्वानी लिखलन्हि आ' चैत मासक हेतु ठुमरी आ' भोरक भजन (पराती/ प्रभाती) सेहो। जाहि राग सभक वर्णन हुनकर कृतिमे अबैत अछि से अछि:

1. राग रेखता 2 लावणी 3. राग झपताला 4.राग ध्रुपद 5. राग संगीत 6. राग देश 7. राग गौरी 8.तिरहुत 9. भजन विनय 10. भजन भैरवी 11.भजन गजल 12. होली 13.राग श्याम कल्याण 14.कविता 15. डम्फक होली 16.राग कागू काफी 17. राग विहाग 18.गजलक ठुमरी 19. राग पावस चौमासा 20. भजन प्रभाती 21.महेशवाणी आ' 22. भजन कीर्त्तन आदि।

मिथिलाक लोचनक रागतरंगिणीमे किछु राग एहन छल जे मिथिले टामे छल, तकर प्रयोग सेहो कविजी कएलन्हि।

प्रस्तुत अछि हुनकर अप्रकाशित रचनाक धारावाहिक प्रस्तुति:-

विविध भजनावली

१२.

महेशवानी

बम भोला छथि अनमोल कतेक दुखी हम

जाइत देखल करैत अति अनघोल॥

ककरहु देविक दैहिक दुख छनि

ककरहु भौति कलेस

कियो अबै छथि आश अन्न टकाके लेल॥

कतेक बिकल छथि पुत्र दार ले कतेक अनेक कलेस

कतेक अहाँके भजन करै ये परमारथके लेल॥

परसि मणि अहाँ झारी वैसल सवके दुख हरि लेल॥

रामजी किछु कहि न सकैछी अपराधी के लेल॥

१३.

महेशवानी

एहन बड़के खोजि आनलन्हि पारवतीके लेल॥

जिनका घर नहि धन परिजन नहि जाति पातिक झेल,

डमरु बजावथि गिरिपर निसि दिन भूत प्रेतसँ खेल॥

अन्नक खेती किछु नहि राखथि भांग धुथुर अलेल,

भूषण गत्र-गत्रमे लटकट विषधर देखि उर मेल॥

परम बताहक लक्षण सभ छनि अंग भस्म लेपि लेल,

हाथी घोड़ा त्यागि पालकी वोढ़ बरद चढ़ि लेल॥

कहथि रामजीभाग ऊदय अब लेल,

त्रिभुवन पति गौरी पति हेता साजू पूरहर लभे॥

१४.

महेशवाणी

हमरो जीवन व्यर्थ बीति गेल।

कहियो बिल्वपत्र नहि तोड़ल, फूल रोपि नहि भेल।

अक्षत धूप, दीपलै, चानन शंकर पूजि नहि भेल॥

कतेक वासना मनमे करि-करि दिवस रैन बिति गेल।

कवहुँ ध्यान शान्त चित्त भए बम-बम कहियो न भेल॥

सुत बनितादि विषय बस कवहुँ, मन विश्राम न भेल।

चिन्ता करति करति दिन बीतल, अब जर्जर तन भेल॥

कहथि रामजी सकल आश तजि शिव सेबू अलबेल।

शिब बिनु दोसरके हरत दुसहदुःख निश्चय मन करिलेल॥

१५.

महेशवानी

शिवकें सुनै छियन्हि दयाल

दुखियाक कहिया सुनता सवाल।

जय गंग चन्द्र भाल, कंठ मुण्डमाल, भंग ले बेहाल॥

वाम भाग पार्वती बसहा सवार, अंग-अंगमे विषधर लटकल हजार,

भूतनात प्रणत पाल दिगम्बर धार,

भस्म अंग संग बेताल डमरु बघ छाला॥

रामजी दीननपर कखन करब खयाल

शिव बिना हमर के करत प्रतिपाल॥

१६.

महेशवाणी

शिव काटू ने जञ्जाल।

कतेक कहब हम अपन हवाल॥

निसि दिन चैन नहि भूख भेल काल

चिन्ता करति भूलि गेल अहाँक खयाल।

बन्धु वर्ग कुटुम्ब संग धेलाह अनेक भल

केओ न सहाय भेला दुर्दिन प्रवल।

रामजीके आशा एक जँ निगाहनै करब रहब बेकल॥

१७.

महेशवाणी

शिव कहूने बुझाय॥

ककरा कहब हम अपन दुख जाय।।

केओ ने भेटैत छथि अहाँक समुदाय

जे सुनि हेताह तुरत सहाय॥

हित मित बनिता सुत स्वास्थ्य से भाए।

निर्धन देखि भुख लए छपि घुमाए॥

बम्भोला वैद्यनाथ दीनन अपनाय झाड़ीमे बैसि

हीरालालको लुटाय॥

रामजी आशा लगाय कृपा दृष्टि हेरू

नाथ लिय अपनाय॥

इति

सिद्धिरस्तु। शुभञ्चास्तुस्त्र

 **श्री डॉ. गंगेश गुंजन**(१९४२-)।

2.बाढ़िक त्रासदी-पर डॉ. गंगेश गुंजन जीक मैथिली गजल

दु:खे टा चारू कात छै आ जी रहल-ए लोक

ताकैत आसरा कोनो दु:ख पी रहल-ए लोक !

घर-द्वारि दहि गेलैक सब बच्चा टा छै बांचल

रेलवेक कात, बाट-घाट जी रहल-ए लोक !

सांझो भरिक खोराक ने छैक अगिला फसिल धरि

जीबा लए ई लाचार कोना जी रहल-ए लोक !

सबटा गमा क' जान बचा आबि त' गेलय

आब फेकल छुतहर जकां हद जी रहल-ए लोक !

जले पहिरना, बिछाओन जले छैक ओढना

जबकल गन्हाइत पानि-ए खा पी रहल-ए लोक !

सब वर्ष जकां एहू बाढ़ि मे कारप्रदार

रिलीफ नामें अपन झोरी सी रहल किछु लोक !

चलि तं पड़ल-ए जीप-ट्रक-नावक से तामझाम

आब ताही आसरा मे बस जी रहल-ए लोक !

कहि तं गेलाह-ए परसू-ए दस टन बंटत अन्न

एखबार-रेडियो भरोसे जी रहल-ए लोक !

घोखै तं छथि जे देश मे पर्याप्त अछि अनाज

सड़ओ गोदाम मे, उपास जी रहल-ए लोक !

उमेद मे जे आब आओत एन जी ओ कतोक

द' जायत बासि रोटी, वस्त्र, जी रहल-ए लोक !

अछि कठिन केहन समय ई राक्षस जकां अन्हार

किछु भ' रहल अछि तय , तें तं जी रहल-ए लोक !

<u>१. श्री गंगेश गुंजन</u> २.<u>श्रीमति ज्योति झा चौधरी</u>

१. **श्री डॉ. गंगेश गुंजन**(१९४२-)। जन्म स्थान- पिलखबाड़, मधुबनी। एम.ए. (हिन्दी), रेडियो नाटक पर पी.एच.डी.। कवि, कथाकार, नाटककार आ' उपन्यासकार।१९६४-६५ मे पाँच गोटे कवि-लेखक “काल पुरुष”(कालपुरुष अर्थात् आब स्वर्गीय प्रभास कुमार चौधरी, श्री गंगेश गुन्जन, श्री साकेतानन्द, आब स्वर्गीय श्री बालेश्वर तथा गौरीकान्त चौधरीकान्त, आब स्वर्गीय) नामसँ सम्पादित करैत मैथिलीक प्रथम नवलेखनक अनियमितकालीन पत्रिका **“अनामा”**-जकर ई नाम साकेतानन्दजी द्वारा देल गेल छल आऽ बाकी चारू गोटे द्वारा अभिहित भेल छल- छपल छल। ओहि समयमे ई प्रयास ताहि समयक यथास्थितिवादी

मैथिलीमे पैघ दुस्साहस मानल गेलैक। फणीश्वरनाथ "रेणु" जी अनामाक लोकार्पण करैत काल कहलन्हि, "किछु छिनार छौरा सभक ई साहित्यिक प्रयास *अनामा* भावी मैथिली लेखनमे युगचेतनाक जरूरी अनुभवक बाट खोलत आऽ आधुनिक बनाओत"। "किछु छिनार छौरा सभक" रेणुजीक अपन अन्दाज छलन्हि बजबाक, जे हुनकर सन्सर्गमे रहल आऽ सुनने अछि, तकरा एकर व्यञ्जना आऽ रस बूझल हेतैक। ओना "अनामा"क कालपुरुष लोकनि कोनो रूपमे साहित्यिक मान्य मर्यादाक प्रति अवहेलना वा तिरस्कार नहि कएने रहथि। एकाध टिप्पणीमे मैथिलीक पुरानपंथी काव्यरुचिक प्रति कतिपय मुखर आविष्कारक स्वर अवश्य रहैक, जे सभ युगमे नव-पीढ़ीक स्वाभाविक व्यवहार होइछ। आओर जे पुरान पीढ़ीक लेखककेँ प्रिय नहि लगैत छनि आऽ सेहो स्वभाविके। मुदा अनामा केर तीन अंक मात्र निकलि सकलैक। सैह अनाम्मा बादमे "कथादिशा"क नामसँ स्व.श्री प्रभास कुमार चौधरी आऽ श्री गंगेश गुंजन दू गोटेक सम्पादनमे -तकनीकी-व्यवहारिक कारणसँ-छपैत रहल। कथा-दिशाक ऐतिहासिक कथा विशेषांक लोकक मानसमे एखनो ओहिना छन्हि। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आऽ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ भोर (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका-बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आऽ शब्द तैयार है (कविता संग्रह)। प्रस्तुत अछि गुञ्जनजीक *मैगनम ओपस* "राधा" जे मैथिली साहित्यकेँ आबए बला दिनमे प्रेरणा तँ देबे करत सँगहि ई गद्य-पद्य-ब्रजबुली मिश्रित *सभ दुःख सहए बाली*- राधा शंकरदेवक परम्परामे एकटा नव-परम्पराक प्रारम्भ करत, से आशा अछि। पढ़ू पहिल बेर "विदेह"मे गुञ्जनजीक "राधा"क पहिल खेप।-सम्पादक। मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक पढबाक लेल क्लिक करूबुधिबधिया। गुंजनजीक नाटक आइ भोर पढ़बाक लेल क्लिक करू "आइ भोर"।

गुंजनजीक राधा

विचार आ संवेदनाक एहि विदाइ युग भू- मंडलीकरणक बिहाड़िमे राधा-भावपर किछु-किछु मनोद्वेग, बड़ बेचैन कएने रहल।

अनवरत किछु कहबा लेल बाध्य करैत रहल। करहि पड़ल। आब तँ तकरो कतेक दिन भऽ गेलैक। बंद अछि। माने सेमन एखन छोड़ि देने अछि। जे ओकर मर्जी। मुदा स्वतंत्र नहि कए देने अछि। मनुखदेवा सवारे अछि। करीब सए-
सवासए पात कहि चुकल छियैक। माने लिखाएल छैक ।

आइ-काल्हि मैथिलीक महांगन (महा+आंगन) घटना-दुर्घटना सभसँ डगमगाएल-

जगमगाएल अछि। सुस्वागतम!

लोक मानसकें अभिजन-बुद्धि फेर बेदखल कऽ रहल अछि। मजा केर बात ई जे से सब भऽ रहल अछि-
मैथिलीयेक नामपर शहीद बनवाक उपक्रम प्रदर्शन-
विन्याससँ। मिथिला राज्यक मान्यताक आंदोलनसँ लऽ कतोक अन्यान्य लक्ष्याभासकएन.जी.ओ.यी उद्योग मार्गे सेहो।
एखन हमरा एतवे कहवाक छल । से एहन कालमे हम ई विहन्नास लिखवा लेल विवशछी आऽ अहाँकेँ लोक धरि पठयवा लेल राधा क

हि रहल छी। विचारी।



<u>राधा</u> **(चारिम खेप)**

सौख केहन आखेटक ....

अछि विकट की हाल एहि मनक,

कही ककरा कहू की, के बनओ

एहि प्राणक धुकधुकी सन अपन

ठीक हमरे जकां आकुल चित्त

एहिना बहा क' बैसलि सकल सुख

मनोरथ जे भसा बैसलि हो, बिहुंसैत

यमुना-धार मध्य हंसैत सब टा

सभ किछु अर्पित काल मंदिर मे

बनल हो प्राणहीना देह

राखल भूमि पर कंकाल

आंगन मे,

जरैत दुपहरक रौद प्रचण्ड

नुकायल लोक सब समाज घरे घर

आ निस्बद्द सब आंगन

स्वयं रौद-बसात अछि पर्यंत बैसल

नुकायल जे लागि ने जाय कहीं हमरो-लू

चिड़ै-चुनमुन्नी कहय के, माल-जालो

बिन डकरने शान्त होयत

कहां कोनो शब्द आबय कान धरि

एहन मृतक समान एहि चुपचाप मे तं

गाय-गोरुक पाजु लेवाक स्वर सेहो सुनाइत रहितैक

तेहन आलस तेहन छैक ई सभक लेल

जे बनल अछि सब बौक

सौंसे सृष्टिये निःशब्द आ चुपचाप बैसलि,

दुबकि क' कोन अदृश्यक महाबृक्षक

अनन्त छाहरि मे।

केहन ई अछि सभक,

हमरो विडंबना जे सभ

अपनहि गुण आ धर्मक सहि रहल अछि आगि

स्वयं प्रकृतिक ई लीला

जेना धधकैत हो बसात

जे देखल ने जाइत हो ने सूनल जा रहल

सबकिछु स्तब्ध धह-धह करैत सबटा चुपचाप

कहां किछु सुनि पड़ैये,

की भेलय हमरा

भ' त' ने गेलौंहें हमही बहीर ?

सखि-बहिनपा सेहो ने जानि गेल कोन धाम

बिन बिदागरीये चलि जाइ गेलि की सासुर ?

यदि से नहि त'

कोना छी हम, जीवितो छी कि मरि गेलौं

देख' लेल क्यो देलक हुलकियो पर्यंत एकहु बेर

कए दिन बीति गेल, घाट, यमुना कात गेना

बिना हुनके बनल छथि जे ब्रजक प्राण

१२/४/०५

2. ज्योतिकेँwww.poetry.comसँ संपादकक चॉयस अवार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) भेटल छन्हि। हुनकर अंग्रेजी पद्य
छु दिन धरि www.poetrysoup.com केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आऽ
नकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि।

मिथिला पेंटिंगक शिक्षा सुश्री श्वेता झासँ बसेरा इंस्टीट्यूट, जमशेदपुर आऽ ललितकला तूलिका, साकची, जमशेदपुरसँ। नेशनल
ोसिएशन फॉर ब्लाइन्ड, जमशेदपुरमे अवैतनिक रूपेँ पूर्वमे अध्यापन।

ज्योति झा चौधरी, जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी ; शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूल टिस्को साकची गर्ल्स हाई स्कूल, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेज़, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी डबल्यू ए आइ (कॉस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान- लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर झा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा झा, शिवीपट्टी। "मैथिली लिखबाक अभ्यास हम अपन दादी नानी भाई बहिन सभकेँ पत्र लिखबामे कएने छी। बच्चेसँ मैथिलीसँ लगाव रहल अछि। -ज्योति

कोसीक प्रकोप

प्राकृतिक प्रकोप मिथिलामे

देखि के नहि हैत अधीर

देहाइत डूबैत जन जीवन

सरकार बनल अछि बहिर

कहिया सऽ अछि बनल

कोसी नदी बिहारक शोक

पर्यावरणके सतत हनन

कियेक नहि लागल रोक

घमैत हिमनद बढ़ैत जलस्तर

सृष्टिके दिनोदिन बढ़ैत तापमान

पर्यावरण पर गम्भीर चिन्तन आवश्यक

पहिने वर्त्तमान संकट स पाबि निदान

अतेक सालक समय देलाक बाद

फेर रस्ता बदलि लेलक कोसी नदी

अहि महाप्रलय सऽ बचनाइ छल संभव

समय पर सरकारी कोष खुजितै यदि

मज़बूत बान्ह आ प्रवाहक मार्गदर्शन लेल

भूगोलवेत्ता आ अभियंता आगू आबैथ

जलसंचयसऽ सिंचाइक समस्या भगा

जलशक्ति सऽ विद्युत निर्माण करैथ।

बुद्ध चरित-गजेन्द्र ठाकुर



ई पुरातन देश नाम भरत,

राज करथि जतए इक्ष्वाकु वंशज।

एहि वंशक शाक्य कुल राजा शुद्धोधन,

पत्नी माया छलि,

कपिलवस्तुमे राज करथि तखन।

माया देखलन्हि स्वप्न आबि रहल,

एकटा श्वेत हाथी आबि मायाक शरीरमे,

पैसि छल रहल हाथी मुद,

मायाकेँ भए रहल छलन्हि ने कोनो कष्ट,

वरन् लगलन्हि जे आएल अछि मध्य क्यो गर्भ।

गर्भक बात मुदा छल सत्ते,

भेल मोन वनगमनक,

लुम्बिनी जाय रहब, कहल शुद्धोधनकेँ।

दिन बीतल ओतहि लुम्बनीमे एक दिन,

बिना प्रसव-पीड़ाक जन्म देलन्हु पुत्रक,

आकाशसँ शीतल आऽ गर्म पानिक दू टा धार,

कएल अभिषेक बालकक लाल-नील पुष्प कमल,

बरसि आकाशसँ।

यक्षक राजा आऽ दिव्य लोकनिक भेल समागम,

पशु छोड़ल हिंसा पक्षी बाजल मधुरवाणी।

धारक अहंकारक शब्द बनल कलकल,

छोड़ि "मार" आनन्दित छल सकल विश्व,

"मार" रुष्ट आगमसँ बुद्धत्वप्राप्ति करत ई?

(अनुवर्तते)

१. स्व. गोपेशजी २. डॉ पंकज पराशर



स्व. श्री गोपालजी झा "गोपेश" क जन्म मधुबनी जिलाक मेहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि। गोपेशजी बिहार सरकारक राजभाषा विभागसँ सेवानिवृत्त भेल छलाह। गोपेशजी कविता, एकांकी आऽ लघुकथा लिखबामे अभिरुचि छलन्हि। ई विभिन्न विधामे रचन कए मैथिलीक सेवा कएलन्हि। हिनकर रचित चारि गोट कविता संग्रह "सोन दाइक चिट्ठी", "गुम भेल ठाढ़ छी", "एलबम" आऽ "आब कहू मन केहन लगैए" प्रकाशित भेल जाहिमे सोनदाइक चिट्ठी बेश लोकप्रिय भेल। वस्तुस्थितिक यथावत् वर्णन करब हिनक काव्य-रचनाक विशेषता छन्हि। श्री मायानन्द मिश्रजीसँ दूरभाषपर गपक क्रममे ई गप पता चलल जे गोपेशजी नहि रहलाह, फेर देवशंकर नवीन जी सेहो कहलन्हि। हमर पिताक १९९५ ई.मे मृत्युक उपरान्त हमहूँ ढ़ेर रास आन्ही-बिहाड़ि देखैत एक-शहरसँ दोसर शहर बौएलहुँ, बीचमे एकाध बेर गोपेशजी सँ गप्पो भेल, ओऽ ईएह कहथि जे पिताक सिद्धांतकेँ पकड़ने रहब। फेर पटना नगर छोड़लहुँ आऽ आइ गोपेशजीकेँ श्रद्धांजलिक रूपमे स्मरण कए रहल छियन्हि। स्मरण: हमरा सभक डेरापर भागलपुरमे गोपेशजी आऽ हरिमोहन झा एक बेर आयल छलाह। गोपेशजी सनेस घुरैत काल मधुर लेलन्हि आऽ हरिमोहनझा जी कुरथी! हुनकर कवितामे सेहो वस्तुस्थितिक एहि तरहक यथावत वर्णनक आग्रह अछि जे हुनका चरित्रमे रहैत छथि। हरिमोहन झाजीक अन्तिम समयमे प्रायः गोपेशजीकेँ अखबार पढ़िकेँ सुनबैत देखैत छलियन्हि। हरिमोहनझाक १९८४ ई.मेमृत्युक किछु दिनुका बादहिसँ ओऽ शनैः शनैः मैथिली साहित्यक हलचलसँ दूर होमए लगलाह। एहि बीच एकटा साक्षात्कारमे शरदिन्दु चौधरी सेहो हुनकासँ एहि विषयपर पुछबाक कोशिश कएने छलाह मुदा गोपेशजी कहियो ने कन्ट्रोवर्सीमे रहलाह, से ओऽ ई प्रश्न टालि गेल छलाह।

प्रस्तुत अछि गोपेशजीक कविता जे २००६ केर नचिकेताजीक "मध्यम पुरुष एकवचन" जेकाँ उत्तर-आधुनिक अछि, मुदा लिखल गेल २५-३० वर्ष पूर्व। हिनकर प्रस्तुत कविता नवीन कविताक शैलीमे लिखल गेल अछि।

<u>समय रूपी दर्पणमे</u>

समय रूपी दर्पणमे

देखइत छी हम अपन मूह

आऽ करइत छी अनुभव

जे किछु नव नहि होइछ

जनमइ अछि

नित्य अहलभोर

किछु एहन-एहन इच्छा

उठइ अछि मोनमे भावनाक तरङ्ग

जे आइ किछु नव होएत

मुदा सुरुज भगवान छापि दैत छथि

दिनुक माथपर किछु एहन-एहन समाचार

जाहिमे हम अपनाकेँ

अभियोजित नहि कए पबैत छी

दूर-दूर उड़इत गर्दाक पाँखिएँ

पोसा पड़बा जहिना मोट भए जाइत अछि

तहिना हमर भावना-तरंग

अनुभवक सम्बल पाबि मोट भए कए

सिद्ध करैछ जे

नव किछु नहि होइछ

जे किछु हमरा सोझाँ अबैछ

से थिक समयक शिलाखंडपर

खिआएल पुरनके वस्तु, पुरनके विचार,

जे नव होएबाक दम्भ भरैत अछि

आऽ थाकल ठेहिआएल मोनक पीड़ा हरैत अछि

२. डॉ पंकज पराशर

श्री डॉ. पंकज पराशर (१९७६-)। मोहनपुर, बलवाहाट चपराँव कोठी, सहरसा। प्रारम्भिक शिक्षासँ स्नातक धरि गाम आऽ सहरसामे। फेर पटना विश्वविद्यालयसँ एम.ए. हिन्दीमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। जे.एन.यू.,दिल्लीसँ एम.फिल.। जामिया मिलिया इस्लामियासँ टी.वी.पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। मैथिली आऽ हिन्दीक प्रतिष्ठित पत्रिका सभमे कविता, समीक्षा आऽ आलोचनात्मक निबंध प्रकाशित। अंग्रेजीसँ हिन्दीमे क्लॉद लेवी स्ट्रॉस, एबहार्ड फिशर, हकु शाह आ ब्रूस चैटविन आदिक शोध निबन्धक अनुवाद। 'गोवध और अंग्रेज' नामसँ एकटा स्वतंत्र पोथीक अंग्रेजीसँ अनुवाद। जनसत्तामे 'दुनिया मेरे आगे' स्तंभमे लेखन। रघुवीर सहायक साहित्यपर जे.एन.यू.सँ पी.एच.डी.।

पहिया

कतेक दिनसँ घूमि रहल अछि पृथ्वी

दिनसँ राति आऽ रातिसँ भोर करैत अंतरिक्षमे

अनंत जीवन चक्रक छोट-छोट घिरनीकेँ सम्हारैत

आब तँ बाटक हरानीसँ

जानो जियान भऽ गेल हेतैक बतहिया के

आऽ हाल-बेहाल पहिया सबहक

हओ बाबू!

आइयो तोरा सहबक (अ)ज्ञानभूमिपर

जे गड़कि रहल छह मृच्छकटिकम केर पहिया

ओहिपर कतेक पहिया गेल अछि अनंत धरि तकरा

एहि चक्काडुबानी के बेरमे कतेक मोन पाड़बह आब?

तोँ जे सब दिन पहियेक घुमौनीकेँ

बुझैत रहलह गति

आइयो धरि नहि कऽ सकलह

चक्काठेल शक्तिक साक्षात्कार

जाहि रथकेँ निर्विघ्न आगू बढ़एबाक लेल कहाँदन

अपन आँगुरकेँ किल्ली बना कए धुरीमे लगा देने छलखिन कैकेयी

ताहि पहियाक घुमौनी आइयो घुमा रहल छनि रामकेँ

आख्यानसँ वर्तमानक शिलापूजन धरिक रथयात्रामे

हओ बाबू!

पहिया जे धरतीसँ बेशी दिमागमे चलैत अछि

तकरा सबहक हालपर आब कतेक धुनबह कपार!

पितामह भीष्मपर जे पहिया लऽ कए दौड़ल छलाह कृष्ण

जँ कऽ सकह साधंश तँ कहक ताहि पहियाक संदर्भमे-

माधव! ई नहि उचित विचार!

बाबीक मुँहें सुनल बितबा भाइक खिस्साक गाड़ीमे

जोतल मुसबा सब घीचनेँ छल जाहि अद्‌भुत पहियाकेँ

ताहि पहिया सबहक गति

एतेक मंद किएक भऽ गेल छैक आब

जे राधा धरि पहुँचबासँ पहिनहि दऽ दैत छैक जवाब?

बड़दवला गाड़ीक लेल जिनगी भरि पहिया बनौनिहार

हमरा गामक काशी कमार

जीवन भरि नहि पहुँचि सकल कुबेरक दरबार!

हम सोचैत छी आऽ लसकि जाइत छी बेर-बेर

अतीतक दलदलित बाटपर दलमलित हृदयसँ

सभ्यताकेँ घीचैत-घीचैत पहिया आइ जतय धरि पहुँचल अछि

ताहि ठामसँ जँ अखियासैत छी

तँ वएह सब देखाइत छथि टिकासनपर ठाढ़

जे कोनहुना प्राप्त कयलनि सत्ता आ कमेलनि पाइ

पहिया-पहियाक अंतर देखइक जाहक हओ बाबू!

जे ककरो निस्सीम अंतरिक्ष धरि पहुँचल

तँ असंख्य लोकक पहिया

जीवन केर कदबेमे लसकल रहि गेल भरि भरि जिनगी

घरक पहिया केर बहिया बनल हमरा लगैत अछि

जे जीवन केर गाड़ीक पहिया चर्र-मर्र करैत

यात्राक आरोहणे कालमे ढरकऽ लागल अछि

प्रागैतिहासिक जंगलमे अवरोहणार्थ

1. विनीत उत्पल 2. अंकुर झा



१.विनीत उत्पल (१९७८-)। आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगांव आऽ तारापुरमे। तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालयसँ गणितमे बीएससी (आनर्स)। गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आऽ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भऽ सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच कोर्सक छात्र। आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्ली मे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडा मे वरिष्ट उपसंपादक .।

<u>पार्टनर, अहांक मूल की</u>

अहां कऽ मन छथि

कवि मुक्तिबोध

जखन हुनका

कियो नव लोक भेटति छलैन

तऽ पुछथिन

पार्टनर, अहांक पालिटिक्स की

आब तऽ

मुक्तिबोध नहि छथि

मुदा, मिथिला मे हुनकर गप

घर-घर मे

अहां सुनि

सकैत छी

ई गप जखन-तखन

नहि सुनबहि

मुदा, ब्याह-दानक

घटकैति मे

सुनबहि जरूर

पार्टनर, अहांक मूल की

अहांकs एहि गप मे

अंतर किछु

नहि लागत

मुदा, जमीन आ आसमानक

फ़र्क छैक

मुक्तिबोधक गप मे मानसिक आ

वैचारिक स्तर देखबा मे आबैत छल

जखन कि मिथिलाक संस्कार मे

निखटुओ जे छथि

पूर्वजक गुणगान मे

पेटकुनिया धेने भेटताह

एकटा गप

पुछै छी

आब कि

राजतंत्र छैक

जे राजाक बेटा

राजा होइत.

<u>नहि टाइम अपना लेल</u>

नेना मे

गाम-घर मे

सुनैति रहि

नौकरी

नहि करी

तखन तs

एक कान से सुनि

दोसर कान

सs

उड़ा दैत रहि

मुदा,

जखन सs

नौकरी केलहुं अछि

बुझाब मे आबि गेल

नौकरीक भाव

नहि अपन

ठाम अऽ ठिकाना

जतय

कंपनी पठैलक

वहि ठाम ओ ठिकाना

नहि सुतैक टाइम

नहि उठैक लेल टाइम

नहि खाइक लेल टाइम

नहि टाइम अपना लेल

यहि छै नौकरी.

2. अंकुर झा



अंकुर काशी नाथ झा,गाम-कोइलख, जिला-मधुबनी, मिथिलांचल

सरकारी योजना

माथ पर लेने जारैनक पथिया,

घुमि रहल छै, कलमें गाछीये

एकटा बुढ़िया।

सब कहै छै ओ हरजिन छै,

सरकार ओकरा देने संरक्षण छै,

महिला वला सेहो ओकरा आरक्षण छै,

तइयो अभगली के गंजन छै।

सरकार के ओकर जाति पर बहुत छै ध्यान,

ओकरा लेल घर बेनबाक सेहो छै प्रावधान,

अन्न आ कपड़ा में वैह सब छै प्रधान,

तइयो ओ खाइ लेल छै पेरशान।

इंदिरा आवास आ अन्नपूर्णा के योजना एलै,

बुढ़िया के ई सब भेटब सपना भेलै,

नेता सब के अन्न भेटलै, घर बनलै,

सरकार बुझलकै गरीबक कल्याण भेलै।

एक बेर फेर ओ योजना सऽ वंचित रहि गेलै,

पूछलीयै जे ओकरा कियैक नहि भेटलै,

मुखिया जी कहलैन,

जगह कम आ बेसी भीड़ छै,

मुदा सत्त बात तऽ काका कहला,

बेचारी बुढ़िया शरिफ छै॥

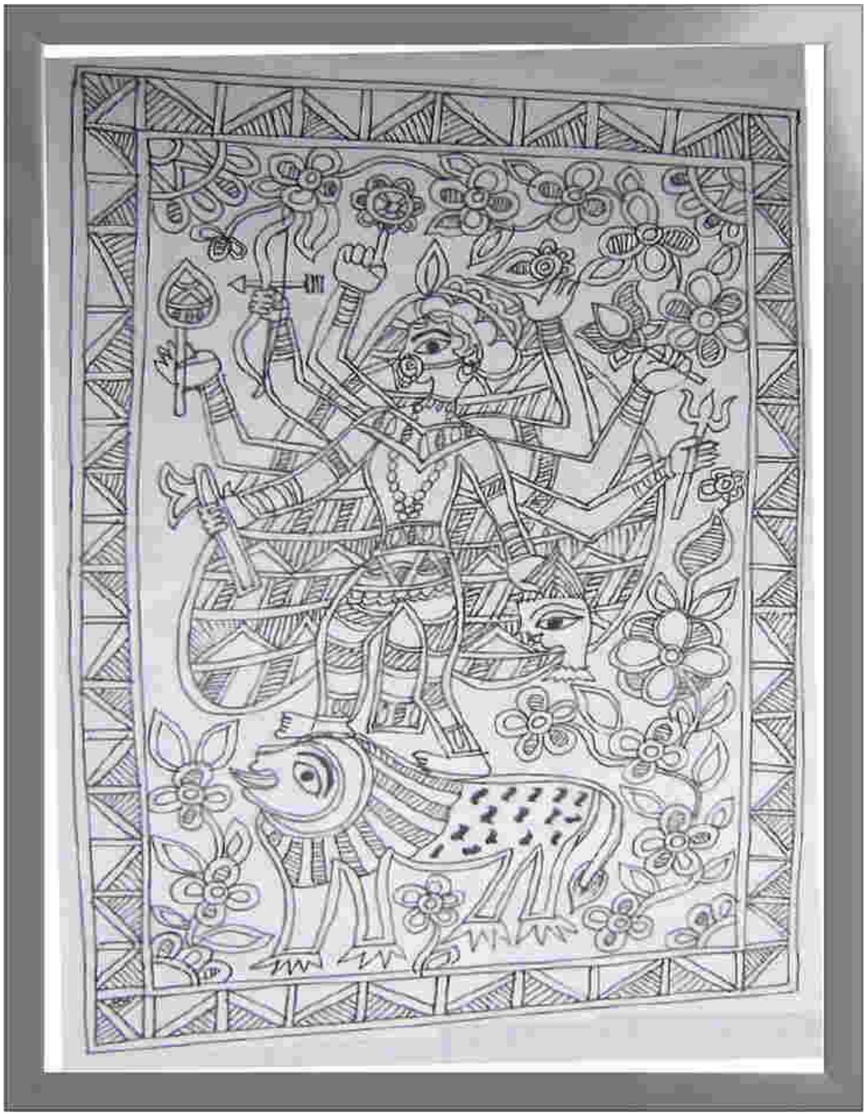
चित्रकार: ज्योति झा चौधरी

ज्योतिकेँwww.poetry.comसँ संपादकक चॉयस अवार्ड (अंग्रेजी पद्यक हेतु) भेटल छन्हि। हुनकर अंग्रेजी पद्य किछु दिन धरि www.poetrysoup.com केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि। ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आऽ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शनी ईलिंग आर्ट ग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रॊडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि।

मिथिला पेंटिंगक शिक्षा सुश्री श्वेता झासँ बसेरा इंस्टीट्यूट, जमशेदपुर आऽ ललितकला तूलिका, साकची, जमशेदपुरसँ। नेशनल एशोसिएशन फॉर ब्लाइन्ड, जमशेदपुरमे अवैतनिक रूपेँ पूर्वमे अध्यापन।

ज्योति झा चौधरी, जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान -बेल्हवार, मधुबनी ; शिक्षा- स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूल़ टिस्को साकची गर्ल्स हाई स्कूल़, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेज़, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी डबल्यू ए आइ (कॉस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान- लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर

झा, ज़मशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा झा, शिवीपट्टी। "मैथिली लिखबाक अभ्यास हम अपन दादी नानी भाई बहिन सभकेँ पत्र लिखबामे कएने छी। बच्चेसँ मैथिलीसँ लगाव रहल अछि। -ज्योति



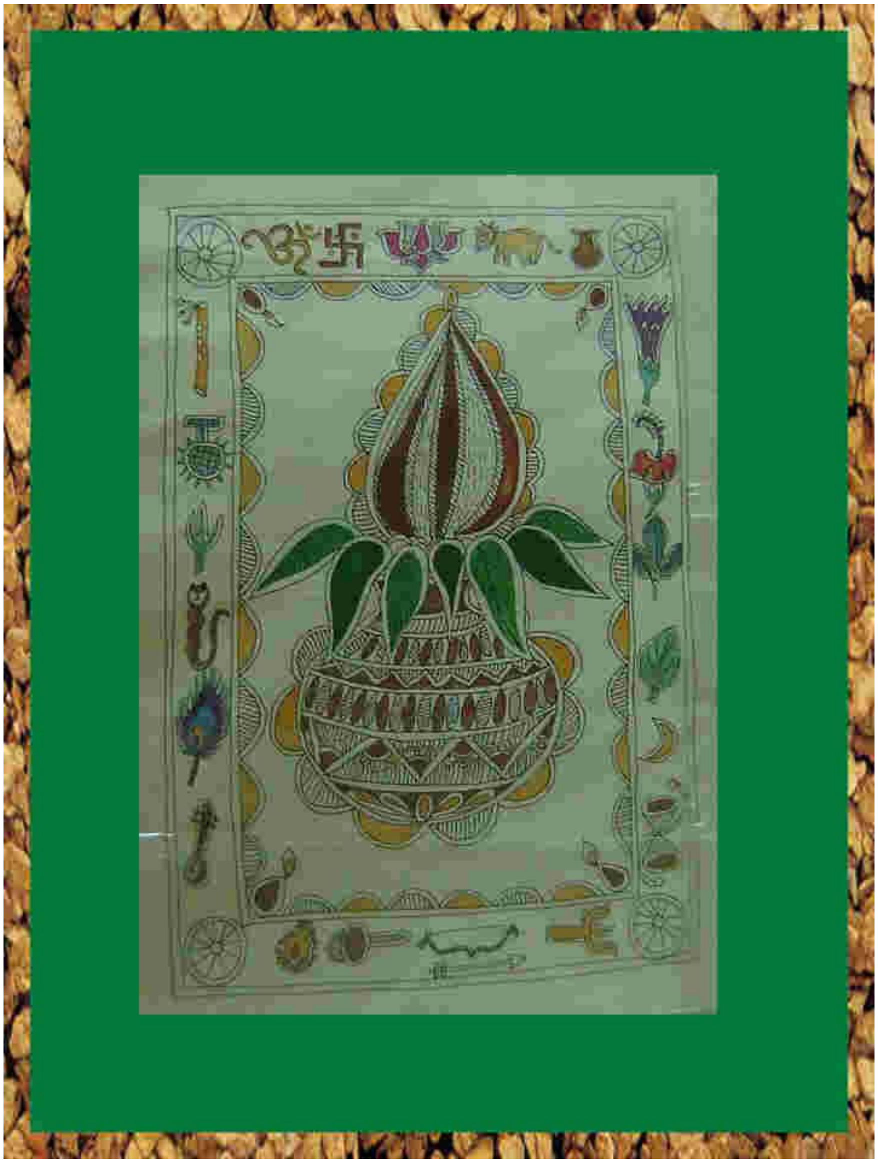


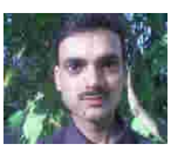
नूतन झा; गाम : बेल्हवार, मधुबनी, बिहार; जन्म तिथि : ५ दिसम्बर १९७६; शिक्षा - बी एस सी, कल्याण कॉलेज, भिलाई; एम एस सी, कॉर्पोरेटिव कॉलेज, जमशेदपुर; फैशन डिजाइनिंग, एन.आइ.एफ.डी., जमशेदपुर।"मैथिली भाषा आ' मैथिल संस्कृतिक प्रति आस्था आ' आदर हम्मर मोनमे बच्चेसँ बसल अछि। इंटरनेट पर तिरहुताक्षर लिपिक उपयोग देखि हम मैथिल संस्कृतिक उज्ज्वल भविष्यक हेतु अति आशान्वित छी।"

दुर्गा पूजा-

आश्विन मासक शुक्लपक्षकऽ प्रातिपदा तिथि सऽ नवरात्रीक आरम्भ होइत अछि। आन प्रदेश सऽ मिथिलांचलमे दुर्गापूजा कनिक भिन्न होइत अछि। मिंथिलांचलमे दुर्गापूजा मूलतथ्य पूजा एवम् आस्तिकताक पाबनि अछि कारण नाच गान ओतेक महत्त्वपूर्ण नहि होइत अछि। तैयो गाम सबमे मेला लागैत अछि आ नाटक- नौटंकी के आयोजन रहैत अछि। प्रतिमा पूजा होइत अछि जकर विसर्जन यात्रा दिन होइत अछि। घरे-घर अहि समय विधि-विधान सऽ पूजा होइत अछि। महाल्याक प्रात कलशकँ स्थापित कैल जाइत अछि आ अहि के चारू कात जौ रोपल जायत अछि जाहिसँ जयन्ती उगैत छै। भगवती दुर्गाक पूजाक ई दस दिन मिथिला प्रदेशके सबसऽ बेसी दिनतक चलैवला पूजा अछि। कतेक लोक नौ दिनका व्रत करैत छथि जाहिमे सुर्यास्तक बाद फलाहार करैत छथि। अष्टमी वा नवमी कऽ कुमारि भोजक प्रथा सेहो प्रचलित अछि। कतेक ठाम नौ दिनक सम्पूर्ण रामायणक पाठ होइत अछि तऽ कतेक लोक दसो दिन दुर्गा सप्तशतीक पाठ करैत छथि। भगवती दुर्गाक निम्नलिखित १०८ नामक प्रतिदिन जाप करनिहार के सर्वथा सिद्धि भेटैत छैन :

1 ॐ सती, २ साध्वी, ३ भवप्रीता, ४ भवानी, ५ भवमोचनी, ६ आर्या, ७ दुर्गा, ८ जया , ९ आद्या, १० त्रिनेत्रा, ११ शूलधारिणी, १२ पिनाकधारिणी, १३ चित्रा, १४ चण्डघण्टा, १५ महातपा: , १६ मन: , १७ बुद्धि: , १८ अहंकारा, १९ चित्तरूपा, २० चिता, २१ चिति:, २२ सर्वमन्त्रमयी, २३ सत्ता, २४ सत्यानन्दस्वरूपिणी, २५ अनन्ता, २६ भाविनी, २७भाव्या, २८ भव्या, २९ अभव्या, ३० सदागति: , ३१ शाम्भवी, ३२ देवमाता, ३३ चिन्ता, ३४रत्नप्रिया, ३५ सर्वविद्या, ३६ दक्षकन्या, ३७ दक्षयज्ञविनाशिनी, ३८ अपर्णा, ३९अनेकवर्णा, ४० पाटला, ४१ पाटलावती, ४२ पट्टाम्बरपरीधाना, ४३ कलमञ्जिनी, ४४ अमेयविक्रमा, ४५ क्रूरा, ४६ सुन्दरी, ४७ सुरसुन्दरी, ४८ वनदुर्गा, ४९ मातंगी, ५०मतंगमनपूजिता, ५१ ब्राह्मी, ५२ माहेश्वरी, ५३ ऐन्द्री, ५४ कौमारी, ५५ वैष्णवी, ५६चामुण्डा, ५७ वाराही, ५८ लक्ष्मी, ५९ पुर्उषाकृतिः , ६० विमला, ६१ उत्कर्षिणी, ६२ ज्ञाना, ६३ क्रिया,६४ नित्या, ६५ बुद्धिदा, ६६ बहुला, ६७ बहुलप्रेमा, ६८ सर्ववाहनवाहना, ६९ निशुम्भशुम्भहननी, ७० महिषासुरमर्दिनी, ७१ मधुकैटभहन्त्री, ७२ चण्डमुण्डविनाशिनी, ७३ सर्वासुरविनाशा, ७४ सर्वदानवघातिनी, ७५ सर्वशास्त्रमयी, ७६ सत्या, ७७ सर्वास्त्रधारिणी, ७८ अनेकशस्त्रहस्ता, ७९ अनेकास्त्रधारिणी, ८० कुमारी, ८१ एककन्या, ८२कैशोरी, ८३ युवती, ८४ यतिः , ८५ अप्रौढ़ा, ८६ प्रौढ़ा, ८७ वृद्धमाता, ८८ बलप्रदा, ८९ महोदरी, ९० मुक्तकेशी, ९१ घोररूपा, ९२ महाबला, ९३ अग्निज्वाला, ९४ रौद्रमुखी, ९५ कालरात्री: , ९६ तपस्विनी, ९७ नारायणी, ९८ भद्रकाली, ९९ विष्णुमाया, १००जलोदरी, १०१ शिवदूती, १०२ कराली, १०३ अनन्ता, १०४ परमेश्वरी, १०५कात्यायनी, १०६ सावित्री, १०७ प्रत्यक्षा, १०८ ब्रह्मवादिनी।





जितमोहन झा घरक नाम "जितू" जन्मतिथि ०२/०३/१९८५ भेल, श्री बैद्यनाथ झा आ श्रीमति शांति देवी कँ सभ स छोट (द्वितीय) सुपूत्र। स्व.रामेश्वर झा पितामह आ स्व.शोभाकांत झा मातृमह। गाम-बनगाँव, सहरसा जिला। एखन मुम्बईमे एक लिमिटेड कंपनी में पद्स्थापित।रुचि : अध्ययन आ लेखन खास कऽ मैथिली ।पसंद : हर मिथिलावासी के पसंद पान, माखन, और माछ हमरो पसंद अछि।

<u>हम लड़की वला छी जनाब ...</u>

आजुक परिवेशमे बेटी सर्वगुण संपन्न आर आत्मनिर्भर अछि ! हुनकर विवाहके जखन बात आबैत छलए ताँ दुनु पक्ष (वर - वधु) क भावनाकैं महत्त्व देवक चाही ! हम तँ कहब आब खाली लड़किये टा नञि लड़को सभ मानसिक रूपसँ अइ बातक लेल तैयार रहथि कि शायद शिक्षा, पसंद - नापसंद, व्यवहार के लऽ कऽ ओहो कुनू लड़की द्वारा नकारल जाऽ सकैत छथि !

ई सुनि कऽ किछ अटपटा जेकाँ जरुर लागल हैत किये कि एहि तरहक भाषा तँ हमेशा लड़का (वर पक्ष) वला करैत छथि ! मुदा आब जमाना बदलि गेल यs ओ समय बीत गेल अछि जै समयमे बेटी वला अपन बेटीक लेल एक योग्य वरक तलाशमे भूख, प्यास तक बिसरि जाइत रहथि ! अपन बेटी के हाथ पियर करब ओ सब अपन जीवनक सभसँ पैघ परीक्षा बुझैत रहथिन !

आब सभ जगहक बाद अपनों मिथिलामे ई सभ परिभाषाकैं एक नया सिरासँ गढल जाऽ रहल अछि ! आब हर माँ-बाबूजी अपन बेटीकैं ससुराल भेजब दोसर क्रम आर बेटीक आकांक्षा हुनकर स्वतंत्र विचार राखएकैं पहिल क्रममे राखए के प्रयास कऽ रहल छथि ! आइ के माता - पिता अपन बेटीक भविष्यसँ आशान्वित छथि, चिंतित नञि ! आइ बेटीपर कुनू तरहक दबाब नञि रहल ! आइ हुनको अपन भावी पति (वर) केहेन होइन ई तय करऽ के अधिकार छनि ! कुनू बात के लेल आइ ओऽ वाध्य नञि छथि ...

ओना आइयो अपन मिथिलामे शादी - विवाह बुजुर्गे तय करैत छथि मुदा रिश्तामे लड़की के दखल एक सुखद बदलाव अछि, अपन समाजमे आइयो लड़का वला होई के झूठा अकड़क चलन पूर्ण रूपसँ नञि मिटल अछि ! कतो नञि कतो अपनेकैं लड़का वला दोहरी मानसिकताक चेहरा लऽ कए घुमैत नजर परले हेता !

पछिले सालक बात छी हम एक परिचितक बेटीक रिश्ताक संदर्भमे बहुत परिवारसँ मिललहुँ ! जै मे किछ अनुभव बहुत कटु रहल ! तिरस्कृत सन् बर्ताव देखलासँ मोन बहुत आहत भेल ! हम सब परिवार के आबैत घरी अपन नाराजगीयो अप्रत्यक्ष रूपसँ व्यक्तो केलियनि ! दुखक बात अछि की ऐहेन शुष्क आर रुखल व्यवहार करएसँ लोक शर्मावैतो नञि छथि ! समाजमे नज़र दौरेलासँ देखब की हर जगह लड़की वालाकैं आत्मसम्मानक साथ खिलवार भऽ रहल अछि !

एक बेर हमर पड़ोसीक बेटीक विवाह तय भेल, वर पक्ष वाला लड़कीयो देखि कऽ गेलथि लड़की हुनको सभकैं पसंद भेलनि। सभ बात विचार सेहो तय भऽ गेलनि। लड़की पक्षकैं लड़का पक्ष वालाक फोनक इंतजार रहनि। दुइ दिनक बाद लड़का वला फ़ोन केलखिन कि हमरा सोचक लेल समय चाही हमर बेटाक लेल पाँच गोट रिश्ता आयल छल। अपने के लेल विचार करब ! आब अहीं कहू, ई सब की भऽ रहल अछि ? एकर मतलब साफ छलए, की लड़कीक भावनाकैं बूझए वाला कियो नञि छथि !

हमरा हँसीक संगे संग दुखो होइत छल जे हर बेर रिश्ता तय करबाक हक सिर्फ लड़के वाला कऽ होइ छनि ! लड़की वालाकैं पूछए वाला कियो नञि छथि ओ एक कठपुतलीक समान कियो हुनका हाँ कहनि तय्योमे खुश नञि कहनि तय नया सिरासँ रिश्ताक तलाशमे लागि जाइत छथि ! हुनकर दुःख दर्द कियो नञि बूझक प्रयास करए छथिन ....

हम तँ कहब ई लड़का वालाक ढकोसला आब बेसी दिन नञि चलत। आइ सभ क्षेत्रमे लड़की मौजूद छथि, सर्वगुण संपन्न छथि, संगे आत्मनिर्भर सेहो छथि ! आब खाली लड़किये नञि लड़कोक मानसिक रूपसँ अइ बातक लेल तैयार रहए पड़तनि की शायद शिक्षा, पसंद - नापसंद, व्यवहारकैं लऽ कऽ ओहो एक लड़की द्वारा नकारल जाऽ सकैत छथि !

विवाहक समय लड़का वाला उर्फ़ बरियातीगन स्व्यंकैं बढ़ि-चढि कऽ देखाबए लेल बहुत तरहक हरकत करैत छथि, भद्दा मजाक, तरह - तरहक फरमाइश, लड़की वालाक द्वारा कएल गेल व्यवस्थापर बेवजह नाराजगी या भोजन पसंद नञि आबय के शिकायत ! लड़की वाला अपन हैसियतक अनुसार या ओइसँ बेसी निक आवभगत आर व्यवस्था राखैत छथि ! मुदा एहि तरहक बर्ताव हुनकर सब कएल गेलपर पानि फेर दैत छनि !

बेटीक विवाह शुभ - शुभ पूर्ण होइन अइ दबाबमे ओऽ चाहियो कऽ किछु नञि बाजि पावैत छथि !

सभ लड़कीक माँ - बाबूजीक फर्ज बनैत छनि कि ओऽ अपन कर्तव्यक प्रति जागरूक रहथि, संगे ओऽ अपन बेटीक भावनाक सम्मान सेहो करथि ! यदि कुनू लड़का वाला रिश्ताक लेल हैं कहैत छथि तँ ओकरा अपन भाग्य मानि कऽ अपन बेटीक हैं या नञि कैं नज़र अंदाज नञि करी, हुनकर राय जरुर ली ....

विवाहक अइ पवित्र बंधनकेँ बेरीसँ मुक्त राखी ! लड़का वाला अहं आर लड़की वाला बेचारगीकेँ बिसरि जाओ ! बेटेक जेकाँ बेटियोक जन्म सुखद अछि। हर माता - पिता गर्वसँ कहू ...... हम लड़की वला छी जनाब..........

बालानां कृते

१.बत्तू -गजेन्द्र ठाकुर

२. देवीजी:-वृक्षारोपण ज्योति झा चौधरी



चित्र: ज्योति झा चौधरी

बत्तू

एकटा बकड़ी छलि। ओकरा एकटा बच्चा भेलैक। मुदा ओऽ छागर मात्र ४ मासक छल आकि दुर्गापूजा आबि गेल। दुर्गापूजामे छागरक बलि देबाक कियो कबुला केने छलाह। से बकड़ीक मालिकक लग आबि छागरक दाम-दीगर केलन्हि। संगमे पाइ नहि अनने छलाह से अगिला दिन पाइ अनबाक आऽ चागर लए जएबाक गप कए चलि गेलाह। बकड़ी ई सभ सुनैत छलि ओऽ अपन बच्चाकेँ कहलन्हि जे भागि जाऊ जंगल दिस नहि तँ ई मलिकबा काल्हि अहाँकेँ बेचि देत आऽ किननहार दुर्गापूजामे अहाँक बलि दए देत। छागर राता-राती जंगल भागि गेल। २-३ साल ओऽ जंगलमे बितेलक, मोट-सोट बत्तू भए गेल, पैघ दाढ़ी आऽ सिंघ भए गेलैक ओकरा। एक दिन घुमैत-घुमैत ओऽ दोसर जंगलमे चलि गेल। ओतए एकटा बाघ छल, बत्तू बाघकेँ देखि कए घबड़ा गेल। बाघ सेहो एहन जानवर नहि देखने छल, से ओऽ अपने डरायल छल। ओऽ पुछलक-

नामी नामी दाढ़ी मोंछ भकुला,

कहू कतएसँ अबैत छी, नञि तँ देव ठकुरा।

बत्तू कहलक-

अर्जुन्नी खेलहुँ गरजुन्नी खेलहुँ, सिंह खेलहुँ सात।

आऽ जहिया दस बाघ नञि होए, तहिया परहुँ ठक दए उपास।

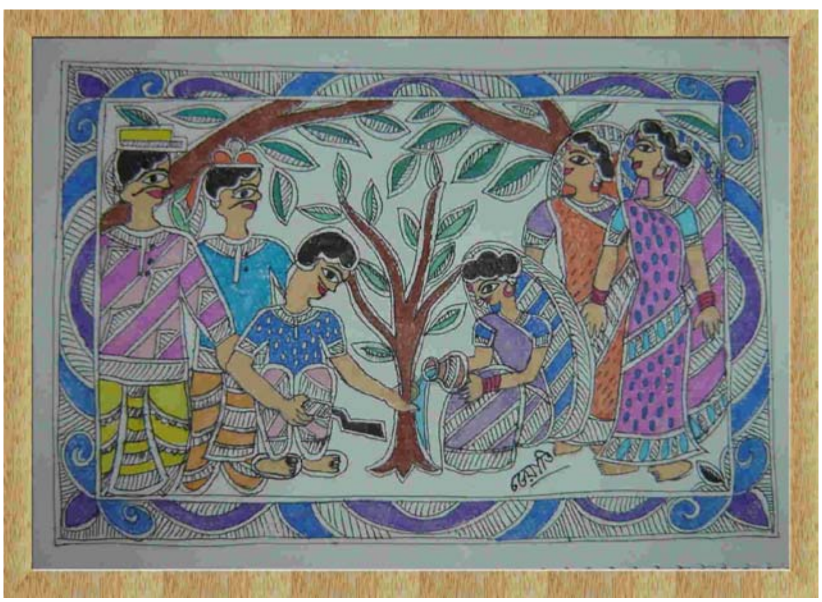
ई सुनि बाघ पड़ाएल। मुदा रस्तामे नढिया सियार ओकरा भेटलैक आऽ कहलकैक जे अहाँ अनेरे डरैत छी। चलू आइ तँ नीक मसुआइ होएत। ओऽ तँ बकड़ीक बच्चा अछि। बाघ डराएल छल से ओऽ सियारक पैरमे पैर बान्हि ओतए जएबा लेल तैयार भए गेल। आब बत्तू जे दुनूकेँ अबैत देखलक तँ बुझि गेल जे ई सियरबाक काज अछि। मुदा ओऽ बुद्धिसँ काज लेलक। कहलक-

"ऐँ हौ, तोरा दू टा बाघ आनए ले कहलियहु आऽ तोँ एकेटा अनलह"।

ई सुनैत देरी बाघ भागल आऽ सियरबा घिसिआइत मरि गेल।

२. देवीजी: ज्योति झा चौधरी

<u>देवीजी :</u>



चित्र: ज्योति झा चौधरी

देवीजी : वृक्षारोपण

बाढ़िक खबरि सऽसब दुखी छल। कतेक ठाम तऽ विद्यालय बन्द भऽ चुकल छल। देवीजीक विद्यालय संयोग सऽ बाढ़ि सऽ बचल रहैन। लेकिन ओतय कैम्प लागल छल।बाढ़ि सऽपीड़ित लोक सबके बचाक ओतऽ आश्रय देल गेल। देवीजीके सेवा भाव फेर सब विद्यार्थी एवम् शिक्षकगणके एकजुट भय सामाजिक कार्य करलेल उत्साहित केलकैन।

सबकियो गौवाँ सबसऽ पाइ, कपड़ा आ भोजन जमाकऽ कैम्पमे बँटलक। दवाईके इंतजाम सेहोकेलक। ओहि कैम्पमे आयल बच्चा सबके लऽ कऽ देवीजी अपन पुरान छात्र सबसंगे पढ़ेनाई सेहो प्रारम्भ केली। तहन अहि विपदाक विषयमे चर्चा उठल तऽ देवीजी सबके पर्यावरणके बढैत तापमानक जानकारी देलखिन।

ओ बतेलखिन, "सब जगह तापमान बढ़ला सऽ हिमनद सब घमि रहल छै। ताहि पर सऽ हिमालय पर विश्वके सबसँ ऊंच आ विशाल हिमनद छै जे गर्मीसऽ घमि रहल छै। ओकर पानि हिमालय सऽ निकल बला नदी सबमे आबि रहल छै। तैं ई विपत्ति आयल अछि। अकरा रोकैलेल नदी सबके किनार मजबूत भेनाई बड आवश्यक छै जाहिलेल सामान्य जनता वृक्षारोपण कऽ सरकारक सहायता कऽ सकैत छैथ।बान्ह बनौनाइ तऽ सरकार द्वारा कैल जायत लेकिन जगह-जगह गाछ लगा हम सब तापमान नियंत्रण आऽ माटिक कटाव पर रोक लगा सकै छी। जौं मेघके लौह मानी तऽ गाछके चुम्बक मानू।गाछ रहला सऽ बरखाक अभाव सेहो दूर होइत अछि।

देवीजीक अहि बात सऽ प्रभावित भऽ सबकियो खाली पड़ल जमीनपर आ सड़कक काते-काते गाछ लगेला आऽ कैम्पक लोकसब तऽ इहो मोन बनेला जे अपन गाम घुरलापर ओ सब ओतौ वृक्षारोपण करता आऽ वृक्षके अनायास काटऽ पर रोक लगौता।

बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

१.प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त्त (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सर्वप्रथम अपन दुनू हाथ देखबाक चाही, आ' ई श्लोक बजबाक चाही।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

करक आगाँ लक्ष्मी बसैत छथि, करक मध्यमे सरस्वती, करक मूलमे ब्रह्मा स्थित छथि। भोरमे ताहि द्वारे करक दर्शन करबाक थीक।

२.संध्या काल दीप लेसबाक काल-

दीपमूले स्थितो ब्रह्मा दीपमध्ये जनार्दनः।

दीपाग्रे शङ्करः प्रोक्तः सन्ध्याज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शङ्कर स्थित छथि। हे संध्याज्योति! अहाँकेँ नमस्कार।

३.सुतबाक काल-

रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।

शयने यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति॥

जे सभ दिन सुतबासँ पहिने राम, कुमारस्वामी, हनूमान्, गरुड़ आऽ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

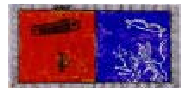
४. नहेबाक समय-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कावेरी धार। एहि जलमे अपन सान्निध्य दिअ।

५.उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

समुद्रक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भारत अछि आऽ ओतुका सन्तति भारती कहबैत छथि।

६.अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा।

पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥

जे सभ दिन अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मण्दोदरी, एहि पाँच साध्वी-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

७.अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः॥

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृपाचार्य आऽ परशुराम- ई सात टा चिरञ्जीवी कहबैत छथि।

८.साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी

उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादान्तस्य धूर्जटेः

जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला॥

९. बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥

मैथिलीक मानक लेखन-शैली

1. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-
   ग्राह्य अग्राह्य
   एखन अखन,अखनि,एखेन,अखनी
   ठाम ठिमा,ठिना,ठमाजकर,तकर जेकर, तेकरतनिकर तिनकर।(वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)अछि
   ऐछ, अहि, ए।
2. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैक्लपिकतया अपनाओल जाय:भ गेल, भय गेल वा भए गेल।जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि।कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।
3. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।
4. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।
5. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत:जैह,सैह,इएह,ओऐह,लैह तथा दैह।
6. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।
7. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

8. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।
9. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।
10. कारकक विभक्त्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:-हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे।'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।
11. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।
12. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।
13. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय(अपवाद-संसार सन्सार नहि), किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।
14. हलंत चिह्न नियमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।
15. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।
16. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रा पर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि।यथा- हिँ केर बदला हिं।
17. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।
18. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।
19. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।
20.

	ग्राह्य	अग्राह्य
1.	होयबला/होबयबला/होमयबला/	हेब'बला, हेम'बलाहोयबाक/होएबाक
2.	आ'/आऽ	आ
3.	क' लेने/कऽ लेने/कए लेने/कय लेने/ल'/लऽ/लय/लए	
4.	भ' गेल/भऽ गेल/भय गेल/भए गेल	
5.	कर' गेलाह/करऽ गेलह/करए गेलाह/करय गेलाह	
6.	लिअ/दिअ	लिय',दिय',लिअ',दिय'
7.	कर' बला/करऽ बला/ करय बला	करै बला/क'र' बला
8.	बला	वला
9.	आङ्ल	आंग्ल
10.	प्रायः	प्रायह
11.	दुःख	दुख
12.	चलि गेल	चल गेल/चैल गेल
13.	देलखिन्ह	देलकिन्ह, देलखिन
14.	देखलन्हि	देखलनि/ देखलैन्ह
15.	छथिन्ह/ छलन्हि	छथिन/ छलैन/ छलनि
16.	चलैत/दैत	चलति/दैति
17.	एखनो	अखनो
18.	बढ़न्हि	बढन्हि

19.	ओ'/ओऽ(सर्वनाम)	ओ
20.	ओ (संयोजक)	ओ'/ओऽ
21.	फाँगि/फाङ्गि	फाइंग/फाइङ
22.	जे	जे'/जेऽ
23.	ना-नुकुर	ना-नुकर
24.	केलन्हि/कएलन्हि/कयलन्हि	
25.	तखन तँ	तखनतँ
26.	जा' रहल/जाय रहल/जाए रहल	
27.	निकलय/निकलए लागल बहराय/बहराए लागल	निकल'/बहरै लागल
28.	ओतय/जतय	जत'/ओत'/जतए/ओतए
29.	की फूडल जे	कि फूडल जे
30.	जे	जे'/जेऽ
31.	कूदि/यादि(मोन पारब)	कूइद/याइद/कूद/याद
32.	इहो/ओहो	
33.	हँसए/हँसय	हँस'
34.	नौ आकि दस/नौ किंवा दस/नौ वा दस	
35.	सासु-ससुर	सास-ससुर
36.	छह/सात	छ/छः/सात
37.	की	की'/कीऽ(दीर्घीकारान्तमे वर्जित)
38.	जबाब	जवाब
39.	करएताह/करयताह	करेताह
40.	दलान दिशि	दलान दिश
41.	गेलाह	गएलाह/गयलाह
42.	किछु आर	किछु और
43.	जाइत छल	जाति छल/जैत छल
44.	पहुँचि/भेटि जाइत छल	पहुँच/भेट जाइत छल
45.	जबान(युवा)/जवान(फौजी)	
46.	लय/लए क'/कऽ	
47.	ल'/लऽ कय/कए	
48.	एखन/अखने	अखन/एखने
49.	अहींकेँ	अहीँकेँ
50.	गहींर	गहीँर
51.	धार पार केनाइ	धार पार केनाय/केनाए
52.	जेकाँ	जेँकाँ/जकाँ
53.	तहिना	तेहिना
54.	एकर	अकर

55. बहिनउ बहनोइ
56. बहिन बहिनि
57. बहिनि-बहिनोइ बहिन-बहनउ
58. नहि/नै
59. करबा'/करबाय/करबाए
60. त'/त ऽ तय/तए
61. भाय भै
62. भाँय
63. यावत जावत
64. माय मै
65. देन्हि/दएन्हि/दयन्हि दन्हि/दैन्हि
66. द'/द ऽ/दए

तका' कए तकाय तकाए

पैरे (on foot) पएरे

ताहुमे ताहूमे

पुत्रीक

बजा कय/ कए

बननाय

कोला

दिनुका दिनका

ततहिसँ

गरबओलन्हि गरबेलन्हि

बालु बालू

चेन्ह चिन्ह(अशुद्ध)

जे जे'

से/ के से'/के'

एखुनका अखनुका

भुमिहार भूमिहार

सुगर सूगर

झठहाक झटहाक

छूबि

करइयो/ओ करैयो

पुबारि पुबाइ

झगड़ा-झाँटी झगड़ा-झाँटि

पएरे-पएरे पैरे-पैरे

खेलएबाक खेलेबाक

खेलाएबाक

लगा'

होए- हो

बुझल बूझल

बूझल (संबोधन अर्थमे)

यैह यएह

तातिल

अयनाय- अयनाइ

निन्न- निन्द

बिनु बिन

जाए जाइ

जाइ(in different sense)-last word of sentence

छत पर आबि जाइ

ने

खेलाए (play) –खेलाइ

शिकाइत- शिकायत

ढप- ढ़प

पढ़- पढ

कनिए/ कनिये कनिञे

राकस- राकश

होए/ होय होइ

अउरदा- औरदा

बुझेलन्हि (different meaning- got understand)

बुझएलन्हि/ बुझयलन्हि (understood himself)

चलि- चल

खधाइ- खधाय

मोन पाड़लखिन्ह मोन पारलखिन्ह

कैक- कएक- कइएक

लग ल'ग

जरेनाइ

जरओनाइ- जरएनाइ/जरयनाइ

होइत

गड़बेलन्हि/ गड़बओलन्हि

चिखैत- (to test)चिखइत

करइयो(willing to do) करैयो

जेकरा- जकरा

तकरा- तेकरा

बिदेसर स्थानेमे/ बिदेसरे स्थानमे

करबयलहुँ/ करबएलहुँ/करबेलहुँ

हारिक (उच्चारण हाइरक)

ओजन वजन

आधे भाग/ आध-भागे

पिचा'/ पिचाय/पिचाए

नञ/ ने

बच्चा नञ (ने) पिचा जाय

तखन ने (नञ) कहैत अछि।

कतेक गोटे/ कताक गोटे

कमाइ- धमाइ कमाई- धमाई

लग ल'ग

खेलाइ (for playing)

छथिन्ह छथिन

होइत होइ

क्यो कियो

केश (hair)

केस (court-case)

बननाइ/ बननाय/ बननाए

जरेनाइ

कुरसी कुर्सी

चरचा चर्चा

कर्म करम

डुबाबय/ डुमाबय

एखुनका/ अखुनका

लय (वाक्यक अतिम शब्द)- ल'

कएलक केलक

गरमी गर्मी

बरदी वर्दी

सुना गेलाह सुना'/सुनाऽ

एनाइ-गेनाइ

तेनाने घेरलन्हि

नञ

डरो ड'रो

कतहु- कहीं

उमरिगर- उमरगर

भरिगर

धोल/धोअल धोएल

गप/गप्प

के के'

दरबज्जा/ दरबजा

ठाम

धरि तक

घूरि लौटि

थोरबेक

बड्ड

तोँ/ तूँ

तोँहि(पद्यमे ग्राह्य)

तोँही/तोँहि

करबाइए करबाइये

एकेटा

करितथि करतथि

पहुँचि पहुँच

राखलन्हि रखलन्हि

लगलन्हि लागलन्हि

सुनि (उच्चारण सुइन)

अछि (उच्चारण अइछ)

एलथि गेलथि

बितओने बितेने

करबओलन्हि/ करेलखिन्ह

करएलन्हि

आकि कि

पहुँचि पहुँच

जराय/ जराए जरा' (आगि लगा)

से से'

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ विभक्तिमे हटा कए)

फेल फैल

फइल(spacious) फैल

होयतन्हि/ होएतन्हि हेतन्हि

हाथ मटिआयब/ हाथ मटियाबय

फेका फेंका

देखाए देखा'

देखाय देखा'

सत्तरि सत्तर

साहेब साहब

16. VIDEHA FOR NON RESIDENT MAITHILS

Marriage dates as per KSD Samskrit University Panchang- 2008-09

november 2008 19,20,23,24,27,28,30, december 2008 1,3 february 2009 26,27, march 2009 4,9,11,12 april 2009 16,17 19,20,22,23,27,29, may 2009 3,4,6,7,8,17,20,21,24,25,31, june 20091,3,4,5,7,8,12,17,21,26,28,29 july 2009 1,2

YEAR 2008-09 FESTIVALS OF MITHILAमिथिलाक पाबनि-तिहार			
Year 2008 ashunyashayan vrat- 19 july अशून्यशयन व्रत	mauna panchmi- 23 july मौना पंचमी	madhusravani vrat samapt 4 august मधुश्रावनी व्रत समाप्त	nag panchmi 6 august नाग पंचमी
raksha bandhan/ sravani poornima 16 august रक्षा बन्धन श्रावनी पूर्णिमा	kajli tritiya 19 august कजली त्रितीया	sri krishna janmashtami- 23 august श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	srikrishnashtami 24 august श्रीकृष्णाष्टमी
kushotpatan/ kushi amavasya 30 august कुशोत्पाटन / कुशी अमावस्या	haritalika vrat 2 september हरितालिका व्रत	chauth chandra 3 september चौठ चन्द्र	Rishi panchmi 4 september ऋषि पंचमी
karma dharma ekadasi vrat 11 september कर्मा धर्मा एकादशी व्रत	indrapooja arambh 12 september इन्द्रपूजा आरम्भ	anant pooja 14 september अनंत पूजा	agastya ardhdanam 15 september अगस्त्य अर्धदानम
pitripaksh aarambh 16 september पितृपक्ष आरम्भ	vishvakarma pooja 17 september विश्वकर्मा पूजा	indr visarjan 18 september इन्द्र विसर्जन	srijimootvahan vrat 22 september श्री जीमूतवाहन व्रत
matrinavmi 23 september मातृनवमी	somaavatee amavasya 29 september सोमावती अमावस्या	kalashsthaapana 30 september कलशस्थापन	vilvabhimantra/ belnauti 5 october विल्वाभिमंत्र/ बेलनौति
patrika pravesh 6 october पत्रिका प्रवेश	mahashtami 7 october महाष्टमी	mahanavmi 8 october महानवमी	vijayadasmi 9 october विजयादशमी
kojagra 14 october कोजगरा	dhanteras 26 october धनतेरस	deepavali- diyabati- shyamapooj a 28 october दीयाबाती/ श्यामापूजा/ दीयाबाती	annakuta-govardhan pooja 29 october अन्नकूट गोवर्धन पूजा

bratridvitiya/ chitragupt pooja 30 october भ्रातृद्वितीया	khashthi kharna 3 november षष्ठी खरना	chhathi sayankalika arghya 4 navamber छठि सायंकालिक अर्घ्य	samaa pooja arambh- chhathi vratak parana 5 november सामा पूजा आरम्भ/ छठि व्रतक पारना
akshaya navmi 7 november अक्षय नवमी	devotthan ekadasi 9 november देवोत्थान एकादशी	vidyapati smriti parv11 november विद्यापति स्मृति पर्व कार्तिक धवल त्रयोदशी	kaartik poornima 13 november कार्तिक पूर्णिमा
shanmasik ravi vratarambh 30 november षाणमासिक रवि व्रतारम्भ	navan parvan 4 dec. नवान पार्वन	vivah panchmi 2 december विवाह पंचमी	
Year 2009 makar sankranti 14 january मकर संक्रांति	narak nivaran chaturdasi 24 january नरक निवारण चतुर्दशी	mauni amavasya 26 january मौनी अमावस्या	sarasvati pooja 31 january सरस्वती पूजा
achla saptmi- 2 february अचला सप्तमी	mahashivratri vrat 23 february महाशिवरात्रि व्रत	janakpur parikrama 26 february जनकपुर परिक्रमा	holika dahan 10 march होलिका दहन
holi/ saptadora11 march होली सप्ताडोरा	varuni yog 24 march वारुणि योग	vasant/ navratrarambh 27 march वसंत नवरात्रारम्भ	basant sooryashashthi/ chhathi vrat 1 april बसंत सूर्यषष्ठी/ छठि व्रत
ramnavmi 3 april रामनवमी	mesh sankranti 14 april मेष संक्रांति	jurisital 15 april जूड़िशीतल	akshya tritiya 27 april अक्षय तृतिया
shanmasik ravivrat samapt 3 may षणमासिक रविव्रत समाप्त	janki navmi 3 may vatsavitri 24 may जानकी नवमी	gangadashhara 2 june गंगादशहरा	somavati amavasya 22 june सोमवती अमावस्या
jagannath rath yatra 24 june जगन्नाथ रथयात्रा	saurath sabha arambh 24 june सौराठ सभा आरम्भ	saurath sabha samapti 2 july सौराठ सभा समाप्ति	harishayan ekadashi 3 july हरिशयन एकादशी

aashadhi guru poornima 7 july आषाढ़ी गुरु पूर्णिमा	

VIDEHA MITHILA TIRBHUKTI TIRHUT---

Mulla Taqia has said that Kameswara Thakur founder of the Oinivara Dynasty of Sugaon, who had been ousted by Illyas was reinstated in Tirhut and Muslim officers were appointed for the propagation of Muslim Law.

Firuz Tughlaq's visited Tirhut many times. Kamesvara Thakura (A .D 1324-53)

Of Khauare Jagatpur mula and was of Kasyapagotra. But Jayapati's son Hitgu and his son Oin Thakur, an ancestor of Kamesvara had procured Oini village from some Kshatriya ruler. Since than his mulagrama became 'Dinivara'. He had six brothers.' He made over the kingdom to his son Bhogisvara. Thakura dynasty, or Sugaon Dynasty of Kamesvara modern Sugarma, P. O. Rajnagar, district-Madhubani. The family name of 'Oinivara' is after the name of its - Bijipurusha.

Oin Thakur was the great-grand-father of Kamesvara Thakur, is said to have established himself in Oini village with the help of

Nanyadeva's descendants. Bhogisvara Thakura (A.D.1353-70)-Kamesvara did not like to shoulder the burden of a reign. He made over the kingdom to his son Bhogisvara Thakura after that Ganesha Raya who was, however, murdered by Arjuna Raya, Kumara Ratnakara and others. Though he ruled for a very short period due to his intelligence became one of the fomous king.

Devasimhadeva lived before the year 1410 A.D. assumed the title (Viruda) `Garudanarayana' .Under his patronage Vidyapati Wrote Bhuparikrama which was later on, incorporated in Purushapariksha written for his son Sivasimha.

Sridatta compiled the Ekdgnidanapaddhati and Harihara grandfather of Murari, was his Chief Judge. Vidyapati dedicated some of his poems also to him. Devasimha married Hasini Devi daughter of Mahamahopadhyaya Ramesvara of Jalayamula and had two sons - Sivasimha and Padmasimha from her.

ShivSimha ascended throne after his father's death in A. D. 1412-13 at the age of 50. By this time the poet Vidyapati had become much more familar and intimate with the king who recognised the poet's greatness and granted him his native village of Bisphi on the occasion of his being installed the ruler of Mithila and changed his capital from Devakuli to Gajarathapuras.He even struck coins in his name, specimens of which were found from a village called Pipra in the Champaran District. He is also said to have erected a Masoleum known as Mamoon Bhanja at Jaruha, near Hajipur.

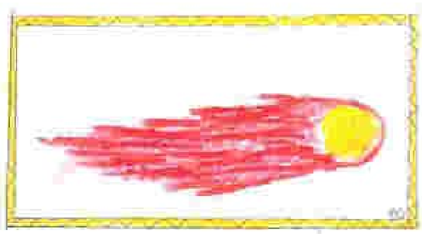
He faught against the Mohammadans but it is said that he was defeated, arrested and brought to Delhi. Vidyapati showed his poetic genius and obtained his release. Lakhimadevi (A-D. 1412-16) queen Lakhima fled with the royal family, to take shelter in village Rajabanauli in Saptari Parganna (near modern Janakapur in Nepal Kingdom). She waited for twelve years in the hope of meeting or knowing anything of her consort. She e laid down her life as a sati. After Sivasimha's death his first wife Maharani Padmavati Mahadevi ruled for about one year six months, and after that Lakhima Mahadevi ruled for six years and after her reign, Padmasimha came to the throne.He died only after a year and his wife Visvasa Devi took the management of the state reigned for 12 years with great success.

The collateral branch of Harismhadeva assumed power. Dhirasimha began to rule though Narasimha lived on to that year. Lakshminathadeva, Kamsa narayana, came to the throne after the demise of Ramabhadradeva. a very great patron of poetry written and composed in Maithili language, assumed the title of Rttpanarayana. Sikandar Lodi who marched into Tirhut defeated the Tirhut king.

But after some time the Bengal Ruler ended the illustrious Oinivara Dynasty.



Jyoti Jha Chaudhary, Date of Birth: December 30 1978,Place of Birth- Belhvar (Madhubani District), Education: Swami Vivekananda Middle School, Tisco Sakchi Girls High School, Mrs KMPM Inter College, IGNOU, ICWAI (COST ACCOUNTANCY); Residence- LONDON, UK; Father- Sh. Shubhankar Jha, Jamshedpur; Mother- Smt. Sudha Jha- Shivipatti. Jyoti received editor's choice award from www.poetry.com and her poems were featured in front page of www.poetrysoup.com for some period.She learnt Mithila Painting under Ms. Shveta Jha, Basera Institute, Jamshedpur and Fine Arts from Toolika, Sakchi, Jamshedpur (India). She had been honorary teacher at National Association For Blind, Jamshedpur (India). Her Mithila Paintings have been displayed by Ealing Art Group at Ealing Broadway, London.



SahasraBarhani:The Comet

The reason of the fight was head of a pig. One more story about that old man's throwing ability was famous. He was so perfect in aiming and throwing stick to the aim that all monkeys ran away from the mango orchard out of fear. See the new generation. Can anyone through the stick as high as the top of the Jamun tree? All wrestling spots are used for growing crops so how can youngsters build their muscles.

Once, Burhiya didi had visited house of Nand with her son for employment. The lai of Barh cooked by Burhiya didi can be tasted only when Burhiya didi was visiting Patna or the village.

When powers of Zemindars were seized the trend of doing job especially the government job was in vogue and so getting job was very tough too.

The Thakurs belonging to the barber community often complained that Nand had helped every community to get government job except the Thakurs of barber community. Everyone got job but son of the Burhiya didi. The mentality of not doing job was changed too. Otherwise Gulab jha of eastern side of the village used to say that 'Naukari' (job) means 'nai kari' (not to be done), and 'vetan' (salary) means without body or 'tankha'(salary) means eat your body.

Burhiya didi had myriad stories about well, pond, ditch, orchards and quarrels for those things. Among such circumstances of sharing stories and views Nand's children started growing.

Nand had never kept his children disconnected from his native village. He used to visit his village with family at least thrice a year- in the summer vacation, in Holi and in Deshera. Children used to visit Burhiya didi's house to taste the mangoes of that village. They used to walk recklessly on foot everywhere. The experience of wandering frivolously on the sands of the river of Kamala or in the mango orchards was wondrous. The picnic with menu of rice and fish curry in the summer nights in mango orchard, peeling mangoes with clam shells, 'ti ti, who is called lal chadi'- playing satghariya, sucking smoke by burning lotus stems, experiencing sweet lips after eating mango with edible lime were truly indelible experiences and are not possible to be achieved by children if they didn't visit village. Nand had once told his son-in-law that he would not return to Shar in his next seven births.

During the flood of Patna in 1975 Nand was shifted to the north bank of the Ganges in order to work in Ganga Pul Pariyojana, a project work of building barrages. Nand was leading a happy family life with two sons and one daughter. Who had ever predicted that the year 1975 would destroy Nand's happy family?

The abridgement of Aaruni's story was that at the time of his birth his father was told that it was a daughter and that communication gap came to an end one day before the Chhathihar when his father came to know that he was a boy. The whole misunderstanding proved the fact that the fact was true the way someone knew that till the real truth was known to him. The vivid aspects of truth which is not untrue had efficacy in growth of Aaruni. Baa died before birth of Aaruni. Whenever Baa was recalled by people Aaruni used to listen to those conversations eagerly. In this way Baa had become a part of his life. Baa was not present physically but she was alive in memories of family members.

The connection between Aaruni's story and Nand's story was not found earlier but as days passed Aaruni started showing his talents. It is an inevitable quality of human behaviour to compare and discuss similarity and disparity between two things. Many people spend their entire life in doing such analysis. Characters of Aaruni and Nand seemed to be similar somehow. In spite of outer personality and so called difference in thoughts the inner personality was some how same in both characters. At least it appeared so.

Aaruni was also taken care of in the same manner an Indian middle class baby should be brought up. Aaruni's parents especially his father was keen enough to find talents in Aaruni just like a normal parent who always enjoy discovering skills of his child.

Aaruni used to have many nightmares. He was having both good and bad dreams but bad dreams were more often happening. He was trying to get rid of those. He used to start sweating in midnight and when he got up he found his parents fanning him. He had a keen anxiety to know who was born first. If God had made everything then who had made the God?

He used to be concerned with such philosophic thoughts very seriously. He used to leap on the roof of his house in the well shaped nature in his dreams. Then he used to go unwillingly along the edge of roof like side of a pond. Again he wished to go away from the edge towards the centre but the well shaped nature's gravity pulled him towards it and he fell down. Suddenly he used to wake up and then he was surrounded by both good and bad thoughts. He used to be happy that it was not a reality but at the same time he used to be worried suspecting the repetition of the nightmare. Aaruni started researching about the circumstances when he was having such nightmares. He used to think that he was awake till 9 p.m., he was also awake till 10 p.m., so when did he go to sleep? But he alleviated his worries by considering the fact that if he could know when he slept he couldn't sleep at all. His name is changed many times. He also read many mythological books for that. Then his education started. He wrote Ganapati's ankush and then reciting the sacred lined dedicated to the goddess Parvati and the god Shiva.

Aaruni used to laugh after chanting that mantra. His pronunciation problem was also solved. While learning numbers he used to utter in same rhythm but jumping from ten to nineteen and then from twenty to twenty nine. Nand's younger son Aaruni was according to his expectations from the very beginning. There was some reason behind that. Nand was teaching him writing one to hundred. First he taught him one to ten and when started eleven he thought that it could be too much pressure for that little boy. But that boy learned eleven to twenty and twenty one to thirty as he felt that it was of the same trend as one to ten. When he discussed that with his father his father challenged him to write up to one hundred. When that boy showed him that correctly then they discussed how to write numbers in words. Nand gave special attention to these four numbers gyarah (eleven), ekkis (twenty-one), unasi (seventy-nine) and navasi (eighty-nine). When mother inspected to know the progress of last half an hour then she came to

know that lesson was completed for that day. Father was pleased a lot and mother discussed that fact to very few people being conscious about his son's wellness. Those instances had made the image of the boy as a perfectionist in the eyes of the father.

Aaruni was addicted to recall his past- the year in which incidents happened, how to remember these years. What he did in his childhood, life story of his parents and other elder people. It seemed that he was very worried how people could do work without his consent. In other words the world should have stopped working when Aaruni was sleeping. He was able to remember only four incidents- like watching 'Bobby' movie in theatre, going for photo shoot of long locks with parents before first hair cut ceremony, throwing the bunch of all keys into a ditch as a reaction of being neglected by his mother, any gathering on some occasion in village etc. Aaruni had concluded after thinking all these things that he remembered everything after 1976 when he was 5-6 years old. His mother gave him habit of reading news paper from that age. Nand recovered a diary of Aaruni in which he had recorded all events from his memory chronologically just like a historian.

I, Aaruni, considers the year of 1976 as a turning point of my life. Because my life before that appeared as a few events without any hints of sequences what happened first and what after that. Sometimes I suspect that it is memory of my previous birth.

Year 1976, I with my family and elder siblings was living in colony of workers of the Ganges Bridge Project in Hajipur situated at the northern side of the river. My father is an engineer but he is also a homeopathy doctor having M.D. degree with gold medallist. And this is a kind of his hobby. Residents of the colony collect money to buy homeopathic medicines. My father and a few people go to Kanpur to buy medicines. The drawing room of our government quarter with one almirah, one table and two chairs is dedicated to medicine practice. My small table is also there where I used to read the 'Aryawart' newpaper costing 30 paise to my mother. How much I remember is that this colony had two parts, it was surrounded by boundary wall, there was a wall between these colonies too that used to divide this colony in two parts- residential area and warehouse. The area of warehouse used to be filled with scattered iron rods, weighting machine, trucks and a tree. The weighting machine was too big to be effected by me when I was climbing on it. Rather the weight indicator didn't move when I stood on that. I was told that the machine was made to weight heavy things. The weight of 15 Kilograms of 5 years old boy couldn't be measured by this machine.

There were one big and one small play grounds in the residential area of this Ganga Bridge Colony. A big water storage tank and a pump house were also situated between these two fields. A huge thick pipe was linked to the pump house for water supply. I still remember it clearly that the pipe was open and I had peeped once into it but after that I was scared knowing the danger of falling down into it. That pipe used to be covered by one jute bag, usually used for storing grains. There was also a government food shop in the north corner of the bigger play ground. In the west of that shop a temple and Hanuman's statue were built but the work was not completed because there was problem in fixing Hunuman's nose. Nose of the God Hanuman was not fixed correctly either because of wrong proportion of building material or anybody's mischiefs. But the work was completed after some days. Aarati was started on every Tuesday. The spirituality was spread in whole colony. People's ardour of worshipping in that temple was diminished as time passed just like every social organisations. All plans related with that religious organisation remained merely in papers couldn't be implemented.

I had started going to a school away from the colony. My elder sister and brother were also reading in the same school. One day I quarrelled with one of my classmates. We both have slate-boards and we both started using it as a weapon. Had I hit his head with the slate then he might start bleeding so I used it as a defensive weapon. But he belonged to different group so.....thump.......and blood came out from my head. Teacher took me to the principal's room. I still remember the smell of the cotton soaked in dettol or savlon. I was not needed to wait for evening and closing of the school day after first aid treatment. I was sent home with my elder

sister on an ordinary rickshaw without waiting for the school rickshaw that had a banner of notice "Be careful, school kids are here". I asked my sister meaning of that phrase. I was of the opinion that it meant all kids on that rickshaw are careful. That boy didn't agree with me and started quarrel with me. Sister replied that this was to alert other drivers so that they didn't hit the rickshaw.

I was still dissatisfied and asked, "But why?"

I was growing with such eagerness and queries. During that phase of growing up sometimes maa used to say, "I was saying that when he would grow up and when he grew up he made me more worried."

I and my siblings used to go to the school established in the name of a Christian Saint. After being injured by slate board my father called a meeting of officers of the colony. It was found that the premise of the centre of public distribution of ration between the play ground and the northern boundary wall of the colony was too big for that purpose. Apart from that, the licence of that centre was also lapsed so the officers had decided to start their school in that premise of three or four rooms having asbestos roof. A committee of not more than four people was made and a few teachers were employed. An invitation to the Gandak Colony situated nearby was sent to send their kids to that school after six months. Name of the school was painted on the outer side of the northern wall which faded after some time. But the fame of that school kept on increasing day by day. Whenever a new guardian was requesting teachers for getting admission of his kid teachers used to suggest him to apply for one or two years junior class to that kid's present class. They used to present standard of their school distinguished and superior to other schools. Being insisted by parents they used to call me and ask the question that the current applicant was unable to answer and after getting correct answer from me they used to give a pride smile to the parent. In short I was the smartest boy in my school before the student from that village came. No one was as able as I was. I had great interest for studies which was lost later on. Once I was suffering from high fever on the day of exam. I was able to write the paper only when question paper and answer sheets were sent to my home. The school was very small but people of the colony were participating in each of the event with interest whether it was cultural program or sports events. In race of running to some distance by making team of two students and tying one legs together else becoming a three footed creature and solving the maths problem written on the black board on the other end and then returning back to the starting point was a real test of mental as well as physical ability in which I used to be first.

I remember two more incidents. The first incident was arrival of one boy from other village. He was a competitor to me because book of his village was different. But no sooner that difference was gone the challenge was gone too.

The second incident was accident of a child. During play time we used to peep into his room through window to see him and sometimes we used visit his room and read his diary. I remember some parts of that diary which was as follows:

"Due to lack of time I started missing the opportunity to talk about us. The reason was first of all my own habits and after that my accident, because of why 18 months of my life passed like 18 days, uselessly. I was also keen to make up that loss. I tried to do that by waking up early in the morning but due to lack of complete sleep I remained sleepy so could not use that time. Then I tried to reduce my social contact which was achieved without any effort as it seemed that I had a disease without any cure. Different opinions of different doctors.... wrong operations.... and combined effect was so that I had to lead a life of handicapped.

Leave the gossips apart. Even I was losing my faith on doctors. Their optimistic words were unable to solace me. Phone calls for asking about my health condition were reduced day by day. Afterwards I improved from crutch to stick and started driving. Then I faced problem in socialising myself like I used to be earlier. I tried to maintain one-sided relationship with people who were not living away from my place. But other people became beyond approach because of my isolation from them in past years. People who used to laugh at me during my bad days found my good behaviour to them sympathy for their rudeness so they denied to continue relationship with me. People's negligence saved my time a lot.

First I thought that my colleagues would not recognise me but when I reached the office I was welcomed like a hero. But they didn't let me know their grief of seeing me holding a stick.

They were always appreciating my courage. When I left the support of stick and went to office in jeans and shirt then someone told me that I was regaining my previous look. I started thinking about that. I made video recording of my walking styles with help of my wife. I was shocked to know that my walking posture was like I was running. Then family members told me that that was too less than my earlier habit. Then I realised that how bad it could be for my well- wishers. Then I realised the reason behind their motivation. The fear of being left alone in crowd of colleagues after passing a long period of loneliness, my expectations rather faith in self being, all led to develop my strong and special personality.

Although he was my fellow but he was pretending as he was a big matured married man.

Miserable life of group of workers, hanging clothes on the trolleys – these views were really heart touching. And in spite of all poverty they used to laugh, able to feel the happiness without having a roof. The beggar children used to peep us with their woeful vision. Insulted by everyone, if I would have to face such a wretched life then how would I face that? And no one simply bother about them then why should I? Am I only the different one? I was thinking that world kept on going even if I was not present everywhere. I used to read a fact in a book that some animals were only able to see two dimensional things. Men can see three dimensional things then had the earthquake and other disasters been brought by someone who can see four dimensional views. Whenever father was buying me a lalchadi worth five paisa, he used to say to look at those people who looked after their families by earning money by selling those lalchadi. The importance and necessity of money could grow as much as you want.

擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤擤

VIDEHA MAITHILI SANSKRIT TUTOR

ENGLISH	SAMSKRIT	MAITHILI
Meeting Friends	मित्रमेलनम्	मित्रसँ भेँट
Hello! How are you?	हरिः ओम्। कथम् अस्ति भवान्?	नमस्कार। केना छी अहाँ।
I am fine.	अहं सम्यक् अस्मि।	हम ठीक छी।

You are not seen these days.	एषु दिनेषु भवतः दर्शनमेव नास्ति।	आइ-काल्हि अहाँक दर्शन दुर्लभ भऽ गेल अछि।
I am very busy these days.	एषु दिनेषु बहु कार्यव्यस्तः अस्मि।	आइ-काल्हि हम बड्ड व्यस्त छी।
Where were you all these days?	कुत्र आसीत् भवती एतावन्ति दिनानि?	अहाँ एतेक दिन कतए छलहुँ?
Only yesterday I remembered you.	ह्यः एव भवतीं स्मृतवान्।	काल्हिए हम अहाँक मोन पाड़ने छलहुँ।
I had gone to Simla.	अहं शिमलानगरं गतवती आसम्।	हम शिमला गेल छलहुँ।
All of us will go there together.	वयं सर्वे मिलित्वा एव तत्र गच्छामः।	हम सभ ओतए संगे जाएब।
Day after tomorrow?	परश्वः किम्?	परसू की?
At what time.	कस्मिन् समये?	कोन समयमे।
At three o'clock.	त्रिवादने किम्?	तीन बजे की?
At three o'clock I've some other work.	त्रिवादने मम अन्यत् कार्यम् अस्ति।	तीन बजे हमरा किछु अन्य कार्य अछि।
Then let us go at 4 o'clock.	तर्हि चतुर्वादिने गच्छामः।	तखन चारि बजे जाइ।
Okay.	अस्तु।	ठीक।
Why are you late.	किमर्थः विलम्बः?	एतेक देरी किए?
At the time of leaving my vehicle's tyre got punctured.	प्रस्थानसमये मम यानस्य चक्रं भ्रष्टम् अभवत्।	निकलैत काल हमर गाड़ीक टाएर पंक्चर भऽ गेल।
We waited for a long time.	वयं बहु कालं प्रतीक्षितवन्तः।	हम सभ बड़ी काल धरि प्रतीक्षा केलहुँ।
Sorry, my work wasn't over.	क्षम्यतां, मम कार्यमेव न समाप्तम्।	क्षमा करू, हमर काज समाप्त नहि भेल छल।
Why didn't you come on that day?	तद्दिने भवान् किमर्थं न आगतवान्?	ओहि दिन अहाँ किए नहि एलहुँ?
I completely forgot about it.	तद्विषये पूर्णतया विस्मृतवान् एव।	हम ओऽ विषय पूरा-पूरी बिसरि गेलहुँ।
Had everyone else come?	अन्ये सर्वे आगतवन्तः आसन् किम्?	आन सभ गोटे आबि गेलाह की?
Yes, everyone else except Vrinda had come.	आम्, वृन्दां विहाय अन्ये सर्वे आगतवन्तः।	हँ, वृन्दाकेँ छोड़ि आन सभ आबि गेलाह।
I also very much wanted to come but I couldn't.	मम अपि बहु इच्छा आसीत् किन्तु न शक्तवान्।	हमरो बड्ड इच्छा छलए मुदा नहि आबि सकलहुँ।
I telephoned you several times yesterday.	ह्यः भवतीं बहुवारं दूरभाषां कृतवती।	काल्हि हम अहाँकेँ कतेक बेर फोन केलहुँ।
We had all gone to my maternal uncle's home.	वयं सर्वे मम मातुलगृहं गतवन्तः।	सभ क्यो हमर मामाक घर गेल छलहुँ।
How did you come here today?	अद्य अत्र कथम् आगमनम्?	अहाँ एतऽ आइ कोना अएलहुँ?
I had some work here in the bank.	अत्र वित्तकोषे किञ्चित् कार्यम् आसीत्।	एतऽ बैंकमे किछु काज छलए।
I came here because I had some urgent work.	अत्र त्वरितकार्यम् आसीत् अतः आगतवती।	एतऽ किछु आवश्यक काज छलए से अएलहुँ।
Is that you! I couldn't recognize you from far.	भवान् एव किम्? दूरतः न ज्ञातवान् एव।	अहाँ छी की! अहाँकेँ दूरसँ नहि चीन्हि सकलहुँ।
You've become very thin.	बहु कृशः अभवत् भवान्।	अहाँ बड्ड दुब्बर भऽ गेल छी।
I had typhoid.	मम विषमज्वरः जातः आसीत्।	हमरा टायफाइड भऽ गेल रहए।
Come, let us go home.	आगच्छतु, गृहं गच्छामः।	आऊ, हमरा सभ घर चली।
Now?	इदानीं किम्?	अखने की?
It's slightly difficult now.	इदानीं किञ्चित कष्टम्।	अखन कनी दिक्कत अछि।
Oh friend! Why do you say so?	किं मित्र! एवं वदति?	किए मित्र! एना किए बाजए छी?
Wait for some time.	किञ्चित् कालं तिष्ठतु।	कनी काल रुकू।
It's not possible now.	इदानीं न शक्यते भोः।	ई आब संभव नञि।

Why such hurry?	किमर्थम् एवं त्वरा?	एतेक फुर्ती किए?
There is still sometime, isn't it?	इतोऽपि समयः अस्ति खलु?	अखनो कनी समए अछि, अछि ने?
No my dear, an hour is needed even to reach there.	नास्ति इत्र, इतः तत्र प्राप्त्यर्थम् एव एकघण्टा आवश्यकी।	नञि भजार, ओतऽ पहुँचए लेल सेहो एक घण्टा चाही।
As you wish.	यथा भवान् इच्छति।	जेहन अहाँक इच्छा।
Congratulations! I heard you got a job.	अभिनन्दनम्! भवत्या उद्योगः लब्धः इति श्रुतम्।	बधाई! हम सुनलहुँ जे अहाँकेँ नोकरी भेटि गेल।
Yes, thank you.	आम्, धन्यवादः।	हँ, धन्यवाद।
Where do you work?	कुत्र उद्योगं करोति भवती?	अहाँ कतऽ काज करए छी?
I am working in an advertising aency.	कस्याञ्चित् विज्ञापन-संस्थायां कार्यं करोमि।	हम एकटा विज्ञापन कंपनीमे काज करए छी।
When will you give sweets?	मिष्टान्नं कदा ददाति?	अहाँ मधुर कखन देब?
Come home on Tuesday.	मङ्गलवासरे गृहमेव आगच्छतु।	मंगलकेँ घरपर आऊ।
I must hurry now.	इदानीं मया त्वरणीयम्।	हमरा आब जल्दी करबाक चाही।
Wait friend, let's have coffee.	तिष्ठतु सखी, काफी पिबामः।	कनी रुकू सखी, हमरा सभ कॉफी पीबी।
Okay, let's drink.	अस्तु, पिबामः।	ठीक छै, पीबी।
Sorry, I don't have time to stay.	क्षम्यतां, स्थातुं मम समयः नास्ति।	क्षमा करू, हमरा लग ठहरबाक लेल समय नहि अछि।
When shall we meet again?	पुनः कदा मेलिष्यामः?	फेर कहिया भेँट हएत?
Shall we meet tomorrow evening?	श्वः सायं मेलिष्यामः किम्?	काल्हि साँझमे जुटान करी की?
Yes, I'll come there.	आम्, तत्रैव आगमिष्यामि।	हँ, ओतए हम आएब।
Where is your new residence?	भवतः नूतनं गृहं कुत्र अस्ति?	अहाँक नव घर कतए अछि?
This is my residential address.	एषः मम गृहसङ्केतः।	ई छी हमर घरक पता।
Oh! It's near my sister's home?	ओहो! मम भगिन्याः गृहसमीपे अस्ति।	ओहो! ई तँ हमर बहिनक घरक लग अछि।
Did you get my letter?	मम पत्रं प्राप्तवान् किम्?	हमर पत्र अहाँकेँ भेटल की?
Yes, I got it just now.	आम्, इदानीमेव प्राप्तवान्।	हँ, हमरा अखने भेटल।
For how many days are you staying here?	अत्र कति दिनानि तिष्ठति भवान्?	एतए अहाँ कतेक दिन लेल ठहरल छी।
I am here for two more days.	इतोऽपि दिनद्वयम् अस्मि।	हम एतऽ दू दिन आउर छी।
Then I'll see you at home.	तर्हि भवन्तं गृहे एव पश्यामि।	तखन अहाँसँ घरपर भेँट करए छी।
I have to talk to you.	भवतः समीपे सम्भाषणीयम् अस्ति।	हमरा अहाँसँ गप करबाक अछि।
Come at any time.	यदा कदापि आगच्छतु।	जखन मोन हुअए आउ।
I heard Mohan met with an accident.	मोहनस्य दुर्घटना अभवत् इति श्रुतवान्।	मोहनक दुर्घटना भेलए से सुनलहुँ।
Yes, he had a narrow escape.	आम्, सः स्तोकात् मुक्तः।	हँ, ओऽ मुश्किलसँ बचल।
Did you meet him?	तेन सह मिलितवान् किं भवान्?	हुनकासँ अहाँक भेँट भेल की?
In which hospital is he admitted?	कस्मिन् चिकित्सालये अस्ति सः?	कोन अस्पतालमे ओऽ भर्ती अछि?
He is in the Lohia hospital.	सः लोहियाचिकित्सालये अस्ति।	ओऽ लोहिया अस्पतालमे अछि।
Did you hear this news?	एतां वार्तां श्रुतवती किम्?	अहाँ ई समाचार सुनलहुँ की?
Don't worry, everything will be fine.	चिन्तां मा करोतु, सर्वं सम्यक् भविष्यति।	चिन्ता नञि करू, सभ ठीक भऽ जाएत।
Do you also agree with this?	भवती अपि एतत् अङ्गीकरोति किम्?	अहाँ सेहो एहिसँ सहमत छी?
How could you also believe it?	भवान् अपि कथं विश्वासं कृतवान्?	अहाँ सेहो कोना एहिपर विश्वास केलहुँ?
I was impressed by the way he spoke.	तस्य कथनशैल्या एव अहं प्रभावितः।	ओकर बजबाक शैलीसँ हम प्रभावित भेलहुँ।
Easily fail into his trap.	सुलभतया तस्य जाले पतितवान्।	आरामसँ ओकर जालमे फँसि गेल।
Sometimes it happens.	एवं भवति कदाचित्।	कहियो काल एना होइ छै।

We are meeting after a long time.	अस्माकं मेलनानन्तरं बहु कालः अतीतः।	हमरा सभ बड़ी दिनपर भेँट भऽ रहल छी।
How quickly time has passed!	समयः कथम् अतिशीघ्रम् अतीतः।	समय कतेक तीव्रगतिसँ बीति गेल।
You have come at the right time.	युक्ते समये आगतवान्।	अहाँ सही समयपर आबि गेलहुँ।
Will you lend me your vehicle for some time?	किञ्चित् कालं भवतः यानं ददाति किम्?	अहाँ अपन गाड़ी कनी काल लेल देब?
I too have to go out now.	इदानीं मया अपि अन्यत्र गन्तव्यम् अस्ति।	हमरा सेहो अखन बाहर जेबाक अछि।
I'll come back quickly.	अहं शीघ्रं प्रत्यागमिष्यामि।	हम तुरत अबैत छी।
When will you come back?	कदा प्रत्यागमिष्यति।	अहाँ कखन घुरि कऽ आएब?
I'll back in half an hour.	अर्धघण्टाभ्यन्तरे आगच्छामि।	हम आधा घण्टामे घुरि आएब।
There is no petrol in the vehicle.	याने तैलं नास्ति।	गाड़ीमे तेल नहि अछि।
Is that so?	एवं किम्?	एना अछि?
Don't worry.	चिन्ता नास्ति।	कोनो बात नञि।
I was merely joking friend.	परिहासाय उक्तवान् मित्र।	हम मात्र हँसी केलहुँ, मित्र।
Don't take it otherwise.	अन्यथा मा चिन्तयतु।	अन्यथा नहि लिअ।
Had you been late by a minute I would've gone.	एकनिमेषस्य विलम्बः चेत् अहम् अगमिष्यम्।	अहाँ एक मिनट देरी करितहुँ तँ हम पहुँचि गेल रही।
This person always pesters me.	एषः एकः आगत्य सर्वदा पीडयति।	ई हमरा हरदम तंग करय-ए।
Did he go?	सः गतवान् किम्?	ओऽ गेल की?
He'll come again to see you, won't he?	भवन्तं द्रष्टुं सः पुनः आगच्छति खलु?	ओऽ फेर अहाँकेँ देखए लऽ आएत, नहि आएत की?
Is he trustworthy?	सः विश्वासयोग्यः किम्?	ओऽ विश्वासी अछि की?
Can't say.	वक्तुं न शक्यते।	नहि कहि सकए छी।
Are you coming with us?	भवान् आगच्छति किम् अस्माभिः सह?	अहाँ हमरा संग आबि रहल छी ने?
Come, let's go for a walk.	आगच्छतु, किञ्चित् अटित्वा आगच्छामः।	आउ, कनी घूमि कए आबी।
Will you buy me a cold drink?	शीतपेयं पाययति किं भवान्?	अहाँ हमरा कोल्ड ड्रिंक कीनि देब की?
Not cold drink let's eat ice-cream.	शीतपेयं मास्तु पयोहिमं खादामः।	कोल्डड्रिंक नहि अछि, आइसक्रीम खाइ हम सभ।
Let's go quickly otherwise mother will scold.	शीघ्रं गच्छामः भोः नो चेत् माता तर्जयति।	हम सभ शीघ्र जाइ नञि तँ माँ तमसेतीह।
How will you go there?	कथं गच्छति भवती तत्र?	ओतऽ अहाँ कोना जाएब?
I will talk.	अहं पादाभ्यां गच्छामि।	हम पएरे जाएब।
I will also come with you for some distance.	अहमपि किञ्चिद्दूरं भवत्या सह आगच्छामि।	हमहूँ अहाँ संगे कनी दर धरि आएब।

<u>संस्कृत शिक्षा च मैथिली शिक्षा च</u>

(मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्)

(आगाँ)

-गजेन्द्र ठाकुर

सम्भाषणम् -वयं तृतीया विभक्तेः अभ्यासं कृतवन्तः। इदानीं कानिचन् वाक्यानि वदामः। अहं वाक्यं वदामि, भवन्तः तत्र तृतिया विभक्तिं योजयन्तु।

रामः सुधाखण्डेन लिखति। राम चॉकसँ लिखैत अछि।

सः वाणेन ताडयति। ओऽ वाणकँ मारैत अछि।

वर्णकारः कूचेन लिखति। चित्रकार कूचीसँ चित्र बनबैत छथि।

सुरेशः कुञ्चिकया उद्घाटयति। सुरेश कुंजीसँ खोलैत छथि।

माता कलशैः आनयति। माता कलश आनैत छथि।

जनाः वादनेन गच्छन्ति। लोकसभ वादनक लेल जाइत छथि।

एषः अङ्कन्या लिखति। ई पेन्सिलसँ लिखैत अछि।

अहं चमषेन अन्नं खादामि। हम चम्मचसँ खेनाइ खाइत छी।

अहं छुरिकया शाखं कर्तयामि। हम छुरीसँ शाख काटैत छी।

अहं गुरेन मिष्टान्नं करोमि। हम गुरसँ मधुर बनबैत छी।

अहं द्विचक्रिकया विद्यालयं गच्छामि। हम साइकिलसँ विद्यालय जाइत छी।

भवान् कथं विद्यालयं गच्छति। अहाँ कोना विद्यालय जाइत छी।

अहं कर्णाभ्यां श्रुणोमि। हम दुनू कानसँ सुनैत छी।

अहं नेत्राभ्यां पश्यामि। हम दुनू आँखिसँ देखैत छी।

अहं पादाभ्यां चलामि। हम दुनू पएरसँ चलैत छी।

अहं हस्ताभ्यां कार्यं करोमि। हम दुनू हाथसँ काज करैत छी।

वार्ता- मान्ये अहं अतः आगच्छामि वा।

किमर्थं विलम्बेन् आगतवान्।

बालाभ्याम् आगतवान अतः विलम्बः जातः।

अहं संतोषेण पाठं पठामि। हम संतोषसँ पाठ पढ़ैत छी।

भवन्तः संतोषेण पाठं पठन्ति वा। अहाँ सभ संतोषसँ पाठ पढ़ैत छी की?

वयं पठामः। हम सभ पढ़ैत छी।

अहं आनन्देन् संभाषणं करोमि। हम वार्तालाप करैत छी।

भवन्तः आनन्देन संभाषणं कुर्वन्ति वा। अहाँ सभ आनन्दसँ वार्तालाप करैत छी की?

वयं कुर्मः। हम सभ करैत छी।

पिता प्रीत्या पुत्रिं पालयति। पिता प्रेमसँ पुत्रीक पालन करैत छथि।

माता सदनया पुत्रं पोषयति।

भक्तः भक्तया देवं नमयति। भक्त भक्तिसँ देवक सोझाँ झुकैत छथि।

कृषकः कष्टेन कार्यं करोति। कृषक कष्टभोगि कार्य करैत छथि।

अहम् उत्साहेन कलहं करोमि। हम उत्साहसँ कलह करैत छी।

हर्षेण/ संतोषेण/ दुःखेन/ लज्जया/ भक्तया/ दैन्येन/ श्रद्धया

भवान् मंजूनाथः सह गच्छतु। अहाँ मंजूनाथक संग जाऊ।

अनन्तः केन सह गतवान/ आगतवान/ सम्भाषणं करोति। अनन्त ककरा संग गेल/ आएल/ वार्तालाप करैत अछि।

अनन्तः मंजूनाथेन सह आगतवान। अनन्त मंजूनाथक संग आएल।

अहल्या दीपिकयाः सह चित्रमन्दिरं गच्छति। अहल्या दीपिका संग सिनेमाहॉल गेल।

हंसा दीप्तया/ शिल्पया/ मिथिलया/ मधुरया/ मालया/ शान्तलया/ रमया/ आप्तया/ नन्दिन्या/ अश्विन्या/ भाष्कर्या/पार्वत्या सह नगरं गच्छति। हंसा दीप्तिक संग नगर जाइत अछि।

फलके शब्दत्रयं लिखितम् अस्ति। एतेषां शब्दानाम् उपयोगं कृत्वा वाक्यं रचयामः।

लक्ष्मणः रामेण सह वनं गतवान्।

रवि मित्रम् नगरम् गतवान्।

गोपाल शिवः संभाषणम् कृतवान्।

गोविन्दः सखी चर्चा कृतवान्।

माता पुत्री बन्धुगृहं गतवती।

सः रमेशः कलहः कृतवान्।

लता सुमा कार्यं कृतवती।

केशवः सुरेशः भोजनं कृतवान्।

रोगी वैद्यः चिकित्सालयः गतवान्।

मालिनी शारदा शाला गतवती।

हेमा पार्वती पाठः पठितवती।

तैलेन् विना दीपः न ज्वलति। तेलक विना दीप नहि जरैत अछि।

जलेन् विना मीनाः न जीवन्ति। पानिक विना माँछ नहि जिबैत छथि।

आहारेण विना जीवनं कष्टम्।

इदानीं "विना" इति शब्द प्रयोगं कृत्वा एकैकं वाक्यं वदन्ति वा।

धनेन विना जीवनं कष्टम्।

अहम् उपनेत्रेण विना न पश्यामि।

यदा अन्धकारः भवति तदा दीपं ज्वालयमः। जखन अन्हार होएत तखन दीप जराऊ।

यदा वुभुक्षा भवति तदा भोजनं कुर्मः। जखन भूख लागत तखन भोजन करू।

यदा अनारोग्यं भवति तदा चिकित्सालयं गच्छामः। जखन अस्वस्थ होइत छी तखन चिकित्सालय जाऊ।

यदा परीक्षा अस्ति तदा पठन्ति। जखन परीक्षा होइत अछि तखन पढ़ए जाइत छथि।

यदा विरामः भवति तदा प्रवासं गच्छन्ति। जखन विराम होइत अछि तखन प्रवासलेल जाइ जाइत छथि।

अहं वाक्यद्वयं वदामि। भवन्तः यदा तदा योजयित्वा वदन्तु।

विद्युत गच्छति। सिक्थवर्तिकाम् ज्वालयन्ति।

यदा तदा

सूर्योदयः भवति कमलं विकसति

पिपासा भवति जलं पिबतु

पूजा भवति घण्टानादं कुर्वन्ति

वृष्टिः भवति बीजं वपन्ति

सखी मिलति संभाषणं करोमि

परीक्षा समाप्यते संतोषं भवति

यदा यद हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत,

अभ्युत्थानं अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।

इदानीम् एकं सुभाषितं श्रुण्मः-

अपार भूमि विस्तारम् अगम्य जन संकुलम्

राष्ट्रं संघटनाहीनं प्रभवेन्नात्मरक्षणे॥

इदानीं श्रुतस्य सुभाषितस्य अर्थः एवम् अस्ति। एतस्मिन् सुभाषिते संघटनस्य महत्वम् उक्तम् अस्ति। यद्यपि कँश्मश्चित् राष्ट्रे विशाला भूमिः अस्ति, अपारा जनसंख्या अस्ति तथापि तस्मिन् राष्ट्रे यदि संघटनं न भवति तर्हि तत् राष्ट्रम् आत्मरक्षणे समर्थं न भवति। एवं संघटनस्य महत्वम् एतादृशम् अस्ति।

सिद्धिरस्तु